ग़ुबारे-ख़ातिर

अकादेमी के अन्य हिन्दी-प्रकाशन

(मूल भाषाओं के नाम कोष्ठक में अंकित हैं)

१. भारतीय कविता : १९५३	(भारत की १४ भाषाओं की कविताओं का लिप्यंतर और अनुवाद)	५.००
२. केरल सिंह (मलयालम)	का. मा. पणिक्कर	३.००
३. भगवान् बुद्ध (मराठी)	धर्मानन्द कोसम्बी	५.००
४. कांदीद् (फ्रेंच)	वाल्तेयर	२.००
५. दो सेर धान (मलयालम)	तकषी शिवशंकर पिल्लै	२.००
६. मिट्टी का पुतला	कालिन्दीचरण पाणिग्राही	२.००
७. आरण्यक (बंगला)	विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय	४.००
८. गेंजी की कहानी (जापानी)	मुरासाकी शिकाबू	४.५०
९. आरोग्य निकेतन (बंगला)	ताराशंकर वंद्योपाध्याय	६ ००
१०. अमृत सन्तान (उडिया)	गोपीनाथ महान्ती	१२.००
११ आदमखोर (पंजाबी)	नानकसिंह	५.००
१२. वैदिक संस्कृति का विकास (मराठी)	लक्ष्मण शास्त्री जोशी	५.५०
१३. क्या यही सभ्यता है ? (बंगला)	माइकेल मधुसूदन दत्त	१.५०
१४. नारायण राव (तेलुगु)	अडिवि बापिराजू	६.००
१५. आज का भारतीय साहित्य	(भारत की १६ भाषाओं के साहित्य का परिचय)	७.००
१६. जीवी (गुजराती)	पन्नालाल पटेल	४.५०
१७. भग्नमूर्ति (मराठी)	अनिल	१.००
१८. एकोत्तर शती (बंगला)	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	८.००
१९. चिलिका (उडिया)	राधानाथ राय	१.५०
२०. मिरातुल अुरूस (उर्दू)	नजीर अहमद	५.००
२१. छै बीघा जमीन (उड़िया)	फ़कीर मोहन सेनापति	३.००
२२. मीरी बिटिया (असमिया)	रजनीकांत बरदलै	२.००
२३. मछुआरे (मलयालम)	तक़षी शिवशंकर पिल्लै	३.५०
२४. आन्ध्र का सामाजिक इतिहास (तेलुगु)	सुरवरम् प्रताप रेड्डी	६.००
२५. वल्लत्तोल की कविताएँ (मलयालम)		२.५०

ग़ुबारे-ख़ातिर

(हिन्दी लिप्यन्तर)

मूल उर्दू-लेखक

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद

लिप्यन्तर

मदनलाल जैन

भूमिका

प्रो. हुमायूँ कबीर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

Ghubar-e-Khatir by Maulana Abul Kalam Azad. Transliterated in Devanagari with a glossary by Madanlal Jain. Published by Sahitya Akademi, New Delhi. Rs. 6.00 (1959)

प्रकाशक :

एकाधिकारी वितरक :
राजकमल प्रकाशन (प्रा.) लिमिटेड, दिल्ली

मूल्य :
छै रुपये

मुद्रक :
न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, नई दिल्ली

भूमिका

मौलाना आज़ाद अहमद नगर के क़िले में नज़रबन्द थे तो उन्होंने अपने दोस्त नवाब सद्रयार जंग को कई ख़त लिखे थे। मौलाना की रिहाई के बाद ये ख़त 'ग़ुबारे ख़ातिर'[१] के नाम से एक किताब की सूरत में छपे और सभी लोगों ने उन्हें बहुत पसंद किया। उर्दू में इस किताब के कई एडीशन निकल चुके हैं और इतने साल गुज़र जाने पर भी उनकी लोकप्रियता कम नहीं हुई है। मौलाना ने अपनी क़लम से उर्दू-साहित्य की जो सेवा की है वह कभी भी नहीं भुलाई जा सकती। उनकी कलम में इतना ज़ोर और ऐसा जादू था कि वह मामूली-से-मामूली विषय पर भी लिखते थे तो उसकी गिनती ऊँचे दर्जे के साहित्य में होने लगती थी। उनके लिखने का तर्ज़ बहुत सुन्दर और अनोखा था। पिछले चालीस-पचास साल के उर्दू अदब पर मौलाना के विचारों और लिखने के तर्ज़ का बहुत गहरा असर पड़ा है।

ख़तों मे एक ख़ास तरह की सादगी और स्वाभाविकता होती है। इसके अलावा ख़तों में लिखने वाले के व्यक्तित्व की बहुत गहरी छाप होती है, जिससे उनमें विशेष आकर्षण और खूबसूरती आ जाती है। लेकिन यह तभी हो सकता है जब लिखने वाले का व्यक्तित्व भी बहुत ऊँचे दर्जे का हो। 'ग़ुबारे ख़ातिर' के ख़तों में इतना असर और खूबसूरती इसीलिए है, क्योंकि उनमें मौलाना के व्यक्तित्व की गहरी छाप है। किसी साहित्यकार या विचारक के व्यक्तित्व के ऐसे कई पहलू, जो उसकी साहित्यिक रचनाओं में जाहिर नही होते, ख़तों में खुलकर सामने आ जाते हैं। इस दृष्टि से भी मौलाना के इन ख़तों की बहुत अहमियत है।

मौलाना की सारी ज़िन्दगी राजनीति और देश की सेवा में गुज़री और इस फ़र्ज़ को उन्होंने जिस तरह निभाया वह अपनी मिसाल आप है। लेकिन मौलाना सिर्फ़ सियासी नेता ही नही थे, वह बहुत ऊँचे दर्जे के साहित्यकार और विचारक भी थे। उनको अदब और शायरी से बहुत लगाव था। उनका साहित्यिक व्यक्तित्व उनके ख़तों मे बहुत आन-बान के साथ उभरा है। उन्होंने ख़त को खुश्क और नीरस तहरीरी बातचीत की सतह से उठाकर ऊँचे साहित्य का दर्जा दिया है। मौलाना ने इन ख़तों में बहुत-सी समस्याओं पर बिचार किया है, लेकिन व्यक्तित्व का पुट, जो ख़तों की जान है, हर हाल में मौजूद

---

१. दिल या मन के ग़ुबार।

रहा है। 'गुबारे खातिर' में मौलाना के शानदार व्यक्तित्व का एक नया रूप नजर आता है।

मौलाना की यह पुस्तक इस काबिल है कि इसे पूरे राष्ट्र की सम्पत्ति और विरासत माना जाय।

मुझे खुशी है कि अब यह किताब देवनागरी लिपि में छापी जा रही है। इसके इस तरह छापने का विशेष महत्त्व है। जो लोग उर्दू लिपि नही पढ सकते उनके लिए भी मौलाना के इस खजाने के अब दरवाज़े खुल जायँगे। उन्हें भी उर्दू और फारसी की शायरी और इल्म की एक झलक मिल सकेगी।

—हुमायूँ कबीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम

तारीखे-वाक़याते-शहां नानविश्ता मुंद
अफ़सानये कि गुफ़्त नज़ीरी किताब शुद ।[1]

इस मजमुअे[2] में जिस कदर मकतूबात[3] है, वो तमामतर नवाब सद्र यारजंग मौलाना हबीबुर्रहमान खां साहब शिरवानी रईस भीकमपुर जिला अलीगढ के नाम लिखे गये थे। चूँकि किलअे-अहमदनगर की क़ैद के ज़माने मे दोस्तों से खत ओ किताबत की इजाज़त न थी और हज़रत मौलाना की कोई तहरीर[4] बाहर नही जा सकती थी इसलिए ये मकातीब वक्तन फ़वक़्तन लिखे गये और एक फ़ाइल मे जमा होते रहे। १५ जून सन् १९४५ ई० को जब मौलाना रिहा हुए तो इन मकातीब के मकतूब इलैह[5] तक पहुँचने की राह बाज़[6] हुई।

नवाब साहब से हजरत मौलाना का दोस्ताना इलाका[7] बहुत कदीम है। मौलाना ने खुद एक मर्तबा मुझसे फरमाया कि पहले-पहल उनसे मुलाक़ात सन् १९०६ ई० में हुई थी। गोया एक कम चालीस बरस इस रिश्तये-इखलास[8] ओ मुहब्बत पर गुजर चुके, और एक करन[9] से भी ज्यादा वक्त का इम्तिदाद[10] इसकी ताज़गी और शिगुफ्तगी को अफ़सुर्दा न कर सका। दोस्ती और यगानगत[11] के ऐसे ही इलाके है जिनकी निस्बत कहा गया था :

तज़ूलु जिबालिर्रासियाति व क़ल्बुहुमु
अनिल हुब्बि ला यख़लु व ला यतज़लज़लु[12]

अलबत्ता यह इलाकये-मुहब्बत ओ इखलास[13] सिर्फ़ इल्मी और अदबी[14] जौक़ के रिश्तये-इश्तराक[15] मे महदूद है। सियासी[16] अकायद[17] ओ ऐमाल[18] से

---

१. बादशाहों के वृत्तांत का इतिहास तो अलिखित ही रहा, और जो कहानी नज़ीरी ने कही उसकी किताब बन गई २. संग्रह ३. मकतूब का बहुवचन, पत्र ४. लेख ५. जिसके नाम पत्र लिखा गया ६. खुली ७. सम्बन्ध ८. प्यार और मुहब्बत का ताल्लुक ९. युग १०. दूरी ११. आत्मीयता १२. अटल पहाड अपनी जगह से हट जायेगे लेकिन प्रेमी का दिल न प्रेम से खाली होगा न उससे हिलेगा १३. प्यार और दोस्ती का सम्बन्ध १४. साहित्यिक रुचि १५. सहयोग का रिश्ता १६. राजनैतिक १७-१८. विचार और आचरण।

इसका कोई ताल्लुक नही। सियासी मैदान में मौलाना की राह दूसरी है और नवाब साहब उससे रस्म ओ राह[१] नहीं रखते।

हज़रत मौलाना की ज़िदगी मुख़्तलिफ़[२] और मुत्तज़ाद[३] हैसियतों में बँटी हुई है। वो एक ही जिदगी और एक ही वक़्त में मुसन्निफ़[४] भी हैं, मुकर्रिर[५] भी है, मुफ़क्किर[६] भी है, अदीब[७] भी हैं, मुदब्बिर[८] भी है और साथ ही सियासी जद्दोजहद के मैदान के सिपहसालार भी हैं। दीनी अुलूम[९] के तबहहुर[१०] के साथ अकलियात ओ फ़लसफे का ज़ौक बहुत कम जमा होता है। और इल्म और अदब के ज़ौक ने एक ही दिमाग़ में बहुत कम आशियाना बनाया है। फिर इल्मी ओ फिक्री[११] ज़िदगी का मैदान अमली[१२] सियासत की जद्दोजहद से इतना दूर वाके हुआ है कि एक ही क़दम दोनों मैदानों में बहुत कम उठ सके हैं। मगर मौलाना आज़ाद की ज़िदगी इन तमाम मुख़्तलिफ़ और मुत्तज़ाद हैसियतों की जामे[१३] है। गोया उनकी एक जिंदगी में बहुत-सी ज़िदगियाँ जमा हो गई हैं।

वो अपनी ज़ात से इक अंजुमन हैं

इस सूरते-हाल[१४] का कुदरती नतीजा यह निकला कि उनके अलायक[१५] का दायरा किसी एक गोशे ही में महदूद नही रहा। अुलूमे-दीनिया[१६] के हुजरो[१७] के ज़ावियानशीन,[१८] अदब ओ शेर की महफ़िलों के बज़्मतराज,[१९] इल्म और फ़लसफ़े की काविशों[२०] के दकीक़ासंज[२१] और मैदाने-सियासत के तदब्बुर[२२] और मारका-आराइयो[२३] के शहसवार,[२४] सबके लिए उनकी शख़्सियत यकसाँ तौर पर कशिश[२५] रखती है, और सब इस मजमअे-फ़ज़्ल ओ कमाल[२६] के इफ़ादात[२७] से बकदरे-तलब ओ हौसला मुस्तफ़ीद[२८] होते रहते हैं :

तू नख़्ले-ख़ुश समरे कीस्ती कि बाग़-ओ-चमन
हमा ज़ ख़ेश बुरीदंद ओ दर तो पैवस्तन्द ![२९]

---

१. ताल्लुक २. भिन्न-भिन्न ३. भिन्न ४. लेखक ५. वक्ता ६. विचारक ७. साहित्यिक व्यक्ति ८. राजनीतिज्ञ ९. धार्मिक ज्ञान १०. अगाध ज्ञान ११. चिंतनशील १२. सक्रिय राजनीति १३. संगम १४. परिस्थिति, वस्तुस्थिति १५. सम्बन्धों का १६. धार्मिक ज्ञान १७. कोठियाँ १८. एकांतवासी १९. सभा-संचालक २०. खोज २१. सूक्ष्म द्रष्टा २२. विचारक २३. रणक्षेत्र २४. घुड़सवार २५. रुचि. २६. प्रवीणता और बुज़ुर्गी का सागर २७. फ़ायदे २८. लाभान्वित २९. तू अच्छे फल देने वाला पेड़ किसका है कि बाग़ और चमन सब अपने से कटकर तुझमें जमा हो रहे हैं।

अलबत्ता उनके इरादतमंदों[1] का हल्का[2] जिस क़दर वसीअ[3] और बैनुलक़ौमी[4] है, उतना ही दोस्तों का दायरा तंग है :

कसे कि ज़ूद गुसल नेस्त, देर पैवन्द स्त ![5]

ऐसे खुश क़िस्मत असहाब जिन्हें मौलाना अपने "दोस्तों" में तसव्वुर करते हों खाल खाल[6] हैं। और सिर्फ़ वही हैं जिन से इल्म ओ ज़ौक[7] के इश्तराक[8], और रुजहाने-तबीयत की मुनासिबत ने उन्हें वाबस्ता[9] कर दिया है। ऐसे ही खाल खाल हज़रात में एक शख्सियत नवाब सद्र यारजंग की है।

नवाब साहब मुसलमानाने-हिंद के गुज़श्ता दौरे-इल्म ओ मजालिस की यादगार हैं। आज से तीस चालीस बरस पेश्तर का ज़माना मौलाना आज़ाद की इब्तदाई[10] इल्मी ज़िंदगी का ज़माना था। वो उस वक़्त के तमाम अकाबिर ओ अफ़ाज़िल[11] से उम्र में बहुत छोटे थे। यानी उनकी उम्र सतरह अठारह बरस से ज़्यादा न थी। लेकिन अपनी ग़ैरमामूली ज़हानत[12] और मुहय्यिर-उल-अक़ूल[13] इल्मी क़ाबलियत की वजह से सबकी नज़रों में मोहतरम[14] हो गये थे और मुआ-सिराना[15] और दोस्ताना हैसियत से मिलते थे। नवाब मुहसिन-उल-मुल्क, नवाब वक़ार-उल-मुल्क, खलीफ़ा मुहम्मदहुसैन (पटियाला), ख्वाजा अल्ताफ़हुसैन हाली, मौलाना शिब्ली नैमानी, डाक्टर नज़ीर अहमद, मुंशी ज़काउल्ला, हकीम मुहम्मद अजमल खां वग़ैरहुम सब से उनके दोस्ताना ताल्लुकात थे और इल्मी और अदबी सोहबतें रहा करती थी। इसी अहद की सोहबतों में नवाब सद्र यार-जंग से भी उनकी शनासाई[16] हुई। और फिर शनासाई ने उम्र भर की दोस्ती की नौइयत[17] पैदा कर ली। मौलाना इस रिश्ते को खुसूसियत के साथ अज़ीज़ रखते हैं। क्योंकि यह उस अहद की यादगार है जो बहुत तेज़ी के साथ गुज़र गया और मुल्क की मजलिसें क़दीम सूरतों और सोहबतों से यकक़लम खाली हो गईं।

मौलाना की सियासी ज़िंदगी के तूफ़ानी हवादिस[18] उनकी तमाम दूसरी हैसियतों पर छा गये हैं, लेकिन खुद मौलाना ने अपनी सियासी ज़िंदगी को अपने इल्मी और अदबी अलायक़ से बिल्कुल अलग रखा है। जिन दोस्तों से उनका इलाक़ा महज़ इल्म ओ अदब के ज़ौक़ का इलाक़ा है, वो उनके अलायक़ को सियासी ज़िंदगी से हमेशा अलग रखते हैं। और इस तरह अलग रखते हैं

---

१. श्रद्धालु २. घेरा ३. विस्तृत ४. अंतर्राष्ट्रीय ५. जो चीज़ जल्दी नहीं टूटती वह ज़्यादा टिकती है ६. थोड़े ही ७. ज्ञान और रुचि ८. सहयोग ९. संगठित १०. प्रारंभिक ११. प्रवीण और बुज़ुर्ग १२. प्रतिभा १३. हैरत अंगेज़ १४. सम्मानित १५. हमसराना १६. परिचय १७. ढंग १८. घटनाएँ।

कि सियासी ज़िंदगी की परछाईं भी उस पर नहीं पड़ सकती। वह जब कभी उन दोस्तों से मिलेंगे या ख़त ओ किताबत करेंगे तो उसमें सियासी अफ़कार ओ ऐमाल[1] का कोई ज़िक्र न होगा। एक बेख़बर आदमी अगर उस वक़्त की बातों को सुने तो ख़याल करे, इस शख़्स को सियासी दुनिया से दूर का भी इलाक़ा नही है और इल्म ओ अदब के सिवा और किसी ज़ौक से आश्ना[2] नहीं। एक मर्तबा इस मामले का ख़ुद मौलाना से ज़िक्र हुआ तो फ़रमाने लगे जिस शख़्स से मेरा ताल्लुक जिस हैसियत से है, मैं हमेशा उसे उसी हैसियत में महदूद रखना चाहता हूँ। मैं नही चाहता कि दूसरी हैसियतों से उसे आलूदा[3] करूँ। चुनांचे न तो कभी वो उन दोस्तों से इसकी तवक़्क़ो रखते हैं कि उनकी सियासी ज़िंदगी के आलाम को मसायब[4] में शरीक हों, न कभी इसके ख़्वाहिशमंद होते हैं कि उनके सियासी अफ़कार ओ ऐमाल से इत्तिफ़ाक़ करें। सियासी मामले में वो हर शख़्स को ख़ुद उसकी पसंद और ख़्वाहिश पर छोड़ देते हैं। आप उनसे किसी इल्मी, मज़हबी और अदबी ताल्लुक़ से बरसों मिलते रहिये, वो कभी भूले से भी सियासी मामलात का आप से ज़िक्र नहीं करेंगे। ऐसा मालूम होगा जैसे इस आलम की उन्हें कोई ख़बर ही नहीं।

बसा[5] औक़ात ऐसा होता है कि उनकी ज़िंदगी सियासी मैदानों के तूफ़ानी हवादिस से घिरी होती है। कुछ मालूम नहीं होता कि एक दिन या एक घंटे के बाद क्या हवादिस पेश आयेंगे। मुमकिन है कि क़ैद ओ बंद का मरहला[6] पेश आ जाये। बहुत मुमकिन है कि जिलावतनी[7], या इससे भी ज़्यादा कोई ख़तरनाक सूरते-हाल हो। लेकिन अचानक, ऐन इसी आलम में किसी हमज़ौक दोस्त की याद उनके सामने आ खड़ी होती है, और वो थोड़ी देर के लिए अपने सारे गिर्द ओ पेश[8] से यकक़लम कनाराकश होकर उसकी जानिब हमातन[9] मुतवज्जा हो जाते हैं और इस इस्तिग़राक और इनहिमाक[10] के साथ मुतवज्जा होते हैं गोया उनकी ज़िंदगी पर किसी ख़तरनाक हादिसे का साया भी नहीं पड़ा है। वो उस वक़्त अपनी यकसां[11] और बेकैफ़[12] सियासी मशग़ूलियत का मज़ा बदलने के लिये कोई ऐसा मौज़ू छेड़ देंगे जो सियासी जिंदगी के मैदानों से हज़ारों कोस दूर होगा। इल्म ओ फ़न का कोई मबहस[13], फ़िलसफ़ियाना ग़ौर ओ फ़िक्र की कोई काविश[14] तबइय्यात[15] का कोई नया नज़रिया, तसव्वुफ़ ओ इशराक़[16] का कोई वारिदा[17] या फिर अदब ओ इंशा की सुख़न तराज़ी और शेर ओ सुख़न

---

१. आचार विचार २. परिचित ३. मिश्रित ४. दुख और मुसीबत ५. बहुत बार ६. पड़ाव, मौक़ा ७. देश निकाला ८. पारिपार्श्विक ९. संपूर्ण रूप से १०. तल्लीनता ११. यकसां १२. बेमज़ा १३. चर्चा बहस १४. गवेषणा, खोज १५. पदार्थ-विज्ञान १६. योग और वेदांत १० आत्मशुद्धि से हृदय में जो बात उतरती है उसे वारिदा कहते हैं।

की बज़्म आराई, गर्ज़ कि सियासत के सिवा हर ज़ौक़ की वहाँ गुंजाइश होगी। हर वादी की वहाँ पैमाइश की जा सकेगी। उस वक़्त कोई इन्हें देखे तो साफ़ दिखाई दे कि ज़बाने-हाल से ख़्वाजा हाफ़िज़ का यह शेर दुहरा रहे हैं :

कमंदे-संदे बहरामी बयफ़गन, जामे-मय बरदार
कि मन पैमूदम ईं सहरा, न बहराम स्त ने गोरश ![1]

मौलाना इस सूरते-हाल को "तह्मीज़" से ताबीर किया करते हैं। "तह्मीज़" अरबी में मुँह का मज़ा बदलने के मानी में बोला जाता है, "हम्मिज़ू मजालिसकुम" यानी अपनी मजलिसों का मज़ा बदलते रहो। वो कहते हैं, अगर गाह गाह मैं इस तह्मीज़ का मौक़ा न निकालता रहूँ तो मेरा दिमाग़ बेकैफ़[2] और ख़ुश्क मशग़ूलियतों के बारे-मुसलसल[3] से थक कर मुअत्तल[4] हो जाये। इस तरह की "तह्मीज़" मेरे लिये ज़ह्नी ऐश ओ निशात[5] का सामान बहम[6] कर दिया करती है, और दिमाग़ अज़ सरे-नौ ताज़ा दम हो जाता है।

कभी कभी ऐसा भी होता है कि ऐन सियासी तूफ़ानों के मौसम में कोई हमज़ौक़[7] दोस्त आ निकलता है और उन्हें मौक़ा मिल जाता है कि क़लम ओ तख़य्युल[8] की जगह सोहबत ओ मुजालिसत[9] के ज़रिये अपनी मशग़ूलियत का ज़ायक़ा बदलें। वो मअन[10] अपने गिर्द ओ पेश की दुनिया से बाहर निकल आयेंगे और एक इंक़लाबी तहव्वुल[11] के साथ अपने आप को एक दूसरे ही आलम में पहुँचा देंगे। वो फ़ौरन अपने ख़ादिमे-ख़ास अब्दुल्ला को पुकारेंगे कि चाय लाओ। यह गोया इसका ऐलान होगा कि उनके ज़ौक़ ओ कैफ़ का ख़ास वक़्त आ गया। फिर शेर ओ सुख़न की सोहबत शुरू हो जायेगी। इल्म ओ अदब का मज़ाकिरा[12] होने लगेगा और आला दर्जे की चीनी चाय "ह्वाइट जेसमिन" के छोटे छोटे फ़िंजानों का दौर चलने लगेगा कि :

हासिले-कारगहे-कौन ओ मकां ईं हमा नेस्त
बादा पेश आर कि असबाबे-जहां ईं हमा नेस्त[13]

उन्हें अपनी तबीयत के इंफ़िआलात[14] पर गालिब आने और अपने आप

---

१. बहराम को पकड़ने की कमंद फेंक दे और शराब का प्याला ले ले। क्योंकि मैंने यह सारा जंगल छान डाला है यहाँ कही न तो बहराम है और न उसका शिकार गोरे-ख़र। २. निरानंद ३. निरंतर का भार ४. बेकार ५. खुशी ६. जुटा देना ७. समान अभिरुचि ८. विचार ९. बैठकी बातचीत, गोष्ठी १०. फ़ौरन ११. परिवर्तन १२. एक दूसरे से बातें १३. इस दुनिया के कारखाने का परिणाम या लाभ यह सब कुछ नहीं है। शराब लाओ क्योंकि दुनिया का असबाब यह सब नहीं हैं १४. भावनाएँ।

को अचानक बदल लेने की जो ग़ैर मामूली क़ुदरत हासिल हो गई है, वो फ़िलहक़ीक़त एक हैरत अंगेज़ बात है। इसका अंदाज़ा सिर्फ़ वही लोग कर सकते हैं जिन्हें ख़ुद अपनी आँखों से इस इंक़लाबी तहव्वुल को देखने का मौक़ा मिला हो। मुझे आठ बरस से यह मौक़ा हासिल है।

नवाब सद्र यारजंग एक ख़ानदानी रईस हैं। मुल्क के सियासी मामलात में उनका तर्ज़े-अमल वही रहता आया है जो अमूमन मुल्क के तबक़ये रउसा[1] का है। यानी सियासी कशमकश के मैदानों से अलहदगी और अपने गोशये-सुकून ओ जमीअत[2] पर क़नाअत[3]। बरख़िलाफ़ इसके मौलाना की पूरी ज़िंदगी सियासी जद्दोजहद की जंग आज़माई और मारका-आराई की ज़िंदगी है। लेकिन सूरते-हाल का यह इख़्तिलाफ़[4] बल्कि तज़ाद[4] एक लमहे के लिये भी उनके बाहमी अलायक़[5] की यगानगत ओ यकजहती पर असर नहीं डाल सकता। न कभी मौलाना सियासी मामलात की तरफ़ कोई इशारा करेंगे, न कभी नवाब साहब की जानिब से कोई ऐसा तज़किरा दरम्यान आयेगा। दोनों का इलाक़ा ज़ाती मुहब्बत ओ इख़लास और ज़ौक़े-अमल ओ अदब के इश्तराक का इलाक़ा है और हमेशा इसी दायरे मे महदूद रहता है। चुनांचे क़िलये-अहमदनगर के एक मकतूब मुवर्रिख़ा[6] २६ अगस्त सन् १६४२ में वो सियासी हालत की तरफ़ इशारा करते हुये लिखते हैं—"मुझे यह क़िस्सा यहाँ नहीं छेड़ना चाहिये। मेरी आपकी मजलिस-आराई इस अफ़साना सराई के लिये नहीं हुआ करती।

अज़ मा बजुज़ हिकायते-मह्र ओ वफ़ा मपुर्स[7]

"मेरी दुकाने-सुख़न में एक ही तरह की जिंस नही रहती। लेकिन आपके लिये कुछ निकालता हूँ तो एहतियात की छलनी में अच्छी तरह छान लिया करता हूँ कि किसी तरह की सियासी मिलावट बाक़ी न रहे।"

१५ जून सन् १६४५ को मौलाना तीन बरस की क़ैद ओ बंद के बाद रिहा हुये और इस हालत में रिहा हुये कि चालीस पाउंड वज़न कम हो चुका था और तन्दुरुस्ती जवाब दे चुकी थी। लेकिन रिहाई के बाद ही उन्हें फ़ौरन शिमले पहुँचना, और शिमला कान्फ्रेंस की मशग़ूलियतों मे गुम हो जाना पड़ा। अब वो क़िलये-अहमदनगर और बांकुड़ा के क़ैदख़ाने की जगह वाइसरीगल

---

१. रईस लोगों का २. सुख शांति की एकांतता ३. संतोष ४. फ़र्क़ या विरोध ५. आपसी संबंध ६. तारीख़ का ७. मुझसे सिवा प्यार और मुहब्बत की बातों के और कुछ मत पूछ। इस शेर का पहला मिसरा है "मा क़िस्सये-सिकंदर ओ दारा न ख़्वांदाएम" मैंने सिकंदर और दारा के क़िस्से नहीं पढ़े हैं।

लाज शिमला के मेहमान थे। लेकिन यहाँ भी सुबह चार बजे की सहरख़ेज़ी[1] और ख़ुदमशग़ूली[2] की मामूलात बराबर जारी रहीं। एक दिन सुबह अचानक नवाब साहब की याद सामने आ जाती है और वो एक शेर लिख कर तीन बरस पेशतर की ख़त ओ किताबत का सिलसिला अज़-सरे-नौ ताज़ा कर देते हैं। फिर तबदीले-आबोहवा के लिये कश्मीर जाते हैं और तीन हफ़्ते गुलमर्ग में मुक़ीम हो जाते हैं। गुलमर्ग से सिरीनगर आते हैं और एक हाउस बोट में मुक़ीम रहते हैं। यह हाउस बोट नसीमबाग़ के किनारे लगा दिया गया था और मौलाना की सुबहें उसी के ड्राइंग रूम में बसर होने लगी थीं। यहाँ फिर ख़त ओ किताबत का सिलसिला जारी होता है और ३ सितम्बर सन् १९४५ ई० को मौलाना अपने एक मकतूब में क़िलअ़े-अहमदनगर के हालात की हिकायत छेड़ देते हैं और इन मकातीब की निगारिश के असबाब ओ मुहर्रिकात[3] की तफ़सीलात लिखते हैं जो इस मजमुअ़े में जमा किये गये हैं। चूंकि रिहाई के बाद के मकातीब का यह हिस्सा भी इन मकातीब से मरबूत[4] हो गया है, इसलिये मौलाना से इजाज़त लेकर मैंने उन्हें भी इस मजमुअ़े की इब्तदा में शामिल कर दिया है। रिहाई के बाद के ये मकातीब इस मजमुअ़े के लिये दीबाचे का काम देंगे।

मौलाना को सैकड़ों ख़ुतूत लिखने और लिखवाने पड़ते हैं। और ज़ाहिर है कि इनकी नुक़ूल[5] नही रखी जा सकतीं। लेकिन अफ़सोस है कि उन्होंने अपने ख़ास इल्मी और अदबी मकातीब की नुक़ूल रखने की कभी कोशिश नहीं की। और इस तरह सैकड़ों मकातीब ज़ाया गये।

सन् १९४० ई० में, मैंने मौलाना से दरख़्वास्त की कि जो ख़ास मकातीब वो दोस्ताने-ख़ास को लिखा करते हैं उनकी नुक़ूल रखने की मुझे इजाज़त मिले। चुनांचे मौलाना ने इजाज़त दे दी और अब ऐसा होने लगा कि जब कभी मौलाना कोई मकतूबे-ख़ास अपने ज़ौक़ ओ कैफ़[6] में लिखते मैं पहले उसकी नक़ल कर लेता फिर डाक में डालता। नवाब साहब के नाम सन् १९४० ई०, सन् १९४१ और सन् १९४२ ई० में जिस क़दर ख़ुतूत लिखे गये सबकी नुक़ूल मैंने रख ली थी और मेरे पास मौजूद हैं। चुनांचे इसी बिना पर रिहाई के बाद मौलाना ने क़िलअ़े-अहमदनगर के मकातीब मेरे हवाले किये कि हस्बे-मामूल इनकी नुक़ूल रख लूं और असल नवाब साहब की ख़िदमत में ब-यकदफ़ा[7] भेज दूं। लेकिन मैंने जब इनका मुताला[8] किया तो ख़याल हुआ कि इन तहरी-

---

१. सबेरे उठना २. काम में लग जाना ३. वजह, प्रेरणा ४. संगठित, संबंधित ५. नक़ल का बहुबचन, प्रतिलिपि ६. अभिरुचि और आनंद में ७. एकदम ८. पाठ।

रात का महज़ निजके ख़ुतूत की शक्ल में रहना और शाया न होना उर्दू अदब की बहुत बड़ी महरूमी[१] और अरबाबे-ज़ौक़[२] की नाक़ाबिले-तलाफ़ी[३] हिरमानी[४] होगी। मौलाना उस वक़्त शिमले मे थे। मैंने ब-इसरार उनसे दरख़्वास्त की कि इन मकातीब को एक मजमुए की शक्ल मे शाया करने की इजाज़त दे दें। मुझे यक़ीन है कि मुल्क के तमाम अरबाबे-ज़ौक़ ओ नज़र इस वाक़ये के शुक्रगुज़ार होंगे कि मौलाना ने अशाअत की इजाज़त दे दी और इस तरह मैं इस क़ाबिल हो गया कि यह मजमुआ दीदावराने-इल्म ओ अदब[५] की ज़ियाफ़ते ज़ौक़[६] के लिए पेश करूँ।

सन् १९४२ ई० मे गिरफ़्तारी से पहले मौलाना लाहौर गये थे। वहाँ इंफ़्लुयेंज़ा की शिकायत लाहक़[७] हो गई थी। उसी हालत मे कलकत्ते आये और सिर्फ़ तीन दिन ठहर कर, २ अगस्त को आल इण्डिया कांग्रेस कमीटी की सदारत करने के लिए बंबई रवाना हो गये। बंबई जाते हुए रेल में उन्होंने एक मकतूब नवाब साहब के नाम लिख कर रख लिया था कि बंबई पहुँच कर मुझे दे देंगे, मैं हस्बे-मामूल उसकी नक़ल रख कर असल डाक मे डाल दूँगा। लेकिन बंबई पहुँचने के बाद वो अपनी मशरूफियतों[८] मे ग़र्क़ हो गये और मकतूबे-सफर उनके अटाची केस में पड़ा रह गया। यहाँ तक कि ९ अगस्त की सुबह को वे गिरफ़्तार हो गये। चूँकि किलए-अहमदनगर के पहले मकतूब मे उस खत का ज़िक्र आया है इसलिये मुनासिब मालूम हुआ कि उसे भी इब्तदा मे शामिल कर दिया जाये। चुनांचे वो शामिल कर दिया गया है।

मैंने इरादा किया था कि मौलाना के उस्लूबे-निगारिश (स्टाइल) की निस्बत[९] अपने तास्सुरात[१०] के इज़हार[११] की जुरअत[१२] करूँगा। लेकिन जब इस इरादे को अमल मे लाने के लिये तैयार हुआ तो मालूम हुआ कि ख़ामोशी के सिवा चारये-कार नही। क्योंकि जितना कुछ और जैसा कुछ लिखना चाहिये उसकी यहाँ गुंजाइश नही, और जिस क़दर लिखने की गुंजाइश है, वो इज़हारे-तास्सुरात के लिये काफ़ी नही। सिर्फ़ इतना इशारा कर देना चाहता हूँ कि फ़्रांसीसी अदबियात मे अदब की जिस नौइयत को "अदबे-आला" के नाम से ताबीर किया गया है, अगर उर्दू अदब मे उसकी कोई मिसाल हमें मिल सकती है तो वो सिर्फ़ मौलाना की अदबियात है।

मौलाना ने अपने उस्लूबे-निगारिश के मुख़्तलिफ़ ढंग रखे है। क्योंकि हर मौज़ू[१३] एक ख़ाश तरह का उस्लूब चाहता है और उसी उस्लूब में उसका

---

१. वंचना २. सुरुचि-संपन्न लोग ३. जिसकी क्षतिपूर्ति न हो सके ४. वंचना, निराशा ५. ज्ञान और साहित्य के पारखी या द्रष्टा ६. रुचि की दावत ७. लग गई ८. व्यस्तताओं में ९. बारे में १०. अनुभूति ११. जाहिर करने की १२. हिम्मत १३. विषय।

रंग उभर सकता है। दीनी[१] मबाहिस[२] के लिए जो उस्लूबे-तहरीर[३] मौज़ू होगा, तारीख़ के लिए मौज़ू न होगा। तारीख़ी मबाहिस जिस तर्ज़े-किताबत के मुतकाज़ी[४] होते है, ज़रूरी नही कि अदबी[५] निगारिशात[६] के लिए भी मौज़ू[७] हो। आम हालत यह है कि हर शख़्स एक ख़ास तरह का उस्लूबे-तहरीर इख़्तियार कर लेता है, और फिर जो कुछ लिखता है उसी रंग में लिखता है। लेकिन मौलाना की खुसूसियत[८] यह है कि उन्होंने अपने इल्म ओ ज़ौक़ के तनव्वो[९] की तरह अपना उस्लूबे-तहरीर भी मुख़्तलिफ़ क़िस्मों का रखा है। आम दीनी और इल्मी मतालिब को वो एक ख़ास तरह के उस्लूब मे लिखते है। सहाफ़त[१०] निगारी के लिये उन्होंने एक दूसरा उस्लूब इख़्तियार किया है और खालिस अदबी इंशापरदाज़ी[११] के लिये इन दोनो से अलग तरीक़े-निगारिश है।

जिस ज़माने मे "अलहिलाल" निकला करता था तो उसमे कभी-कभी वो खालिस अदबी किस्म की चीज़े भी लिखा करते थे। उन तहरीरों में उन्होने एक ऐसा मुज्तहिदाना[१२] उस्लूब इख़्तियार किया था जिसकी कोई दूसरी मिसाल लोगों के सामने मौजूद न थी। उस उस्लूब के लिये अगर कोई ताबीर[१३] इख़्तियार की जा सकती है तो वो सिर्फ़ "शेरे-मंसूर" की है याने वो नस्र[१४] में शायरी किया करते थे। उनकी तहरीर अज़-सर-ता-पा[१५] शेर होती थी। सिर्फ़ एक चीज़ उसमे नही होती थी याने वज़न और इसलिये उसे नज्म की जगह नस्र कहना पड़ता था।

इस तर्ज़े-तहरीर का एक ख़ास तरीक़ा यह था कि वो अपनी नस्र की शायरी को शोअरा[१६] की नज़्म की शायरी से मख़लूत और मरबूत[१७] करके तरतीब देते थे। और यह इख़्तिलात[१८] और इर्तिबात[१९] इस तरह वजूद मे आता था कि अशआर[२०] सिर्फ़ मतालिब[२१] की मुनासिबत ही से नही आते बल्कि बजाये-खुद मतालिब का एक जुज़[२२] बन जाते थे। ऐसा जुज़ कि अगर उसे अलग कर दीजिये तो खुद नफ्से-मतलब[२३] का एक ज़रूरी और लायनफ़क[२४] जुज़ अलग हो जाये। अक्सर हालतो मे मतालिब का सिलसिला इस तरह फैलता था कि पूरा मज़मून नस्र के छोटे-छोटे पैराग्राफ़ों से मुरक्कब[२५] होता और हर पैराग्राफ

---

१. धार्मिक २. विषय ३. लेखन-शैली ४. तक़ाज़ा करने वाले ५. साहित्यिक ६. लेखन ७. उचित ८. विशेषता ९. विभिन्नता १०. अखबारी लेखन ११. लेखन १२. सबसे निराला १३. उपमा १४. गद्य १५. आद्योपान्त १६. कवि १७. मिला जुला कर १८. मिश्रण १९. मेलजोल २०. शेर का बहुवचन, पद्य की कड़ी २१. मतलब का बहुवचन २२. अंश २३. सार २४. अभिन्न २५. गठित।

किसी एक शेर पर ख़त्म होता। यह शेर नस्र के मतलब से ठीक उसी तरह जुड़ा और बँधा हुआ होता जिस तरह एक तरकीब बन्द का हर बंद टीप के किसी शेर से वाबस्ता[१] होता है और वो शेर बंद का एक ज़रूरी जुज़ बन जाता है।

लोग नस्र में अशआर लाते हैं तो अमूमन इस तरह लाते हैं कि किसी जुज़ई[२] मुनासिबत से कोई शेर याद आ गया और किसी खास महल मे दर्ज कर दिया गया। लेकिन मौलाना इस क़िस्म की तहरीरात में जो शेर दर्ज करेंगे उसकी मुनासिबत महज़ जुज़ई मुनासिबत न होगी बल्कि मज़मून का एक टुकड़ा बन जायेगी। गोया ख़ास इसी महल[३] के लिए शायर ने यह शेर कहा है, और मतलब का तकाज़ा पूरा करने और अधूरी बात को मुकम्मल[४] कर देने के लिए इसके बग़ैर चारा नही। इस तर्जे-तहरीर पर वही शख्स कादिर[५] हो सकता है जो कामिल[६] दर्जे का शायराना फ़िक्र रखने के साथ-साथ, असातज़ा[७] के बेशुमार अशआर भी अपने हाफ़िज़े[८] में महफ़ूज़ रखता हो, और मतालिब की हर किस्म और हर नौइयत[९] के लिए जिस तरह के अशआर भी मतलूब[१०] हों फ़ौरन हाफ़िज़े से निकाल ले सकता हो। फिर साथ ही उसका ज़ौक़ भी इस दर्जे सलीम[११] और बेदाग हो कि सिर्फ़ आला दर्जे के अशआर ही हाफ़िज़ा कबूल करे और हुस्ने-इंतख़ाब[१२] का मैयार[१३] किसी हाल में भी दर्जे से न गिरे। इस ऐतबार से मौलाना के हाफ़िज़े का जो हाल है वो हम सबको मालूम है। क़ुदरत ने उन्हें जो खसायस[१४] बख़्शे हैं, शायद उन सब मे हाफिज़े की नैमते-लाज़वाल[१५] सबसे बड़ी नैमत है। अरबी, फारसी और उर्दू के कितने अशआर उनके हाफ़िज़े मे महफ़ूज होगे? यह किसी को मालूम नही। गालिबन[१६] खुद उन्हे भी मालूम नही। लेकिन जूं ही वो क़लम उठाते हैं और मतालिब की मुनासिबते उभरने लगती है, मअन उनके हाफ़िज़े के बंद किवाड खुलने शुरू हो जाते हैं और फिर ऐसा मालूम होता है कि हर किस्म और नौइयत के सैकड़ों शेर परा[१७] बाँधे सामने खड़े हैं। जिस शेर की जिस जगह ज़रूरत हुई, फ़ौरन उसे निकाला और अंगूठी के नगीने की तरह मज़मून में जड़ दिया।

आम इल्मी और दीनी मबाहिस की तहरीरात में मौलाना बहुत कम अशआर लाया करते हैं। सफहों के मफहे लिख जायेंगे और एक शेर भी नहीं

---

१. जुड़ा हुआ २. आंशिक ३. मौक़े के लिए ४. पूर्ण ५. अधिकार प्राप्त ६. पूर्ण ७. उस्ताद का बहुवचन, उस्तादों ८. स्मृति ९. क़िस्म १०. आवश्यक ११. गंभीर १२. चुनाव की खूबी १३. मापदंड १४. विशेषतायें १५. न घटने वाला उपहार १६. संभवतः १७. क़तार बाँधे।

आयेगा। लेकिन इस खास उस्लूबे-तहरीर में वो इस कसरत के साथ अशआर से काम लेते हैं कि हर दूसरी तीसरी सतर के बाद एक शेर ज़रूर आ जाता है और मतलब के हुस्न ओ दिल-आवेज़ी[1] का एक नया पैकर[2] नुमाया कर देता है।

किलअ़े-अहमदनगर के अक्सर मकातीब इसी तर्ज़े-तहरीर मे लिखे गये है। उन्होंने नस्र में शायरी की है और जिस मतलब को अदा किया है इस तरह किया है कि जिद्दते-फ़िक्र[3] नक़्श आराई[4] कर रही है और वुसअते तख़य्युल[5] रंग ओ रोगन भर रही है। इज्तिहादे-फिक्र[6] और तजदीदे[7]-उस्लूब मौलाना की आम और हमागीर[8] खुसूसियत है। कलम और ज़बान के हर गोशे[9] में वो तर्ज़े-आम से अपनी रविश[10] अलग रखेंगे और अल्फाज़ ओ तराकीब[11] से लेकर मतालिब और अदाये-मतालिब के तर्ज़ तक हर बात मे तकलीदे-आम[12] से गुरेज़ां[13] और अपने मुज्तहिदाना अदाज़ मे बेमेल और वेलचक नज़र आयेंगे। उन्होने जिम वक्त से क़लम हाथ मे सँभाला है हमेशा पेशरौ[14] और साहबे-उस्लूब रहे है। कभी यह गवारा नही किया कि किसी दूसरे पेशरौ के नक़्शे-क़दम[15] पर चलें। चुनांचे इन मकातीब मे भी उनका मुज्तहिदाना अंदाज़ हर जगह नुमायां[16] है। बग़ैर किसी एहतिमाम[17] और काविश[18] के कलम बरदाश्ता लिखते गये हैं। लेकिन कुदरते-बयान है जो बेसाख्तगी[19] मे भी उभरी चली आती है और काविशे-फिक्र[20] है जो आमद में भी आवुर्द[21] से ज़्यादा बनती और सँवरती रहती है।

ज़राफत[22] है तो वो अपनी बेदाग लताफत[23] रखती है, वाकयानिगारी[24] है तो उसकी नक़्शआराई का जवाब नही। फिक्र का पैमाना हर जगह बुलंद और नज़र का मैयार हर जगह अर्जमंद[25] है।

इन मकातीब पर नज़र डालते हुये सबसे ज़्यादा अहम चीज़ जो सामने आती है, वो मौलाना का दिमागी पस मंज़र (बेकग्राउंड) है। इसी पस मंज़र

---

१. मनमोहकता २. रूप ३. सोच विचार का अनोखापन ४. चित्रकारी ५. विचारो की विस्तीर्णता ६. कल्पना की चेष्टा ७. शैली की नूतनता ८. सर्वांगीरण ९. कोना या ढंग १०. ढग ११. तरकीब का बहुवचन १२. आम लोगों के अनुकरण से १३. दूर १४. अग्रदूत, अगुआ १५. पदचिन्ह १६. प्रगट १७. तैयारी १८. प्रयत्न १९. स्वतःस्फूर्त जो लिखा जाता है उसे बेसाख्ता लेख कहते हैं। २०. कल्पना की नई-नई आविष्कृतियाँ २१. जो स्वतःस्फूर्त रचना होती है उसे आमद और बना सँवार कर लिखी हुई रचना को आवुर्द कहते है। आमदन याने आना और आवुर्दन याने लाना। २२. विनोद २३. सुंदरता २४. घटना वर्णन २५. महान।

पर अफ़कार ओ अहसासात[१] की तमाम जलवा तराज़ियों[२] ने अपनी जगह बनाई है। एक शख़्स ९ अगस्त की सुबह को बिस्तर से उठा तो अचानक उसे मालूम हुआ कि वो गिरफ़्तारशुदा क़ैदी है और किसी लामालूम मुकाम पर ले जाया जा रहा है। फिर एक ऐसी शदीद[३] फ़ौजी निगरानी के अंदर जिसकी कोई पिछली मिसाल हिन्दुस्तान की सियासी जद्दोजहद की तारीख़ में मौजूद नही, किलअे-अहमदनगर की एक इमारत मे बंद कर दिया जाता है और दुनिया से तमाम अलायक़ यककलम मुनकता[४] हो जाते है। वो इस हादसे[५] के चौबीस घंटे बाद दूसरी सुबह को उठता है, और कलम उठाकर ख़ामाफ़रसाई[६] शुरू कर देता है। फिर इसके बाद हर दूसरे तीसरे दिन हालात की तहरीक[७] ख़याlात में जुंबिश[८] पैदा करती रहती है और जो कुछ दिमाग में उभरता है बेरोक नोके-क़लम के हवाले हो जाता है। देखना यह है कि ऐसे हौसला-फ़रसा[९] हालात में उनका दिमागी पस मंज़र क्या था और वक़्त के तमाम मुख़ालिफाना हालात को किस नज़र और किस मुकाम से देख रहा था? यही दिमागी पस मंज़र है जिसकी नौइयत से हर अज़ीम[१०] शख़्सियत की अज़मत[११] का असल मुकाम दुनिया के आगे नुमायां होता है। यही कसौटी है जिस पर हर इंसानी अज़मत कसी जा सकती है, और यही मैयार है जो हर इंसान की अज़मत ओ पस्ती का फ़ैसला कर देता है।

इन मकातीब में मौलाना ने खुद कोशिश की है कि अपना दिमाग़ी पस मंज़र दुनिया के आगे रख दें और इसीलिये यह ग़ैर ज़रूरी हो गया है कि इस बारे मे बहस ओ नज़र से काम लिया जाये। मैं सिर्फ़ मामले के इस पहलू पर अहले-नज़र[१२] की तवज्जो दिलाना चाहता हूँ, खुद कुछ कहना नही चाहता।

गुज़श्ता जौलाई मे जूं ही इन मकातीब की अशाअत का ऐलान हुआ, मुल्क के हर गोशे से तकाज़े होने लगे कि इनके तर्जुमों का भी सरोसामान[१३] होना चाहिये। कलकत्ता, बंबई, देहली, इलाहाबाद, कानपुर और पटना के पब्लिशरो का तकाजा था कि अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, बगाली, तामिल वगैरह ज़बानों मे इनके तर्जुमे की इजाज़त दे दी जाये। मैंने ये तमाम दरख़्वास्तें मौलाना की ख़िदमत मे पेश कर दी, लेकिन उन्होने तर्जुमे की इजाज़त नही दी। उन्होंने फ़रमाया कि चंद मकातीब के सिवा ये तमाम मकातीब एक ऐसे उस्लूब में लिखे गये है कि उनका किसी ज़बान में सिहते-ज़ौक ओ मैयार के साथ तर्जुमा हो ही नही सकता। अगर किया जायेगा तो असल की सारी ख़ुसूसियात मिट जायेंगी।

---

१. चिंतन और अनुभूतियाँ २. रूप प्रदर्शन ३. कठोर ४. कट जाते है ५. घटना ६. लिखना ७. हरकतें ८. हरकत ९. साहस तोड़ने वाले १०. महान ११. महानता १२. पारखी १३. बंदोबस्त।

चुनांचे इस वक़्त तक तर्जुमे की इजाज़त किसी फ़र्म को नहीं दी गई है। मौलाना ने जिस ख़याल से तर्जुमे को रोका है मुझे यकीन है कि इससे हर साहबे-नज़र इत्तिफ़ाक़ करेगा। यह नस्र में शायरी है, और शायरी तर्जुमे की चीज़ नहीं होती। अलबत्ता दो-चार मकतूब जो बाज़ फिलसफ़ियाना और तारीख़ी मबाहिस पर लिखे गये हैं, तर्जुमा किये जा सकते है उन्हे मुस्तस्ना[१] कर देना चाहिये।

ये तमाम मकातीब "सदीक़े-मुकर्रम" के ख़िताब[२] से शुरू होते हैं। यह "सदीक़" तश्दीद के साथ "सिद्दीक" नहीं है जैसा कि बाज़ अशखास[३] पढना चाहेगे। बल्कि बग़ैर तश्दीद के है। "सदाक़त" अरबी मे दोस्ती को कहते है। "सदीक़" याने दोस्त।

११ अप्रैल सन् १९४३ ई० के मकतूब के आख़िर में मुतम्मिम इब्न नोवेरा के मर्सिये के अशआर नकल किये गये है। यह मर्सिया उसने अपने भाई मालिक की याद में लिक्खा था :

लक़द लामनी इन्दल क़ुबूरि अलल बुक़ा
रफ़ीक़ि लितज़राफ़िद्दमूअ इस्सवाफ़िकि
फ़क़ाल अतब्की कुल्ल क़बरिन रअैतहू
लिक़ब्रिन सवा बैनल लवा फ़द्दक़ादिकि
फ़ुक़ुल्तु लहू इन्नश्शजा यबअसुश्शजा
फ़दानि फ़हाज़ा कुल्लुहू क़ब्र मालिकि

इन अशआर के मतलब का खुलासा यह है :

"मेरे रफीक[४] ने जब देखा कि कब्रो को देखकर मेरे आंसू बहने लगते हैं तो उसने मुझे मलामत की। उसने कहा यह क्या बात है कि उस एक कब्र की वजह से जो ख़ास मुकाम पर वाके[५] है, तू हर कब्र को देखकर रोने लगता है? मैंने कहा, बात यह है कि एक ग़म का मंज़र[६] दूसरे ग़म की याद ताज़ा कर दिया करता है। लिहाज़ा मुझे रोने दे, मेरे लिये तो ये तमाम कब्रें मालिक की क़ब्रें बन गई है!"

"हिकायते बेसतून ओ कोहकन" ईरान के कदीम आसार मे एक असर "बे सतून" के नाम से मशहूर है और दास्तासरायों ने इसे फरहाद कोहकन की तरफ़ मंसूब कर दिया है। मगर दर असल यह "बे सतून" नही है, "बिह सतून" (बहिस्तान या बागिस्तान) है। फारसी कदीम में "बग़" खुदा या देवता को कहते हैं। याने यह मुकाम "खुदाओ की जगह" है।

मुहम्मद अजमल ख़ां

---

१. अपवाद २. संबोधन ३. शख़्स का बहुवचन, व्यक्ति ४. मित्र ५. स्थित ६. दृश्य।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानुर्रहीम

ग़ुबारे ख़ातिर[1]

दीबाचा[2]

मीर अज़मतउल्ला बेख़बर बिलग्रामी मौलवी गुलाम अली आज़ाद बिलग्रामी के मुआसिर[3] और हमवतन थे और जद्दी[4] रिश्ते से कराबत[5] भी रखते थे। आज़ाद बिलग्रामी ने अपने तज़किरों[6] मे जा-बजा उनका तर्जुमा लिखा है और सिराजुद्दीन अली खा आरज़ू और आनंदराम मुखलिस की तहरीरात[7] मे भी उनका ज़िक्र मिलता है। उन्होने एक मुख़्तसर[8] सा रिसाला[9] "ग़ुबारे-खातिर" के नाम से लिखा था। मैं यह नाम उनसे मुस्तआर[10] लेता हूँ।

मपुर्स ता च नविश्त स्त किल्के क़ासिरे-मा
ख़ते-ग़ुबारे-मन स्त ईं ग़ुबारे-ख़ातिरे-मा"[11]

यह तमाम मकातीब[12] निज के ख़ुतूत[13] थे और इस ख़याल से नहीं लिखे गये थे कि शाया[14] किये जायेंगे। लेकिन रिहाई के बाद जब मौलवी मुहम्मद अजमल खा साहब को इनका इल्म[15] हुआ तो मुसिर[16] हुये कि इन्हे एक मजमुए[17] की शक्ल मे शाया कर दिया जाये। चूंकि उनकी तरह उनकी

---

१. दिल के गुबार २. भूमिका ३. समकालीन ४. दादा के रिश्ते से ५. सामीप्य, रिश्तेदारी ६ कविवर्णन ७. तहरीर का बहुवचन, लेख ८. छोटा सा ९. पुस्तिका १० उधार ११. मेरी अपूर्ण क़लम ने क्या लिखा है (यह) मत पूछ। ये मेरे दिल के गुबार मेरे गुबारो की रेखायें है। १२. मकतूब का बहुवचन, यानी लेख या चिट्ठी १३. ख़त का बहुवचन, पत्र १४. प्रकाशित करना १५. जानकारी होना १६. इसरार करना ज़िद करना १७. संग्रह।

ख़ातिर[1] भी मुझे अज़ीज़[2] है इसलिये इन मकातीब की अशाअत[3] का सरो-सामान[4] कर रहा हूँ। जिस हालत मे ये कलम बरदाश्ता[5] लिखे हुए मौजूद थे, उसी हालत मे तबाअत[6] के लिए दे दिये गये हैं। नज़रे-सानी[7] का मौका नही मिला।

नुस्ख़ये-शौक़ बशीराज़ा न गुंजद ज़िनहार
बगुज़ारीद कि ईं नुस्ख़ा मुजज़्ज़ा मानद[8]

नेशनल एअर लाइन्स — *अबुलकलाम*
२, फरवरी, सन् १९४६
मा बैन[9] कराची—जोधपुर

---

१. सम्मान २. प्रिय ३. प्रकाशन ४. बदोबस्त ५. बिना सोचे लिखे ६. छपने के लिये ७. दुबारा या फिर देखने का मौक़ा ८. शौक की किताब की हरगिज जिल्दबदी नही हो सकती। इस बात को दर गुज़र कर देना कि यह किताब बिखरी और अस्तव्यस्त है। ९. बीच मे।

रिहाई के बाद के बाज़[1] मकातीब नवाब सद्र यारजंग के नाम

शिमला

२७ जून सन् १९४५

अय ग़ायब अज़ नज़र कि शुदी हमनशीने-दिल
मीबीनमत अयां ओ दुआ मीफ़िरस्तमत।[2]

दिल हिकायतों[3] से लबरेज़ है मगर ज़बाने-दरमांदाये-फ़ुरसत[4] को याराये-सुखन[5] नहीं। मोहलत[6] का मुंतज़िर[7] हूँ।

अबुलकलाम

१. कुछ २. अय कि तू नज़र से ओझल है लेकिन दिल के पास है। मैं तुझे प्रगट और साक्षात देख रहा हूँ और तेरे लिये दुआएँ भेज रहा हूँ। ३. बात, कहानी, वक्तव्य ४. फ़ुरसत की मोहताज ज़बान ५. कहने की ताब, कहने की हिम्मत या ताक़त। ६. अवकाश, फ़ुरसत ७. प्रतीक्षक।

नवाब सद्र यारजंग का मकतूब

हबीबगंज (अलीगढ)
१, जौलाई, सन् १९४५

सदीके-हबीब[1]

जिस दिन बदरे-कामिल[2] गहन से निकला था, दिल ने महसूस किया था कि नूरे-अजमत[3] जहाँताब[4] होगा। हुआ, और किस शान से हुआ। २७ जून को पहाड की चोटियो का एक हगामा एक ग्रुप की शक्ल मे सामने आया। उसमे एक पैकरे-महबूब[5] भी थी। कैंची ली, मजमये-अगयार[6] से उसे जुदा किया। देखा शीराज की तरफ से सदा[7] आई

रोशन अज परतवे-रूयत नजरे नेस्त कि नेस्त
मिन्नते-खाके-दरत बर-बसरे नेस्त कि नेस्त।[8]

इस गजल का एक और शेर शायद बेमौका न हो।

मसलहत नेस्त कि अज पर्दा बिरूँ उफ़्तद राज
वरना दर महफ़िले-रिंदां ख़बरे नेस्त कि नेस्त।[9]

खैर यह तो तरानये-शीराज[10] था। कान लगाता हूँ तो शिमले की चोटियो से दूसरा तरानये-मुहब्बत[11] सामा-नवाज[12] हो रहा है :

अय गायब अज नजर कि शुदी हमनशीने-दिल
मीबीनमत अयां जो दुआ मीफ़िरस्तमत।

जो कान ने सुना तीसरे दिन नुकूशे-दिल-अफरोज[13] के पर्दे पर आँखों ने देख लिया। इजाजत[14] हो तो दूसरा मिसरा मैं भी दोहरा दूँ।

मीबीनमत अयां ओ दुआ मीफ़िरस्तमत

नियाजकीश[15]
हबीबुर्रहमान

---

१. प्यारे दोस्त २. पूर्णिमा का चाँद ३. महानता का प्रकाश ४. जगतप्रकाशक ५. प्रीतम का रूप ६. गैरों का गिरोह या समूह ७. आवाज ८. तेरे मुखारविंद से ऐसी कोई दृष्टि नही है जो प्रकाशित न हो (और) तेरे द्वार की खाक या धूल का अहसान, ऐसी कोई आँख नही है जिस पर न हो ९. यह उचित नही है कि पर्दे से रहस्य बाहर हो, हम मस्तों की महफिल मे ऐसा कोई रहस्य नही है जो प्रकट न हुआ हो १० शीराज़ के शायर हाफ़िज की रागनी। शीराज़ ईरान का एक शहर है जहाँ हाफिज फ़ारसी के बड़े मशहूर शायर हुये है जिनके ये शेर है। ११. प्रेम की रागनी १२. कर्ण-गोचर १३. दिल को रोशन करने वाली रेखाएँ। १४. आज्ञा १५. अनुग्रहीत।

नवाब सद्र यारजंग का नामये-मंज़ूम[1]

मौलाना अगस्त सन् १६४५ के अवाखिर[2] में कश्मीर गये थे और गुलमर्ग मे कयाम[3] फरमाया था। उस ज़माने मे यह नामये-मजूम पहुँचा।

हबीबगंज (अलीगढ)
६, रमजान-उल-मुबारक स० हि० १३६४

मह्व - नज्ज़ारये - गुलमुर्ग[4] निगारे दारम
कज़ खयालश - बदिले - ज़ार बहारे दारम
अय नसीमे - सहरी गर ब-हज़ूरश गुज़री
अर्ज़ा दह शौक़ कि दर जाने - फ़िगारे दारम
वर बपुरसद कि मगर शौक़े - पयामम दारद
सर फ़रूद आर ओ ज़ मन गोये कि आरे दारम[5]

दूर दस्तांरा ब नैमत याद कर्दन हिम्मत स्त
वरना हर नख़्ले बपाये-खुद समर मीअफ़गनद

असीरे-आज़ाद
हबीब

---

१. पद्यबद्ध पत्र २ आखिर का बहुवचन, आख़िर ३. टिकाव, विश्राम ४. कश्मीर की पहाडी सतहे-मुर्तफा (पठार) गुलमर्ग के नाम से मशहूर है यह असल मे गुलमर्ग होगा मर्ग वही लफ्ज़ है जो मर्ग ज़ार मे है। ५. गुलमर्ग के नज़्ज़ारो मे मेरा महबूब (प्रीतम) लीन है उसकी स्मृति से इस शोक संतप्त दिल मे बहार है। ओ प्रातः समीर! अगर तू उसके सामने से गुजरे (तो) जो अनुराग मेरे घायल प्राणो मे प्रीतम के लिये है उसे अर्ज़ करना। और अगर पूछे कि क्या मुझे कोई पयाम या सदेश देना चाहता है, (तो) सिर झुकाकर मेरी तरफ़ से कहना कि हा है (यानी सदेश देना चाहता है।) ६. जो दूर है, या जिन के हाथ पहुँच से दूर है उन्हे नैमत या उपहार देकर याद करना एक बडी बात है। वरना प्रत्येक पेड़ अपने पैरो पर तो फलो को खुद गिराता ही है। ७. आज़ाद का क़ैदी या बंदी।

मौलाना का मकतूबे-सिरीनगर

हाउस बोट सिरीनगर
२४, अगस्त, सन् १९४५

गहे अज़ दस्त, गाहे अज़ दिल, ओ गाहे ज़ पा मानम
ब सुरअ़त मीरवी अय उम्र ! मीतरसम कि वा मानम[1]

सदीके-मुकर्रम

जिदगी के बाजार मे जिसे-मकासिद[2] की बहुत सी जुस्तजूये[3] की थी। लेकिन अब एक नई मताअ[4] की जुस्तजू मे मुब्तिला[5] हो गया हूँ। यानी अपनी खोई हुई तन्दुरुस्ती ढूंढ रहा हूँ। मुआलिजों[6] ने वादिये-कश्मीर[7] की गुलगश्तों[8] मे सुरागरसानी[9] का मशविरा[10] दिया था। चुनाचे[11] गुज़श्ता[12] माह के अवाखिर मे गुलमर्ग पहुँचा और तीन हफ़्ते तक मुकीम[13] रहा। खयाल था कि यहाँ कोई सुराग[14] पा सकूंगा। मगर हर चद जुस्तजू की, मताअे-गुमगश्ता[15] का कोई सुराग नही मिला।

निकल गई है वो कोसों दियारे-हिरमां[16] से

आपको मालूम है कि यहाँ फैज़ी ने कभी बारे-ऐश[17] खोला था।

हज़ार क़ाफ़िलये-शौक़ मीकशद शबगीर
कि बारे-ऐश कशायद बखित्तये-कश्मीर[18]

लेकिन मेरे हिस्से मे नाखुशी और अलालत[19] का बार[20] आया। यह बोझ जिस तरह कांधों पर उठाये आया था, उसी तरह उठाये वापस जा रहा हूँ।

---

१. कभी हाथो से, कभी दिल से और कभी पावों से त्रस्त हूँ, ओ उम्र तू तेज़ी से जा रही है ! मुझे डर है कि पिछड जाऊंगा। २. वाछित वस्तुयें ३. तलाश ४. पूंजी, सामग्री, यही शब्द 'माल-मता' मे है। ५. फँस जाना ६. इलाज करने वाला, वैद्य ७. कश्मीर की घाटी ८ फूलों की सैर ९. टोहना १०. परामर्श, सलाह ११. अतएव, इसलिये १२. गुजरा हुआ १३. ठहरने वाला, स्थित १४. रात १५. खोई हुई पूंजी १६. नाउम्मीदी के देश से १७. ऐश की गठरी १८. रात का आखिरी पहर मन की उमंगों के हजारों काफिलों को खीचता है ताकि काश्मीर के क्षेत्र में ऐश का बार या गठरी खोली जाय। १९. बीमारी २०. बोझ।

खुद ज़िदगी भी सर-ता-सर[1] एक बोझ ही है। खुशी से उठायें या नाखुशी से, मगर जब तक बोझ सर पर पड़ा है, उठाना ही पड़ता है :

मा ज़िदा अज़ीनेम कि आराम न गीरेम[2]।

गुलमर्ग से सिरीनगर आ गया हूँ और एक हाउस बोट मे मुक़ीम[3] हूँ। कल गुलमर्ग से रवाना हो रहा था कि डाक आई और अजमलखा साहब ने आपका मकतूबे-मज़ूम हवाले किया। कह नही सकता कि इस पयामे-मुहब्बत[4] को दिले-दर्दमद[5] ने किन आँखो से पढा और किन कानो मे सुना। मेरा और आपका मामला तो वो हो गया है जो गालिब ने कहा था :

चूं बा तूई मग्रामला बर ख़ेश मिन्नत स्त
अज़ शिकवये-तो शुक्रगुज़ारे-ख़ुद अेम मा।[6]

आपने अपने तीन शेरों का पयामे-दिलनवाज़[7] नही भेजा है — लुत्फ ओ इनायत[8] का एक पूरा दफ्तर खोल दिया है :

क़लीलुन मिन्क यक फ़ीनी व लाकिन
क़लीलुक लायुक लुलहु क़लीलु[9]

इन सुतूर[10] को आयदा खामाफरसाइयो[11] की तमहीद तसव्वुर कीजिये। रिहाई के बाद जो कहानी सुनानी थी वो अभी तक नोके-कलम[12] से आश्ना[13] न हो सकी। वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहु।[14]"

अबुलकलाम

---

१. अथ से इति तक, सरासर २. हम इसीलिये ज़िदा है कि आराम नही करते ३. ठहरा ४ प्रेम पाती ५. दुखी दिल ६. जब मामला तुझ जैसे से है तो मैं खुद का कृतज्ञ हूँ। तेरी शिकायतों से मैं खुद अपना शुक्रगुज़ार हूँ। ७. दिल खुश करने वाला संदेश ८. मेहरबानी ९. कवि अपनी प्रेमिका से कहता है कि—तेरी तरफ से कुछ थोडा सा भी मेरे लिये काफी है। लेकिन तेरी तरफ से थोडे को भी थोड़ा नही कहा जायगा १०. सतर का बहुवचन यानी लाइन ११. लिखना १२. कलम की नोक १३. परिचित १४. सलाम हो आप पर ईश्वर की दया आप पर हो और उसकी बरकतें हों।

मकतूबे-नसीमबाग़

नसीमबाग़-सिरीनगर
३, सितंबर, सन् १९४५

अज़ मा मपुर्स दर्दे-दिले-मा, कि यक ज़मां
ख़ुदरा बहीला पेशे-तू ख़ामोश कर्दा अेम ।[1]

सदीके-मुकर्रम

वही सुबह चार बजे का जाफिज़ा[2] वक्त है। हाउस बोट मे मुकीम हूँ। दहनी तरफ झील की वुसअत[3] शालामार और निशात बाग तक फैली हुई है। बाई तरफ नसीमबाग के चुनारों की कतारें दूर तक चली गई है। चाय पी रहा हूँ और आपकी याद ताजा कर रहा हूँ ।

गरचे दूरेम, बयादे-तू क़दह मीनोशेम
बुअ़्दे-मंज़िल न बुवद दर सफ़रे-रुहानी ।[4]

गिरफ़्तारी से पहले आखिरी खत जो आपके नाम लिख सका था, वह ३, अगस्त सन् १९४२ की सुबह का था । कलकत्ते से बम्बई जा रहा था । रेल मे खत लिख कर रख लिया कि बबई पहुँच कर अजमल खा साहब के हवाले करूँगा। वो नकल रख कर आपको भेज देंगे। आपको याद होगा कि उन्होंने खुतूत की नुक़ूल[5] रखने का इसरार किया था। और मैंने यह तरीका मज़ूर कर लिया था। लेकिन बबई पहुँचते ही कामो के हुजूम मे इस तरह खोया गया कि अजमल खां साहब को खत देना भूल गया। ९ अगस्त की मुबह को जब मुझे गिरफ्तार करके अहमदनगर ले जा रहे थे तो बाज़ कागजात रखने के लिए राह मे अटैचीकेस खोला और यकायक वो खत सामने आ गया। अब दुनिया से तमाम इलाके[6] मुनकता[7] हो चुके थे। मुमकिन न था कि कोई खत डाक मे डाला जा सके । मैंने उसे अटैचीकेस से निकालकर मसविदात[8] की फ़ाइल में रख दिया और फ़ाइल को सदूक मे बंद कर दिया।

दो बजे हम अहमदनगर पहुँचे और पद्रह मिनट के बाद किले के अदर

---

१. मुझसे मेरे दिल का दर्द मत पूछ, क्योंकि एक ज़माना हो गया मैंने किसी बहाने से खुद को तेरे सामने खामोश कर रखा है २. दिल खुश करने वाला ३. विस्तार ४. यद्यपि मैं दूर हूँ लेकिन तेरी याद के साथ प्याला पी रहा हूँ (और) रुहानी सफर मे मंजिल की दूरी नही हुआ करती ५. नकल का बहुवचन। ६. सम्बध ७. कट चुके थे ८. मसौदों की।

महबूस[1] थे। अब उस दुनिया में जो किले के बाहर थी और इस दुनिया मे जो क़िले के अदर थी, बरसो की मसाफत हायल हो गई।

कैफ़ल वुसुल इला सुग्रादिन, वदूनहा
क़ुललुलजिबालि व बैनहुन्न हुतुफ़ु।[2]

दूसरे दिन यानी १०, अगस्त को हस्बे-मामूल सुबह तीन बजे उठा। चाय का सामान जो सफ़र मे साथ रहता है, वहाँ भी सामान के साथ आ गया था। मैंने चाय दम दी, फिजान[3] सामने रखा और अपने खयालात मे डूब गया। खयालात मुख्तलिफ मैदानो मे भटकने लगे थे। अचानक वो खत जो ३, अगस्त को रेल मे लिखा था और कागज़ात मे पड़ा था, याद आ गया। बेइख्तियार[4] जी चाहा कि कुछ देर आपकी मुखातिबत[5] मे बसर करूँ, और आप सुन रहे हों या न सुन रहे हो, मगर रूये-सुखन[6] आप ही की तरफ रहे। चुनाचे उस आलम मे एक मकतूब कलमबंद हो गया। और उसके बाद हर दूसरे-तीसरे दिन मकतूबात कलमबंद होते रहे। आगे चलकर बाज दीगर अहबाब[7] ओ अग्रिज्ज़ा[8] की याद भी सामने आई और उनकी मुखातिबत मे भी गाह गाह[9] तबश्रे-वामादाये-हाल[10] दराज़नफसी[11] करती रही। कैदखाने के बाहर की दुनिया से अब सारे रिश्ते कट चुके थे, और मुस्तकबिल[12] परदये-गैब मे[13] मस्तूर[14] था। कुछ मालूम न था ये मकतूबात कभी मकतूब इलैहिम[15] तक पहुँच भी सकेंगे या नही। ताहम ज़ौके-मुखातिबत की तलबगारियाँ कुछ इस तरह दिले-मुस्तमद[16] पर छा गई थी कि कलम उठा लेता था तो फिर रखने को जी नही चाहता था। लोगों ने नामाबरी का काम कभी कासिद से लिया, कभी बाले-कबूतर से। मेरे हिस्से मे अन्का[17] आया :

ईं रस्मो राहे-ताज़ा ज़ हिरमाने-अहदे-मा स्त
अन्क़ा बरोज़गार कसे नामाबर न बूद।[18]

---

१. कैद २. प्रेमिका का नाम सुग्राद है। अक्सर अरबी के कवि प्रेमिका को इसी नाम से सबोधित करते है। सुग्राद तक पहुँचा कैसे जाय, क्योंकि उस तक पहुँचने के पहले पहाडो की चोटियां है, और इन चोटियो के बीच मे मौतें है। ३ शीशे की प्याली ४. बरबस ५. बातचीत ६. बात का रुख ७ हबीब का बहुवचन, दोस्त ८. अज़ीज़ का बहुवचन, प्रिय बंधु ९. कभी-कभी १०. परिस्थितियो से परेशान प्रकृति ११. बात को तूल देना १२. भविष्य १३. अदृश्य पर्दा १४. छिपा १५. जिसे पत्र लिखा जाय १६. दर्दमद दिल १७. एक काल्पनिक पक्षी, इसका लाक्षणिक अर्थ यह भी है कि वस्तु अप्राप्य और अनोखी है १८. यह नई रीत मेरे ज़माने की नाउम्मीदी से है (वरना) अन्का दुनिया मे किसी का पत्रवाहक नही हुआ है।

१०, अगस्त सन् १९४२ से मई सन् १९४३ तक इन मकतूबात की निगारिश का सिलसिला जारी रहा। लेकिन उसके बाद रुक गया। क्योंकि ९, अप्रैल १९४३ के हादिसे[1] के बाद तबअ़े-दरमादाये-हाल[2] भी रुक गई थी और अपनी वामादगियों[3] मे गुम थी। अगरचे इसके बाद भी बाज़ मुसन्निफात[4] की तसवीद[5] और तरतीब का काम बदस्तूर जारी रहा, और किलअ़े-अहमदनगर की और तमाम मामूलात भी वगैर किसी तगय्युर[6] के जारी रही, ताहम यह हकीकते-हाल छिपाना नही चाहता कि करार और सुकून की यह जो कुछ नुमाइश थी जिस्म ओ सूरत[7] की थी — कल्ब ओ बातिन[8] की न थी। जिस्म को मैंने हिलने से बचा लिया था — मगर दिल को नही बचा सका था :

दिले-दीवानये दारम कि दर सहरा स्त पिंदारी[9]

इसके बाद भी गाह गाह हालात की तहरीक[10] काम करती रही और रिश्तये-फिक्र की गिरहे खुलती रही। मगर अब सिलसिलये-किताबत[11] की वो तेज रफ्तारी मफकूद[12] हो चुकी थी जिसने अवायल[13] हाल में तबीयत का साथ दिया था। अप्रैल सन् १९४५ मे जब अहमदनगर से बांकुड़ा में क़ैद तबदील कर दी गई तो तबीयत की आमादगियों[14] ने आखिरी जवाब दे दिया। अब सिर्फ बाज मुसन्निफात की तकमील[15] का काम जारी रखा जा सका। और किसी तहरीर ओ तसवीद के लिए तबीयत मुस्तैद न हुई। आखिरी मकतूब जो बाज़ सियासी मसायल की निस्बत एक अजीज के नाम से कलमबद हुआ है, ३ मार्च सन् १९४५ का है। इस मकतूब पर यह दास्ताने-बेसतून ओ कोहकन खत्म हो जाती है। अगरचे ज़िंदगी की दास्तान अभी तक खत्म नही हुई है :

शम्मये अज दास्ताने-इश्क़े-शोरअंगेज़े-मा स्त
ईं हिकायतहा कि अज फ़रहाद ओ शीरीं कर्दा अंद[16]

गौर कीजिये तो इंसान की ज़िदगी और उसके अहसासात[17] का भी कुछ अजीब हाल है। तीन बरस की मुद्दत हो या तीन दिन की, मगर जब गुजरने पर आती है तो गुजर ही जाती है। गुज़रने से पहले सोचिये तो हैरानी होती

---

१. दुर्घटना २. परिस्थितियों से लाचार प्रकृति ३. परेशानियो ४. लेख ५. लिखना ६. परिवर्तन ७. शरीर और बाहर की ८. दिल और अंतर ९. मेरा दिल दीवाना है ताकि यह मालूम हो कि जंगल में है १०. हरकत ११. लिखना १२. खत्म होना १३. प्रारंभ मे १४. तत्परता १५. पूर्ण करना १६. ये कहानियाँ जो शीरी और फ़रहाद की रची गई है (दर असल) मेरे शोर अगेज इश्क की कहानियों का कण भर है १७. अनुभूतियाँ।

है कि यह पहाड सी मुद्दत क्यो कर कटेगी ? गुज़रने के बाद सोचिये तो ताज्जुब होता है कि जो कुछ गुज़र चुका वो चद लमहों से ज़्यादा न था ।

रिहाई के बाद जब कांग्रेस वर्किंग कमीटी की सदारत के लिये २१ जून को कलकत्ते से बबई आया और उसी मकान और उसी कमरे मे ठहरा जहाँ तीन बरस पहले अगस्त १९४२ में ठहरा था, तो यकीन कीजिये, ऐसा महसूस होने लगा था जैसे ७ अगस्त और उसके बाद का सारा माजरा कल की बात है — और यह पूरा जमाना एक सुबह शाम से ज्यादा न था । हैरान था कि जो कुछ गुजर चुका वो ख्वाब था, या जो कुछ गुजर रहा है यह ख्वाब है ।

हैं ख्वाब में हनूज़ जो जागे हैं ख्वाब में !

१५ जून को जब बांकुडा मे रिहा हुआ तो तमाम मकतूबात निकाले और एक फ़ाइल मे बतरतीबे-तारीख़ जमा कर दिये । खयाल था कि उन्हे हस्बे-मामूल[1] नक़ल करने के लिए दे दूँगा और फिर असल आपकी खिदमत मे भेज दूँगा । लेकिन जब मौलवी अजमल खां साहब को इनकी मौजूदगी का इल्म हुआ तो वो बहुत मुसिर[2] हुये कि इन्हे बिला ताखीर[3] अशाअत[4] के लिये दे देना चाहिये । चुनांचे एक खुशनवीश को शिमले में बुलाया गया और पूरा मजमूआ किताबत के लिए दे दिया गया । अब किताबत हो रही है और उम्मीद है कि अनकरीब तबाअत[5] के लिये प्रेस के हवाले कर दिया जायगा । अब मैं उन मकतूबात को क़लमी मकतूबात की सूरत मे नही भेजूंगा । मतबूआ[6] मजमूए की सूरत मे पेश करूँगा ।

शिमले मे अख़बार मदीना बिजनौर के एडीटर साहब आये थे । उन्होने मौलवी अजमल खा साहब से इस सिलसिले के पहले मकतूब की नकल ले ली थी । वो अखबारात मे शाया हो गया है । शायद आपकी नजर से गुजरा हो । "सदीक़े-मुकर्रम" के तखातुब[7] से आप समझ गये होंगे कि रूये-सुखन आप ही की तरफ था :

चश्म सूये-फ़लक ओ रूये-सुख़न सूये-तू बूद ।[8]

मकतूबात के दो हिस्से कर दिये है— गैर सियासी और सियासी । यह मजमूआ सिर्फ गैर सियासी मकातीब पर मुस्तमिल[9] है । इसके तमाम मकातीब बिला इस्तस्ना[10] आपके नाम लिखे गये है ।

---

१. यथारीति २ आग्रह करना ३. देर ४. प्रकाशन ५. छपने के लिये ६. छपा हुआ, मुद्रित ७. संबोधन ८. आँख आसमान की तरफ़ और बात का रुख़ तेरी तरफ था । ९. का बना है १०. अपवाद ।

परसो देहली का क़स्द[1] है। चूकि अमरीकन फौज के जनरल मुकीम देहली ने अज राहे-इनायत[2] अपने खास हवाई जहाज़ के यहाँ भेजने का इंतजाम कर दिया है, इसलिये मोटर कार के तकलीफदेह सफर से बच जाऊँगा और ढाई घटे मे देहली पहुँच जाऊँगा। वहाँ ईद की नमाज़ पढकर बबई के लिये रवाना होना है। १० से २४ नक बबई मे कयाम रहेगा।

अबुलकलाम

---

१. इरादा २. कृपा करके।

३, अगस्त सन् १६४२ का मकतूबे-सफ़र

जो ६, अगस्त की गिरफ्तारी की वजह से भेजा न जा सका और जिसकी तरफ़ अहमदनगर के पहले मकतूब में इशारा किया गया है।

बंबई मेल (बराहे नागपुर)
३, अगस्त सन् १६४२

सदीके-मुकर्रम,

देहली और लाहौर मे इंफ्लुएँजा की शिद्दत ने बहुत खस्ता कर दिया था। अभी तक उसका असर बाकी है। सर की गरानी[1] किसी तरह कम होने पर नहीं आती। हैरान हूँ इस वबाले-दोश[2] से क्यूंकर सुबकदोश[3] हूँ? देखिये वबाले-दोश की तरकीब ने गालिब की याद ताजा कर दी।

शोरीदगी[4] के हाथ से सर है वबाले-दोश
सहरा में अय खुदा कोई दीवार भी नहीं।

२८, जौलाई को इस वबाल के साथ कलकत्ते वापस हुआ था। चार दिन भी नही गुजरे कि कल २, अगस्त को बबई के लिये निकलना पडा। जो वबाल साथ लाया था अब फिर अपने साथ वापस ले जा रहा हूँ:

रौ में है रख्शे-उम्र[5] कहाँ देखिये थमे
ने हाथ बाग पर है, न पा है रकाब में।

मगर देखिये सुबह चार बजे के वक्ते-गिरामाया[6] की करिश्मा साजियो का भी क्या हाल है? कयाम की हालत हो या सफर की, नाखुशी की कुलफत[7] हो या दिल आशोबी[8] की काहिशें[9], जिस्म की नातवानियाँ[10] हो या दिल ओ दिमाग की अफसुर्दगियाँ[11], कोई हालत हो लेकिन इस वक्त की मसीहाइयाँ[12], उफ्तादगाने-बिस्तरे-अलमने[13] कभी तग़ाफ़ुल[14] नही कर सकती :

फ़ैजे अजबे याफ्तम अज़ सुबह बबीनेद
ईं जादये-रोशन रहे-मयख़ाना न बाशद![15]

---

१ भारीपन २ कधो के बोझ से ३. हल्का ४. परेशानी ५. उम्र का घोडा ६ अनमोल ७. रंज ८ परेशानी ६. ह्रास १०. कमज़ोरी ११. ठंडापन १२. मसीहा का काम याने जीवनदान देने का गुण १३. पीड़ा के बिस्तर पर पड़े हुये लोग १४. गफलत, प्रमाद १५. सुबह से मुझे एक अजीब उपहार मिला है, देखो कि यह प्रकाशित रास्ता मयखाने का रास्ता तो नही है!

मैं एक कूपे मे सफ़र कर रहा हूँ। इसमें चार खिडकियाँ है—दो बंद थीं दो खुली थी। मैंने सुबह उठते ही दो बंद भी खोल दी। अब रेल की रफ्तार जितनी गरम होती जाती है उतनी ही हवा के झोको की खुनकी भी बढती जाती है। जिस बिस्तरे-कर्ब[1] पर नाखुशी की कुलफतों[2] ने गिरा दिया था उसी पर नसीमे--सुबहगाही[3] की चारा-फरमाइयों[4] ने अब उठा के बिठा दिया है। शायद किसी ऐसी रात की सुबह होगी जब ख्वाजये-शीराज़ की जुबान से बेइख्तियार निकल गया था।

खुशश बादा नसीमे - सुबहगाही
कि दर्दे-शबनशीनांरा दवा कर्द।[5]

ट्रेन आजकल के मामूल के मुताबिक बेवक्त जा रही है। जिस मंजिल से इस वक्त तक गुज़र जाना था, अभी तक उसका कोई सुराग दिखाई नही देता। सोचता हूँ तो इस मुआमलये-खास मे वक्त के मुआमलये-आम की पूरी तसवीर नुमायाँ[6] हो रही है :

कस नमीगोयदम अज़ मंज़िले-आखिर खबरे
सद बयाबां बगुज़श्त ओ दिगरे दर पेश स्त।[7]

रात एक ऐसी हालत में कटी जिसे न तो इज्तराब[8] से ताबीर[9] कर सकता हूँ, न सुकून[10] से। आँख लग जाती थी तो सुकून था, खुल जाती थी तो इज़तराब था। गोया सारी रात दो मुत्तज़ाद[11] ख्वाबों के देखने में बसर हो गई। एक तामीर[12] की नक्श आराई[13] करता था, दूसरा तख़रीब[14] की बरहमजनी।[15]

बेदारिये-मयाने-दो ख़्वाब स्त ज़िंदगी
गर्दे-तख़य्युले-दो सुराब स्त ज़िंदगी।
अज़ लतमये-दो मौज हुबाबे दमीदा अस्त
याने तिलस्मे-नक़्श बर आब स्त ज़िंदगी।[16]

---

१. दुख का बिस्तर २. प्रातः समीर ३. इलाज ४. यहाँ "नाखुशी" मे महज़ खुशी का नकारात्मक अर्थ नही है बल्कि "नाखुशी" का अर्थ लिया गया है। फारसी में बीमारी को नाखुशी कहते है। ५. प्रातः समीर भी क्या खूब है कि रात के सोये हुओं के दर्द का इलाज करती है। ६. प्रगट ७. कोई मुझे आखिरी मज़िल की ख़बर नही देता। सौ जगल गुज़र चुके है और दूसरे सामने हैं। ८. बेचैनी ९. बयान करना १०. शांति ११. भिन्न १२. निर्माण १३. सजावट १४. विनाश १५. तोड़फोड़ १६. जिदगी दो सपनो के बीच का जागना है, (या) दो खयाली मृगमरीचिकाओं की गर्द है। दो लहरो के थपेडो से एक बुलबुला पैदा हुआ है याने कि ज़िदगी पानी पर एक नक्श का तिलस्म है।

तीन बजकर चद मिनट गुज़रे थे कि आँख खुल गई। सुबह की चाय के लिये सफर मे यह मामूल रहता है कि रात को अब्दुल्ला स्पिरिट का चूल्हा और पानी की केतली, पानी बमिक़दारे-मतलूब से भरी हुई, टेबल पर रख देता है। चायदानी उसके पहलू मे जगह पाती है कि बहुक्म "बजग्रश्शै फी महल्लिहि[1]" यही उसका महल्ले-सही होना चाहिये। मगर फिजान और शकरदानी के लिये उसका कुर्ब[2] जरूरी न हुआ कि "बजग्रश्शै फी गैरे महल्लिहि[4]" मे दाखिल हो जाता। अगर सुबह तीन बजे से चार बजे के अदर कोई स्टेशन आ जाता है तो अक्सर हालतो मे अब्दुल्ला आकर चाय दम दे देता है। नही आया तो फिर खुद मुझे ही अपने दस्ते-शौक की काम जोयाना[5] सरगर्मियाँ काम मे लानी पडती है। "अक्सर हालतो" की कैद इसलिये लगानी पड़ी कि तमाम कुल्लियों की तरह यह कुल्लिया भी मुस्तस्नियात[6] से खाली नही है। बाज हालतो मे गाड़ी स्टेशन पर रुक भी जाती है मगर अब्दुल्ला की सूरत नजर नही आती। फिर जब नजर नही आती है तो उसकी माजरते[7] मेरी फिक्रे-काविश[8] आश्ना के लिये एक दूसरा ही मसला पैदा कर देती है। मालूम होता है कि नसीमे-सुबहगाही का एक ही अमल दो मुख्तलिफ तबीयतो के लिये दो मुत्तजाद नतीजो का बाअस हो जाता है। उसकी आमद मुझे बेदार[9] कर देती है, अब्दुल्ला को और ज्यादा सुला देती है। इलार्म की टाइमपीस भी उसके सिरहाने रहने लगी, फिर भी नतायज का औसत तकरीबन यकसा ही रहा। मालूम नही, आप इस इशकाल का हल क्या तजवीज करेगे। मगर मुझे शेख शीराज़ का बतलाया हुआ हल मिल गया है और इस पर मुतमयिन[10] हो चुका हूँ :

बारां कि दर लताफ़ते-तबग्रश ख़िलाफ़ नेस्त
दर बाग़ लाला रोयद ओ दर शोर-बूम खस।[11]"

बहर हाल चाय का सामान हस्बे-मामूल मुरत्तब[12] और आमादा था। नही मालूम आज स्टेशन कब आये? और आये भी तो इसका इत्मीनान क्योकर हो कि अब्दुल्ला की आमद का कायदये-कुल्लिया आज ही बहालते इस्तस्ना नमूदार न होगा? मैंने दियासलाई उठाई और चूल्हा रोशन कर दिया। अब चाय पी रहा हूँ और आपकी याद ताजा कर रहा हूँ। मकसूद

---

१ वस्तु को उसके ठीक स्थान पर रखना चाहिये २ सामीप्य ४. वस्तु को अनुचित स्थान पर रखना ५ काम चाहने वाली ६. अपवाद ७. बहाने, हीले ८. चितनशील वृति ९. जागृत १०. सतुष्ट ११. बारिश कि जिसकी प्रकृति के लतीफ या सुन्दर होने मे किसी को शका नही है, बाग़ मे गुले-लाला उगाती है और ऊसर जमीन मे घास-फूस १२. तरतीब से सजा हुआ।

रहा हूँ। मकसूद इस तमाम दराज-नफसी से इसके सिवा कुछ नही कि मुखातिबत के लिए तकरीबे-सुखन[1] हाथ आये।

नफ़से बयादे-तू मीज़नम, च अिबारत ओ च मानियम[2]

चाय बहुत लतीफ है। चीन की बहतरीन किस्मो मे से है। रग इस कदर हलका कि वाहमा[3] पर उसकी हस्ती मुश्तबा[4] हो जाये। गोया अबूनवास वाली बात हुई कि

रक्क़ज्ज़ुजाजु व रक्क़तिलखमरु
फ़तशा बहा फ़तशा कललअम्रु[5]

कैफ[6] इस कदर तुद[7] कि बिला मुबालगा उसका हर फिजान काग्रानी के रतले-गरा[8] की याद ताजा कर दे।

साकी विदह रत्ले-गरां जां मय कि दहकां परवरद[9]

शायद आपको मालूम नही कि चाय के बाब मे मेरे बाज इख्तयारात[10] है। मैंने चाय की लताफत और शीरीनी को तबाकू की तुदी और तल्खी से तरकीब देकर एक कैफे-मुरक्कब[11] पैदा करने की कोशिश की है। मैं चाय के पहले घूँट के साथ ही मुत्तसिलन[12] एक सिगरेट भी सुलगा लिया करता हूँ। फिर इस तरकीबे-खास का नक्शे-अमल यू जमाता हूँ कि थोडे-थोडे वक्फे[13] के बाद चाय का एक घूट लूगा और मुत्तसिलन सिगरेट का भी एक कश लेता रहूँगा। अिल्मी-इस्तलाह मे इस सूरते-हाल को "अला सबीलित्तवाली व अत्तआकुब[14]" कहिये। इस तरह इस सिलसिलये-अमल की हर कडी चाय के एक घूट और सिगरेट के एक कश के बाहमी[15] इम्तजाज[16] से बतदरीज[17] ढलती जाती है और सिलसिलये-कार[18] दराज होता रहता है। मिकदार के हुस्ने-तनासुब[19] का अिज़बात[20] मुलाहजा हो कि इधर

---

१. बात सुननेवाला करीब हो। २. हर साँस तेरी याद मे लेता हूँ क्या इबारत हो या मानी यानी चाहे शब्द हो चाहे अर्थ ३. विचार ४. शक ५. शीशा जिसमे कि शराब है वह भी बहुत पारदर्शी है और शराब भी बहुत तरल और बिल्लौरी है। दोनो एक दूसरे के अनुरूप है। इसलिये मामला मुश्किल है कि किसे शराब कहे और किसे शीशा। ६. नशा ७ तेज ८. शराब का बडा पैमाना ९. साकी वह शराब का बडा पैमाना दे जो शराब गाँव के रहनेवाले ने बनाई है इस शेर का दूसरा मिसरा है—"शादी दिहद, गम बशिकनद, लज्ज़त दिहद जा परवरद।" मतलब यह कि वह शराब आनद देती है, दुख दूर करती है मजा देती है और प्राणो का पोषण करती है। १०. आदतें ११. मिश्रित नशा १२. साथ लगे हुए १३. अंतर १४. एक के बाद एक लगातार करते रहना १५. आपसी १६. मेल १७. श्रेणीबद्ध १८. काम का सिलसिला १९. सुमेल २०. ढंग।

फ़िजान आख़िरी जुरग्रे[१] से खाली हुआ, उधर तबाकूये-आतिशजदा ने सिगरेट के आखिरी ख़त्ते-कशीद[२] तक पहुँचकर दम लिया। क्या कहूँ इन दो अजज़ाये[३] तुंद ओ लतीफ की आमेजिश[४] से कैफ़ ओ सुरूर[५] का कैसा मौतदिल मिज़ाज तरकीब-पजीर[६] हो गया है—जी चाहता है फैजी के अल्फाज़ मुस्तआर लूं :

ऐतदाले-मआनी अज़ मन पुर्स
कि मिज़ाजे-सुख़न सिनाख़्ता अम।[७]

आप कहेगे चाय की आदत बजाये-खुद एक ग्रिल्लत थी, इस पर मजीद[८] ग्रिल्लतहाये-नाफरजाम[९] का इजाफ़ा क्यो किया जाये? इस तरह के मुआम-लात मे इमृतजाज[१०] ओ तरकीब का तरीका काम मे लाना, ग्रिल्लतो पर ग्रिल्लते बढाना गोया हिकायते बादा ओ तिरयाक[११] को ताजा करना है। मैं तस्लीम करूँगा कि यह तमाम खुदसाख़्ता आदते बिला शुबहा जिदगी की गलतियों मे दाखिल है। लेकिन क्या कहूँ, जब कभी मुआमले के इस पहलू पर गौर किया, तबीयत इस पर मुतमयिन न हो सकी कि ज़िदगी को गलतियो से यक सर मासूम बना दिया जाये। ऐसा मालूम होता है कि इस रोज़गारे-ख़राब[१२] मे ज़िदगी को ज़िदगी बनाये रखने के लिये कुछ न कुछ गलतियाँ भी ज़रूर करनी चाहिये।

पीरे-मा गुफ़्त ख़ता दर क़लमे-सना न रफ़्त
आफ़रीं बर नज़रे-पाक ख़ता पोशिश बाद।[१३]

ग़ौर कीजिये वो जिदगी ही क्या हुई जिसके दामने-खुश्क को कोई गलती तर न कर सके? वो चाल ही क्या जो लडखडाहट से यकसर मासूम हो?

तू ओ क़तओ-मनाज़िलहा, मन ओ यक लग़ज़िशे-पाये।[१४]

और फिर अगर गौर ओ फ़िक्र का एक कदम और आगे बढाइये तो सारा मुआमला बिल आख़िर वहीं जाकर ख़त्म हो जायेगा जहा कभी आरिफे-शीराज़ ने उसे देखा था :

---

१. घूट २. आखिरी हद ३. घटक ४. मिश्रण ५. आनद ६. मिल गया है ७. अर्थ के उतार चढाव मुझसे पूछो कि वाणी की प्रकृति को मैने अच्छी तरह से पहचाना है। ८. विशेष ९. बुरी, खराब १०. आपस मे मिला कर बढाना ११. शराब और अफीम खाने की बात १२. खराब दुनिया १३. मेरे पीर ने बताया कि सृष्टिकर्ता की कलम से कोई गलती नही हुई; उस पाक-नज़र पर जो कि गलतियो को ढक देती है आफरीन हो १४. तू तो मजिलो की मंजिले पार कर रहा है और मैं पैर की एक लड़खड़ाहट लिये हूँ।

बया कि रौनक़े-ई कारख़ाना कम न शवद
ज ज़ोहदे-हम चु तुई या ब फ़िस्क़े हम चु मनी।[1]

और अगर पूछिये कि फिर कामरानिये-अमल[2] का मैयार क्या हुआ अगर ये आलूदगियाँ[3] राह में मुखिल[4] न समझी गई ? तो इसका जवाब वही है जो उरफ़ाये तरीक[5] ने हमेशा दिया है :

तर्क-हमा गीर ओ आश्नाये-हमा बाश।[6]

याने तर्क ओ अख्तियार दोनो का नक्शे-अमल इस तरह एक साथ बिठाइये कि आलूदगियाँ दामन तर करे मगर दामन पकड न सके। इस राह मे काँटो का दामन से उलझना मुखिल नही होता, दामनगीर[7] होना मुखिल होता है। कुछ जरूरी नही कि आप इस डर से हमेशा अपना दामन समेटे रहे कि कही भीग न जाये। भीगता है तो भीगने दीजिये। लेकिन आपके दस्त ओ बाज़ू मे यह ताकत ज़रूर होनी चाहिये कि जब चाहा इस तरह निचोड़ के रख दिया कि आलूदगी की एक बूद भी बाकी न रही :

तर दामनी पै शेख़ हमारी न जाइयो
दामन निचोड़ दें तो फ़रिश्ते वज़ू करे

यहाँ कामरानी[8] सूद ओ जया की काविश[9] मे नही है बल्कि सूद ओ जया[10] से आसूदा[11] हाल रहने मे है। न तो तरदामनी की गरानी महसूस कीजिये न खुश्कदामनी का सुबकसरी[12], न आलूदा दामनी पर परेशा हाली हो, न पाक दामनी पर सरगरानी :

हम समंदर बाश ओ हम माही कि दर अक़लीमे-इश्क़
रूये-दरिया सलसबील ओ क़ारे-दरिया आतिश स्त।[13]

आपको एक वाकया सुनाऊँ। शायद रिश्तये-सुखन की एक गिरह इससे खुल जाय। सन् १६२१ मे जब मुझे गिरफ़्तार किया गया तो मुझे मालूम था

---

१. आ कि इस कारखाने की रौनक कम नही होगी, तुझ जैसे के त्याग से और मुझ जैसे की बदकारी से २. कर्म की सफलता ३. मैल ४. खलल डालने वाली ५. मार्ग वेत्ता ६. सर्व-त्यागी भी हो और सर्व-भोगी भी हो। ७. दामन पकड कर बैठ जाना। ८. सफलता ६. खोज, जुस्तजू १०. लाभ हानि ११. बेफिक्र १२. हलकापन १३. समदर एक तरह का काल्पनिक चूहा होता है जो आग मे रहता है यहाँ शेर का मतलब है कि समंदर और मछली दोनो ही हो क्योकि प्रेम की दुनिया में दरिया की सतह पर तो सलसबील याने स्वर्गीय नहर है और दरिया की गहराइयों मे आग है। जिसे बडवाग्नि कहते है।

कि कैदखाने मे तंबाकू के इस्तेमाल की इजाज़त नही। मकान से जब चलने लगा तो टेबल पर सिगरेट केस धरा था। आदत के ज़ेरे-असर[1] पहले हाथ बढा कि उसे जेब मे रख लू। फिर सूरते-हाल[2] का अहसास[3] हुआ तो रुक गया। लेकिन पुलिस कमिश्नर ने जो गिरफ्तारी का वारंट लेकर आया था बइसरार कहा कि जरूर जेब मे रख लो। मैंने रख लिया। उसमे दस सिगरेट थे।

एक कमिश्नर पुलिस के आफिस मे पीया, दूसरा रास्ते मे सुलगाया, दो साथियो को पेश किये, छह बाकी रह गये थे कि प्रेसीडेंसी जेल अलीपुर पहुँचा। जेल के दफ्तर से जब अंदर जाने लगा तो खयाल हुआ कि इस जेब के वबाल से सुबक-जेब होकर अंदर कदम रखू तो बेहतर है। मैंने केस निकाला और मय सिगरेटो के जेलर की नजर कर दिया। और फिर उस दिन से लेकर दो बरस तक सिगरेट के जायके से काम ओ दहन[4] आश्ना नही हुआ। साथियो मे बडी तादाद ऐसे लोगो की थी जिनके पास सिगरेट के जखीरे मौजूद रहते थे और कैदखाने का इहतिसाब[5] अमदन[6] चश्मपोशी करता था। बाज शुरबुल[7] यहूद का तरीका काम मे लाते थे

शुरबुल यहूद करते हैं नसरानियों में हम !

बाजों की जुरअते-रिदाना इस कैद ओ बंद की मुतहम्मिल[8] नही हो सकती थी। वो

व ला तुस्क़िनी सिर्रन, फ़क़द अमकनल जहरु[9]

पर अमल करते थे। मुझे यह हाल मालूम था। मगर अपने तोबये इज़्तिरार[10] पर कभी पशेमा नही हुआ। कई मर्तबा घर से सिगरेट के डिब्बे आये और मैंने दूसरो के हवाले कर दिये :

---

१. परिणाम स्वरूप, असर के नीचे २. परिस्थिति ३. मान ४. तालु और मुँह ५. निरीक्षक, निगरानी करने वाले ६ जानबूझ कर ७. इसलामी हुकूमतों मे यहूदी पोशीदा शराब बनाते थे और बेचते थे। इसलिये पोशीदा शराब पीने के मानी मे "शुरबुलयहूद" की इस्तलाह रायज हो गई। ८. बरदाश्त करना ९. पूरा शेर यह है

अला फ़सक़्नी ख़म्रन्, वक़ुल् लिहियलख़मरु
व ला तुस्क़िनी सिर्रन, फ़क़द अमकनल जहरु

याने मुझे शराब पिला और यह कहकर पिला कि यह शराब है। मुझे छिपाकर न पिला क्योंकि अब खुलकर पीना मुमकिन हो गया है।

१०. लाचारी का तोबा।

खुशम कि तोबये-मन निर्खे-बादा अरजां कर्द ![1]

सरगुजश्त का असली वाकया अब सुनिये। जिस दिन अलस्सबाह[2] मुझे रिहा किया गया तो कैदखाने के दफ्तर मे सुपरिटेंडेंट ने अपना सिगरेट केस निकाला और अज़-राहे-तवाजा[3] मुझे भी पेश किया। यकीन कीजिये जिस दर्जे के अज्म[4] के साथ दो साल पहले सिगरेट तर्क किया था उतने ही दर्जे की आमादगी[5] के साथ यह पेशकश[6] कबूल भी कर ली। न तर्क मे देर लगी थी न अब इख्तियार मे झिझक हुई। न महरूमी पर मातम हुआ था न हुसूल पर निशात[7] हुआ। तर्क की तल्खकामी[8] ने जो मजा दिया था वही अब इख्तियार की हलावत[9] मे महसूस होने लगा।

हरीफ़े-साफी ओ दुर्दे नई, खता ईं जा स्त
तमीजे-नाखुश ओ खुश मीकुनी, बला ईं जा स्त।[10]

सन् १९२१ के बाद तीन मर्तबा कैद ओ बंद का मरहला पेश आया, लेकिन तर्क की जरूरत पेश न आई। क्योंकि सिगरेट के डिब्बे मेरे सामान में साथ गये—वो देखे गये, मगर रोके नही गये। अगर रोके जाते तो फिर तर्क कर देता।

अब कलम की स्याही जवाब देने लगी है इसलिए रुक जाता हूँ।

क़लम ईं जा रसीद ओ सर बशिकस्त[11]

अबुलकलाम

---

१. मैं खुश हूँ कि मेरे तोबा करने से शराब का भाव घट गया है। २. सुबह सबेरे ३. सत्कार के लिये ४. इरादा ५. तत्परता ६. उपहार, भेट ७. खुशी ८. कटुता ९. मिठास १०. गलती यही है कि साफी और दुर्द याने निर्मलता और मलिनता का प्रेमी नही है। अनिष्ट और इष्ट का भेद करता है, बला यही पर है। ११. कलम यहा तक पहुचा और उसकी नोक टूट गई।

दास्ताने-बेसतून ओ कोहकन

क़िलग्रे-अहमदनगर
१०, अगस्त, सन् १६४२

अज़ साज़ ओ बर्गे-क़ाफ़िलये-बेख़ुदां मपुर्स
बेनाला मीरवद जरसे-कारवाने-मा ।[1]

सदीके-मुकर्रम

कल सुबह तक वुसअत आबाद बंबई मे फुरसते-तगहौसलाकी बेमायगी[2] का यह हाल था कि ३, अगस्त का लिखा हुआ मकतूबे-सफर भी अजमलखां साहब के हवाले न कर सका कि आपको भेज दें। लेकिन आज किलग्रे-अहमदनगर के हिसारे-तंग[3] मे उसके हौसलये-फराख[4] की आसूदगियाँ[5] देखिये कि जी चाहता है दफ्तर के दफ्तर स्याह कर दू।

वुसअते पैदा कुन अय सहरा कि इम शब दर ग़मश
लश्करे-आहे-मन अज़ दिल ख़ीमा बेरूं मीज़नद ।[6]

नौ महीने हुए, ४ दिसम्बर सन् १६४१ को नैनी के मरकज़ी[7] कैदखाने का दरवाजा मेरे लिए खोला गया था। कल ६ अगस्त, १६४२ को सवा दो बजे किलग्रे-अहमदनगर के हिसारे-कुहना[8] का नया फाटक मेरे पीछे बद कर दिया गया। इस कारखानये-हज़ार शेवा व रंग[9] मे कितने ही दरवाजे खोले जाते है ताकि बद हो, और कितने ही बद किये जाते हैं ताकि खुले। नौ माह की मुद्दत बज़ाहिर कोई बडी मुद्दत नही मालूम होती :

दो करवटें हैं आलमे-ग़फ़लत में ख्वाब की

लेकिन सोचता हू तो ऐसा मालूम होता है जैसे तारीख़ की एक पूरी दास्तान गुज़र चुकी है।

चुं सफ़हा तमाम शुद, वरक़ बरगरदद[10]

नई दास्तान जो शुरू हो रही है मालूम नही मुस्तकबिल उसे कब और किस तरह खतम करेगा :

---

१. आत्म-विस्मृत लोगों के काफिले के साज़ ओ सामान के बारे मे मत पूछ, हमारे कारवा के घटे की कोई आवाज नही होती और वह चलता रहता है २. दरिद्रता ३. तंग किले मे ४. बुलंद हिम्मती ५. प्रचुरता ६. ओ सहरा याने जंगल विस्तार पैदा कर क्योकि आज की रात उसके गम मे मेरी आहो के लश्कर दिल से बाहर खीमा डाल रहे है। ७. केन्द्रीय ८. पुराना क़िला ६. रंग ढंग १०. जब सफ़हा पूरा हुआ तो पन्ना उलट जाता है।

फ़रेबे-जहां क़िस्सये-रोशन स्त
बबीं ता च जायद, शब आबस्तन स्त[१]

४, अगस्त को बंबई पहुचा तो इन्फ्लुयेजा की हरारत और सर की गरानी का इज़मिहलाल[२] भी मेरे साथ था। ताहम पहुँचते ही कामों में मशगूल हो जाना पडा। तबीयत कितनी ही बेकैफ़ हो लेकिन गवारा नही करती कि औकात के मुकर्ररा निजाम मे खलल पडे। ४ से ७ अगस्त तक वर्किंग कमीटी के इज-लास होते रहे। ७ की दोपहर से आल इडिया कमीटी शुरू हुई। मुआमलात की रफ़्तार ऐसी थी कि काररवाई तीन दिन तक फैल सकती थी और मुकामी[३] कमीटी ने तीन ही दिन का इतज़ाम भी किया था। लेकिन मैंने कोशिश की कि दो दिन से ज़्यादा बढने न पाये। ८ को दो बजे से रात के ग्यारह बजे तक बैठना पडा लेकिन काररवाई खत्म करके उठा :

काम थे इश्क़ में बहुत पर मीर
हम ही फ़ारिग़ हुये शताबी[४] से।

थका माँदा कयामगाह[५] पर पहुँचा तो साहबे-मकान को मुतज़िर और किसी कदर मुतफक्किर[६] पाया। ये साहब कुछ अरसे से बीमार हैं और एक तरह की दिमागी उलझन मे मुब्तिला रहते है। मैं उनसे वक्त के मआमलात का तज़किरा[७] बचा जाता था ताकि उनकी दिमागी उलझन और ज्यादा न बढ़ जाये। वो वर्किंग कमीटी की मेबरी से भी मुस्तअफी[८] हो चुके है और अगरचे मैंने अभी तक उनका इस्तीफा मजूर नही किया है लेकिन उन्हें कमीटी के जलसो मे शिरकत[९] के लिये कहा भी नही। वो कहने लगे फ़लां शख्स शाम को आया था। कई घटे मुतजिर रहकर अभी-अभी गया है और यह पयाम दे गया है कि "गिरफ्तारी की अफवाहे गलत न थी। बावसूक[१०] ज़रिये से मालूम हुआ है कि तमाम इंतज़ामात कर लिये गये है। आज रात किसी वक्त यह मामला जरूर पेश आयेगा। दो हफ्ते से गिरफ्तारी की अफवाहे देहली से कलकत्ते तक हर शख्स की ज़बान पर थी। मैं सुनते-सुनते थक गया था।

या वफ़ा, या खबरे-वस्ले-तू, या मर्गे-रक़ीब
बाज़िये चर्ख अज़ीं यक दो सिह कारे बकुनद[११]।

---

१. दुनिया का फरेब एक पुर नूर किस्सा है। देख ताकि क्या पैदा होता है क्योकि रात आपन्नसत्वा या हामिला है। २. थकन ३. स्थानीय ४. जल्दी से ५. निवास स्थान ६. चिंतित ७. जिक्र ८. त्यागपत्र दे चुके हैं ९. शामिल होने के लिये १०. विश्वसनीय ११. या तो वफ़ा-दारी, या तेरे मिलन की खबर या रकीब की मौत इन दो तीन कामों मे से आसमानी खेल कोई एक काम करेगा।

और कुछ इस बात का भी खयाल था कि उनकी माउफ[1] तबीयत को इस तरह की फिक्रों से परेशान न होने दूँ। मैंने झुँझलाकर कहा — जिस तरह के हालात दर पेश है, उनमे इस तरह की अफवाहे हमेशा उडा ही करती है। ऐसी खबरो का ऐतबार क्या ? और अगर वाकई ऐसा ही होने वाला है तो इन बातो में वक्त खराब क्यो करे ? मुझे जल्द कुछ खाकर सो जाने दीजिये कि आधी रात जो अब बाकी रह गई है, हाथ से न जाये और चद घटे आराम कर लू।

गर ग़म खुरेम खुश न बुवद, बिह कि मय खुरेम ![2]

हस्बे-मामूल चार बजे उठा। लेकिन तबीयत थकी हुई और सर में सख्त गरानी थी। मैंने जनआस्परीन की दो गोलियाँ मुँह मे डालकर चाय पी और कलम उठाया कि बाज जरूरी खतों का मुसविदा लिख लूँ जो रात की तजवीज के साथ प्रेसिडेट रूजवेल्ट वगैरह को भेजना तय पाया था। सामने समदर मे भाटा खत्म हो चुका था। और उसके खत्म होते ही रात भर की ऊमस भी खत्म हो गई थी। अब ज्वार की लहरें साहिल से टकरा रही थी और हवा के ठडे और नमआलूद[3] झोके भेजने लगी थी। कुछ तो जनआस्परीन ने काम किया होगा, कुछ नसीमे-सुबहगाही के इन शिफ़ाबख्श[4] झोको ने चारा फ़रमाई[5] की। ऐसा महसूस होने लगा जैसे सर की गरानी कम हो रही है। फिर इफ़ाके[6] के इस अहसास ने अचानक गनूदगी[7] की सी हालत तारी कर दी।

नसीमे-सुबह ! तेरी महरबानी !

बेइख्तियार होकर क़लम रख दिया और बिस्तर पर लेट गया। लेटते ही आँख लग गई। फिर अचानक ऐसा महसूस हुआ जैसे सड़क पर से मोटर कारे गुजर रही हों। फिर क्या देखता हूँ कि कई कारे मकान के इहाते मे दाखिल हो गई हैं और उस बगले की तरफ़ जा रही है जो मकान के पिछवाडे मे वाक़े[8] है और जिसमे साहबे-मकान का लडका धीरू रहता है। फिर खयाल हुआ, मैं ख्वाब देख रहा हूँ और इसके बाद गहरी नीद मे डूब गया :

जहे मरातिबे-ख्वाबे कि बिह ज बेदारी स्त।[9]

शायद इस हालत पर दस बारह मिनट गुज़रे होगे कि किसी ने मेरा पैर दबाया। आँख खुली तो क्या देखता हूँ— धीरू एक कागज हाथ मे लिये खड़ा है और कह रहा है—दो फौजी अफसर डिप्टी कमिश्नर पुलिस के साथ

---

१. खिन्न, उदास २. अगर गम खाये तो यह ठीक नही है इससे तो अच्छा है कि शराब पीएँ। ३. तर ४. आरामदेह ५. इलाज किया ६. स्वस्थता ७. तद्रा, ऊँघना ८. स्थित ९. नीद के वे दर्जे भी खूब हैं जो कि जागृति से भी बढकर हैं।

आये हैं और यह कागज लाये है। गो इतनी ही खबर मेरे लिये काफी थी मगर मैंने कागज़ ले लिया कि देखू :

किस किस की मुहर है सरे-महज़र[1] लगी हुई

मैने धीरू से कहा — मुझे डेढ घटा तैयारी मे लगेगा। उनसे कह दो कि इतज़ार करें। फिर गुसल किया, कपडे पहने, चद ज़रूरी खुतूत लिखे और बाहर निकला तो पाँच बज कर पैतालीस मिनट हुये थे :

कार मुश्किल बूद, मा बर खेश आसां कर्दा ग्रेम[2]

कार बाहर निकली तो सुबह मुस्कुरा रही थी। सामने देखा तो समदर उछल-उछल कर नाच रहा था। नसीमे-सुबह के झोके इहाते की रविशो[3] मे फिरते हुये मिले। ये फूलों की खुशबू चुन चुन कर जमा कर रहे थे और समदर को भेज रहे थे कि अपनी ठोकरो से फजा मे फैलाता[4] रहे। एक झोंका कार मे से हो कर गुजरा तो बेइख्तियार हाफिज की गजल याद आ गई :

सबा वक्ते-सहर बूये ज़ जुल्फ़े-यार मीआवुर्द
दिले-शौरीदये-मारा ज़ नौ दर कार मीआवुर्द।[5]

कार विक्टोरिया टरमिनस स्टेशन पर पहुँची, तो उसका पिछला हिस्सा हर तरफ से फौजी पहरे के हिसार मे था। और अगरचे लोकल ट्रेनो की रवानगी का वक्त गुजर रहा था लेकिन मुसाफिरो का दाखिला रोक दिया गया था। सिर्फ एक प्लेटफार्म पर कुछ हलचल दिखाई देती थी। क्योकि एक इजन रेस्टोरेंट कार को धकेल-धकेल कर एक ट्रेन से जोड रहा था। मालूम हुआ यही कारवाने-खास है जो हम जिदानियो[6] के लिये तैयार किया गया है। गाडियाँ कोरिडोर कैरेज की लगाई गई थी जो आपस मे जुड जाती है और आदमी एक सिरे से दूसरे सिरे तक अदर ही अदर चला जा सकता है। ट्रेन के अन्दर गया तो मालूम हुआ गिरफ्तारियो का मामला पूरी वुसअत[7] के साथ अमल मे लाया गया है। बहुत से आ चुके है, जो नही आये वो आते जाते है :

बहुत आगे गये बाक़ी जो हैं तैयार बैठे है।

बाज अहबाब[8] मुझसे पहले पहुँचाये जा चुके थे। उनके चेहरो पर बेख्वाबी[9] और नावक्त की बेदारी[10] बोल रही थी। कोई कहता था रात दो बजे सोया और चार बजे उठा दिया गया। कोई कहता था बमुश्किल एक घटा नीद

---

१. काज़ी के हुक्मनामे को महजरनामा कहते है। २ काम मुश्किल था पर हमने उसे आसान कर लिया। ३. बीथियो मे ४ वातावरण ५. प्रात: समीर मेरे प्रीतम की जुल्फो की खुशबू लाई और मेरे परेशान दिल को फिर से मुस्तैदी मे ले आई याने मै नये सिरे से चुस्त ओ चालाक हो गया। ६. कैदी ७. विस्तार ८. मित्र, दोस्त ९. अनिद्रा १०. जागरण।

का मिला होगा। मैंने कहा—मालूम नही सोई हुई किस्मत का क्या हाल है ? उसे भी कोई जगाने के लिये पहुँचा या नही :

दराज़िये-शब ओ बेदारिये-मन ईं हमा नेस्त
ज़ बख़्ते-मन ख़बर आरेद ता कुजा ख़ुफ़्त स्त।[1]

बहरहाल वक़्त की गरम जोशियों में ये शिकायते मुखिल नही हो सकती थीं। चूंकि रेस्टोरेंट कार लग चुकी थी और चाय के लिये पूछा गया था इसलिये गो पी चुका लेकिन फिर मँगवाई और उन नीद के मतवालो को दावत दी कि इस जामे-सुबह-गाही से बादये-दोशीना[2] का ख़ुमार मिटायें :

बनोश मय चु सुबकरूही अय हरीफ़ मदाम
अललख़ुसूस दरीं दम कि सर गरां दारी।[3]

यहाँ "बादये-दोशीना" की तरकीब महज़ "जामे-सुबहगाही" की मुनासिबत से जबाने-क़लम पर तारी हो गई। मगर गौर कीजिये कितनी मुताबिके-हाल वाके हुई है ? सिर्फ़ एक शाम और सुबह के अंदर सूरते-हाल कैसी मुन्कलिब[4] हो गई। कल शाम को जो बज़्मे-कैफ ओ सुरूर[5] आरास्ता[6] हुई थी उसकी बादा-गुसारियों[7] और सियह-मस्तियो[8] ने दो पहर रात तक तूल खींचा था। लेकिन अब सुबह के वक़्त देखिये तो :

नय वो सुरूर ओ सोज़, न जोश ओ ख़रोश है !

रात की तरदिमागियो की जगह सुबह की सरगरानियों ने ले ली और मजलिसे-दोशी[9] की दस्तअफशानियो[10] और पाकोबियो के बाद जब आँख खुली तो अब सुबहे-खुमार की अफसुर्दा[11] जम्हाइयों के सिवा और कुछ बाकी नहीं रहा था :

ख़मियाज़ा संजे-तोहमते-ऐशे रमीदा अेम
मय आं क़दर न बूद कि रंजे-ख़ुमार बुर्द[12]।

---

१. रात की दराज़ी याने लंबाई और मेरी जागृति यह सब (कुछ) नहीं है। मेरे भाग्य की ख़बर लाइये कि कहाँ सोया है। २. रात की शराब ३. अय दोस्त जब कि तेरा मन खिन्न है तो अविराम शराब पी और खास तौर से इस वक्त कि तेरा सिर भारी है। ४. परिवर्तित ५. आनन्द और मस्ती की महफिल ६. सजी ७. सुरापान ८. बद मस्ती ९. रात की मजलिस १०. दस्त अफशानी और पाकोबी दोनों का अर्थ नाचना है यहाँ भाव नाच-रंग उछल-कूद से है ११. उदास १२. ऐश की तोहमत का दुष्परिणाम भोग रहे है, शराब इतनी नही थी कि खुमार का रंज मिटा देती।

रात की कैफियते जितनी तुद ओ तेज होती हैं सुबह का खुमार भी उतना ही सख्त होता है। अगर रात की सियहमस्तियों के बाद अब सुबह खुमार की तल्खकामियो[1] से साबिक़ा पड़ा था तो ऐसा होना नागुज़ेर[2] था। और कोई वजह न थी कि हम शकवासंज[3] होते। अलबत्ता हसरत इसकी रह गई कि जब होना यही था, तो काश जी की हवस तो पूरी निकाल ली होती और नपे-तुले पैमानो की जगह शीशों के शीशे लुंढा दिये होते। ख्वाजा मीर दर्द क्या खूब कह गये हैं :

कभी खुश भी किया है जी किसी रिंदे शराबी का
भिड़ा दे मुँह से मुँह साक़ी हमारा और गुलाबी का !

साढे सात वज चुके थे कि ट्रेन ने कूच की सीटी बजाई। हाफिज़ की मशहूर गज़ल का शेर कम अज़ कम सैकडों मर्तबा तो पढा और सुना होगा। लेकिन वाका यह है कि उसका असली लुत्फ उसी वक्त आया :

कस न दानिस्त कि मंज़िलगहे-मक़सूद कुजा स्त
ईं क़दर हस्त कि बांगे-जरसे मीआयद।[4]

बंबई मे जो अफ़वाहे गिरफ्तारी से पहले फैली हुई थी उनमे अहमदनगर के किले और पूना के आगाखां पैलेस का नाम तअय्युन[5] के साथ लिया जा रहा था। जब कल्यान स्टेशन से ट्रेन आगे बढी और पूना की राह इख्तियार की तो सबको खयाल हुआ गालिबन मंज़िले-मकसूद पूना ही है। लेकिन जब पूना करीब आया तो एक गैर आबाद स्टेशन पर सिर्फ बाज रुफका[6] उतार लिये गये और बंबई के मुकामी काफिले को भी उतरने के लिए कहा गया। मगर हमसे कुछ नही कहा गया और सदाये-जरस[7] ने फिर कूच का ऐलान कर दिया :

जरस फ़रियाद मीदारद कि बरबंदेद महमिलहा[8]

अब अहमदनगर हर शख्स की ज़बान पर था। क्योंकि अगर पूना में हम नही उतारे गये तो फिर इस रुख पर अहमदनगर के सिवा और कोई जगह नही हो सकती। एक साहब ने जो इन्ही अतराफ़[9] के रहनेवाले है बतलाया कि पूना और अहमदनगर का बाहमी फासला सत्तर-अस्सी मील से ज्यादा नही। इसलिए ज्यादा से ज्यादा दो ढाई घंटे का सफर और समझना चाहिये। मगर मेरा

---

१ कटुता २. अपरिहार्य ३. शिकायत करते ४. किसी ने भी नही जाना कि मंज़िले-मकसूद कहाँ हैं लेकिन इतनी बात जरूर है कि कारवां के घटे की आवाज आती है। ५. निश्चय ६. रफीक का बहुवचन, साथी ७. सीटी की आवाज़ ८. घंटे की यही आवाज है कि कूच की तैयारी करो। ९. तरफ का बहुवचन अतराफ़ है याने दिशा।

खयाल दूसरी ही तरफ जा रहा था। अहमदनगर यक़ीनन दूर नही है। बहुत जल्द आ जायेगा। मगर अहमदनगर पर सफ़र खत्म कब होता है ? अहमदनगर से तो शुरू होगा। बेइख्तियार अबुल अला मुअर्री का लामिय्या[१] याद आ गया :

फ़या दारहा बिल खैफ़ि इन्न मजारहा
क़रीबुन व लाकिन दून जालिक अहवालु[२]

यह अजीब इत्तिफाक है कि मुल्क के तकरीबन तमाम तारीखी मुकामात देखने मे आये मगर किलए-अहमदनगर देखने का कभी इत्तिफाक नही हुआ। एक मर्तबा जब बंबई मे था तो क़स्द भी किया था मगर फिर हालात ने मोहलत न दी। यह शहर भी हिन्दुस्तान के उन खास मुकामात मे से है जिनके नामों के साथ सदियो के इकलाबो की दास्ताने वाबस्ता[३] हो गई है। पहले यहाँ भीगर नामी नदी के किनारे एक इसी नाम का गाँव आबाद था। पंद्रहवी सदी मसीही के अवाखिर[४] मे जब दकन की बहमनी हुकूमत कमजोर पड गई तो मलिक अहमद निज़ाम उल मुल्क भेरी ने अलमे-इस्तकिलाल[५] बुलद किया और भीगर के करीब अहमदनगर की बुनियाद डालकर जनीर की जगह उसे हाकिम नशीन शहर बनाया। उस वक्त के निज़ाम शाही ममलुकत का दार-उल-हुकूमत यही मुकाम बन गया। फ़रिश्ता जिसका खानदान माजिदरान से आकर यही आबाद हुआ था लिखता है —चंद बरसो के अदर इस शहर ने वो रौनक ओ वुसअत पैदा कर ली थी कि बग़दाद और काहिरा का मुकाबला करने लगा था :

कस पायमाले - आफ़ते - फ़रसूदगी मबाद
दीरोज रेगे-बादिया आईनाखाना बूद।[६]

मालिक अहमद ने जो किला तामीर किया था उसका हिसार मिट्टी का था। उसके लडके बुरहान निज़ाम शाह अव्वल ने उसे मुनहदिम[७] करके अज-सरे-नौ[८] पत्थर का हिसार तामीर किया और उसे इस दर्जे बुलद और मजबूत बनाया कि मिसर और ईरान तक उसकी मजबूती का गलग़ला[९] पहुँचा। सन् १८०३ की दूसरी जगे-मरहठा मे जब जनरल वेलेजली ने (जो आगे चलकर ड्यूक ऑफ वेलिगटन हुआ उसका मुआयना किया था तो अगरचे तीन सौ

---

१. लामिय्या छद की एक जाति है जिसमे शेर का अतिम अक्षर ल पर ख़त्म होता है। २. प्रियतमा का घर जो खैफ मे है, वह तो बहुत नजदीक है, मगर उस तक पहुँचने में हौलनाकियाँ ही हौलनाकियाँ है। ३. जुड गई है ४. अत मे ५. आजादी का झडा ६ कोई जीर्णता की विपदा से पामाल न हो, कल दिन तक जंगल की रेत शीशमहल थी। ७. गिराकर ८ नये सिरे से ९ शोर।

बरस के इन्कलाबात सह चुका था फिर भी उसकी मजबूती मे फर्क नही आया था। उसने अपने मुरासले[1] में लिखा था कि दकन के तमाम किलो में सिर्फ़ वेलूर का किला ऐसा है जिसे मजबूती के लिहाज़ मे इस पर तरजीह[2] दी जा सकती है·

कारवाँ रफ़्ता ओ अंदाज़ये-जाहश पैदा स्त
जां निशांहा कि ब हर राहगुजार उफ़्ताद स्त।[3]

यही अहमदनगर का किला है जिसकी सगी[4] दीवारों पर बुरहान निजाम शाह की बहन चाँदबीबी ने अपने अज्म ओ शुजाअत[5] की यादगारे-ज़माना दास्ताने कदा[6] की थी और जिन्हे तारीख ने पत्थर की सिलो से उतार कर अपने औराक[7] ओ दफातिर[8] मे महफूज कर लिया है

बयफ़शां जुरए बर खाक ओ हाले-अहले-शौकत बीं
कि अज जमशेद ओ के खुसरू हजारां दास्तां दारद।[9]

इसी अहमदनगर के मारको[10] मे अब्दुर्रहीम खानखाना की जवामर्दी का वो वाका नुमाया हुआ था जिसकी सरगुजश्त अब्दुल बाकी निहावंदी और समसामुदौला ने हमे सुनाई है। जब अहमदनगर की मदद पर बीजापुर और गोलकुडा की फौजे भी आ गई और खानखाना की कलीलउत्तादाद[11] फौज को सुहैल हब्शी की ताकतवर फौज मे टकराना पडा तो दौलतखा लोदी ने पूछा था "चुनी अंबोहे दरपेश ओ फतहे-आसमानी। अगर हादिसये रू दिहद, जाये-निशा दिहेद कि शुमारा दरयाबेम[12]।" खानखाना ने जवाब दिया था— "जेरे-लाशहा[13]।"

व नहनु अनासुन लातवस्सुत बैनना
लनस्सद्रु दूनलआलमीन अविल क़ब्रु।[14]

१. पत्र व्यवहार २. प्रधानता ३ कारवां गुजर गया है और उसकी गरिमा का अदाजा बाकी रह गया है उन निशानों से कि जो हर राह मे दिखाई देते है। ४ पत्थर की ५ दृढता और बहादुरी की ६ खोदी ७. वरक का बहुवचन, औराक, पन्ना ८ दफ्तर का बहुवचन ९. एक घूट शराब ज़मीन पर छिडक दे और फिर पराक्रमी लोगो का हाल देख कि जमशेद और केखुसरू की हजारो कहानियाँ सुनाती है। १० लडाई, युद्ध ११ अल्पसख्यक १२. दुश्मन की इतनी बडी फौज की भीड सामने है और विजय भाग्याधीन है। अगर कोई दुर्घटना हो जाये तो कोई ऐसी जगह का निशान दीजियेगा कि आपको पा सके। १३. लाशो के नीचे १४. हम ऐसे लोग हैं कि हमारे लिये कोई मध्यम मार्ग नही है। या तो हम सबसे ऊपर शिखर पर होगे या सबसे नीचे कब्र में।

अहमदनगर के नाम ने हाफ़िज़े के कितने ही भूले हुये नुकूश यकायक ताज़ा कर दिये। रेल तेज़ी के साथ दौड़ी जा रही थी। मैदान के बाद मैदान गुज़रते जाते थे। एक मंजर[1] पर नज़र जमने नही पाती थी कि दूसरा मंज़र सामने आ जाता था। और ऐसा ही माजरा मेरे दिमाग के अदर गुज़र रहा था। अहमदनगर अपनी छह सौ बरस की दास्ताने-कुहन[2] लिये वरक़ पर वरक उलटता जाता। एक सफहे पर अभी नज़र जमने नही पाती कि दूसरा सामने आ जाता ·

गाहे गाहे बाज़ ख्वां ईं दफ़्तरे-पारीनारा
ताज़ा ख्वाही दाश्तन गर दाग़हाये सीनारा[3]

मुझे खयाल हुआ अगर हमारे कैद ओ बद के लिये यही जगह चुनी गई है तो इंतखाब[4] की मौज़ूनियत[5] मे कलाम नही। हम ख़राबातियो के लिये कोई ऐसा ही ख़राबा होना था

बा यक जहाँ कुदूरत, बाज ईं ख़राबा जाये स्त ![6]

दो बजने वाले थे कि ट्रेन अहमदनगर पहुँची। स्टेशन मे सन्नाटा था। सिर्फ चद फौजी अफसर टहल रहे थे। उन्ही मे मुकामी छावनी का कमाडिग आफीसर भी था जिससे हमे मिलाया गया। हम उतरे और फ़ौरन स्टेशन से रवाना हो गये। स्टेशन से किले तक सीधी सडक चली गई है। राह मे कोई मोड़ नहीं मिली। मैं सोचने लगा कि मकासिद[7] के सफर का भी ऐसा ही हाल है। जब कदम उठा दिया तो फिर कोई मोड नही मिलती। अगर मुड़ना चाहे तो सिर्फ पीछे ही की तरफ मुड सकते है। लेकिन पीछे मुडने की राह यहाँ पहले से बद हो जाती है।

हाँ, रहे इश्क़ अस्त, कज गश्तन न दारद बाज गश्त
जुर्मरा ईं जा अ़ुक़ूबत हस्त, इस्तग़फ़ार नेस्त।[8]

स्टेशन से किले तक की मसाफत ज्यादा से ज्यादा दस बारह मिनट की होगी। किले का हिसार पहले किसी कदर फासले पर दिखाई दिया। फिर यह फासला चंद लमहो मे तय हो गया। अब उस दुनिया मे जो किले से बाहर है और उसमे जो किले के अंदर है सिर्फ एक कदम का फ़ासला रह गया था। चश्मे-जदन[9] मे यह भी तय हो गया और हम किले की दुनिया मे दाखिल हो

---

१. दृश्य २. पुरानी कहानी ३. कभी-कभी इस पुराने दफ्तर को फिर से पढ अगर तू चाहता है कि तेरे सीने के दाग ताजा रहे ४ चुनाव ५. औचित्य ६ उपेक्षित दुनिया को देखते हुए इस वीराने मे (हमारे लिए) जगह है। ७. मक़सद का बहुवचन ८. इश्क़ की राह है इसमे लौटने के लिये मुड नही सकते। जुर्म की यहाँ सज़ा है पर माफी नही है। ९. पलक मारना

गये। गौर कीजिये तो ज़िंदगी की तमाम मसाफतों का यही हाल है। खुद ज़िंदगी और मौत का बाहमी फ़ासला भी एक कदम से ज्यादा नही होता।

हस्ती से अदम तक नफ़से-चंद[1] की है राह
दुनिया से गुजरना सफ़र ऐसा है कहाँ का!

क़िले की खदक[2] जिसकी निस्बत अबुलफज़ल ने लिखा है कि चालीस गज़ चौडी और चौदह गज़ गहरी थी। और जिसे सन् १८०३ ई. मे जनरल वेलेज़ली ने एक सौ आठ फुट तक चौडा पाया था। मुझे दिखाइ नही दी। ग़ालिबन[3] जिस रुख़ से हम दाखिल हुये, उस तरफ पाट दी गई है। उसका बैरूनी किनारा जो खुदाई की ख़ाक-रेज़[4] से इस कदर ऊँचा कर दिया गया था कि किले की दीवार छिप गई थी। वो भी उस रुख़ पर नुमाया न था। मुमकिन है कि वो सूरत अब बाकी न रही हो।

किले के अदर पहले मोटर लारियों की कतार मिली। फिर टेको की। उसके बाद एक इहाते के सामने जो किले की आम सतह से चौदह पद्रह फुट बुलद होगा और इसलिये चढाई पर वाक़े है कारे रुक गई और हमे उतरने के लिये कहा गया। यहाँ इस्पेक्टर जनरल पुलीस बबई ने जो हमारे साथ आया था हमारे नामो की फहरिस्त कमाडिंग आफ़ीसर के हवाले की। वो फहरिस्त लेकर दरवाज़े के पास खडा हो गया। यह गोया हमारी सुपुर्दगी की बाज़ाब्ता रस्म थी। अब हमारी हिफाज़त का सरे रिश्ता हुकूमते-बबई के हाथ से निकल कर फ़ौजी इतजाम के हाथ आ गया और हम एक दुनिया से निकल कर दूसरी दुनिया मे दाखिल हो गये।

दर जुस्तजूये-मा न कशी जहमते-सुराग़
जाये रसीदा अेम कि अन्क़ा नमीरसद।[5]

दरवाज़े के अन्दर दाखिल हुये तो एक मुस्ततील[6] इहाता सामने था। गालिबन दो सौ फुट लबा और डेढ सौ फुट चौडा होगा। उसके तीनों तरफ़ बारक की तरह कमरो का सिलसिला चला गया है। कमरो के सामने बरामदा है और बीच मे खुली जगह है। यह अगरचे इतनी वसीअ[7] नही कि इसे मैदान कहा जा सके, ताहम इहाते के जिदानियों[8] के लिए मैदान का काम दे सकती है। आदमी कमरे से बाहर निकलेगा तो महसूस करेगा कि खुली जगह मे आ

---

१. कुछ सास २. खाई ३. सभवतः ४. खोदी हुई मिट्टी ५. मेरी खोज मे सुराग या पता लगाने की मेहनत मत उठाओ (क्योंकि) मैं उस जगह पर पहुँच गया हूँ कि जहाँ अन्का भी नही पहुँच सकता। ६. लबा ७. विस्तृत ८. क़ैदियो।

गया। कम-अज़-कम इतनी जगह जरूर है कि जी भर के खाक उड़ाई जा सकती है :

सर पर हुजूमे-दर्दे-ग़रीबी से डालिये
वो एक मुश्त खाक कि सहरा कहें जिसे

सहन के वस्त[1] मे एक पुख्ता चबूतरा है जिसमे झडे का मस्तूल नसब[2] है, मगर झंडा उतार लिया गया है। मैंने मस्तूल की बुलदी देखने के लिये सर उठाया तो इशारा कर रहा था :

यहीं मिलेंगे तुझे नालये-बुलंद तेरे !

इहाते के शुमाली[3] किनारे मे एक पुरानी टूटी हुई कब्र है। नीम के एक दरख्त की शाखे उस पर साया करने की कोशिश कर रही है मगर कामयाब नही होती। कब्र के सिरहाने एक छोटा सा ताक है। ताक अब चिराग से खाली है मगर मेहराब की रगत बोल रही है कि यहाँ कभी एक दीया जला करता था :

इसी घर में जलाया है चिरागे-आरज़ू बरसों !

मालूम नही यह किसकी कब्र है ? चाँद बीबी की हो नही सकती क्योकि उसका मकबरा किले से बाहर एक पहाड़ी पर वाके है। बहरहाल किसी की हो, मगर कोई मजहूल[4]-उल-हाल शख्सियत न होगी, वरना जहाँ किले की तमाम इमारते गिराई थी वहाँ इसे भी गिरा दिया होता। सुबहान अल्लाह ! इस रोजगारे-खराब को वीरानियाँ भी अपनी आबादियो के करिश्मे रखती है। इस पुरानी कब्र को वीरान भी होना था तो इसलिये कि कभी हम जिदानियाने-खराबाती के शोर-ओ-हगामे से आबाद हो !

कुश्तों का तेरी चश्मे-सियह मस्त के मजार[5]
होगा खराब भी तो खराबात[6] होवेगा !

मग़रिबी[7] रुख के तमाम कमरे खुले और चश्मबराह[8] थे। कनार का पहला कमरा मेरे हिस्से मे आया। मैंने अंदर कदम रखते ही पहला काम यह किया कि चारपाई पर, कि बिछी हुई थी दराज हो गया। नौ महीने की नीद ओ थकन मेरे साथ बिस्तर पर गिरी

मा गोशारा न बहरे-क़नाअत गिरफ्ता ऐम
तन परवरी ब गोशये-खातिर रसीदा अस्त[9]।

---

१ बीच मे २ गडा ३ उत्तरी ४ अविख्यात ५. कब्र ६. खराबात खडहर और मयखाना दोनो को कहते है। ७. पश्चिमी ८. दृष्टिगोचर ९ हमने एकात कोना सतोष की खातिर इख्तियार नही किया है बल्कि दिल के कोने मे तनपरवरी याने शारीरिक सुख की इच्छा है। अर्थात् एकात-सेवन देहदमन के लिए नही बल्कि शारीरिक सुख के लिये इख्तियार किया है।

तकरीबन तीन बजे से छह बजे तक सोता रहा। फिर रात को नौ बजे तकिये पर सर रखा तो सुबह तीन बजे आँख खोली.

न तीर कमां में है न सय्याद कमीं[1] में
गोशे में क़फ़स के मुझे आराम बहुत है !

तीन बजे उठा तो ताजा दम और चुश्त ओ चाक था। न सर मे गरानी थी न इफ्लुयेजा का नाम ओ निशान था। फौरन बिजली का आलये-हरारत[2] काम मे लाया और चाय दम दी। अब जाम ओ सुराही सामने धरे बैठा हूँ। आपको मुखातिब तसव्वुर करता हूँ और यह दास्ताने-बेसुतून ओ कोहकन सुना रहा हूँ।

शीरींतर अज़ हिकायते-मा नेस्त किस्सये
तारीखे-रोज़गार सरापा नविश्ता अेम ![3]

महीनो से ऐसी गहरी और आसूदा[4] नीद नसीब नही हुई थी। ऐसा मालूम होता है कि कल सुबह बबई से चलते हुये जो दामन झाड़ना पडा था तो अलाइक[5] की गर्द के साथ महीनो की सारी थकन भी निकल गई थी। यगमाये-जुदकी क्या खूब कह गया है :

ग़लत गुफ़्ती "चरा सज्जादये-तक़वा गिरौ कर्दी ?"
ब जुहद आलूदा बूदम गर न मीकरदम च मीकरदम।[6]

यह उसी गज़ल का शेर है जिसका एक और शेर जो मुज्तहिदे[7] काशान की निस्बत कहा था, बहुत मशहूर हो चुका है :

ज़ शेखे शहर जां बुर्दम ब तज़वीरे-मुसलमानी
मुदारा गर ब ईं काफ़िर न मीकरदम च मीकरदम ![8]

रदीफ[9] का निभाना आसान न था, मगर देखिये किस तरह बोल रही है ? बोल नही रही है चीख रही है। मैं भी इस वक्त चाय के फिजान पर फ़िजान लुढाये जाता हूँ और उसका मतला दोहराता हूँ :

---

१. घात २. तापयत्र ३. हमारी कहानी के समान कोई कहानी मधुर नही है हमने तो सारी दुनिया का इतिहास ही आदि से अन्त तक लिख दिया है। ४. चैन की ५. ताल्लुक और संबध ६. तू यह बात गलत कहता है कि "क्यो सयम और तपस्या के आसन को रहन कर दिया ?" तपस्या की गंदगी मे फँसा था अगर गिरौ नही करता तो क्या करता। ७. काशान के धर्माचार्य। ८ शहर के शेख से यह झूठ कह कर कि मैं मुसलमान हूँ जान बचाई; इस काफिर से सुलह नही करता तो क्या करता। ९. प्रास।

ज़ सागर गर दिमाग़ो तर न मीकरदम, च मीकरदम :[१]

ख़ुदारा दाद दीजिये। नज़र बहालाते-मौजूद यहाँ "च मीकरदम" क्या क़यामत ढा रहा है ? गोया यह मिसरा खास इसी मौके के लिये कहा गया था। मगर यूं पता नही चलेगा। "च मीकरदम" पर ज्यादा से ज्यादा ज़ोर देकर पढिये। फिर देखिये, सूरते-हाल की पूरी तसवीर किस तरह सामने नमूदार हो जाती है।

यह जो कुछ लिख रहा हूँ कलपतरा-गोई[२] और लातायल-नवीसी[३] से ज्यादा नही है। यह भी नही मालूम, बहालते-मौजूदा मेरी सदायें[४] आप तक पहुँच भी सकेगी या नही ? ताहम क्या करूँ, अफसाना सराई[५] से अपने आपको बाज़ नही रख सकता। यह वही हालत हुई जिसे मिरज़ा गालिब ने ज़ौके-ख़ामाफरसा[६] की सितमज़दगी[७] से ताबीर[८] किया था :

मगर सितमज़दा हूँ ज़ौक़े-ख़ामाफ़रसा का[९]

अबुलकलाम

---

१. मैं अगर शराब के प्यालो से दिमाग तर नही करता तो क्या करता।
२. बेहूदा बकवास ३. बेकार लिखना ४. आवाजे ५. कहानी कहना
६. लिखने की रुचि ७. क्रूरता ८. बयान करना ९. लिखने की इच्छा का मारा हुआ हूँ।

क़िलग्रे-ग्रहमदनगर
११ अगस्त, सन् १६४२ ई.

सदीके-मुकर्रम !

कैद बद की ज़िन्दगी का यह छठा तजरुबा है। पहला तजरुबा सन् १६१६ मे पेश आया था, जब मुसलसल[1] चार बरस तक कैद ओ बद मे रहा। फिर सन् १६२१, १६३१, सन् १६३२ और सन् १६४० मे यके बाद दीगरे[2] यही मजिल पेश आती रही। और अब फिर उसी मज़िल से काफिलये-बाद पैमाये-उम्र[3] गुज़र रहा है।

बाज़ मीख्वाहम ज़ सर गीरम रहे-पैमूदारा।[4]

पिछली पॉच गिरफ्तारियो की अगर मजमूई मुद्दत शुमार की जाये तो सात बरस आठ महीने से ज्यादा नही होगी। उम्र के तरेपन[5] बरस जो गुज़र चुके है उनसे यह मुद्दत वजा[6] करता हू तो सातवे हिस्से के करीब पड़ती है। गोया ज़िन्दगी के हर सात दिन मे एक दिन कैदख़ाने मे गुजरा। तौरात[7] के अहकामे-अशरा[8] मे एक हुक्म सब्त[9] के लिए भी था। यानी हफ्ते का सातवा दिन तातील[10] का मुकद्दस[11] दिन समझा जाये। मसीहियत और इस्लाम ने भी यह तातील कायम रखी। सो हमारे हिस्से मे भी सब्त का दिन आया मगर हमारी तातीलें इस तरह बसर हुईं गोया ख्वाजा शीराज़ के दस्तूर उल अमल[12] पर कार[13] बंद रहे :

---

१. लगातार २. एक के बाद दूसरी ३. उम्र के काफिले का हवा-मान यत्र ४. फिर से चाहता हूं कि तै की हुई राह को सिरे से इख्तियार करूं ५. यह मकतूब ११ अगस्त सन् १६४२ को लिखा था। इसके बाद कैद के दो बरस ग्यारह महीने और गुज़र गये और मजमूई मुद्दत सात बरस आठ महीने की जगह दस बरस सात माह हो गई। इस इजाफ़े के खिलाफ कोई शिकवा करना नही चाहता। अलबत्ता इसका अफसोस ज़रूर है कि वो सातवें हिस्से की बात मुख़त्तल हो गई और सब्त की तातील का मामला हाथ से निकल गया ६. भाग देना ७. क़ुरान की तरह जो किताब हज़रत मूसा पर उतरी थी उसे तौरात या तौरेत कहते हैं ८. दस हुक्म ९. छुट्टी का दिन जिस दिन यहूदी लोग इबादत करते हैं यह शनीवार होता है। १०. छुट्टी ११. पवित्र १२. कार्यक्रम १३. काम।

न गोयमत कि हमा साल मयपरस्ती कुन
सिह माह मय खुर ओ नुह माह पारसा मीबाश[1]

वक्त के हालात पेशे-नजर रखते हुए इस तनासुब[2] पर गौर करता हू तो ताज्जुब होता है। इस पर नही कि सात बरस आठ महीने कैद ओ बद मे क्यो कटे ? इस पर कि सिर्फ सात बरस आठ महीने ही क्यो कटे ?

नाला अज़ बहरे-रिहाई न कुनद मुर्गे-असीर
खुरद अफ़सोस ज़माने कि गिरफ़्तार न बूद।[3]

वक्त के जो हालात हमे चारो तरफ से घेरे हुए है उनमे इस मुल्क के बाशिंदों के लिए जिन्दगी बसर करने की दो ही राहे रह गयी है। बेहिसी[4] की ज़िन्दगी बसर करें या अहसासे-हाल[5] की। पहली जिन्दगी हर हाल मे और हर जगह बसर की जा सकती है, मगर दूसरी के लिए कैदखाने की कोठरी के सिवा और कही जगह न निकल सकी। हमारे सामने भी दोनो राहे खुली थी। पहली हम इख्तियार नही कर सकते थे नाचार दूसरी इख्तियार करनी पडी .

रिंदे-हज़ार शेवारा ताअते-हक़ गरां न बूद
लेक सनम ब सजदा दर नासिया मुश्तरक न ख्वास्त[6]

जिन्दगी मे जितने जुर्म किये और उनकी सजाये पाई, सोचता हू तो उनसे कही ज्यादा तादाद उन जुर्मो की थी जो न कर सके और जिनके करने की हसरत[7] दिल मे रह गई। यहाँ कर्दा[8] जुर्मो की सजाये तो मिल जाती है लेकिन नाकर्दा जुर्मों की हसरतो का सिला[9] किससे माँगे ?

नाकर्दा गुनाहों की भी हसरत की मिले दाद
या रब, अगर इन कर्दा गुनाहों की सज़ा है।

सन् १९१६ मे जब यह मुआमला पेश आया तो मुझे पहली मर्तबा मौका मिला कि अपनी तबीयत के तास्सुरात[10] का जायजा[11] लू। उस वक्त उम्र के सिर्फ़ सत्ताईस बरस गुजरे थे। "अलहिलाल" "अलबलाग" के नाम से जारी

---

१. मैं तुझसे यह नही कहता कि पूरे साल भर शराब पी बल्कि तीन महीने शराब पी और नौ महीने त्याग और संयम का जीवन बिता। २. आपसी सम्बध या मुनासिबत ३. पिजरे मे बद पछी रिहाई के लिए चीख-पुकार नही करता बल्कि इस बात का अफसोस करता है कि जिस ज़माने मे आज़ाद था काश कि वो भी गिरफ़्तारी का जमाना होता। ४. अनुभूतिहीन ५. परिस्थितियो की अनुभूति ६. सहस्रगुणी रिंद के लिए सत्य या ईश्वर की उपासना मुश्किल न थी लेकिन मुश्किल यह थी कि सनम सजदे या वंदन के साथ नतमस्तक होने में किसी को शामिल नही चाहता। ७. इच्छा ८. किये हुए ९. पुरस्कार १०. प्रभाव ११. जाँच।

था दार-उल-इरशाद कायम हो चुका था। जिन्दगी की गहरी मशगूलियते चारो तरफ से घेरे हुए थी। तरह-तरह की सरगर्मियों मे दिल अटका हुआ था और इलाको[1] और राबितो की गरानियो से बोझल था। अचानक एक दिन दामन झाड़कर उठ खड़ा होना पड़ा और मशगूलियत की डूबी हुई जिन्दगी की जगह क़ैद ओ बंद की तनहाई[2] और बेतअल्लुकी[3] इख्तियार कर लेनी पड़ी। बजाहिर इस नागहानी[4] इन्कलाबे-हाल[5] मे तबीयत के लिए बड़ी आजमाइश होनी थी। लेकिन वाक़या यह है कि नही हुई। आबाद घर छोड़ा और एक वीराने में जा बैठ रहा। *

नुक़्सां नहीं जुनूं में, बला से हो घर खराब
दो गज़ जमीं के बदले, बयाबां गरां नहीं।

लेकिन फिर कुछ अर्से के बाद जब इस सूरते-हाल[6] का रद्दे-फेल[7] शुरू हुआ तो मालूम हुआ कि मुआमला इतना सरल न था जितना इब्तदाये-हाल[8] की सरगर्मियो मे महसूस हुआ था। और उसकी आजमाइशे अभी गुजर नही चुकी, बल्कि अब पेश आ रही है।

जब कभी इस तरह का मुआमला यकायक पेश आ जाता है, तो इब्तदा मे उसकी सख्तियाँ पूरी तरह महसूस नही होती। क्योकि तबीयत मे मुक़ाविमत[9] का एक सख्त जज्बा[10] पैदा हो जाता है। और वो नही चाहता कि सूरते-हाल से दब जाये। वो इसका गालिबाना[11] मुकाबला करना चाहता है। नतीजा यह निकलता है कि एक पुरजोश नशे की सी हालत तारी हो जाती है। नशे की तेजी में कितनी सख्त चोट लगे उसकी तकलीफ महसूस नही होगी। तकलीफ़ उस वक्त महसूस होगी जब नशा उतरने लगेगा और जमाहियाँ आनी शुरू होगी। उस वक्त ऐसा मालूम होगा जैसे सारा जिस्म दर्द से चूर-चूर हो रहा हो। चुनाचे इस मुआमले मे भी पहला दौर नशये-जज्बात[12] की खुद-फरामो-[13] शियो का गुज़रा। अलायक[14] का फौरी[15] इन्कताअ[16] कारोबार की नागहानी बरहमी[17] मशगूलियतो का यककलम[18] तअत्तुल[19], कोई बात भी दामने-दिल को

१. सम्बधो २. एकांतता ३. सम्बध विहीनता ४ अप्रत्याशित ५. परिस्थिति का परिवर्तन ६. परिस्थिति ७. प्रतिक्रिया ८ प्रारम्भिक परिस्थितियो में ९. विरोध १०. भाव ११. जबरदस्त १२ भावो का नशा १३ आत्म-विस्मृति १४. सम्बध १५. तात्कालिक १६. कटना, टूटना १७. विशृंखलता १८. पूर्ण रूपेण १९. निष्क्रिय होना।

* ७ अप्रैल १९१६ को हुकूमते-बंगाल ने डिफेस आर्डिनेंस के मातहत मुझे बंगाल से खारिज कर दिया था। मैं राँची गया और शहर के बाहर मूर आबादी मे मुकीम हो गया। फिर कुछ दिनों के बाद मरकज़ी (केंद्रीय) हुकूमत ने वही क़ैद कर दिया और उसका सिलसिला १९२० तक जारी रहा।

खीच न सकी। कलकत्ते से बइत्मीनाने-तमाम निकला और राची मे शहर के बाहर एक गैर-आबाद हिस्से मे मुकीम हो गया। लेकिन फिर ज्यो-ज्यो दिन गुजरते गये तबीयत की बेपरवाइयाँ जवाब देने लगी और सूरते-हाल का एक-एक काँटा पहलुये-दिल मे चुभने लगा। यही वक्त था जब मुझे अपनी तबीयत की इस इनफिग्राली[1] हालत का मुकाबला करना पडा और एक खास तरह का साँचा उसके लिए ढालना पडा। उस वक्त से लेकर आज तक कि छब्बीस बरस गुज़र चुके, वही साँचा काम दे रहा है, और अब इस कदर पुख्ता हो चुका है कि टूट जा सकता है मगर लचक नही खा सकता।

तालिबइल्मी के जमाने से फिलसफा मेरी दिलचस्पी का खास मौजू[2] रहा है। उम्र के साथ-साथ यह दिलचस्पी भी बराबर बढती गई। लेकिन तजरुबे से मालूम हुआ कि असली ज़िन्दगी की तल्खियाँ[3] गवारा[4] करने मे फिलसफे से कुछ ज्यादा मदद नही मिल सकती। यह बिला शुबहा तबीयत मे एक तरह की रवाकी (Stoical) बेपरवाई पैदा कर देता है और हम जिन्दगी के हवादिस ओ आलाम[5] को आम सतह से कुछ बुलद होकर देखने लगते है। लेकिन इससे ज़िन्दगी के तबग्री[6] इन्फिग्रालात की गुत्थियाँ सुलझ नही सकती। यह हमे एक तरह की तसकीन[7] ज़रूर दे देता है लेकिन उसकी तसकीन सर-ता-सर सलबी[8] तसकीन होती है। ईजाबी[9] तसकीन से उसकी झोली हमेशा खाली रही। यह फुकदान[10] का अफ़सोस कम कर देगा लेकिन हासिल की कोई उम्मीद नही दिलायेगा। अगर हमारी राहते हमसे छीन ली गई है तो फ़िलसफा हमे कलैला ओ दमना (पंचतत्र) की दानिश आमोज़ चिडिया की तरह नसीहत करेगा "ला तास अला माफात" जो कुछ खो चुका उस पर अफसोस न कर। लेकिन क्या इस खोने के साथ कुछ पाना भी है? इस बारे मे वो हमे कुछ नही बतलाता। क्योकि बतला सकता ही नही। और इसलिए जिन्दगी की तल्खियाँ गवारा करने के लिए सिर्फ़ उसका सहारा काफी न हुआ।

साइस आलमे-महसूसात[11] की साबित शुदा[12] हकीकतो से हमे आश्ना[13] करता है और माद्दी[14] जिंदगी की बेरहम जबरिय्यत[15] की खबर देता है। इसलिए अकीदे[16] की तसकीन उसके बाजार मे भी नही मिल सकती। वो यकीन और उम्मीद के सारे पिछले चिराग गुल कर देगा मगर कोई नया चिराग रोशन नही करेगा।

---

१. प्रतिक्रिया २. विषय ३. कटुता ४. सहन करने मे ५. दुख और पीडा ६. स्वाभाविक प्रतिक्रिया ७ ढाढस ८. नकारात्मक ९. स्वीकारात्मक १०. अभाव ११. चराचर जगत १२. प्रमाणित १३. परिचित १४ पार्थिव, जड १५. श्रद्धा १६ मजबूरी।

फिर अगर हम जिन्दगी की नागवारियो मे सहारे के लिये नजर उठाये तो किसकी तरफ उठाये ?

कौन ऐसा है जिसे दस्त हो दिलसाजी में ?
शीशा टूटे तो करें लाख हुनर से पैवंद !

हमे मजहब की तरफ देखना पडता है। यही दीवार है जिससे एक दुखती हुई पीठ टेक लगा सकती है

दिले-शिकस्ता दरां कूचा मीकुनंद दुरुस्त
चुनां कि खुद नशनासी कि अज कुजा बशिकस्त।[1]

बिला शुबहा मजहब की वो पुरानी दुनिया जिसकी माफौकलफितरत[2] कारफरमाइयो का यकीन हमारे दिल ओ दिमाग पर छाया रहता था, अब हमारे लिये बाकी नही रही। अब मजहब भी हमारे सामने आता है तो अकलियत[3] और मतिक[4] की एक सादा और बेरग चादर ओढकर आता है। और हमारे दिलो से ज्यादा हमारे दिमागो को मुखातिब करना चाहता है। ताहम अब भी तसकीन और यकीन का सहारा मिल सकता है तो इसीसे मिल सकता है

दरे-दीगरे बनुमा कि मन बकुजा रवम चु बर आनेम ?[5]

फिलसफा शक का दरवाजा खोल देगा फिर उसे बद नही कर सकेगा। साइस सबूत दे देगा मगर अकीदा नही दे सकेगा। लेकिन मजहब हमें अकीदा दे देता है अगरचे सबूत नही देता। और यहा जिदगी बसर करने के लिये सिर्फ़ साबितशुदा हकीकतो[6] ही की जरूरत नही है बल्कि अकीदे की भी जरूरत है। हम सिर्फ उन्ही बातो पर कनाअत[7] नही कर ले सकते जिन्हे साबित कर सकते है और इसलिये मान लेते हैं। हमे कुछ बाते ऐसी भी चाहिये जिन्हे साबित नही कर सकते मगर मान लेना पडता है।

By faith, and faith alone embrace
Believing, where we cannot prove.

आम हालात मे मजहब इसान को उसके खानदानी विरसे[8] के साथ मिलता है। और मुझे भी मिला। लेकिन मैं मौरूसी अकायद पर कानिअ[9] न रह सका। मेरी प्यास उससे ज्यादा निकली जितनी सैराबी[10] वो दे सकते थे। मुझे पुरानी राहो से निकलकर खुद अपनी नई राहे ढूढनी पडी। जिदगी के अभी

---

१. टूटे हुये दिल उस कूचे मे ठीक करते हैं और ऐसा ठीक करते है कि तुम खुद नही पहचान सकते कि कहाँ से टूटा था। २. प्रकृति से ऊपर ३. बुद्धिवाद ४. तर्क ५. कोई दूसरा दरवाजा दिखा कि जब ऊपर आयें तो हम कहाँ जाये ? ६ तथ्य ७. सतोष ८ उत्तराधिकार ९. संतुष्ट १०. तृप्ति ।

पंद्रह बरस भी पूरे नही हुये थे कि तबीयत नई खलिशो[1] और नई जुस्तजूओ से आश्ना हो गई थी और मौरूसी अकायद जिस शक्ल ओ सूरत मे सामने आ खडे हुये थे उन पर मुतमयिन[2] होने मे इकार करने लगी थी। पहले इस्लाम के अदरूनी मजाहिब[3] के इख्तलाफात[4] सामने आये और उनके मुतारिज[5] दावो और मुतसादिम[6] फैसलों ने हैरान ओ सरगश्ता[7] कर दिया। फिर जब कुछ क़दम आगे बढे तो खुद नफ्से-मज़हब[8] की आलमगीर[9] निज़ाओ[10] सामने आ गईं और उन्होने हैरानगी को शक तक और शक को इकार तक पहुँचा दिया। फिर इसके बाद मजहब और इल्म की बाहमी आवेजिशो[11] का मैदान नमूदार हुआ और उसने रहा सहा ऐतकाद भी खो दिया। जिंदगी के वो बुनियादी सवाल जो आम हालात मे बहुत कम हमे याद आते है, एक एक करके उभरे और दिल व दिमाग पर छा गये। हकीकत क्या है और कहाँ है ? और है भी या नही ? अगर है और एक ही है क्योकि एक से ज्यादा हकीकते हो नही सकती, तो फिर रास्ते मुख्तलिफ[12] क्यों हुये ? क्यो सिर्फ मुख्तलिफ ही नही हुये बल्कि बाहम मुतारिज़ और मुतसादम हुये ? फिर यह क्या है कि खिलाफ ओ निजाअ की इन तमाम लड़ती हुई राहो के सामने इल्म अपने बेलचक फैसलों और ठोस हकीकतों का चिराग हाथ मे लिये खडा है और उसकी बेरहम रोशनी मे कदामत[13] ओ रवायत[14] की वो तमाम पुर असरार[15] तारीकियाँ[16] जिन्हे नौए-इसानी[17] अज़मत[18] ओ तक्दीस[19] की निगाह मे देखने की खूगर[20] हो गई थी, एक एक करके नाबूद हो रही हैं !

यह राह हमेशा शक से शुरू होती है और इकार पर खत्म होती है। और अगर कदम उसी पर रुक जाये तो फिर मायूसी[21] के सिवा और कुछ हाथ नही आता

थक थक के हर मुक़ाम पर दो चार रह गये
तेरा पता न पायें तो नाचार क्या करें !

मुझे भी इन मज़िलो से गुज़रना पडा। मगर मैं रुका नही। मेरी प्यास मायूसी पर कानिअ[22] होना नही चाहती थी। बिल आखिर हैरानगियो और सरगश्तियो के बहुत से मरहले[23] तै करने के बाद जो मुकाम नमूदार हुआ,

---

१. चुभन २. सतुष्ट ३. मजहब का बहुवचन ४. विरोध ५. विरोधी, एक दूसरे से प्रतिकूल ६. विरोधी ७. परेशान ८. धर्म की आत्मा ९. विश्वव्यापी १०. झगडे, लड़ाइयाँ ११. सबध १२. भिन्न भिन्न १३. प्राचीनता १४. रूढि १५. भेद भरी १६. अधकार १७. मनुष्य १८. गरिमा १९. पाक पुनीत २०. अभ्यस्त २१. निराशा २२. सतुष्ट २३. मज़िल।

उसने एक दूसरे ही आलम मे पहुँचा दिया। मालूम हुआ कि इख्तिलाफ[1] ओ निज़ाअ की इन्ही मुतारिज़[2] राहों और औहाम[3] ओ खयालात की इन्ही गहरी तारीकियों के अंदर एक रोशन और कतई राह भी मौजूद है जो यकीन और ऐतकाद[4] की मंजिले-मक्सूद तक चली गई है। और अगर सुकून[5] ओ तमानियत[6] के सरचश्मे का सुराग मिल सकता है तो वही मिल सकता है। मैंने जो ऐतक़ाद हकीकत की जुस्तजू मे खो दिया था, वो उसी जुस्तजू के हाथो फिर वापिस मिल गया। मेरी बीमारी की जो इल्लत[7] थी वही बिलआखिर दारूये-शिफा[8] भी साबित हुई :

तदावैतु मिन् लैला बिलैला अनिलहवा
कमा मतदावि शारिबुल खम्रे बिलखम्रि।[9]

अलबत्ता जो अक़ीदा[10] खो दिया था वो तक़लीदी[11] था और जो अकीदा अब पाया वो तह्क़ीकी[12] था

राहे कि खिज़्र दाश्त ज सरचश्मा दूर बूद
लबे-तश्नगी ज राहे दिगर बुर्दा एम मा![13]

जब तक मौरूसी अकायद[14] के जुमूद[15] और तकलीदी[16] ईमान की चश्मबंदियो की पट्टियाँ हमारी आँखो पर बँधी रहती हैं हम उस राह का सुराग नही पा सकते। लेकिन ज्यो ही ये पट्टियाँ खुलने लगती है, साफ दिखाई देने लगता है कि राह न तो दूर थी और न खोई हुई थी। यह खुद हमारी चश्मबंदी थी जिसने ऐन रोशनी मे गुम कर दिया था :

दर दश्ते-आरज़ू न बुवद बीमे-दाम ओ दद[17]
राहे स्त ईं कि हम ज तू खेज़द बलाये-तू।

---

१. विरोध और झगडा २. विरोधी ३. वहम का बहुवचन, संदेह ४. श्रद्धा ५. शाति ६ इत्मीनान, सतोष ७. बीमारी का कारण ८. स्वास्थ्यप्रद दवा ९ मैंने लैला के प्रेम के रोग की दवा लैला के प्रेम ही से की, जिस तरह शराब पीनेवाला अपनी दवा शराब ही से करता है। १०. विश्वास ११. अनुकरण का १२. समझ बूझ का, सच्चा। १३. खिज़्र एक पैगंबर का नाम है और कहते है कि वे अमर है। और यह भी किंवदंती है कि जिस राह से वे गुज़र जाते है उस राह को सरसब्ज कर देते है। शेर का मतलब है कि खिज़् की राह स्रोत के उद्गम से दूर थी, लेकिन मेरी प्यास मुझे दूसरी राह ले गई। १४. विश्वास १५. जमाव १६. अनुकरण का। १७. आशारूपी बन मे चरिदो और दरिदो का डर नही होता; यह तो वह राह है कि खुद तुझसे ही तेरी बलाये पैदा होती है।

अब मालूम हुआ कि आज तक जिसे मज़हब समझते आये थे, वो मज़हब कहाँ था ? वो तो खुद हमारी ही वहम परस्तियों[1] और गलत अंदेशियों[2] की एक सूरतगरी[3] थी :

ता बग़ायत मा हुनर पिदाश्तेम
आशिक़ी हम नंग ओ आरे बूदा अस्त[4]

एक मज़हब तो मौरूसी मज़हब है कि बाप दादा जो कुछ मानते आये हैं मानते रहिये । एक जुगराफियायी मजहब है कि जमीन के किसी खास टुकड़े मे एक शाहराहे-आम बन गई है । सब उसी पर चलते है, आप भी चलते रहिये । एक मर्दुमशुमारी का मज़हब है कि मर्दुमशुमारी के कागज़ात मे एक खाना मज़हब का होता है, उसमे इस्लाम दर्ज करा दीजिये । एक रस्मी मज़हब है कि रस्मो और तकरीबो[5] का एक साँचा ढल गया है । उसे न छेड़िये और उसी मे ढलते रहिये । लेकिन इन तमाम मज़हबों के अलावा भी मज़हब की एक हकीकत बाकी रह जाती है । तारीफ ओ इम्तियाज़[6] के लिये उसे हकीकी मज-हब के नाम से पुकारना पडता है, और इसी की राह गुम हो जाती है

हमीं वरक कि सियह गश्त, मुद्दआ ईं जा स्त ![7]

इसी मुकाम पर पहुँचकर यह हकीकत भी बेनकाब हुई कि इल्म और मजहब की जितनी निजाअ है फिलहकीकत इल्म और मजहब की नही है । मुद्दइ-याने-इल्म[8] की खामकारियों[9] और मुद्दइयाने-मजहब की जाहिर-परस्तियों[10] और कवायद साजियों[11] की है । हकीकी इल्म और हकीकी मज़हब अगरचे चलते हैं अलग अलग रास्तों मे मगर बिलआखिर पहुँच जाते है एक ही मंजिल पर :

अिबारातुन शत्त व हुस्नुक वाहिदुन
व कुल्लुन इला ज़ाकल जमालि युशिरु[12]

इल्म आलमे-महसूसात[13] से सरोकार रखता है, मज़हब मावराये-महसू-सात[14] की खबर देता है । दोनों मे दायरों का तअद्दुद[15] हुआ, मगर तआरुज[16]

---

१. मिथ्या परायणता २. गलत धारणा ३. नक्काशी ४. हमने पूर्ण रूप से विद्या और हुनर सीखा तब तक इश्क भी लज्जा और शर्म का कारण बना हुआ था । ५. त्यौहार ६. पहचान ७ यही पृष्ठ जो कि काला पड गया है मुद्दे की बात यही पर है । ८ ज्ञान के झूठे हामी ९. कचाई १० आडंबर पूजा ११. नियमादि बनाने की १२. भाषायें या बोलियाँ अनेक है और उसका रूप एक है, और सब अपनी-अपनी भाषा मे उसी की तरफ इशारा कर रहे हैं । १३. अनुभूति की दुनिया १४. अनुभूति से परे या ज्ञानातीत १५. फ़र्क १६. विरोध ।

नही हुआ । जो कुछ महसूसात से मावरा[1] है हम उसे महसूसात से मआरिज़[2] समझ लेते है और यही से हमारे दीदये-कजअंदेश की सारी दरमादगियाँ[3] शुरू हो जाती है :

बर चेहरये-हक़ीक़त अगर मांद पर्दये
जुर्मे-निगाहे-दीदये-सूरतपरस्ते-मा स्त[4]

बहर हाल जिंदगी की नागवारियो मे मजहब की तसकीन सिर्फ एक सलबी[5] तसकीन ही नही होती बल्कि ईजाबी[6] तसकीन होती है । क्योकि वो हमे आमाल[7] के अखलाकी अकदार का यकीन दिलाता है, और यही यकीन है जिसकी रोशनी किसी दूसरी जगह से नहीं मिल सकती । वो हमे बतलाता है कि जिंदगी एक फरीजा[8] है जिसे अंजाम देना चाहिये, एक बोझ है जिसे उठाना चाहिये :

जलबये कारवाने-मा नेस्त बनालये-जरस
इश्क़े-तू राह मीबुरद, शौक़े-तो ज़ाद मीदिहद[9]

लेकिन क्यों यह बोझ काँटों पर चले बगैर नही उठाया जा सकता ?

नही उठाया जा सकता । क्योकि यहा खुद जिंदगी के तकाजे हुये जिनका हमे जवाब देना है, और खुद जिंदगी के मकासिद हुये जिनके पीछे वालिहाना[10] दौडना है । जिन बातो को हम जिंदगी की राहतो और लज्जतो से ताबीर करते है वो हमारे लिये राहते और लज्जते ही कब रहेगी अगर इन तकाजो और मकसदो से मुँह मोड ले ? बिला सुबहा यहाँ जिंदगी का बोझ उठा के काँटो के फर्श पर दौडना पडा लेकिन इसलिये दौडना पडा कि दीबा[11] व मखमल के फर्श पर चल कर उन तकाज़ो का जवाब दिया नही जा सकता था । काँटे कभी दामन मे उलझेगे, कभी तलवो मे चुभेगे लेकिन मकसद की खलिश जो पहलुये-दिल मे चुभती रहेगी, न दामने-तार तार की खबर लेने देगी, न जख्मी तलवो की :

---

१ परे २. विरोधी ३ परेशानियां ४. अगर हकीकत के चेहरे पर एक पर्दा पडा रहा तो यह हमारी (बाह्य) रूप उपासक आँखो की दृष्टि का दोष है । ५ नकारात्मक ६ स्वीकारात्मक ७ कर्म ८. कर्तव्य ९. हमारे कारवा का प्रदर्शन उसके घंटे की आवाज से नही है बल्कि तेरा प्रेम ही हमे राह पर ले चलता है और तेरे लिये जो अटूट भक्ति है वही राह के सबल का काम देती है । १० पागलो की तरह ११. एक प्रकार का बहुमूल्य रेशमी कपड़ा ।

माशूक़ दर मयानये-जां मुद्दई कुजा स्त
गुल दर दिमाग़ मीदमद, आसेबे-खार चीस्त ?[१]

और फिर ज़िदगी की जिन हालतो को हम राहत ओ अलम[२] से ताबीर करते हैं, उनकी हकीकत भी इससे ज्यादा क्या हुई कि इज़ाफत[३] के करिश्मों की एक सूरतगरी है ? यहाँ न मुतलक़[४] राहत है, न मुतलक अलम। हमारे तमाम अहसासात[५] सर-ता-सर[६] इजाफी[७] है :

दवीदन, रफ़्तन, इस्तादन, निशस्तन, खुफ़्तन ओ मुर्दन[८] !

इजाफते बदलते जाओ, राहत और अलम की नौइयते[९] भी बदलती जायेगी। यहाँ एक ही तराजू लेकर हर तबीयत और हर हालत का अहसास नही तोला जा सकता। एक दहका[१०] की राहत ओ अलम तौलने के लिये जिस तराजू से हम काम लेते है, उससे फनूने-लतीफ़ा[११] के एक माहिर[१२] का मैयारे-राहत[१३] ओ अलम नही तौल सकेगे। एक रियाज़ीदां[१४] को रियाजी का एक मसला हल करने में जो लज्जत मिलती है वो एक हवस-परस्त[१५] को शबिस्ताने-इशरत[१६] की सियह-मस्तियों[१७] मे कब मिल सकेगी ? कभी ऐसा होता है कि हम फूलो की सेज पर लोटते है और राहत नही पाते, कभी ऐसा होता है कि काँटो पर दौड़ते है और उसकी हर चुभन मे राहत ओ सुरूर[१८] की एक नई लज्जत पाने लगते है :

बहरे-यक गुल ज़हमते-सद ख़ार मीबायद कशीद ![१९]

राहत ओ अलम का अहसास हमे बाहर से लाकर कोई नही दे दिया करता। यह खुद हमारा ही अहसास है जो कभी जख्म लगाता है, कभी मरहम बन जाता है। तलब ओ सई[२०] की ज़िदगी बजाये-खुद[२१] ज़िदगी की सबसे बड़ी लज्ज़त है, बशर्ते कि किसी मतलूब[२२] की राह मे हो :

---

१. माशूक तो प्राणों मे बसी हुई है उसका मुद्दई याने दावेदार कहाँ है, फूल तो दिमाग मे उग रहा है फिर काँटे की पीडा कैसी ? २. पीड़ा ३. सापेक्षता ४. पूर्ण ५. अनुभूतियाँ ६. आदि से अंत तक ७. सापेक्ष ८. दौडना, चलना, खड़ा होना, बैठना, सोना और मर जाना यही ज़िदगी है। ९. प्रकार १०. ग्रामीण ११. ललित कला १२. प्रवीण १३. सुख दुख का स्तर १४. गणितज्ञ १५. विषय लोलुप १६. ऐश ओ इशरत की हरमसरा १७. रगरलियाँ १८. आनंद १९. एक फूल के लिये सौ काँटों की ज़हमत या पीडा भुगतनी पडती है। २०. प्राप्ति और प्रयत्न २१. अपने आप मे २२. उद्देश्य।

रहरवांरा खस्तगीये-राह नेस्त
इश्क़ हम राह स्त ओ हम खुद मंज़िल स्त ![1]

और यह जो कुछ कह रहा हूँ फिलसफा नहीं है। जिंदगी के आम वारदात है। इश्क ओ मुहब्बत के वारदात का मै हवाला नही दूगा। क्योकि वो हर शख्स के हिस्से मे नही आ सकते। लेकिन रिंदी[2] और हवसनाकी[3] के कूचो की खबर रखनेवाले तो बहुत निकलेगे, वो खुद अपने दिल से पूछ देखे कि किसी राह मे रज ओ अलम की तल्खियो ने कभी खुशगवारियो के मजे भी दिये थे या नही?

हरीफ़े - काविशे - मिज़गाने - खूंरेज़श नई नासह
बदस्त आवर रगे-जाने ओ निश्तर रा तमाशा कुन ![4]

जिंदगी बगैर किसी मकसद के बसर नही की जा सकती। कोई अटकाव, कोई लगाव, कोई बधन होना चाहिये जिसकी खातिर जिंदगी के दिन काटे जा सके। यह मकसद मुख्तलिफ तबीयतो के सामने मुख्तलिफ शक्लो मे आता है।

ज़ाहिद बनमाज़ ओ रोज़ा ज़ब्ते दारद
सरमद ब मय ओ पयाला रब्ते दारद।[5]

कोई ज़िंदगी की कारबरदारियों[6] ही को मकसदे-जिंदगी समझकर उन पर कानिअ[7] हो जाता है। कोई उन पर कानिअ नही हो सकता। जो कानिअ नही हो सकते उनकी हालतें भी मुख्तलिफ हुई। अकसरो की प्यास ऐसे मकसदो से सैराब[8] हो जाती है जो उन्हे मशगूल[9] रख सके। लेकिन कुछ तबीयते ऐसी भी होती है जिनके लिये मशगूलियत काफी नही हो सकती। वो जिंदगी का इज्तिराब[10] भी चाहती है.

न दाग़े-ताज़ा मीकारद, न-ज़ख्मे कुहना मीख़ारद
बिदह या रब दिले कीं सूरते-बेजां नमीख्वाहम।[11]

---

१. (प्रेम) पथगामियो के लिये पथ की थकन नही है, प्रेम खुद राह भी है और गंतव्य भी है २. उच्छृखलता ३. विषय लोलुपता ४. ओ उपदेशक! तू उसकी खूरेज़ पलको की खोज करनेवाला साथी नही है। अपनी जान की एक रग हाथ में ले और फिर नश्तर का तमाशा देख कि पीडा मे क्या आनद है। ५. ज़ाहिद नमाज और रोज़े से ताल्लुक रखता है और सरमद शराब और प्याले से सबध रखता है ६. कर्मठता ७. सतुष्ट ८. तृप्त ९. प्रवृत्त १०. तडप ११. न तो कोई नया दाग लगता है और कोई पुराना ज़ख्म खुजाता है; अय मेरे मालिक एक दिल दे कि इस प्राणहीन स्थिति को नही चाहता।

पहलो के लिये जो दिलबस्तगी[1] इसमे हुई कि मशगूल रहे, दूसरो के लिये इसमे हुई कि मुज्तरिब रहे

दरीं चमन कि हवा दाग़े-शबनम[2] आराई स्त
तसल्लिये[3] ब हज़ार इज्तिराब मीबाफ़द !

एक खुनक[3] और नाआशनाये-शोरिश मक्सद[4] मे उनकी प्यास नही बुझ सकती । उन्हे ऐसा मकसद चाहिए जो इज्तिराब के अगारो मे दहक रहा हो, जो उनके अंदर शोरिश ओ सरमस्ती का एक तहलका मचा दे । जिसके दामने-नाज़[5] को पकडने के लिये वह हमेशा अपना गरेबाने-वहशत[6] चाक करते रहें

दामन उसका तो भला दूर है अय दस्ते-जुनूं
क्यों है बेकार, गरेबां तो मिरा दूर नहीं ।

एक ऐसा बलाये-जा मकसद, जिसके पीछे उन्हे दीवानावार दौडना पडे । जो दौडनेवालो को हमेशा नजदीक भी दिखाई दे और हमेशा दूर भी होता रहे । नजदीक इतना कि जब चाहे हाथ बढाकर पकड ले । दूर इतना कि उसकी गर्दे-राह का भी सुराग न पा सके

बा मन आवेज़िशे-ऊ उलफते-मौज स्त ओ कनार
दम बदम बा मन, ओ हर लहज़ा गुरेज़ां अज़ मन ![8]

फिर नफसयाती[9] नुक्ते-निगाह[10] मे देखिये तो मुआमले का एक और पहलू भी है जिसे सिर्फ तह-रस[11] निगाहे ही देख सकती है । यकसानी[12] अगरचे, सुकून ओ राहत[13] की हो, यकसानी हुई । और यकसानी बजाये-खुद जिदगी की सबसे बडी बेनमकी[14] है । तबदीली अगरचे सुकून मे इज्तिराब[15] की हो, मगर फिर तबदीली है, और तबदीली बजाये-खुद जिदगी की एक बडी लज्जत हुई । अरबी मे कहते हैं "हम्मिजू मजालिसकुम" अपनी मजलिसो का जायका बदलते रहो ।

---

१ दिल लगाव २. इस चमन या दुनिया मे हवा पर भी शबनम या ओस पैदा करने का दाग है । यहाँ पर तसल्ली को भी हजारो परेशानियो से बुनते है । अर्थात तसल्ली यही है कि किसी काम मे मशगूल रहे । ३. ठडी ४. जोश से अपरिचित उद्देश्य ५ नाज़ का पल्ला ६. पागलपन का गरेबान ७. पागल हाथ ८. मेरे साथ उसका सबध उसी प्रकार का है जैसा कि लहर और किनारे की उल्फत है । हर क्षण वह मेरे साथ भी है और हर क्षण मुझ से दूर भी है । ९. मानस शास्त्र १०. दृष्टिकोण ११. सूक्ष्मदर्शी, तह तक पहुंचने वाली । १२. Monotony १३. शाति और सुख १४. नीरसता १५. बेचैनी ।

सो यहाँ ज़िंदगी का मज़ा भी उन्ही को मिल सकता है जो उसकी शीरीनियों[1] के साथ उसकी तल्खियो के भी घूँट लेते रहते है, और इस तरह जिदगी का ज़ायका बदलते रहते है। वरना वो जिंदगी ही क्या जो एक ही तरह की सुबहों और एक ही तरह की शामो मे बसर होती रहे ? ख्वाजा दर्द क्या खूब कह गये है :

आ जाये ऐसे जीने से अपना तो जी बतंग
आखिर जीयेगा कब तलक अय ख़िज्र[2] ? मर कहीं !

यहाँ पाने का मजा उन्ही को मिल सकता है जो खोना जानते है। जिन्होंने कुछ खोया ही नही उन्हे क्या मालूम कि पाने के मानी क्या होते हैं ? नज़ीरी की नज़र इसी हकीकत की तरफ गई थी :

आं कि ऊ दर कल्बये-अहज़ां पिसर गुमकर्दा, याफ्त
तू कि चीज़े गुम न कर्दी, अज़ कुजा पैदा शवद ![3]

और फिर गौर ओ फिक्र का एक कदम और आगे बढाइये तो खुद हमारी जिंदगी की हकीकत भी हरकत ओ इज़्तिराब के एक तसलसुल[4] के सिवा और क्या है ? जिस हालत को हम सुकून से ताबीर करते हैं अगर चाहे तो उसीको मौत से भी ताबीर कर सकते है। मौज[5] जब तक मुज्तरिब[6] है ज़िंदा है। आसूदा[7] हुई और मादूम[8] हुई। फारसी के एक शायर ने दो मिसरो के अंदर सारा फिलसफये-हयात[9] खत्म कर दिया था :

मौजेम कि आसूदगीये - मा अदमे - मा स्त
मा ज़िंदा अज़ीनेम कि आराम न गीरेम ![10]

और फिर यह राह इस तरह भी तय नही की जा सकती कि उसके अटकाव के साथ दूसरे लगाव भी लगाये रखिये। राहे-मकसूद की खाक बड़ी ही गय्यूर[11] वाके हुई है। वह रहरौ[12] की जबीने-नियाज[13] के सारे सजदे[14] इस तरह खीच लेती है कि फिर किसी दूसरी चौखट के लिए कुछ बाकी ही नही रहता। देखिये मैने यह ताबीर गालिब से मुस्तआर ली है

---

१ मिठास २ खिज्र एक पैगम्बर का नाम है और कहते है कि वो सदा अमर है ३. जिन्होने कि दुख की मढैया मे अपना बेटा खो दिया उन्होने पा लिया। तूने तो कोई चीज भी गुम नही की फिर कहाँ से मिले। ४. सिलसिला, प्रवाह ५. लहर ६. बेचैन, बेकरार ७. शांत ८. विनष्ट ९ जीवन-दर्शन १०. हम लहर है हमारे लिए शाति मौत है हम इसलिये ज़िंदा है कि आराम नही करते ११ अभिमानी १२. बटोही १३. श्रद्धापूर्ण पेशानी या मस्तक १४. वंदन।

खाके-कूयश खुद पसंद उफ़्ताद दर जज़्बे-सुजूद
सजदा अज़ बहरे-हरम न गुज़ाश्त दर सीमाये-मन ।[१]

मकसूद इस तमाम दराज नफसी से यह था कि आज अपने औराके-फिक्रे परेशां[२] का एक सफहा आपके सामने खोल दूं :

लख़्ते ज़ हाले-खेश बसीमा नविश्ता ऐम ![३]

इस मैकदये-हज़ार शेवा व रंग[४] में हर गिरफ्तारे-दामे-तख़य्युल[५] ने अपनी खुदफ़रामोशियों[६] के लिये कोई न कोई जामे-सरशारी[७] सामने रख लिया है और उसी में बेखुद रहता है :

साक़ी बहमा बादा बयक खुम दिहद, अम्मा ?
दर मजलिसे-ऊ मस्तिये-हरयक ज़ शराबे स्त[८]

कोई अपना दामन फूलों से भरना चाहता है, कोई कांटों से । और दोनों में से कोई भी पसंद नहीं करेगा कि तिही दामन[९] रहे । जब लोग कामजोइयों[१०] और खुशवक्तियों[११] के फूल चुन रहे थे तो हमारे हिस्से मे तमन्नाओं[१२] और हसरतों के कांटे आये । उन्होंने फूल चुन लिये और कांटे छोड दिये, हमने कांटे चुन लिये और फूल छोड़ दिये :

ज़ ख़ारज़ारे-मुहब्बत दिले-तुरा च खबर
कि गुल बजैब न गुंजद क़बाये-तंग तुरा ![१३]

अबुलकलाम

---

१. उसके कूचे की खाक ने ही वदन की भावना पैदा कर दी फिर मेरे मस्तक मे हरम के लिये नतमस्तक होने का भाव तक न छोड़ा २. परेशान फिक्रों का पृष्ठ ३. अपनी हकीकत का थोड़ा सा हाल हमने पेशानी पर लिखा है । ४. हज़ार रंग ओ रूप का मयखाना अर्थात् दुनिया ५. चिंतन के जाल में फँसा हुआ ६. आत्मविस्मृति ७. लबालब प्याला ८. साकी सबको शराब एक ही मटके से देता है, लेकिन उसकी मजलिस मे प्रत्येक व्यक्ति की मस्ती और आनंद एक और ही शराब से है । ९. खाली दामन १०. उद्देश्य पूर्ति ११. सौभाग्यशीलता, खुशनसीबी १२. कामनाओं १३. तेरे दिल को मुहब्बत के कँटीले काँटो की क्या ख़बर क्योंकि तेरी तंग अचकन की जेब मे फूल नहीं समाते ।

क़िलअ्रे-अहमदनगर
१५, अगस्त सन् १६४२ ई.

मारा जबाने-शिकवा ज़ बेदादे-चर्ख नेस्त
अज मा खते बमुहरे ख़मोशी गिरफ़्ता अंद[1]

सदीक़े-मुकर्रम,

वही सुबह चार बजे का जांफिज़ा वक्त है । मुराही लबरेज़ है और जाम आमादा । एक दौर ख़त्म कर चुका हूँ, दूमरे के लिये हाथ बढा रहा हूँ :

दरीं जमाना रफ़ीक़े कि खाली अज़ खलल स्त
सुराहिये-मये-नाब ओ सफ़ीनये-ग़जल स्त
जरीदा रौ कि गुजरगाहे-आफ़ियत तंग स्त
पयाला गीर. कि उम्रे-अज़ीज बेबदल स्त[2]

तबीयत वक्त की कशाकश[3] से यकक़लम फारिग़[4] और दिल फ़िके-ईं ओ आं[5] से बकुल्ली आसूदा[6] है । अपनी हालत देखता हूँ तो वो आलम दिखाई देता है जिसकी खबर ख्वाजये-शीराज़ ने छह सौ साल पहले दे दी थी । ज़िंदगी के चालीस साल तरह तरह की काविशों[7] मे बसर हो गये । मगर अब देखा तो मालूम हुआ कि सारी काविशों का हल इसके सिवा कुछ न था कि सुबह का जाफिज़ा वक्त हो और चीन की बेहतरीन चाय के पै दर पै[8] फिजान[10] !

चल साल रंज ओ गुस्सा कशीदम, ओ आक़बत
तदबीरे-मा बदस्ते-शराबे-दो साला बूद ![11]

---

१. मुझे बेरहम आसमान से कोई शिकायत नही है, मुझमे तो खामोशी की मुहर लगा कर एक सीमा-रेखा खीच दी है । २. इस समय ऐसा कोई साथी जो खलल से खाली हो तो वह पवित्र शराब की सुराही और गजल की पुस्तिका है । ऐसे मे अकेला चल क्योकि आनन्द की राह बड़ी सकरी है और शराब का प्याला ले कि यह प्यारा जीवन अपरिवर्तनीय है । ३. खीचतान ४. मुक्त ५. इस और उसकी चिंताओ से ६. पूर्णरूपेण ७. निश्चित ८. जुस्तजू, तलाश ९. एक के बाद एक १०. प्याले ११. चालीस साल तक रंज और दुख सहता रहा और आखिरकार मेरा इलाज दो साल पुरानी शराब के हाथ है यह मालूम हुआ ।

आज तीन बजे से कुछ पहले आँख खुल गई थी। सहन मे निकला तो हर तरफ सन्नाटा था। सिर्फ अहाते के बाहर से पहरेदार की गश्त ओ बाज-गश्त की आवाजे आ रही थी। यहाँ रात को अहाते के अंदर वार्डरो का तीन-तीन घंटे का पहरा लगा करता है, मगर बहुत कम जागते हुये पाये जाते हैं। उस वक़्त भी सामने के बरामदे मे एक वार्डर कम्मल बिछाये लेटा था और ज़ोर ज़ोर से खर्राटे ले रहा था। बेइख्तियार मोमिनखां का शेर याद आ गया

है ऐतमाद[1] मिरे बख्ते-खुफ़्ता पर क्या क्या
वगर ना ख्वाब कहाँ चश्मे-पासबां[2] के लिये

ज़िंदानियो[3] के इस काफिले मे कोई नही जो सहरखेज़ी[4] के मुआमले मे मेरा शरीके-हाल[5] हो। सब बेखबर सो रहे है और इसी वक्त मीठी नीद के मज़े लेते है :

दायम कसे बक़ाफ़ला बूदा स्त पासबां
बेदार शौ कि चश्मे-रफ़ीकां बख्वाब शुद[6]

सोचता हूँ तो जिंदगी की बहुत सी बातो की तरह इस मआमले मे भी सारी दुनिया से उल्टी ही चाल मेरे हिस्से मे आई। दुनिया के लिये सोने का जो वक्त सबसे बेहतर हुआ वही मेरे लिये बेदारी[7] की असली पूंजी हुई। लोग इन घडियो को इसलिये अज़ीज़[8] रखते है कि मीठी नीद के मज़े ले। मैं इस-लिये अज़ीज रखता हूँ कि बेदारी की तल्खकामियों[9] से लज्जतयाब[10] होता रहूँ.

खल्क़रा बेदार बायद बूद ज़ आबे-चश्मे-मन
वीं अजब कां दम कि मीगिरियम कसे बेदार नेस्त[11]

एक बड़ा फायदा इस आदत से यह हुआ कि मेरी तनहाई[12] मे अब कोई खलल नही डाल सकता। मैंने दुनिया को ऐसी जुरअतो[13] का सिरे से मौका ही नही दिया। वो जब जागती है तो मै सो रहता हूँ, जब सो जाती है तो उठ बैठता हूँ

---

१. भरोसा, आशा २. पहरेदार की आँख ३ कैदी ४ प्रात: जल्दी उठना ५. साथी ६ काफिले मे सदा सर्वदा के लिये कोई निगरानी करने वाला हुआ है? इसलिये जागता रह क्योंकि साथियो की आँखे निद्रित हो गई है। ७ जागरण ८ प्रिय ९. कटुता १० आनन्द लेना ११. मेरी आँखो के आँसू से दुनिया को जाग जाना चाहिये था। लेकिन यह अजीब है कि जिस क्षण मैं रोता चिल्लाता हूँ तो कोई नही जाग रहा है। १२ एकातता १३ हिम्मत।

ख्वाबे-ग़फ़लत हमारा बुर्दा ओ बेदार यके स्त ![1]

खलायक[2] के कितने ही हुजूम[3] में हूँ लेकिन अपना वक्त साफ़ बचा ले जाता हूँ। क्योंकि मेरी इस "खिलवत-दर अंजुमन"[4] पर कोई हाथ डाल ही नहीं सकता। मेरे ऐश ओ तरब[5] की बज्म[6] उस वक्त आरास्ता[7] होती है जब न कोई आँख देखने वाली होती है, न कोई कान सुनने वाला। रज़ी दानिश ने मेरी ज़बान मे कहा था :

खुश ज़मज़मये-गोशये-तनहाइये-खेशम
अज़ जोश ओ खरोशे-गुल ओ बुलबुल खबरम नेस्त।[8]

एक बडा फायदा इससे यह हुआ कि दिल की अँगीठी हमेशा गर्म रहने लगी। सुबह की इस मोहलत मे थोडी सी आग जो सुलग जाती है उसकी चिंगारियाँ बुझने नही पाती। राख के तले दबी दबाई काम करती रहती हैं :

अज़ां ब देरे-मुग़ानम अज़ीज़ मीदारंद
कि आतिशे कि न मीरद, हमेशा दर दिले-मा स्त[9]

दिन भर अगर सोज़ ओ तपिश[10] का सामान न भी मिले, जब भी चूल्हे के ठंडे पड जाने का अंदेशा न रहा। उरफी क्या खूब बात कह गया है :

सीनये गर्म न दारी म-तलब सोहबते-इश्क़
आतिशे नेस्त चु दर मुजमराअत अ़ूद मख़र ![11]

इस सहरखेजी की आदत के लिये वालिद मरहूम का मिन्नत-गुजार[12] हूँ। उनका मामूल[13] था कि रात की पिछली पहर हमेशा बेदारी मे बसर करते। बीमारी की हालत भी इस मामूल मे फर्क नही डाल सकती थी। फरमाया करते थे कि रात को जल्द सोना और सुबह जल्द उठना ज़िंदगी की सआदत[14] की पहली अलामत[15] है। अपनी तालिबइल्मी[16] के हालात सुनाते कि देहली मे

१ गफलत की नीद सबको ले गई और सिर्फ एक ही व्यक्ति जाग रहा है। २ सृष्टि, दुनिया ३ भीड ४ जग के बीच अकेलापन ५ खुशी और आनन्द ६ महफिल ७. सजती है ८ मेरी तनहाई याने एकातता के कोने का सगीत भी क्या खूब है कि मुझे गुल और बुलबुल के जोश ओ खरोश की कुछ भी खबर नही है ९ मेरे गुरू के आस्ताने मे मुझे इसलिये प्रिय समझते है कि मेरे दिल मे वो आग है जो कभी नही बुझती १०. जलने और तापने का ११ तेरा सीना ही गरम नही है इसलिये प्रेम की सोहबत की इच्छा मत कर क्योकि जब तेरी अंगीठी मे आग ही नही है तब ऊद मत खरीद १२ कृतज्ञ १३. नित्य का नियम १४ नेकी १५. पहचान १६. विद्यार्थी जीवन।

मुफ़्ती सदरुद्दीन मरहूम से सुबह की सुन्नत और फर्ज के दरमियान सबक लिया करता था और इस इम्तियाज[1] पर नाज़ा रहता था। क्योंकि वो चाहते थे, मुझे खुसूसियत[2] के साथ औरो से अलहदा सबक दे और इसके लिये सिर्फ वही वक्त निकल सकता था। यह भी फरमाते कि यह फैज[3] मुझे अपने नाना रुक्नुल्मुदर्रसीन से मिला। वो भी शाह अब्दुल अजीज से अलस्सबाह[4] सबक लिया करते थे और पिछले पहर से उठकर इसकी तैयारी मे लग जाते थे। फिर ख्वाजा शीराज का यह मकता जौक[5] ले लेकर पढते

मरौ बख्वाब कि हाफ़िज़ ब बारगाहे क़ुबूल
ज़ विरदे-नीम शब ओ दर्से-सुबहगाह रसीद[7]

मेरी अभी दस ग्यारह बरस की उम्र होगी कि ये बाते काम कर गई थी। बचपने की नीद सर पर सवार रहती थी मगर मैं उससे लडता रहता। सुबह अँधेरे मे उठता और शमादान रोशन करके अपना सबक याद करता। बहनो से मिन्नते किया करता था कि सुबह आँख खुले तो मुझे जगा देना। वो कहती थी यह नयी शरारत क्या सूझी है। इस खयाल से कि मेरी सिहत[8] को नुकसान न पहुँचे, वालिद मरहूम रोकते। लेकिन मुझे कुछ ऐसा शौक पड गया था कि जिस दिन देर से आँख खुलती दिन भर पशेमा[9] सा रहता था। आने वाली ज़िंदगी मे जो मुआमलात पेश आने वाले थे यह उनसे मेरा पहला साबिका था[10]

अतानी हवाहा क़बल अन्न आरफ़ल हवा
फ़सादक़ कल्बन फारिगन फ़तमक्कना[11]

देखिये यहाँ "पहला साबिका" लिखते हुये मैने अरबी की तरकीब "कान अव्वल अहदी बिहा[12]" का बिला कस्द[13] तरजुमा कर दिया कि दिमाग मे बसी हुई थी। ये सतरे लिख रहा हूँ और आलमे-तनहाई[14] की खिलवत अंदोजियो[15] का पूरा पूरा लुत्फ उठा रहा हूँ। गोया सारी दुनिया मे इस वक्त मेरे सिवा कोई नही बसता। कह नही सकता, तनहाई का यह अहसास मेरी

---

१. फर्क २ गौरव अनुभव करना था ३. खास तौर से ४. गुण ५. सुबह सबेरे ६. रुचि के साथ ७ गफलत की नीद मे मत सोओ क्योंकि हाफिज कबूलियत के दरबार मे आधी रात के जप और सुबह के पाठ से पहुँचा है। ८ स्वास्थ्य ९ खिन्न १०. सबंध ११ मेरी प्रेमिका का प्रेम उस समय मेरे दिल मे जागा जब मैं प्रेम को जानता ही नही था, तब इस प्रेम ने दिल खाली पाया तो वही जम कर बैठ गया १२ पहली मुलाकात १३. अनजाने, अनिच्छा से १४ एकांत दुनिया १५. एकातता।

तबाए-खिल्वत-परस्त[1] की जौलानियों[2] को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया करता है। बेदिल की ख्याल-बंदियों का गुलू[3] बेकैफ[4] हो लेकिन उसकी तबए-नवील की बाज बाज गजलें कैफ से खाली नहीं हैं।

सितम स्त गर हवसत कशद कि ब सैरे-सर्व व समन दर आ
तू ज गुंचा कम न दमीदाई, दरे-दिल कुशा, ब चमन दर आ
पये-नाफ़हाये खुजिस्ता बू, मपसंद जहमते-जुस्तजू
ब खयाले-हल्क़ये-जुल्फ़े-ऊ, गिरहे-खुर ओ ब खुतन दर आ[5]

पांच बजे से किले में टैंकों के चलाने की मश्क[6] शुरू होती है और घर-घर की आवाज आने लगती है, मगर उसमें अभी देर है। चार बजे दूध की लारी आती है और चंद लमहों के लिये सुबह का सुकून हंगामे से बदल देती है। वो अभी चंद मिनट हुये आई थी और वापस गई मगर इस वक्त के सन्नाटे में कोई आवाज मुश्किल हो रही है तो वो सिर्फ जवाहरलाल के हल्के खर्राटों की आवाज है। वो हमसाये[7] में सो रहे हैं। सिर्फ लकड़ी का एक पर्दा हायल है। खर्राटे जब थमते हैं तो हस्बे-मामूल[8] नींद में बड़बड़ाने लगते हैं। यह बड़बड़ाना हमेशा अंग्रेजी में होता है

यारे-मा ईं दारद ओ आं नीज हम![9]

मोतमनुद्दौला इस्हाक खां शुस्तरी मुहम्मदशाही उमरा में से था। उसका एक मतला आपने तजकिरों में देखा होगा। जिलाकुमल की सनअतगरी[11] के सिवा कुछ नहीं है। मगर जब कभी जवाहरलाल को अंग्रेजी में बड़बड़ाते हुए सुनता हूँ तो बेइख्तियार याद आ जाता है

ज बस कि दर दिले-तंगम खयाले-आं गुल बूद
नफ़ीरे-ख्वाबे-मन इमशब नफ़ीरे बुलबुल बूद[12]

---

१. एकान्त प्रियता की प्रकृति २. उमंग ३. अतिशयोक्ति ४. बेमजा ५. यह कितने अफसोस की बात है कि अगर तेरी यह इच्छा तुझे सर्व और समन की सैर के लिये खींच रही है तू खुद कली से कम नहीं है, तू दिल का दरवाजा खोल और उस चमन की सैर कर। उस तेज गंध मृगनाभि की खोज के लिये मेहनत मत कर, (बल्कि) उस प्रीतम की जुल्फों के हल्के के ख्याल में एक गाँठ बना और खुतन में आ। खुतन एक शहर का नाम है जहाँ से कस्तूरी आती है ६. अभ्यास ७. खलल अंदाज़ ८. पड़ौस ९. हमेशा की रीति की तरह १०. मेरे यार में ये गुण हैं और वो गुण भी हैं ११. कारीगरी १२. मेरे तंग दिल में उस प्रीतम का (गुल) बेहद खयाल था इसीलिये आज की रात मेरे ख्वाब की नफीरी से बुलबुल की आवाजें आ रही थीं।

यह नींद मे बड़बड़ाने की हालत भी अजीब है। यह अमूमन[1] उन्ही तबीयतो पर तारी[2] होती है जिनमे दिमाग से ज्यादा जजबात[3] काम किया करते हैं। जवाहरलाल की तबीयत भी स-रा-सर[4] जजबाती वाके हुई है। इसलिए ख्वाब और बेदारी दोनों हालतो मे जजबात काम करते रहते है।

यहाँ आये हुए एक हफ्ते से ज्यादा हो गया है। फौजी सीगे[5] ने हमारा चार्ज ले लिया, दाखिले के वक्त फेहरिस्त से मुकाबला कर लिया, हमारी हिफाजत का और दुनिया से बेतअल्लुकी का जिस कदर बदोबस्त किया जा सकता था, वो भी कर लिया। लेकिन इससे ज्यादा उन्हे हमारे मुआमलात से कोई सरोकार मालूम नही होता। अदर का तमाम इतजाम गवर्नमेट बम्बई के होम डिपार्टमेट ने बराहे-रास्त[6] अपने हाथ मे रखा है। और असली रिश्तये-कार[7] मरकजी[8] हुकूमत के हाथ मे है।

हमे यहा रखने के लिए जो इब्तदाई[9] इतजाम किया गया था, वो यह था कि गिरफ्तारी से एक दिन पहले याने ८ अगस्त को यरवदा सेट्रल जेल पूना से एक सीनियर जेलर यहाँ भेज दिया गया। दस जेल के वार्डर और पंद्रह कैदी कामकाज के लिए उसके साथ आये। जेलर को कुछ मालूम न था कि क्या सूरते-हाल[10] पेश आने वाली है। सिर्फ इतनी बात बतलाई गई थी कि एक डिटेंशन कैम्प खुल रहा है। चद दिनो के लिए देख भाल करनी होगी। हम पहुँचे तो मुआमला एक दूसरी ही शक्ल मे नुमाया[11] हुआ और बेचारा सरासीमा[12] होकर रह गया। चूँकि मैने यहाँ आते ही अपना गुस्सा उस गरीब पर निकाला था इसलिए कई दिन तक मुंह छिपाये फिरता रहा। जब और कुछ न बनती तो जिले के कलक्टर के पास दौडा हुआ जाता। वो उससे ज्यादा बेखबर था।

दरे-हर कस कि जदम, बेखबर ओ गाफ़िल बूद[13]

दूसरे दिन कलक्टर और सिविल सर्जन आये और माजरत[14] करके चले गये। सिविल सर्जन हर शख्स का सीना ठोक बजाकर देखता रहा कि क्या आवाज निकलती है? मालूम नही फेफड़ो की हालत मालूम करना चाहता था या दिलों की। मुझसे भी मुआयने की दरख्वास्त की। मैने कहा—मेरा सीना देखना बेसूद[15] है। अगर दिमाग के देखने का कोई आला[16] साथ है तो उसे काम मे लाइये

---

१. आम तौर पर २ छाना ३ भावनाये ४ आदि से अत तक। ५. विभाग ६ सीधे ७. काम का सम्बंध ८ केंद्रीय ९. प्रारंभिक १०. वस्तुस्थिति ११. प्रकट हुआ १२ परेशान १३ जिस किसी का भी दरवाजा मैने खटखटाया वह बेखबर और गाफिल था १४. हीला हवाला १५. बेफ़ायदा १६. यत्र।

बगुज़र मसीह अज सरे-मा कुश्तगाने-इश्क़
यक ज़िंदा करदने-तू बसद खू बराबर स्त[1]

बहर हाल चौथे दिन इसपेक्टर जनरल आफ प्रिजन आया और गवर्नमेट के अहकाम[2] का परचा हवाले किया। किसी से मुलाकात नही की जा सकती। किसी से खत ओ किताबत नही की जा सकती। कोई अखबार नही आ सकता। इन बातो के अलावा अगर किसी और बात की शिकायत हो तो हुकूमत उस पर गौर करने के लिए तैयार है। अब इन बातो के बाद और कौन सी बात रह गयी थी जिसकी शिकायत की जाती और हुकूमत अज़ राहे-इनायत[3] उसे दूर कर देती?

जबां जलाई, किये क़ता[4] हाथ पहुँचों से
ये बंदोबस्त हुए हैं मेरी दुआ के लिये!

इन्सेक्टर जनरल ने कहा —अगर आप किताबे या कोई और सामान घर से मगवाना चाहे तो उनकी फहरिस्त लिखकर मुझे दे दे। गवर्नमेट अपने तौर पर मगवाकर आपको पहुँचा देगी। चूकि गिरफ्तारी सफर की हालत मे हुई थी इसलिये मेरे पास दो किताबो के सिवा जो राह मे देखने के लिए साथ रख ली थी मुताले[5] का कोई सामान न था। ख्याल हुआ अगर मकान से बाज[6] मसविदात[7] और कुछ किताबे आ जाये तो कैद ओ बद की यह फुरसत काम मे लाई जाये। बजाहिर इस ख्वाहिश मे कोई बुराई मालूम नही हुई---दुनियारा बउम्मीद खुर्दा अद, आरजू ऐब नदारद[8]

नक़ाबे-चेहरये-उम्मीद बाशद गर्दे-नौमीदी
गुबारे-दीदये-याक़ूब आखिर तूतिया गरदद[9]

मैने मतलूबा[10] आशिया[11] का एक परचा लिखकर उसके हवाले किया और वो लेकर चला गया। लेकिन उसके जाने के बाद जब सूरते-हाल पर ज्यादा गौर करने का मौका मिला तो तबीयत मे एक खलिश[12] भी महसूस होने लगी।

---

१ अय मसीह मेरे सिरहाने से हट जा कि मैं इश्क का मारा हुआ हूँ तेरा एक को जिदा करना सौ खून करने के बराबर है २ हुक्म का बहुवचन ३ मेहरबानी करके ४ काट डाले ५ पढ़ने का ६. कुछ ७. मसौदा, पाडुलिपियाँ ८. दुनिया को किसी उम्मीद से पकडा है, और आरजू मे कोई बुराई नही है ९ आशा के चेहरे की नकाब पर निराशा की गर्द रहती है याकूब की आँखो का गुबार अत मे सुरमा बन जाता है ७ इच्छित ८. शै का बहुवचन, चीजे ९ चुभन।

मालूम हुआ कि यह भी दर असल तबीयत की एक कमजोरी थी कि हुकूमत की इस रियायत से फायदा उठाने पर राजी हो गई जब अजीज और अकरबा[१] से भी मिलने और खत ओ किताबत करने की इजाजत नही दी गई जिसका हक मुजरिमो और कातिलो तक से छीना नही जाता तो फिर यह तवक्को[२] क्यो रखी जाये कि वही हुकूमत घर से सामान मंगवाकर फ़राहम[३] कर देगी ? ऐसी हालत मे इज्जते-नफ्स[४] का तकाजा सिर्फ यही हो सकता है कि न तो कोई आरजू की जाये और न कोई तवक्को रखी जाये।

ज तेगे-बेनियाजी ता तवानी क़तअ हस्ती कुन
फलक ता अफ़गनद अज पा तुरा, खुद पेशदस्ती कुन[५]

मैंने दूसरे ही दिन इन्स्पेक्टर जनरल को खत लिख दिया कि फहरिस्त या परचा वापस कर दिया जाये। जब तक गवर्नमेंट का मौजूदा तर्जे-अमल[६] कायम रहता है मै कोई चीज मकान से मंगवाना नही चाहता। यहा और साथियो ने भी यही तर्जे-अमल इख्तियार किया

दामन उसका तो भला दूर है अय दस्ते-जुनू
क्यों है बेकार ? गरेबां तो मेरा दूर नहीं !

अब चाय के तीसरे फिंजान के लिए कि हमेशा इस दौरे-सबूही[७] का आखिरी जाम होता है हाथ बढ़ाता हूँ और यह अफसाना सराई[८] खत्म करता हूँ — यादश ब-खैर[९] — ख्वाजये-शीराज के पीरे-मय-फरोश की नसीहत[१०] भी वक्त पर क्या काम दे गई है

दी पीरे-मयफ़रोश कि जिक्रश बखैर बाद
गुफ्ता "शराब नोश ओ ग़मे-दिल बिबर ज याद"
गुफ़्तम "बबाद मी दिहदम बादा नाम ओ नंग"
गुफ़्ता "कबूल कुन सुखन ओ हर च बाद बाद
बे खार गुल न बाशद ओ बेनैश नोश हम
तदबीर चीस्त ? वज़ए-जहाँ ईं चुनीं फ़ताद

---

१ निकट सम्बधी २. आशा ३. दे देगी ४. आत्मसम्मान ५. जहाँ तक हो सके निष्कामना की तलवार से अपनी हस्ती को काट डाल। आसमान या दुर्भाग्य जब तक तुझे तेरे पावो से गिराये तब तक तू खुद पेशदस्ती कर ६. कार्य पद्धति ७ शराब का दौर ८. कहानी कहना ९. उसकी याद भी क्या खूब आई है १०. उपदेश।

पुर कुन ज़ बादा जामे दमादम बगोशे-होश
बशनौ अज़ ओ हिकायते-जमशेद ओ कैकुबाद[1]"

अबुलकलाम

१. कल शराब बेचने वाला पीर कि उसका जिक्र भी क्या खूब है मुझसे बोला कि : "शराब पी और दिल का गम याद से निकाल दे।" मैंने कहा : मैंने शराब, इज्जत और लोकलाज सब कुछ छोड दी है। उसने कहा कि मेरी बात मान और फिर जो कुछ हो सो होने दे। बिना कांटे के फूल नही होता और बिना चुभन के सुरापान नही होता, क्या किया जाय ? दुनिया की रीति ही ऐसी है। इसलिये शराब से प्याले को भर और अपने होश के कानों से लगातार उससे जमशेद और कैकुबाद की कहानियाँ सुन।

क़िलए-अहमदनगर
१६, अगस्त, सन् १६४२ ई

चु तुख्मे-अश्क बकुलफ़त सरिश्ताअंद मरा
ब नाउमीदिये-जावेद कुश्ताअंद मरा
ज़ आह बेअसरम दाग़े-ख़ामकारीये-ख़ेश
ज़ आतिशे कि नदारम, बिरिश्ताअंद मरा[१]

सदीके-मुकर्रम

वही सुबह चार बजे का वक्त है, चाय सामने धरी है। जी चाहता है आपको मुखातिब तसव्वुर करूँ और कुछ लिखूँ। मगर लिखूँ तो क्या लिखूँ। मिरजा गालिब ने रंजे-गरानशीन[२] की हिकायतें लिखी थी, सब्रे-गुरेजपा[३] की शिकायतें की थी :

कभी हिकायते-रंजे-गरांनशीं लिखिये
कभी शिकायते-सब्रे-गुरेजपा कहिये!

लेकिन यहाँ न रंज की गरानशीनियाँ है कि लिखूँ, न सब्र की गुरेजपाइयाँ है कि सुनाऊँ। रंज की जगह सब्र की गरानशीनियो का खूगर[४] हो चुका हूँ। सब्र की जगह रंज की गुरेजपाइयों का तमाशाई[५] रहता हूँ। उरफी का वो शेर क्या खूब है जो नासिरअली ने उसके तमाम कलाम मे से चुना था :

मन अज़ीं रंजे-गरांबार च लज्ज़त याबम
कि ब अंदाज़ये-आं सब्र ओ सबातम दादंद![६]

अगर इस शेर को अपनी हालत पर ढालने की कोशिश करूँ तो यह एक तरह की खुदस्नाई[७] और खेश्तन-बीनी[८] की बेसर्फगी[९] समझी जायेगी। लेकिन

---

१ आँसुओ के दानो की तरह रंज और गम से मेरा संबंध कर दिया है, और शाश्वत निराशा से मुझे मार डाला है, मेरी बेअसर आह से मेरी खाम-कारी पर दाग है। मुझे उस आग से भूना है जो मुझमे नही है। २ भारी गम ३ कठिन सब्र ४ आदी ५. दर्शक ६ मैने इस भारी शोक मे क्या मजा पाया है कि उसी के अंदाज से लोग मुझे सब्र और ढाढस देते है। ७ अपने आप मियां मिट्ठू बनना ८ आत्म श्लाघा ९. अपव्ययता।

यह कहने मे क्या ऐब है कि इस मुकाम की लज्जतशनासी[1] से बेबहरा[2] नही हूँ और इसका आरजूमद रहता हूँ ? इसी उरफी ने यह भी तो कहा है :

मुनकिर न तवां गश्त, अगर दम जनम अज इश्क
ई नश्शा बमन गर न बुवद, बा दिगरे हस्त[3]

यहाँ पहुँचने के बाद चद दिनो तक तो सिर्फ जेलर ही से साबिका रहा । एक दो मर्तबा कलक्टर और सिविल सर्जन भी आये । फिर जिस दिन इस्पेक्टर जनरल आया उसी दिन एक और शख्स भी उसके हमराह[4] आया । मालूम हुआ आई एम एस से ताल्लुक रखता है । मेजर एस सेडक (Sendak) नाम है और यहाँ के लिये सुपरिटेंडेट मुकर्रर हुआ है । मैंने जी मे कहा यह सेडक बेडक कौन कहे ? कोई और नाम होना चाहिये जो जरा मानूस[5] और रवा हो । मअन[6] हाफिजे[7] ने याद दिलाया कही नजर से गुजरा था कि चाद बीवी के जमाने मैं इस किले का किलेदार चीताखा नामी एक हब्शी था । मैंने इन हजरत का नाम भी चीताखा रख दिया कि अव्वल ता आखिर निस्बते दारद[8] :

नाम उसका आसमां ठहरा लिया तहरीर में !

अभी दो चार दिन भी नही गुजरे थे कि यहाँ हर शख्स की जबान पर चीताखां था । कैदी और वार्डर्ज भी इसी नाम से पुकारने लगे । कल जेलर कहता था कि आज चीताखा वक्त से पहले घर चला गया । मैने कहा चीताखा कौन ? कहने लगा—मेजर और कौन ?

मा हेच न गुफ्तेम ओ हिकायत बदर उफ्ताद[9]

बहर हाल गरीब जेलर की जान छुटी । अब साबिका चीताखा से रहता है । जब जापानियो ने अडेमीन पर कब्जा किया था तो यह वही मुतय्यन[10] था । उसका तमाम सामान गारत[11] गया । अपनी बरबादियो की कहानियाँ यहाँ लोगो को सुनाता रहता है :

अगर मा दर्दे-दिल दारम जाहिद दर्दे-दीं दारद[12]

इस मर्तबा सबसे ज्यादा इतजाम इस बात का किया गया है कि जिदानियो का कोई ताल्लुक बाहर की दुनिया से न रहे । हत्ता[13] कि बाहर की

---

१. स्वाद २. अनजान ३ अगर प्रेम का दम भरता हूँ तो कोई इससे इकार नही कर सकता । यह गुण अगर मुझ मे नही है तो दूसरे मे है । ४ साथ ५ परिचित सा ६. फौरन ७. स्मृति ८ आदि से अत तक उसीसे सबध रखता है ९ मैने कुछ नही कहा और बात बाहर फैल गई १०. तैनात ११ बरबाद १२ अगर मुझे दिल का दर्द है तो जाहिद को दीन का दर्द है १३. यहाँ तक कि ।

परछाई भी यहाँ न पडने पाये। गालिबन हमारा महल्ले-कयाम[1] भी पोशीदा रखा गया है। अब गोया अहमदनगर भी जग के पुर असरार[2] मुकामात की तरह (Somewhere in India) के हुक्म मे दाखिल हो गया। देखिये नासिख का एक फरसूदा[3] शेर यहाँ क्या काम दे गया है

हमसा कोई गुमनाम ज़माने में न होगा
गुम हो वो नगी जिस पै खुदे नाम हमारा

किले की जिस इमारत मे हम रखे गये है, यहाँ गालिबन छावनी के अफसर रहा करते थे। गाह गाह[4] जगी कैदियो के लिये भी इसे काम मे लाया गया है। जंगे-बोअर के जमाने मे जो कैदी हिन्दुस्तान लाये गये थे उनके अफ़सरो का एक गिरोह यही रखा गया था। गुजश्ता जग मे भी हिन्दुस्तान के जरमन भी यही नजरबद किये गये, और मौजूदा जग मे भी इतालवी अफसरों का एक गिरोह जो मिसर मे लाया गया था यही नजरबद रहा।

चीताखां कहता है कि हमारे आने से पहले यहाँ फ़ौजी अफसरो के ट्रेनिंग की एक क्लास खोली गई थी। कल मेरे कमरे मे अलमारी हटाकर उसने दिखाया कि एक बडा सियाह बोर्ड दीवार पर बना है। मैने जी मे कहा— गालिबन इसीलिये हमे यहाँ लाकर रखा गया है कि अभी दर्सगाहे-जुनू[5] ओ वहशत के कुछ सबक बाकी रह गये थे :

दरीं तालीम शुद उम्र ओ हिनोज़ अबजद हमीख़्वानम
न दानम कै सबक आमोज़ ख्वाहम शुद ब दीवानश![6]

अहाते के मगरिबी[7] रुख पर जो कमरे है और जो हमें रहने के लिये दिये गये है उनकी खिड़कियाँ किले के अहाते मे खुलती है खिडकियों के ऊपर रोशनदान भी है। इस खयाल से कि हमारी तरह हमारी निगाहे भी बाहर न जा सके तमाम खिडकियाँ दीवारे चुनकर बद कर दी गयी है। दीवारे हमारे आने से एक दिन पहले चुनी गई होगी, क्योकि जब हम आये थे तो सफेदी खुश्क नही हुई थी। हाथ पड जाता तो अपना नक्श बिठा देता और नक्श इस तरह बैठता कि फिर उठता नही

हर दाग़े-मआसी[8] मिरा इस दामने तर से
जूं हर्फ़े-सरे-काग़ज़े-नम उठ नहीं सकता

---

१ ठहरने का स्थान २. रहस्य भरे स्थानों की तरह ३ जीर्ण-शीर्ण, पुराना ४. कभी-कभी ५. पागलपन और वहशत की पाठशाला ६. इसी तालीम मे सारी उम्र बीत गई और अभी ककहरा ही पढ रहा हूँ। मैं नही जानता कि उसके दीवान का सबक कब पूरा होगा। ७. पश्चिमी ८. गुनाहों का दाग।

दीवारे इस तरह चुनी है कि ऊपर तले दहने बाये कोई रखना[1] बाकी नही छोडा। रोशनदान तक छुप गये। यह ज़ाहिर है कि अगर खिडकियाँ खुली भी होती तो कौन सा मैदान सामने खुल जाता। ज्यादा से ज्यादा यह कि किले की सगी दीवारो तक निगाहे जाती और टकराकर वापस आ जाती। लेकिन हमारी निगाहो की इतनी रसाई[2] भी खतरनाक समझी गई। रोशनदान के आईने तक बद कर दिये गये :

हवसे-गुल[3] का तसव्वुर[4] में भी खटका न रहा
अजब आराम दिया बेपरो बाली ने मुझे

किले के दरवाज़े की शब ओ रोज[5] पासबानी की जाती है और किले के अदर भी मुसल्लह[6] सतरी चारो तरफ फिरते रहते है। फिर भी हमारी हिफ़ाजत के लिये मजीद[7] रोक थाम जरूरी समझी गई। हमारे अहाते का शुमाली[8] रुख पहले खुला था, अब दस-दस फुट ऊँची दीवारे खीच दी गई है और उनमे दरवाजा बनाया गया है, और उस दरवाज़े पर भी रात दिन मुसल्लह फौजी पहरा रहता है। फौज यहाँ तमामतर अग्रेज सिपाहियो की है। वही ड्यूटी पर लगाये जाते है। जेलर और एक वार्डर के सिवा जिसे बाजार से सौदा सुलफ लाने के लिए निकलना पडता है, और कोई शख्स बाहर नही जा सकता। यह भी जरूरी है कि जो कोई दरवाजे से गुजरे सतरी को जामा-तलाशी[9] दे। वार्डर को हर मर्तबा बरहना[10] होकर तलाशी देनी पडती है। वो जेलर के पास जा-जाकर रोता है मगर कोई सुनवाई नही होती। पहले दिन जेलर निकला था तो उससे भी जामातलाशी का मुतालबा[11] किया गया था कि "ई हम बच्चये शुतर स्त[12]।"

बाजार से सौदा सुलफ लाने का इन्तजाम यो किया गया है कि किले के दरवाज़े के पास फौजी इदारे[13] का एक दफ़्तर है। यहाँ के सुपरिटेडेट का आफ़िस टेलीफोन के जरिये उससे जोड दिया गया है। जब बाजार से कोई चीज आती है तो पहले वहाँ रोकी जाती है और उसकी देखभाल होती है। फिर वहाँ का मुतय्यन अफसर सुपरिटेडेट को फोन करता है कि फला चीज़ इस तरह की और इस शक्ल मे आई है। मसलन टोकरी मे है या रूमाल मे बँधी है या टीन का डब्बा है। इस इत्तला के मिलने पर यहाँ से जेलर अहाते के दरवाज़े पर जाता है और निशानजदा[14] सामान सुपरिटेडेट के आफिस मे

---

१. खाली जगह २. पहुँच ३. पुष्प की चाह ४. ख्याल ५. रात दिन ६. हथियार बद ७. ज्यादा ८. उत्तरी ९. नगा झोरी १०. नंगा ११. तलब १२. यह भी ऊँट का बच्चा है १३. विभाग १४. निशान लगा।

उठवा ले जाता है। अब यहाँ दुबारा देखभाल की जाती है। अगर टोकरी है तो उसे खाली करके उसका हर हिस्सा अच्छी तरह देख लिया जायेगा कि इधर-उधर कोई परचा तो छुपा हुआ नही है। शकर और आटे की खास तौर पर देखभाल की जाती है। क्योकि उनकी तह मे बहुत कुछ छिपाकर रख दिया जा सकता है।

वार्डर जो पूना से यहाँ लाये गये है, वो आये तो थे कैदियो की निगरानी करने मगर अब खुद कैदी बन गये है। न तो अहाते से बाहर कदम निकाल सकते है न घर मे खत औ किताबत कर सकते है। जेलर को भी घर खत लिखने की इजाजत नही। क्योकि हो सकता है इन्ही राहो से कोई खबर बाहर पहुँच जाए। वो रोता रहता है कि मुझे सिर्फ एक दिन की छुट्टी ही मिल जाये कि पूना हो आऊ। मगर कोई सुनवाई नही होती। यहाँ जिसे देखो हाय हाय कर रहा है।

शबनम खराबे-मिहर, कितां सीना चाके-माह[1]
लो और भी सितमजदये-रोजगार है।

इस सूरते-हाल[2] ने यहा की जरूरियात की फराहमी[3] मे अजीब अजीब उलझाव डाल दिये है। चीनाखा जब देखो किसी न किसी गिरह के खोलने मे उलझा हुआ है। मगर गिरहे है कि खुलने का नाम नही लेती। सबसे पहला मसला बावरची का पेश आता था, और पेश आया। बाहर का कोई आदमी रखा नही जा सकता क्योकि वो कैदी बनकर रहने क्यों लगा? और कैदियो मे जरूरी नही कि बावरची निकल आये। कैदी बावरची जभी मिल सकता है कि पहले कोई करीने[4] का बावरची जौके-जरायमपेशगी[5] मे इतनी तरक्की करे कि पकड़ा जाये। और पकड़ा भी जाये किसी अच्छे खासे जुर्म मे कि अच्छी मुद्दत के लिये सजा दी जा सके। लेकिन ऐसा हुस्ने-इत्तिफाक[6] गाह-गाह ही पेश आ सकता है। और आजकल तो सूये-इत्तिफाक[7] से ऐसा मालूम होता है कि इस इलाके के बावरचियो मे कोई मर्दे-मैदान रहा ही नही। इस्पेक्टर जनरल जब आया था तो कहता था, यरवदा जेल मे हर गिरोह और पेशे के कैदी मौजूद है मगर बावरचियो का काल है। नही मालूम कमबख्तो को क्या हो गया है।

---

१. शबनम सूरज से खत्म हो जाती है और किता नाम का कपडा चादनी मे फट जाता है। कहते है कि किता नाम का एक कपडा होता है जो चादनी पडने से फट जाता है। २. वस्तु स्थिति ३. प्राप्ति ४. ढंग का ५. जरायमपेशा की रुचि मे ६. सजोग ७. दुर्भाग्य से।

कस नदारद जौके-मस्ती, मय गुसारांरा च शुद[1]

जो कैदी यहा चुनकर काम करने के लिये भेजे गये है उनमे से दो कैदियो पर बावरची होने की तोहमत लगाई गई है

सितम रसीदा यके, नाउम्मीदवार यके ![2]

हालाकि दोनो इस इल्जाम मे बिल्कुल मासूम वाके हुये है और जबाने-हाल मे नजीरी का यह शेर दोहरा रहे है । दाद दीजियेगा कि बात कहाँ लाकर डाली है और क्या बरमहल[3] बैठी है

ता मुन्फअिल ज रंजिशे-बेजा न बीनमश
मीआरम ऐतराफे - गुनाहे - नबूदा रा[4]

चीताखा आते ही इस अकदये-लायनहल[5] के पीछे पड गया था । रोज अपनी तलब ओ जुस्तजू की नाकामियो की कहानियाँ सुनाता

अगर दस्ते कुनम पैदा, न मीयाबम गरेबां रा[6]

एक दिन खुश खुश आया और यह खबर सुनाई कि एक बहुत अच्छे बावरची का शहर मे इनजाम हो गया है । कलक्टर ने अभी फोन के जरिये खबर दी है कि कल मे काम पर लग जायेगा

सबा ब खुशखबरी हुदहुदे-सुलेमान स्त
कि मुज्दये-तरब अज़ गुलशने-सबा आवुर्द[7]

दूसरे दिन क्या देखता हू कि वाकई एक जीता-जागता आदमी अदर लाया गया है । मालूम हुआ तव्वाखे-मौअूद[8] यही है

आखिर आमद ज पसे-पर्दये-तक़दीर पदीद ![9]

मगर नही मालूम इस गरीब पर क्या बीती थी कि आने को तो आ गया, लेकिन कुछ ऐसा खोया हुआ और सरासीमा[10] हाल था जैसे मुसीबतों का

१. किसी मे भी आनद और मस्ती की रुचि नही है, पियक्कडो को क्या हो गया । २ एक तो भाग्य का मारा है और एक नाउम्मीदी का मारा है । ३ ठीक जगह पर ४ ताकि मैं उसे अनुचित खिन्नता से परेशान न देखू इसलिये अपने न किये हुये अपराधो को भी स्वीकार कर लेता हूँ । ५. हल न होने वाली समस्या ६ अगर मेरे हाथ हो भी तो मै गरेबां को नही पाता । ७. प्रात समीर खुशखबरी के मारे सुलेमान की हुदहुद चिडिया हो रही है क्योकि खुशी की खबर मुल्क सबा के गुलशन से लाई है । ८. निमत्रित बावरची ९. अत मे पर्दे के पीछे से भाग्य चमका १० परेशान ।

पहाड़ सर पर टूट पड़ा हो। वो खाना क्या पकाता अपने होश ओ हवास का मसाला कूटने लगा :

उड़ने से पेश्तर ही मेरा रंग ज़र्द था !

बाद को इस मामले की जो तफ़सीलात[1] खुली, उनसे मालूम हुआ कि यह शिकार वाक़ई कलक्टर के जाल मे फंसा था। कुछ तो उसके ज़ोरे-हुकूमत ने काम दिया, कुछ साठ रुपये माहाना तनख्वा की तरग़ीब[2] ने। और यह अजल-रसीदा[3] दाम मे फँस गया। अगर उसे बआफियत[4] किले मे फौरन पहुँचा दिया जाता, तो मुमकिन है कुछ दिनो तक जाल मे फँसा रहता। लेकिन अब एक और मुश्किल पेश आ गई। यहाँ के कमांडिंग आफीसर से बावरची रखने के बारे मे अभी बातचीत खतम नही हुई थी। वो पूना के सदर दफ़्तर की हिदायत का इंतज़ार कर रहा था और इसलिये इस शिकार को फौरन किले के अंदर ले नही सकता था। अब अगर उसे अपने घर जाने का मौका दिया जाता है तो अंदेशा है कि शहर मे चरचा फैल जायेगा, और बहुत मुमकिन है कोई मौकाशनास इस मुआमले से बरवक्त फायदा उठाकर बावरची को नामा ओ पयाम का जरिया बना दे। अगर रोक लिया जाता है, तो फिर रखा कहाँ जाये कि ज्यादा से ज्यादा महफ़ूज़[5] जगह हो, और बाहर का कोई आदमी वहाँ तक पहुँच न सके ?

यह बाद अज़ इंफ़साल[6] अब और ही झगड़ा निकल आया

इसे कलक्टर के याराने-तरीकत[7] की अकलमंदी समझिये या बेवकूफी कि उसे बहला-फुसलाकर यहाँ के मुकामी कैदखाने मे भेज दिया। क्योंकि उनके ख्याल मे किले के अलावा अगर कोई और महफूज जगह हो सकती थी तो वो कैदखाने की कोठरी ही थी। कैदखाने मे जो उसे एक रात दिन कैद ओ बंद के तवे पर सेंका गया तो भूनने तलने की सारी तरकीबे भूल गया। उस अहमक को क्या मालूम था कि साठ रुपये के इश्क मे ये पापड बेलने पडेगे ? इस इब्तदाये-इश्क ही ने कचूमर निकाल दिया था, किले तक पहुँचते पहुँचते कलिया भी तैयार हो गया :

कि इश्क आसां नमूद अव्वल वले उफ़्ताद मुश्किलहा[8] ।

बहरहाल दो दिन तो उसने किसी न किसी तरह निकाल दिये। तीसरे दिन होश ओ हवास की तरह सब्र ओ करार ने भी जवाब दे दिया। मैं सुबह के वक्त कमरे के अंदर बैठा लिख रहा था कि अचानक क्या सुनता हूँ जैसे

---

१. ब्यौरा २. प्रोत्साहन ३. काल का मारा ४ आराम से ५. सुरक्षित ६. फैसला ७. रास्ते के साथी ८ प्रेम प्रथम आसान दिखाई दिया था लेकिन कई मुश्किले पड़ी। ९. मिश्रित।

बाहर एक अजीब तरह का मख्लूत[1] शोर ओ गुल हो रहा हो। "मखलूत" इसलिये कहना पड़ा कि सिर्फ आवाजो ही का गुल नही था, रोने की चीखे भी मिली हुई थी। ऐसा मालूम होता था जैसे कोई आदमी दम घुटी हुई आवाज मे कुछ कहता जाता है और फिर बीच मे रोता भी जाता है। गोया वो सूरते-हाल है जो खुसरू ने सख्ती[2]कशाने-इश्क की सुनाई थी कि :

कदरे गिरियद् ओ हम बर सरे अफसाना रवद ![3]

बाहर निकला तो सामने के बरामदे मे एक अजीब मंजर दिखाई दिया। चीताखाँ दीवार से टेक लगाये खड़ा है, सामने बावरची जमीन पर लोट रहा है, तमाम वार्डर्स हल्का[3] बांधे खड़े है, कैदियो की कतारें सहन मे सफबस्ता[4] हो रही है, और हमारे काफिले के तमाम जिंदानी एक-एक करके कमरो से निकल रहे है। गोया इस खराबे की सारी आबादी वही सिमट आई है :

आबाद एक घर है जहाने-खराब में !

चीताखा कह रहा है--तुम्हे कोई इख्तियार नही कि यहा से निकलो। बावरची चीखता है कि मुझे पूरा इख्तियार है, तुम्हे कोई इख्तियार नही कि मुझे रोको। जब्र ओ इख्तियार का यह मनाजिरा[5] सुनकर मुझे बेइख्तियार नैमतखा आली का वो नक्शा याद आ गया जो उसने मुल्लाखा की हिजो[6] मे कहा था और जिसकी शरह[7] लिखने मे साहबे-खजाना आमरा ने बड़ी मग्ज-पाशी[8] की है

ईं दलील अज जब्र मी आवुर्द ऊ अज इख्तियार

ई सुखन हम दर मियां मांदा स्त अन्दरे बैन बैन[9]

बावरची उन लोगों मे मालूम होता था जिनकी निस्बत कहा गया है कि

कौमे ब जहोजहद गिरफ्तद वस्ले-दोस्त

मगर चीताखा इस पर जोर देता था कि

कौमे-दिगर हवाला बतकदीर मीकुनंद[10] !

---

१ कष्ट भोगे हुये २ थोड़ा रोता और साथ ही साथ कुछ कहता भी जाता। ३ घेरा ४ पंक्तिबद्ध ५ बहस ६. निंदा ७. टीका ८ सिर पच्ची ९ यह तो जब्र याने शक्ति की दलील लाया और दूसरा अधिकार की। इस प्रकार यह बात भी बीच ही मे लटकी रही। १०. एक तो उस जाति के लोग होते है जो अपने मकसद या उद्देश्य को पाने के लिये प्रयत्न और पुरुषार्थ करते हैं। ११ दूसरी जाति के मनुष्य सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड देते है।

जेलर ने बयान किया कि हकीकते-हाल कुछ ही हो मगर "बैन ल जबरि व तख्तियार[1]" का मजहब इख्तियार किये बगैर चारा नहीं। उसकी नजर अशाअरा के "कस्ब" और शोपनहार के 'इरादे" पर गई

गुनाह गरचे न बूद इख्तियारे-मा हाफ़िज
तू दर तरीक़े-अदब कोश ओ गो गुनाहे-मन स्त[2]

उसने बावर्ची को समझाने की कोशिश की कि इस तरह की हठ ठीक नहीं। किसी न किसी तरह एक महीना निकाल दो। फिर तुम्हें घर जाने की इजाजत मिल जायगी

मुर्गे-जीरक चूं बदाम उफ़्तद तहम्मुल बायदश[3]

लेकिन उसका मआमला अब नसीहत[4] पज़ीरियों की हद से गुजर चुका था

निकल चुका है वो कोसों दियारे-हिरमां से !

एक महीने की बात जो उसने सुनी तो और कपड़े फाड़ने लगा

दिल से दीवाने को मत छेड़, यह जंजीर न खींच

शाम को चीताखां उस तरफ आया तो मैंने उससे कहा कि इस तरह मजबूर करके किसी आदमी को रखना ठीक नहीं। फौरन रुखसत कर दिया जाये। अगर उसे जबरन रखा गया तो हम उसका पकाया हुआ खाना छूने वाले नहीं।चुनांचे दूसरे दिन उसे रिहाई मिल गई। इतवार के दिन हस्बे-मामूल कलक्टर आया तो मालूम हुआ, जिस दिन छूटा था उसी दिन उसने अपना बोरिया

---

१ याने "डिटरमिनिज्म" और "फ्री विल" के दरम्यान राह निकालने का मजहब जैसा कि मुसलमान मुतकल्लिमो मे अशाअरा ने इख्तियार किया। वो कहते है अगरचे इसान खुदा की कुदरत के अहाते से बाहर नही निकल सकता मगर उसे "कस्ब" की कुव्वत हासिल है। याने इरादे के साथ काम करने और उसके असरात कस्ब करने की कुव्वत हासिल है अगरचे उसका इरादा भी खुद उसके बस की चीज़ नही। दर असल अशाअरा का कस्ब भी मजहबे-जब्र की ही एक दूसरी ताबीर है। शापेनहार ने इसी ऐतकाद को यो ताबीर किया कि हमारे तमाम अफआल की तह मे हमारा इरादा काम करता है अगरचे हमारा इरादा हमारे इख्तियार मे नही। २ गुनाह करना यद्यपि हमारे अधिकार मे नही था लेकिन फिर भी तू अदब की राह पर चल और कह कि मेरा गुनाह है। ३ अक्लमंद पंछी अगर फंदे मे फस जाये तो उसे बरदाश्त और सहनशीलता से काम लेना चाहिये। ४ सीख और उपदेश के असर मे।

बिस्तर संभाला और सीधा रेलवे स्टेशन का रुख किया। पीछे मुड़कर देखा तक नहीं

कर्दअम तोबा, ओ अज तोबा पशेमां शुदाअम
काफ़िरम, बाज न गोई कि मुसल्मां शुदा अस[1]

यह बावरची की सरगुज़श्त हुई। लेकिन यहाँ कोई दिन नहीं जाता कि कोई न कोई नई सरगुज़श्त पेश न आती हो। बावरची के बाद हज्जाम का मसला पेश आया। अभी वो हल नहीं हुआ था कि धोबी के सवाल ने सर उठाया। चीनाखा का सारा वक़्त नाखून तेज करने में बसर होता है। मगर रिश्तये-कार[2] में कुछ ऐसी गाँठें पड़ गई है कि खुलने का नाम नहीं लेती। यह वही ग़ालिब वाला हाल हुआ कि

पहले डाली है सरेरिश्तये-उम्मीद में गांठ
पीछे ठोकी है बुने-नाखुने[3]-तदबीर में कील

अबुलकलाम

१ मैंने तोबा कर ली है और अपनी तोबा से शर्मिंदा हूँ। मै काफिर हूँ, फिर न कहना कि मुसलमान हुआ हूँ। २ कार्य सूत्र। ३ तदबीर के नाखून की जड।

हिकायते-बादा ओ तिरयाक

क़िलअ़े-अहमदनगर
२७ अगस्त, सन् १९४२ ई

सदीक़े-मुकर्रम

इंसान अपनी एक जिंदगी के अंदर कितनी ही मुख़्तलिफ़[1] जिंदगियाँ बसर करता है। मुझे भी अपनी जिंदगी की दो किस्में कर देनी पड़ीं। एक क़ैदख़ाने से बाहर की, एक अंदर की।

हम समंदर बाग़ ओ हम माही कि दर अक़लीमे-इश्क़
रूए-दरिया सलसबील ओ क़अ़रे-दरिया आतिश अस्त !

दोनों जिंदगियों के मुरक़्क़ों[2] को अलग अलग रंग ओ रोग़न से नक़्क़ाशआराई[3] हुई है। आप शायद एक को देखकर दूसरी को पहचान न सकें

लिबासे-सूरत अगर बाज़गूं कुनम दानंद
कि ख़िरक़ये-ख़शनम आस्तरे-तिलाबाफ़ अस्त[4]

क़ैद से बाहर की जिंदगी में अपनी तबीअ़त की उफ़्ताद[5] बदल नहीं सकता। ख़ुदरफ़्तगी[6] और ख़ुदसरगर्मी[7] मिज़ाज पर छाई रहती है। दिमाग़ अपनी फ़िक्रों[8] से बाहर आना नहीं चाहता और दिल अपनी तनहाइयों का गोशा[9] छोड़ना नहीं चाहता। बज़्म ओ अंजुमन[10] के लिये बारे-ख़ातिर[11] नहीं होता लेकिन यारे-शातिर[12] भी बहुत कम बन सकता हूँ

ता के चु मौजे-बहर बहर सू शताफ़्तन
दर ऐने-बहर पाये चु गिर्दाब बंद कुन ![13]

लेकिन ज्यों ही हालात की रफ़्तार क़ैद ओ बंद का पयाम[14] लाती है, मैं कोशिश करने लगता हूँ कि अपने आपको यकक़लम[15] बदल दूँ। मैं अपना पिछला दिमाग़ सर से निकाल देता हूँ और एक नये दिमाग़ से उसकी ख़ाली जगह भरनी

---

१. भिन्न भिन्न २. चित्र-पोथी जिसे अंग्रेज़ी में अल्बम कहते हैं। ३. आलेखन, चित्रण ४. अगर यह बाहरी भेष उलट दूँ तो देखोगे कि मेरी खुरदरी गुदड़ी अंदर से ज़रबफ़्त की यानी स्वर्णांकित है। ५. ढंग, रुझान ६. आत्मविस्मृति ७. आत्मप्रवृत्ति ८. कल्पनाओं ९. कोना १०. महफ़िल और सभा ११. अनुपयुक्त, नागवार १२. गहरा दोस्त १३. कब तक दरिया की लहर की तरह हर तरफ़ भागते रहोगे, ऐन दरिया में भँवर की तरह अपने पैर बंद कर ले यानी स्थिर हो जा। १४. ख़बर १५. पूर्ण रूपेण।

चाहता हूँ । हरीमे-दिल[1] के ताकों को देखता हूँ कि खाली हो गये तो कोशिश करता हूँ कि नये नये नक्श ओ निगार[2] बनाऊं और उन्हे फिर से आरास्ता[3] कर दू :

वक़्त स्त दिगर बुतकदा साजंद हरमरा ![4]

इस तहव्वुले-सूरत (metamorphism) के अमल मे कहाँ तक मुझे कामयाबी होती है इसका फैसला तो दूसरों ही की निगाहे कर सकेगी । लेकिन खुद मेरे फरेबे-हाल[5] के लिए इतनी कामयाबी बस करती है कि अकसर औकात अपनी पिछली जिदगी को भूला रहता हूँ और जब तक उसके सुराग मे न निकलू, उसे वापस नही ला सकता :

दिल कि जमा स्त, ग़म अज़ बेसरो सामानी नेस्त
फ़िक्रे-जमीयत अगर नेस्त, परेशानी नेस्त[6]

अगर आप मुझे उस आलम मे देखे तो खयाल करें, मेरी पिछली जिदगी मुझे क़ैदखाने के दरवाज़े तक पहुँचाकर वापस चली गई । और अब एक दूसरी ही जिदगी से साबिका[7] पडा है, जो जिदगी कल तक अपनी हालतों मे गुम और खुशकामियो[8] और दिलशिगुफ्तियो[9] से बहुत कम आश्ना[10] थी आज अचानक एक ऐसी जिदगी के कालिब[11] मे ढल गई जो शिगुफ्ता मिजाजियो[12] और खदा-रूइयो[13] के सिवा और किसी बात से आश्ना ही नही । "हर वक़्त खुश रहो और हर नागवार हालत को खुशगवार बनाओ ।" जिसका दस्तूरउल अमल है[14] :

हासिले-कारगहे-कौन ओ मकां ईं हमा नेस्त
बादा पेश आर, कि असबाबे-जहाँ ईं हमा नेस्त !
पंज रोज़े कि दरीं मरहला मोहलत दारी
खुश बयासाये ज़माने कि ज़मां ईं हमा नेस्त ![15]

---

१. दिल का अंतःपुर २. चित्र ३. सजा दू ४. वक्त आ गया है कि काबे को दुबारा बुतकदा याने देवालय बना दे ५. आत्मविस्मृति । ६. दिल अगर सतुष्ट है तो अकिचनता का कोई गम नही है, अगर सग्रह करने की फिक्र नही है तो फिर कोई परेशानी नही है । ७. वास्ता ८. तृप्ति ९. प्रसन्नता, उल्लास १०. परिचित ११. कलेवर १२. प्रसन्नचित्तता १३. प्रसन्नमुद्रा १४. कार्य-पद्धति १५. सृष्टि के कारखाने का हासिल यह सब जो दृष्टिगोचर है यह नही है । शराब सामने ला कि दुनिया का असबाब यह सब नही है । इस दुनिया में तुझे जो पाँच रोज़ की मोहलत मिली है थोडी देर खुश रह, ज़माना यह सब नहीं है ।

मैने कैदखाने की जिदगी को दो मुतजाद[1] फिलसफो से तरकीब दी है। इसमे एक जुज रवाकिया (stoics) का है, एक लज्जतिया (Epicureans) का।

पंबारा आश्ती ईं जा ब शरार उफ्ताद स्त[2] !

जहाँ तक हालात की नागवारियो का ताल्लुक है रवाकिय्यत से उनके जख्मों पर मरहम लगाता हूँ और उनकी चुभन भूल जाने की कोशिश करता हूँ।

हर वक्ते-बद कि रूये दिहद आबे-सैल दां
हर नक्शे-खुश कि जलवा कुनद, मौजे-आब गीर[3] !

जहाँ तक जिदगी की खुशगवारियो का ताल्लुक है लज्जतिया का जावियये-निगाह[4] काम मे लाता हूँ और खुश रहता हूँ ·

हर वक्ते-खुश कि दस्त दिहद मुग्तनम शुमार
कसरा वक़ूफ़ नेस्त कि अंजामे-कार चीस्त[5] ?

मैने अपने काक तेल (cock tail) जाम मे दोनो बोतले उँडेल दी। मेरा जौक़े-बादा-आशामी[6] वगैर इस जामे-मुरक्कब[7] के तसकीन[8] नही पा सकता था। इसे कदीम ताबीर मे यू समझिये कि गोया हिकायते-बादा ओ तिरयाक[9] मैंने ताज़ा कर दी है ·

चुनां अफ़यून साकी दर मय अफ़गंद
हरीफ़ां रा न सर मांद ओ न दस्तार ![10]

अलबत्ता काकतेल का यह नुस्खये-खास[11] हर ग्रामकार के बस की चीज नही है। सिर्फ बादागुसाराने[12]-कुहन मश्क ही इसे काम मे ला सकते है। वरमूथ (Vermuth) और जिन (Gin) का मुरक्कब पीनेवाले इस रत्ले-गरा[13] के मुतहमिल[14] नही हो सकेगे। मौलानाये-रूम ने ऐसे ही मुआमलात की तरफ इशारा किया था :

---

१. भिन्न २. रूई के गाले का यहाँ चिंगारी से मेल हुआ है। ३. हर बुरा वक्त जो पेश आता है उसे बाढ का पानी समझ, और हर खुशी की बात को जो कि सामने आती है पानी की लहर जान। ४. दृष्टिकोण ५. जो वक्त भी खुशहाली का आ जाये उसे गनीमत समझ। यहाँ किसी को यह जानकारी नही है कि काम का परिणाम क्या है। ६. शराब पीने की पसंद ७. मिश्रित जाम ८. शाति ९. शराब और अफीम की कहानी, हिन्दुस्तानी पियक्कडो की भाषा मे इसे किस्सा भाग धतूरे का कह सकते है। १०. साकी ने शराब मे ऐसी अफीम मिलाई कि साथियों का न तो सर ही ठिकाने रहा न पगडी ही। ११. खास नुस्खा १२. पुराने पियक्कड़ १३. बड़ा पैमाना १४. सहन करने वाले।

बादये-ग्रां दर खुरे हर होश नेस्त
हलक़ये ग्रां सुखरये हर गोश नेस्त ![1]

ग्राप कहेगे कैदखाने की जिदगी रवाकिय्यत के लिये तो मौजूं हुई कि जिदगी के रंज ग्रो राहत से बेपरवा बना देना चाहती है। लेकिन लज्जतिया की इशरत अंदोजियो[2] का वहाँ क्या मौका हुग्रा ? जो नामुराद[3] कैदखाने से बाहर की ग्राजादियो मे भी जिदगी की ऐश कोशियो[4] से तिहीदस्त[5] रहते है, उन्हे कैद ग्रो बंद की महरूम[6] जिदगी मे इसका सरो सामान कहाँ मयस्सर ग्रा सकता है। लेकिन मै ग्रापको याद दिलाऊँगा कि इंमान का ग्रसली ऐश दिमाग का ऐश है, जिस्म का नही है। मै लज्जतिया से उनका दिमाग ले लेता हूँ, जिस्म उनके लिये छोड देता हूं। दाग मरहूम ने नासह से सिर्फ उसकी जबान ले लेनी चाही थी

मिले जो हश्र मे, ले लूं जबान नासह की
ग्रजीब चीज़ है यह तूले-मुद्दग्रा के लिये

ग्रौर गौर कीजिये तो यह भी हमारे वहम ग्रो खयाल का एक फरेब ही है कि सरो सामाने-कार[7] हमेशा ग्रपने से बाहर ढूंढते रहते है। ग्रगर यह पर्दये-फरेब हटाकर देखे तो साफ नजर ग्रा जाये कि वो हमसे बाहर नही है। खुद हमारे ग्रदर ही मौजूद है। ऐश ग्रो मसर्रत[8] की जिन गुलशिगुफ्तगियो[9] को हम चारो तरफ ढूंढते है ग्रौर नही पाते वो हमारे निहाखानये-दिल[10] के चमनजारों मे हमेशा खिलते ग्रौर मुरझाते रहते है। लेकिन महरूमी[11] सारी यह हुई कि हम चारो तरफ की खबर है मगर खुद ग्रपनी खबर नही।

कहीं तुझको न पाया गरचे हमने इक जहाँ ढूँढा
फिर ग्राखिर दिल ही में पाया, बग़ल ही में से तू निकला !

जगल के मोर को कभी बाग ग्रो चमन की जुस्तजू नही हुई। उसका चमन खुद उसकी बगल मे मौजूद रहता है। जहाँ कही ग्रपने पर खोल देगा एक चमनिस्ताने-बूकलमू[12] खिल जायेगा .

---

१. वो शराब प्रत्येक ग्रादमी के होश की चीज नही है ग्रौर न उसकी बातो का हल्का हर कान के योग्य है याने उसकी बातो को तो कोई बिरला ही समझ सकता है। २. रंगरलियाँ ३. ग्रभागा ४. मजा लेने मे ५. खाली हाथ ६. वंचित ७. कार्य पूर्ति के ग्रसबाब ८. ग्रानंद ग्रौर खुशी ९. प्रफुल्लताग्रो के पुष्प १०. ग्रतर के एकात कोने की वाटिका मे ११. दुर्भाग्य, वंचना १२. रंग बिरंग का बाग।

न बा सहरा सरे दारम, न बा गुलजार सौदाये
ब हर जा मीरवम, अज़ खेश मीजोशद तमाशाये[१] !

कैदखाने की चारदीवारी के अंदर भी सूरज हर रोज चमकता रहता है, और चाँदनी रातों ने कभी कैदी और गैर कैदी मे इम्तियाज[२] नही किया। अँधेरी रातो मे जब आसमान की क़ंदीले रोशन हो जाती है तो वे सिर्फ़ कैद-खाने के बाहर ही नही चमकती। असीराने-कैद[३] ओ मिहन को भी अपनी जलवा-फरोशियो[४] का पयाम भेजती रहती है। सुबह जब तबाशीर[५] बखेरती हुई आयेगी और शाम जब शफक[६] की गुलगू[७] चादरे फैलाने लगेगी तो सिर्फ इशरत सराओ[८] के दरीचो[९] ही से उनका नजारा नही किया जायेगा। कैदखाने के रोजनो[१०] से लगी हुई निगाहे भी उन्हे देख लिया करेगी। फितरत ने इमान की तरह कभी यह नही किया कि किसी को शादकाम[११] रखे किसी को मह-रूम[१२] कर दे। वो जब कभी अपने चेहरे से नकाव उलटती है तो सबको यकसा तौर पर नज्जारये-हुस्न[१३] की दावत देती है। यह हमारी गफलत अंदेशी[१४] है कि नज़र उठा कर देखते नही और सिर्फ अपने गिर्द ओ पेश[१५] ही मे खोये रहते हैं :

महरम[१६] नहीं है तू ही नवाहाये-राज़का[१७]
यां, वरना जो हिजाब[१८] है, पर्दा है साज़ का !

जिस कैदखाने मे सुबह हर रोज मुस्कुरानी हो, जहाँ शाम हर रोज़ पर्दये-शब[१९] मे छिप जाती हो, जिसकी राते कभी सितारो की कंदीलो से जग-मगाने लगती हो, कभी चाँदनी की हुस्न-अफरोजियो[२०] से जहाँताब[२१] रहती हो, जहाँ दोपहर हर रोज़ चमके, शफक हर रोज निखरे, परिंदे हर सुबह ओ शाम चहके उसे कैदखाना होने पर भी ऐश ओ मसर्रत के सामानो से खाली क्यों समझ लिया जाये ? यहाँ सरो सामाने-कार की तो इतनी फरावानी[२२] हुई कि किसी गोशे मे भी गुम नही हो सकता। मुसीबत सारी यह है कि खुद हमारा

---

१. न तो मुझे जंगल की इच्छा है और पुष्पवाटिका की चाह है। मैं तो जहाँ जाता हूँ खुद अपने आप मे से एक तमाशा जोश मे आता है। २. फर्क ३. जेलखाने के कैदियो को ४. रूप प्रदर्शन ५. तबाशीर बशलोचन को कहते है, सुबह के वक्त चारो तरफ उजाला हो जाता है इसे बंशलोचन से उपमा दी है। ६. गोधूलि ७. पुष्परजित, सुर्ख ८. भोगविलास के महलों के ९. वातायन १०. सूराख ११. खुश १२. वंचित १३. सौदर्य-दर्शन १४. अकर्मण्यता १५. आसपास १६. राजदा १७. रहस्य की बातो का १८. पर्दा १९. रात का पर्दा २० रूप दीप्ति २१. जगत प्रकाशक २२. आधिक्य।

दिल ओ दिमाग ही गुम हो जाता है। हम अपने से बाहर सारी चीज़ें ढूँढते रहेगे, मगर अपने खोये दिल को कभी नही ढूँढेगे। हालाँकि अगर उसे ढूँढ निकालें तो ऐश ओ मसर्रत का सारा सामान उसी कोठरी मे सिमटा हुआ मिल जाये :

बग़ैरे-दिल हमा नक़्श ओ निगार बेमानी स्त
हमीं वरक़ कि सियह गश्त, मुद्दआ ईंजा स्त ![1]

ऐवान[2] ओ महल न हो तो किसी दरख्त के साये से काम ले लें। दीबा ओ मखमल का फर्श न मिले तो सब्जये-खुद[3]रौके फर्श पर जा बैठें। अगर बरकी रोशनी[4] के कँवल मयस्सर नही है तो आसमान की कदीलो को कौन बुझा सकता है ? अगर दुनिया की सारी मसनुई[5] खुशनुमाइयाँ[6] ओझल हो गई है तो हो जाये। सुबह अब भी हर रोज मुस्कुरायेगी। चाँदनी अब भी हमेशा जलवा फरोशियाँ[7] करेगी। लेकिन अगर दिले-जिदा पहलू मे न रहे तो खुदारा[8] बतलाइये इसका बदल कहाँ ढूँढे ? उसकी खाली जगह भरने के लिये किस चूल्हे के अगारे काम देगे ?

मुझे यह डर है, दिले-ज़िदा ! तू न मर जाये
कि ज़िदगानी इबारत है तेरे जीने से ।

मै आपको बतलाऊँ, इस राह मे मेरी कामरानियो[9] का राज़ क्या है ? मै अपने दिल को मरने नही देता। कोई हालत हो, कोई जगह हो, उसकी तडप कभी धीमी नही पडेगी। मै जानता हूँ कि जहाने-ज़िदगी की सारी रौनके इसी मैकदये-खिलवत[10] के दम से है। यह उजडा और सारी दुनिया उजड गई :

अज़ सद सखुने-पीरम यक हर्फ मरा याद स्त
"आलम न शवद वीरां ता मैकदा आबाद स्त[11] !"

बाहर के सारे साज ओ सामाने-इशरत[12] मुझसे छिन जायें, लेकिन जब तक यह नही छिनता, मेरे ऐश ओ तरब की सरमस्तियाँ कौन छीन सकता है ?

---

१. बिना दिल के तमाम साज ओ सामान बेमानी है। यही पृष्ठ जो कि काला पड गया है मुद्दे की बात यही पर है। २. महल ३. जगल की घास जो अपने आप उग आती है ४ बिजली की रोशनी ५. झूठी ६. सौंदर्य-प्रदर्शन की चीजे ७ रूप- प्रदर्शन ८. खुदा के वास्ते। ९. सफलता १०. सुनसान मयखाना ११. मुझे मेरे गुरु की सौ बातो मे से सिर्फ एक हर्फ याद है कि दुनिया तब तक वीरान नही होगी जब तक मयखाना आबाद है। १२. खुशी के उपकरण।

दमीदश खुर्रम ओ खंदां क़दहे-बादा बदस्त
वां दरां आईना सदगूना तमाशा मीकर्द
गुफ़्तम-" ईं जामे-जहांवीं ब तू कै दाद हकीम ?"
गुफ़्त-" आं रोज़ कि ई गुंबदे-मीना मीकर्द[१] ! "

आपको मालूम है, मै हमेशा सुबह तीन से चार बजे के अंदर उठता हूँ और चाय के पैहम[२] फिजानो से जामे-सबूही[३] का काम लिया करता हूँ। ख्वाजये शीराज की तरह मेरी सदाये-हाल[४] भी यह होती है कि

खुरशेदे-मय ज़ मशरिक़े-साग़र तुलूअ़ कर्द
गर बर्गे-ऐश मीतलबी तर्के-ख्वाब कुन[५] !

यह वक्त हमेशा मेरे औकाते-जिदगी[६] का सबसे ज्यादा पुरकैफ[७] वक्त होता है। लेकिन कैदखाने की जिदगी मे तो इसकी सरमस्तियाँ और खुदफरामोशियाँ एक दूसरा ही आलम पैदा कर देती है। यहाँ कोई आदमी ऐसा नही होता जो उस वक्त ख्वाब-आलूदा[८] आँखे लिये हुये उठे और करीने[९] से चाय मेरे सामने धर दे। इसलिये खुद अपने ही दस्ते-शौक[१०] की सरगर्मियो से काम लेना पडता है। मै उस वक्त बादये-कुहन[११] के शीशे की जगह चीनी चाय का ताजा डब्बा खोलता हूँ और एक माहिरे-फन[१२] की दकीकासजियो[१३] के साथ दम देता हूँ। फिर जाम ओ सुराही को मेज पर दहनी तरफ जगह दूँगा कि उसकी अव्वलियत[१४] इसीकी मुस्तहक[१५] हुई। कलम ओ कागज को बाई तरफ रखूँगा कि सरो-सामाने-कार मे उनकी जगह दूसरी हुई। फिर कुर्सी पर बैठ जाऊँगा। और कुछ न पूछिये कि बैठते ही किस आलम मे पहुंच जाऊँगा ? किसी बादा-गुसार[१६] ने शाम्पेन और बोरडो के मदसाला[१७] तहखानो के अर्के-कुहन-साल[१८]

---

१. वो जोश मार रहा था और खुश था, हँस रहा था और हाथ मे शराब का प्याला था और उस आईने मे सौ तरह के तमाशे देख रहा था। मैने पूछा कि खुदाताला ने तुझे यह विश्वदर्शी प्याला कब उपहार मे दिया तो उसने कहा कि उस रोज दिया जिस दिन कि उसने यह नीला आसमान का प्याला बनाया। २ लगातार ३. शराब के जाम ४. वक्त का तराना ५ शराब का सूरज प्यालारूपी पूर्व दिशा से निकला है अगर तुझे ऐश का सामान चाहिये तो निद्रा त्याग। ६. औकात वक्त का बहुवचन है, औकाते-जिदगी याने जीवनकाल। ७. आनंद भरा ८. नीद मे डूबी हुई ९. ढग से १०. तलब के हाथो की ११. पुरानी शराब १२ कला के मर्मज्ञ १३. सूक्ष्म दृष्टि १४. प्राथमिकता १५. अधिकारी १६. पियक्कड़ १७. सौ साला १८. कई साल पुरानी शराब।

मे भी वो कैफ ओ सुरूर कहाँ पाया होगा जो चाय के इस दौरे-सुबहगाही का हर घूँट मेरे लिये मुहय्या कर देता है।

मा दर पयाला अक्से-रुखे-यार दीदा ओम
अय बेखबर ज लज्जते-शुरबे-मदामे-मा ![1]

आपको मालूम है कि मैं चाय के लिये रूसी फिजान काम मे लाता हूँ। ये चाय की मामूली प्यालियों से बहुत छोटे होते है। अगर बेजौकी[2] के साथ पीजिये तो दो घूँट मे खत्म हो जाये। मगर खुदा न खास्ता[3] मै ऐसी बेजौकी का मुर्तकिब[4] क्यो होने लगा ? मै जुरओ-कशाने-कुहन-मश्क[5] की तरह ठहर ठहर कर पीऊँगा, और छोटे छोटे घूँट लूगा। फिर जब पहला फिजान खत्म हो जायेगा तो कुछ देर के लिये रुक जाऊँगा और इस दरमियानी वक्फे[6] को इम्तिदादे-कैफ[7] के लिये जितना तूल[8] दे सकता हूँ तूल दूगा। फिर दूसरे और तीसरे के लिये हाथ बढाऊँगा और फिर दुनिया को और उसके सारे कारखानये-सूद ओ जयाँ[9] को एककलम फरामोश कर दूँगा

खुशतर अज फ़िक्रे-मय ओ जाम च ख्वाहिद बूदन
ता बबीनेम, सर अंजाम च ख्वाहिद बूदन[10] !

इस वक्त भी कि ये सतरे बेइख्तियार नोके-कलम से निकल रही है, उसी आलम मे हूँ और नही जानता कि ९ अगस्त की सुबह के बाद मे दुनिया का क्या हाल हुआ, और अब क्या हो रहा है ?

शराबे-तल्ख दिह साकी कि मर्द अफ़गन बुवद जोरश
कि ता यक दम बयासायम ज दुनिया ओ शर ओ शोरिश
कमंदे-सैदे-बहरामी बयफ़गन, जामे-मय बरदार
कि मन पैमूदम ईं सहरा न बहराम स्त ने गोरश[11]

---

१. मैने प्याले मे अपने प्रीतम के मुखडे की परछाई देखी है, अय बेखबर तू मेरी इस शाश्वत शराब का मजा क्या जाने। २ गँवारपन ३. ईश्वर न करे ४. करने वाला ५ पुराने अभ्यस्त पीने वाले की तरह ६. अंतर को ७. मजे को बढाने के लिये ८. लंबाई ९. नफा नुकसान के कारखाने को याने दुनिया को। १० शराब और प्याले की चिंता के सिवा और क्या चीज सुखद होगी ताकि देखे कि काम का परिणाम क्या होगा। ११. अय साकी तेज शराब दे कि उसका नशा मर्द को पछाडने वाला हो ताकि एक क्षण के लिये दुनिया और उसके शोरशराबे से आराम पाऊँ। बहराम के शिकार करने की कमंद हाथ से अलग फेंक दे, और शराब का प्याला ला क्योकि मैने यह सारा जंगल छान डाला है यहाँ न तो बहराम है और न उसका शिकार गोर खर।

मेरा दूसरा पुर कैफ वक्त दोपहर का होता है या ज्यादा सिहते-तग्रय्युन[१] के साथ कहूँ कि जवाल[२] का होता है। लिखते लिखते थक जाता हूँ तो थोडी देर के लिए लेट जाता हूँ। फिर उठता हूँ, गुसल[३] करता हूँ, चाय का दौर ताजा करता हूँ और ताज़ादम होकर फिर अपनी मशगूलियतो[४] मे गुम हो जाता हूँ। उस वक्त आसमान की बेदाग नीलगूनी[५] और सूरज की बेनकाब दरख्शदगी[६] का जी भर के नज्जारा करूंगा और रवाके-दिल[७] का एक एक दरीचा[८] खोल दूँगा। गोशहाये-खातिर[९] अफसुर्दगियो[१०] और गिरफ्तगियो[११] से कितने ही गुबार आलूद[१२] हो लेकिन आसमान की कुशादा-पेशानी[१३] और सूरज की चमकती हुई ख़दा-रूई[१४] देखकर मुमकिन नही कि अचानक रोशन न हो जाये :

बा ज़म्न ब कुलबा कीस्त, न शमा ओ न आफ़ताब
बाम ओ दरम ज़ ज़र्रा ओ परवाना पुर शुदा स्त ![१५]

लोग हमेशा इस खोज मे लगे रहते है कि जिदगी को बडे बडे कामों के लिये काम मे लाये। लेकिन नही जानते कि यहाँ एक सबसे बडा काम खुद ज़िंदगी हुई, याने जिंदगी को हँसी खुशी काट देना। यहाँ इसमे सहज काम कोई न हुआ कि मर जाइये और इससे ज्यादा मुश्किल काम कोई न हुआ कि ज़िदा रहिये। जिसने यह मुश्किल हल कर ली उसने जिदगी का सबसे बडा काम अजाम दे दिया।

नासहम गुफ़्त कि जुज़ ग़म च हुनर दारद इश्क़ ?
गुफ़्तम "अय ख़्वाजये-आक़िल ! हुनरे बेहतर अज़ीं !"[१६]

गालिबन[१७] कदीम[१८] चीनियो ने जिंदगी के मसले को दूसरी कौमो से बेहतर समझा था। एक पुराने चीनी मकूले[१९] मे सवाल किया गया है—"सबसे ज़्यादा दानिशमद आदमी कौन है ?" फिर जवाब दिया है — "जो सबसे

---

१. बिल्कुल सही तौर पर २. उतार ३. स्नान ४. प्रवृत्तियों में ५. नीलिमा ६. चमक ७. दिल का कमरा ८. वातायन ९. दिल का कोना १०. उदासीनता ११. जकड १२. मलिन और खिन्न १३. विशाल मस्तक १४. प्रसन्न मुद्रा १५. अपनी अँधेरी कोठरी मे देखता हूँ तो क्या है, न शमा है और न आफताब लेकिन अटारी और दरवाज़े पर ज़र्रो और परवानो का ढेर लग गया है। १६. धर्मोपदेशक ने मुझसे कहा कि इश्क में सिवा गम के और क्या गुण है ? मैने कहा — अय अक्लमंद ! इससे बढ़कर गुण कौन सा है ! १७. संभवतः १८. पुराने १९. उक्ति।

ज्यादा खुश रहता है ?" इससे हम चीनी फिलसफये-जिंदगी का ज़ावियये-निगाह[1] मालूम कर ले सकते है। और इसमे शक नही कि यह बिल्कुल सच है:

न हर दरख़्त तहम्मुल कुनद जफ़ाये-खिज़ां
गुलामे-हिम्मते-सरवम कि ईं क़दम दारद ![2]

अगर आपने यहाँ हर हाल मे खुश रहने का हुनर सीख लिया है तो यकीन कीजिये कि जिंदगी का सबसे बडा काम सीख लिया। अब इसके बाद इस सवाल की गुँजाइश ही नही रही कि आपने और क्या क्या सीखा ? खुद भी खुश रहिये और दूसरो से भी कहते रहिये कि अपने चेहरों को ग़मगीन न बनाये.

चु महमाने-खराबाती ब इशरत बाश बा रिंदां
कि दर्दे-सर कशी जानां, गर ईं मस्ती खुमार आरद[3]

जमानये-हाल के एक फरामीसी अहले-कलम[4] आद्री जीद (Andre Gide) की एक बात मुझे बहुत पसद आई जो उसने अपनी खुदनविश्ता[5] नवानह[6] मे लिखी है। खुश रहना महज़[7] एक तबअ़ी[8] एहतियाज[9] ही नही है बल्कि एक अखलाकी[10] जिम्मेदारी है। यानी हमारी इफरादी[11] जिंदगी की नौअियत[12] का असर सिर्फ हम ही तक महदूद[13] नही रहता वो दूसरो तक मुतअद्दी[14] होता है। या यो कहिये कि हमारी हर हालत की छूत दूसरो को भी लगती है। इसलिये हमारा अखलाकी फर्ज हुआ कि खुद अफसुर्दा खातिर[15] होकर दूसरो को अफ़सुर्दा खातिर न बनाये·

अफ़सुर्दा दिल अफ़सुर्दा कुनद अंजुमनेरा ![16]

हमारी जिंदगी एक आईनाखाना[17] है। यहाँ हर चेहरे का अक्स बयकवक्त[18] सैकडो आईनो मे पडने लगता है। अगर एक चेहरे पर भी गुबार आ जायेगा तो सैकडो चेहरे गुबारआलूद हो जायेगे। हममे से हर फर्द की जिंदगी महज एक इफरादी वाका नही है, वो पूरे मजमूअ[19] का हादिसा[20] है। दरिया की

---

१. दृष्टिकोण २. प्रत्येक पेड खिजां की सख्तियो को सहन नही कर सकते। मै तो सर्व की हिम्मत का गुलाम हूँ कि उसमे यह गुण है ३. मयखाने के मेहमानों की तरह मस्त रिंदो के साथ आनंदमग्न रह, अगर इस मस्ती मे खुमार आया तो प्यारे फिर दर्दसर उठाना पडेगा ४. लेखक, कलम का धनी ५. स्वलिखित ६. जीवनी ७. सिर्फ ८. स्वाभाविक ९ जरूरत १०. नैतिक ११. व्यक्तिगत १२. किस्म १३. सीमित १४. लगने वाला १५. उदास, खिन्नमन १६. उदास मन सारी जमात को उदास कर देता है १७. शीशे की कोठरी, शीश महल १८. एक ही समय १९. जमात २०. घटना।

सतह पर एक लहर तनहा उठती है लेकिन उसी एक लहर से बेशुमार लहरे बनती चली जाती है। यहाँ हमारी कोई बात भी सिर्फ हमारी नही हुई। हम जो कुछ अपने लिए करते है, उसमे भी दूसरों का हिस्सा होता है। हमारी कोई खुशी भी हमे खुश नही कर सकेगी अगर हमारे चारो तरफ गमनाक चेहरे इकट्ठे हो जायेंगे। हम खुद खुश रहकर दूसरो को खुश करते है और दूसरों को खुश देखकर खुद खुश होने लगते है। यही हकीकत है जिसे उरफी ने अपने शायराना पैराये मे अदा किया था :

बदीदारे-तू दिल शादंद बा हम दोस्ताने-तू
तुरा हम शादमां ख्वाहम चु रूये-दोस्तां बीनी ![1]

यह अजीब बात है कि मजहब, फिलसफा और अखलाक तीनो ने जिदगी का मसला हल करना चाहा और तीनो मे खुद जिदगी के खिलाफ रुझान पैदा हो गया। आम तौर पर समझा जाता है कि एक आदमी जितना ज्यादा बुझा दिल और सूखा चेहरा लेकर फिरेगा उतना ही ज्यादा मजहबी, फिलसफी, और अखलाकी किस्म का होगा। गोया इल्म और तकद्दुस[2] दोनो के लिये यहाँ मातमी जिदगी जरूरी हुई। जिदगी की तहकीर[3] और तौहीन सिर्फ यूनान के कलबिया ही का शिआर[4] न था, बल्कि रवाकी (stoics) और मश्शाई (peripatetic) नुक्तेनिगाह मे भी इसके अनासिर[5] बराबर काम करते रहे। नतीजा यह निकला कि रफ्ता रफ्ता अफसुर्दादिली[6] और तुर्शरूई[7] फिलसफियाना मिजाज का एक नुमाया[8] खत ओ खाल[9] बन गई। अखलाक से अगर उसके मजहबे-तमानियत ओ मसर्रत (Eudamonism) और माद्दिय्याती मजहबे-इशरत (Hedonism) के तसव्वुरात मुस्तस्ना[10] कर दीजिये तो उसका आम तबई[11] मिजाज फिलसफियाना सिरकारूई[12] से खाली नही मिलेगा। मजहब और रूहानियात[13] की दुनिया में तो जोहदे-खुश्क[14] और तबए-खुनक[15] की इतनी गरम बाजारी हुई कि अब जोहद-मजाजी[16] और हक-आगाही[17] के साथ किसी हँसते हुए चेहरे का तसव्वुर ही नही किया जा सकता। दीनदारी[18] और सकालते-तबा[19] तकरीबन मरादिफ[20] लफ्ज बन गये है। यहाँ तक कि काआनी को

---

१ तेरे दर्शन से दिल खुश करते है और तेरे दोस्तो से भी। हम चाहते है कि तू भी जब दोस्तो को देखे तो खुश दिखाई देना २. पवित्रता ३. उपेक्षा ४. गुण ५. तत्व ६ मन की खिन्नता ७ चेहरे की कटुता ८. जाहिरा ९. नखसिख १०. अलग ११. मानसिक स्वभाव। १२. उदास चेहरा १३. अध्यात्म १४. कठिन तपस्या १५. ठडे स्वभाव की १६ तापसी स्वभाव १७. सत्यद्रष्टा १८. धार्मिकता १९. स्वभाव की कठोरता २०. पर्यायवाची।

असबाबे-तरबरा बिबर अज मजलिस बैरूं
जां पेश कि नागाह सक़ीले रसद अज़ दर[1]

आप जानते है कि अहले-जौक[2] की मजलिसे-तरब[3] तग दिलों के गोशये-खातिर[4] की तरह तंग नही होती, उसकी वुसअत[5] मे बडी समाई है । निजामी गजवी ने इसकी तसवीर खीची थी :

हर च दर जुमला ब आफ़ाक दरीं जा हाज़िर
मोमिन ओ अरमनी ओ गब्र ओ नसारा ओ यहूद ![6]

लेकिन इतनी समाई होने पर भी अगर किसी चीज की वहाँ गुजाइश न निकल सकी तो वो जाहिदाने-खुश्क के जखीम[7] और गुबदनुमा अमामे[8] थे । एक अमामा भी पहुँच जाता है तो पूरी मजलिस तग हो जाती है । इसीलिये बाज याराने-बेतकल्लुफ को कहना पडा था ·

दर मजलिसे-मा ज़ाहिद ! ज़िनहार तकल्लुफ़ नेस्त
अलबत्ता तो मीगुंजी, अम्मामा न मीगुंजद ![9]

यह सच है कि जिन मसलो को दुनिया सैकडो बरस की काविशो[10] से भी हल न कर सकी, आज हम अपनी खुश तबअी[11] के चद लतीफो से उन्हे हल नही कर दे सकते । नाहम[12] यह मानना पडेगा कि यहाँ एक हकीकत से इकार नही किया जा सकता । एक फिलसफी, एक जाहिद, एक साधू का खुश्क चेहरा बनाकर हम उस मुरक्के मे खप नही सकते जो नक्काशे-फितरत के मूकलम[13] ने यहाँ खीच दिया है । जिस मुरक्के मे सूरज की चमकती हुई पेशानी, चाँद का हँसता हुआ चेहरा, सितारो की चश्मक[14], दरख्तो का रक्स[15], परिदो का नग्मा, आबे-रवा[16] का तरन्नुम[17] और फूलो की रगीन अदाये अपनी अपनी जल्वा-तराजिया[18] रखती हो, उसमे हम एक बुझे हुए दिल और सूखे हुए चेहरे के साथ जगह पाने के यकीनन मुस्तहक[19] नही हो सकते । फितरत[20] की इस

---

१ खुशी के सामानो को मजलिस से बाहर कर दो इससे पहले कि अचानक दरवाजे से कोई भारी चेहरे का आदमी आये । २. रुचि वाले लोग ३ आनद की बैठक ४. दिल का कोना ५. विस्तार ६ जो कुछ सारी दुनिया मे है वो सब मस्तो की मडली मे यहाँ हाजिर है, मोमिन, आरमीनिया वासी अग्निपूजक, नसारी और यहूदी यहाँ सभी मौजूद है । ७. बडे, विशाल ८. पग्गड़ ९. अय जाहिद ! मेरी मजलिस मे हरगिज तकल्लुफ नही है । हाँ इसमे तू समा सकता है लेकिन तेरी पगडी नही समा सकती । १०. जुस्तजू ११. प्रसन्नचित्तता, स्वभाव की प्रसन्नता १२. फिर भी १३. तूलिका १४. जगमग १५. नृत्य १६. बहते हुए पानी १७. तराना १८. रूपप्रदर्शन १९ अधिकारी २०. प्रकृति ।

बज़्मे-निशात[1] मे तो वही जिदगी सज सकती है जो एक दहकता हुआ दिल पहलू मे और चमकती हुई पेशानी चेहरे पर रखती हो। और जो चाँदनी में चाँद की तरह निखर कर, सितारो की छाँव मे सितारो की तरह चमककर, फूलो की सफ[2] मे फूलों की तरह खिलकर अपनी जगह निकाल ले सकती हो। सायब क्या खूब कह गया है :

दरीं दो हफ़्ता कि चुं गुल दरीं गुलिस्तानी
कुशादा रूयेतर अज़ राज़हाये-मस्तां बाश !
तमीज़े-नेक ओ बदे-रोज़गार कारे-तू नेस्त
चु चश्मे-आईना, दर खूब ओ ज़श्त हैरां बाश ![3]

---

१. आनन्द सभा २ कतार ३. इस वाटिका मे पुष्प की तरह दो हफ़्ते के लिए तू अगर है तो मस्तो की तरह प्रसन्न मुद्रा होकर रह। दुनिया के भले-बुरे की नुक़्ताचीनी करना यह तेरा काम नही है तू तो दर्पण की आँख की तरह दुनिया के बुरे भले को देख कर हैरान रह।

क़िलअ-अहमदनगर

२९, अगस्त, सन् १९४२ ई.

ई रस्म ओ राहे-ताजा ज हिरमाने-अहदे-मा स्त
अन्क़ा बरोज़गार कसे नामाबर न बूद[1]

सदीके–मुकर्रम

वही चार बजे सुबह का जाफिजा वक़्त है। चाय का फिजान सामने धरा है और तबीयत दराज-नफ्सी के लिए बहाने ढूँढ रही है। जानता हूँ कि मेरी सदाये आप तक नही पहुँच सकेगी, ताहम तबअ़े-नाला-संज[2] को क्या करूँ कि फरयाद व शेवन[3] के बगैर रह नही सकती। आप सुन रहे हो या न सुन रहे हों, मेरे जौके-मुखातिबत के लिए यह ख्याल बस करता है कि रूये-सुखन आप की तरफ है

अगर न दीदी तपीदने-दिल, शुनीदनी बूद नालये-मा ![4]

बासरी अंदर से खाली होती है, मगर फरयादो से भरी होती है। यही हाल मेरा है :

ब फ़सानये-हवसे-तरब, तिही अज़ खुद अम ओ पुर अज़ तलब
च दमद ज़ सनअ़ते-सिफ़- नै बजुज़ ईं कि नाला फ़ुज़ूं कुनद[5]

कैद ओ बंद के जितने तजरुबे इस वक्त तक हुए थे, मौजूदा तजरुबा उन सबसे कई बातो मे नई किस्म का हुआ। अब तक यह सूरत रहती थी कि कैदखाने के कवायद के मातहत अजीजो और दोस्तो से मिलने का मौका मिल जाया करता था। निज की खत ओ किताबत रोकी नही जाती थी। अखबारात दिये जाते थे, और अपने खर्च से मँगवाने की भी इजाजत होती थी। खास-खास हालतो मे इससे भी ज्यादा दरवाजा खुला रहता था। चुनाचे जहाँ तक खत ओ किताबत और मुलाकातो का ताल्लुक है मुझे हमेशा ज्यादा सहूलियतें हासिल

१. पहले आ चुका है २ फरियाद करने की मनोवृत्ति ३. शिकायतो के ४. अगर तुझे मेरे दिल का तडपना नही दिखाई दिया तो मेरा रोना तो सुनने लायक था। ५. खुशी की चाह की कहानी से मै अपने आपमे रिक्त और कामनाओ से भरा हूँ। बाँसरी के सूराखो से क्या निकलेगा सिवा इसके कि चीख को तेज कर देगी।

रही । इस सूरते-हाल का नतीजा यह था कि गो हाथों मे जजीरें और पावो मे बेडियाँ पड जाती थी लेकिन कान बद नही हो जाते थे और आँखो पर पट्टियाँ नही बँधती थी । कैद ओ बद की सारी रुकावटो के साथ भी आदमी महसूस करता था कि अभी तक उसी दुनिया मे बस रहा है जहाँ गिरफ्तारी से पहले रहा करता था :

ज़िंदां में भी खयाल बयाबां-निर्वद था ![१]

खाने-पीने और साज ओ सामान की तकलीफे उन लोगों को परेशान नही कर सकती जो जिस्म की जगह दिमाग की जिदगी बसर करने के आदी हो जाते है । आदमी अपने आपको अहसासात[२] की आम सतह से जरा भी ऊँचा कर ले तो फिर जिस्म की आसाइशो[३] का फुकदान[४] उसे परेशान नही कर सकेगा । हर तरह की जिस्मानी राहतो से महरूम रहकर भी एक मुतमयिन[५] जिदगी बसर कर दी जा सकती है । और जिदगी बहरहाल बसर हो ही जाती है :

रग़बते-जाह च ओ नफ़रते-असबाब कुदाम ?
जीं हवसहा बगुजर या न गुज़र, मीगुज़रद ![६]

यह हालत इकताअ ओ तजर्रुद[७] का एक नक्शा बनाती थी । मगर नक्शा अधूरा होता था । क्योंकि न तो बाहर के इलाके पूरी तरह मुन्कता हो जाते थे, न बाहर की सदाओ को जिदान की दीवारे रोक सकती थी :

क़ैद में भी तिरे वहसी को रही जुल्फ़ की याद
हां, कुछ इक रंज गिरांबारिये-ज़ंजीर भी था

लेकिन इस मर्तबा जो हालत पेश आई उसने एक दूसरी ही तरह का नक्शा खीच दिया । बाहर की न सिर्फ तमाम सूरते ही यककलम नजरो से ओझल हो गई, बल्कि सदाये भी बयक दफा रुक गई । असहाबे-कहफ[८] की निस्बत कहा गया है :

कान लम यकुन बैनल हुजूनि इलस्सफ़ा
अनीसुन व लम यस्मुस बिमक्कत सामिरु[९]

अचानक एक नई दुनिया मे लाकर बद कर दिये गये जिसका पूरा जुगराफ़िया एक सौ गज से ज्यादा फैलाव नही रखता, और जिसकी सारी मर्दुमशुमारी पद्रह

---

१. कैदखाने मे भी खयाल जगल मे भटक रहा था । २. अनुभूति ३. आराम, सुख चैन ४. कमी ५. सतुष्ट ६. कैसी तो किसी पद की इच्छा या कैसी सरो सामान से घृणा ? इन तृष्णाओ से दूर हो या न हो लेकिन ये गुजर ही जाती है । ७. विच्छेद और विरक्ति की स्थिति ८. गुफा मे रहने वाले ९. गोया हुजून और सफ़ा के पहाडो के बीच कोई दोस्त नही है और मक्के मे कोई कहानी कहने वाला नही रहा ।

जिदा शक्लो से ज्यादा नही। इसी दुनिया मे हर सुबह की रोशनी तुलूअ[1] होने लगी। इसीमे हर शाम की तारीकी[2] फैलने लगी :

गोया न वो ज़मीं है न वो आसमां है अब !

अगर कहूँ कि इस नागहानी सूरते-हाल से तबीयत का सुकून[3] मुतासिर[4] नही हुआ तो यह सरीह[5] बनावट होगी। वाका यह है कि तबीयत मुतासिर हुई और तेजी और सिद्दत[6] के साथ हुई, लेकिन यह भी वाका है कि इस हालत की उम्र चद घंटो से ज्यादा न थी। चुनाचे गिरफ्तारी के दूसरे ही दिन जब हस्बे-मामूल अल्लस्सबाह[7] उठा और जाम और मीना का दौर गर्दिश मे आया तो ऐसा महसूस होने लगा जैसे तबीयत का सारा इकबाज[8] अचानक दूर हो रहा हो और अफसुर्दगी[9] व नगी की जगह इशराह[10] ओ शिगुफ्तगी[11] दिल के दरवाजे पर दस्तक दे रही हो। हा मुख्लिस खा आलमगीरी ने क्या खूब लफ्फ ओ नशर[12] मुरत्तब किया है। इस जौके-सुखनमे मेरा साथ दीजिये :

खुमारे-मा, व दरे-तोबा व दिले-साक़ी
बयक तबस्सुमे-मीना शिकस्त ओ बस्त ओ कुशाद ![13]

अब मालूम हुआ कि अगरचे निगाहो और कानो की एक महदूद दुनिया खोई गई है। मगर फिक्र ओ तसव्वुर की कितनी ही नई दुनियाये अपनी सारी पहनाइयो[14] और बे कनारियो के साथ सामने आ खडी हुई है। अगर एक दरवाजे के बद होने पर इतने दरवाजे खुल जा सकते है तो कौन ऐसा ज़याने-अक्ल[15] होगा जो इस सौदे पर गिलमद[16] हो .

नुक़सां नहीं जुनूं में, बला से हो घर ख़राब
दो गज़ ज़मी के बदले बयाबां गरां नही !

बाकी रही कैद ओ बंद की तनहाई[17] और अलायक[18] का इकताअ[19], तो हकीकत यह है कि यह हालत कभी मेरे लिये मूजिबे-शिकायत न हो सकी। मै इससे

---

१. उदय होना २. अँधेरा ३. शांति ४. प्रभावित ५. बिल्कुल ६ जोर के साथ ७. सुबह सवेरे ८. घुटन ९. उदासी १०. प्रफुल्लता ११. प्रसन्नता १२. लफ्फ ओ नशर का ततलब है लपेटना और फैलाना। जहाँ पद्य मे पहले कोई बात लपेटी जाय फिर उसी को फैलाया जाय इसे लफ्फ ओ नशर कहते है। १३. मेरा खुमार, तोबा का दरवाजा और साकी का दिल, शराब की सुराही की एक मुस्कुराहट से खुमार टूट गया, तोबा का दरवाजा बंद हो गया, साकी का दिल खुल गया १४. विस्तृति १५. अक़्ल का मारा १६. शिकायत करने वाला १७. अकेलापन १८. सम्बन्ध १९. कट जाना।

गुरेजा[1] नही रहता, इसका आरजूमंद रहता हूँ। तनहाई ख्वाह किसी हालत में आये और किसी शक्ल मे, मेरे दिल का दरवाजा हमेशा खुला पायेगी—बातिनुहु फिहिर्रहमतु व जाहिरुहु मिन्किब्लतिल अजाबि[2]।

इब्तदा ही से तबीयत की उफ्ताद कुछ ऐसी वाके हुई थी कि खिलवत[3] का ख्वाहा और जलवत[4] से गुरेजाँ रहता था। यह ज़ाहिर है कि जिदगी की मशगूलियतो के तकाजे इस तबए-वहशत-सरिश्त[5] के साथ निभाये नही जा सकते इसलिये बतकल्लुफ खुद को अजुमन आराइयो[6] का खूगर[7] बनाना पडता है। मगर दिल की तलब हमेशा बहाने ढूँढती रहती है। जूही जरूरत के तकाजो से मोहलत मिली और वो अपनी कामजोइयो[8] मे लग गई :

दर खराबातम न दीदस्ती खराब
बादा पिंदारी कि पिनहां मीज़नम[9]

लोग लडकपन का जमाना खेल कूद मे बसर करते है। मगर बारह तेरह बरस की उम्र मे मेरा यह हाल था कि किताब लेकर किसी गोशे मे जा बैठता और कोशिश करता कि लोगो की नजरो से ओझल हूँ। कलकत्ते मे आपने डलहौज़ी स्क्वायर जरूर देखा होगा। जनरल पोस्टआफिस के सामने वाके है। इसे आम तौर पर लालडिग्गी कहा करते थे। इसमे दरख्तो का एक झुड था कि बाहर से देखिये तो दरख्त ही दरख्त है, अन्दर जाइये तो अच्छी खासी जगह है और एक बेच भी बिछी हुई है। मालूम नही अब भी यह झुड है कि नही। मै जब सैर के लिये निकलता तो किताब साथ ले जाता और इस झुड के अन्दर बैठ कर मुताले मैं गर्क हो जाता। वालिद मरहूम के खादिमे-खास हाफिज वलीउल्ला मरहूम साथ हुआ करते थे। वो बाहर टहलते रहते और झुँझला झुँझला कर कहते "अगर तुझे किताब ही पढनी थी तो घर से निकला क्यो ?" ये सतरे लिख रहा हूँ और उनकी आवाज कानो मे गूज रही है। दरिया के किनारे ईडन गार्डन मे भी इस तरह के कई झुड थे। एक झुड जो बरमी पगोडा के पास मसनुई[10] नहर के किनारे था और शायद अब भी हो, मेने चुन लिया था। क्योकि इस तरफ लोगो का गुजर बहुत कम होता था। अकसर सिह पहर[11] के वक्त किताब लेकर निकल जाता और शाम तक उसके अन्दर गुम रहता। अब वो ज़माना याद आ जाता है तो दिल का अजीब हाल होता है।

---

१. नफरत करना २. अन्तर मे सुखदाई और बाहर से कष्टप्रद दिखाई देती है। ३. एकात ४. दिखावा ५. एकांतप्रिय प्रकृति ६, सभा सोसाइटी ७. अभ्यासी ८. प्रवृति ९. तूने मुझे खराबात मे खराब नही देखा है तो यही समझ कि मैं छिपकर शराब पीता हूँ १०. कृत्रिम ११. तीसरे पहर।

आलमे-बेख़बरी तुर्फ़ा बहिश्ते बूद स्त
हैफ़ सद हैफ़ कि मा देर ख़बरदार शुदेम[1]

कुछ यह बात न थी कि खेलकूद और सैर ओ तफरीह के वसायल[2] की कमी हो। मेरे चारों तरफ इनकी तरगीबात[3] फैली हुई थी और कलकत्ता जैसा हंगामा गरमकुन शहर था। लेकिन मै तबियत ही कुछ ऐसी लेकर आया था कि खेल कूद की तरफ रुख ही नही करती थी।

हमा शहर पुर ज़ ख़ूबां मनम ओ ख़याले-माहे
च कुनम कि नफ़्से-बदख़ू न कुनद ब कस निगाहे[4]

वालिद मरहूम मेरे इस शौके-इल्म से खुश होते मगर फरमाते यह लड़का अपनी तनदुरुस्ती बिगाड देगा। मालूम नही जिस्म की तनदुरुस्ती बिगडी या सँवरी मगर दिल को तो ऐसा रोग लग गया कि फिर कभी पनप न सका।

कै गुफ़्ता बूद कि दर्दश दवापज़ीर मबाद[5] **!**

मेरी पैदाइश एक ऐसे खानदान मे हुई जो इल्म ओ मशीखत[6] की बुजुर्गी और मरजअीयत[7] रखता था। इसलिये खलकत का जो हुजूम[8] ओ एहतराम[9] आजकल सियासी लीडरो के अुरूज[10] का कमाले-मर्तबा[11] समझा जाता है, वो मुझे मजहबी अकीदत मंदियों[12] की शक्ल में बग़ैर तलब ओ सअी[13] के मिल गया था। मैंने अभी होश भी नही सँभाला था कि लोग पीरज़ादा समझ कर मेरे हाथ पॉव चूमते थे और हाथ बॉध कर सामने खड़े रहते थे। खानदानी पेशवाई और मशीखत की इस हालत मे नौ उम्र तबीयतो के लिये बडी ही आजमाइश होती है। अकसर हालतो मे ऐसा होता है कि इब्तदा ही से तबीयतें बरखुद[14] गलत हो जाती है और नस्ली गुरूर और पैदाइशी खुदपरस्ती का वही रोग लग जाता है जो खानदानी अमीरजादों की तबाही का बायस[15] हुआ करता है। मुमकिन है, उसके कुछ न कुछ असरात मेरे हिस्से में भी आये हों। क्योंकि अपनी चोरियॉ पकडने के लिये खुद अपने कमीनमें[16] बैठना जैसा कि उरफी ने कहा है, आसान नही

---

१. आत्मविस्मृति का जमाना और ही स्वर्ग हो गया है लेकिन अफ़सोस है और सद अफसोस है कि हम देर से चेते। २. वसीले, उपकरण ३. प्रेरणाये ४. सारा शहर रूपसियों से भरा है और मैं चॉद के ख्याल में हूँ। क्या करूँ प्रकृति ही कुछ ऐसी खराब है कि किसी की तरफ निगाह ही नही करती। ५. कब कहा था कि उसका रोग औषधि के योग्य न हूजियो ६. शेख़पन, गुरुता ७. रुजू होना, रुझान ८. भीड़ ९. सम्मान १०. उत्कर्ष ११. चरम सीमा १२. धार्मिक श्रद्धा और भक्ति १३. चाह और कोशिश १४. अपने आप पर १५. हेतु १६. घात में।

ख़्वाही कि ऐबहाये-तू रोशन शवद तुरा
यक दम मुनाफ़िकाना नशीं दर कमीने-ख़ेश[१] !

लेकिन जहाँ तक अपनी हालत का जायज़ा ले सकता हूँ । मुझे यह कहने में ताम्मुल[२] नही कि मेरी तबीयत की कुदरती उफ़्ताद मुझे बिल्कुल दूसरी ही तरफ ले जा रही थी । मैं खानदानी मुरीदों[३] की इन अक़ीदतमंदाना[४] परस्तारियो[५] से खुश नही होता था । बल्कि तबीयत मे एक तरह का इन्कबाज़[६] और तबह्हुश[७] रहता था । मै चाहता था कोई ऐसी राह निकल आये कि इस फ़ज़ा[८] से बिल्कुल अलग हो जाऊँ और कोई आदमी आकर मेरे हाथ पाँव न चूमे । लोग यह कमयाब जिस ढूढते है और मिलती नही, मुझे घर बैठे मिली और उसका क़दर-शनास[९] न हो सका :

दोनों जहाँ देके वो समझे यह खुश रहा
यां आ पड़ी यह शर्म कि तकरार क्या करें !

अलबत्ता अब सोचता हूँ तो यह मआमला भी फायदे से खाली न था, और यहाँ का कौन सा मआमला है जो फायदे से ख़ाली होता है ? यही फ़ायदा क्या कम है कि जिस गिज़ा के लिये दुनिया की तबीयतें ललचाती रहती है, उससे पहले ही दिन अपना जी सैर हो गया और तबीयत मे ललचाहट बाक़ी न रही । फ़ैजी ने एक शेर ऐसा कहा है कि अगर और कुछ न कहता जब भी फ़ैजी था :

काबा रा वीरां मकुन अय इश्क़ कांजा यक नफ़स
गहगहे पस मांदगाने-राह मंजिल मीकुनंद[१०] !

तबीयत की इस उफ़्ताद ने एक बड़ा काम यह दिया कि ज़माने के बहुत से हरबे[११] मेरे लिये बेकार हो गये । लोग अगर मेरी तरफ़ से रुख फेरते है तो बजाये इसके कि दिल गिलामद[१२] हो और ज्यादा मिन्नतगुज़ार[१३] होने लगता है । क्योकि उनका जो हुजूम लोगों को खुशहाल करता है, मेरे लिये बसा[१४] औकात नाकाबिले-बरदाश्त हो जाता है । मैं अगर अवाम[१५] का रजूअ[१६] व हुजूम

---

१. अगर तू चाहता है कि तेरी बुराइयाँ तुझ पर जाहिर हो तो क्षण भर के लिये विरोधी की तरह अपनी ही घात मे बैठ २. सकोच ३. भक्त ४. श्रद्धापूर्ण ५. पूजा भक्ति ६. घुटन ७. वहशत, घबराहट ८. वातावरण ९. कदर पहचानेवाला १०. काबे को नष्ट मत कर अय इश्क कि वहाँ क्षण भर को कभी कभी राह के थके मादे अपना पडाव करते है । ११. हथियार १२. शिकायत करनेवाला १३. कृतज्ञ १४. बहुत बार १५. लोगो का १६. झुकाव ।

गवारा करता हूं तो यह मेरे इख्तियार की पसन्द नही होती, इज़्तिरार[1] ओ तकल्लुफ की मजबूरी होती है। मैंने सियासी जिदगी के हंगामों को नहीं ढूंढा था, सियासी ज़िदगी के हगामों ने मुझे ढूंढ़ निकाला। मेरा मआमला सियासी जिदगी के साथ वो हुआ जो ग़ालिब का शायरी के साथ हुआ था :

मा न बूदेम बदीं मर्तबा राज़ी ग़ालिब
शेर खुद ख्वाहिश आं कर्द कि गरदद फ़ने-मा[2]

इसी तरह अगर हालात की रफ्तार कैद ओ बद का बायस होती है तो इस हालत की जो रुकावटे और पाबदियाँ दूसरो के लिये अज़ीयत[3] का मूजिब[4] होती है, मेरे लिये यकसूयी[5] और बखुद मशगूली का जरिया बन जाती है और किसी तरह भी तबीयत को अफसुर्दा[6] नही कर सकती। मैं जब कभी कैदखाने मे सुना करता हूं कि फुला कैदी को कैदे-तनहाई की सजा दी गई है तो हैरान रह जाता हूँ कि तनहाई की हालत आदमी के लिये सजा कैसे हो सकती है? अगर दुनिया इसी को सज़ा समझती है तो काश ऐसी सज़ाये उम्र भर के लिये हासिल की जा सके :

हसदे - तोहमते - आज़ादीये - सरवम बगुदाख्त
कीं मुरादेस्त कि बर तोहमते-आं हम हसद स्त![7]

एक मर्तबा कैद की हालत मे ऐसा हुआ कि एक साहब ने जो मेरे आराम ओ राहत का बहुत खयाल रखना चाहते थे, मुझे एक कोठडी में तनहा देखकर सुपरिटेडेंट से इसकी शिकायत की। सुपरिटेडेट फौरन तैयार हो गया कि मुझे ऐसी जगह रखे जहाँ और लोग भी रखे जा सकें और तनहाई की हालत बाकी न रहे। मुझे मालूम हुआ तो मैने उन हजरत से कहा — आपने मुझे राहत पहुंचानी चाही, मगर आपको मालूम नही कि जो थोडी सी राहत हासिल थी वो भी आपकी वजह से अब छीनी जा रही है। यह तो वही गालिब वाला मआमला हुआ कि :

की हम नफ़सों[8] ने असरे-गिरिया[9] में तक़रीर
अच्छे रहे आप उससे मगर मुझको डुबो आये!

मै अपनी तबीयत की इस उफ्ताद से खुश नही हूँ। न इसे हुस्न ओ खूबी की कोई बात समझता हूँ। यह एक नुक्स है कि आदमी बज्म ओ अंजुमन का

---

१. बेइख्तियारी २. मै इस पद के लिये राजी नही था, खुद शेर ने यह इच्छा की कि वह मेरा फन बन जाय ३. कष्ट ४. कारण ५. तन्मयता ६. उदास ७. सरो के दरख्त की आजादी की ईर्ष्या की तोहमत ने मुझे गला दिया। लेकिन यह एक ऐसी इच्छा है कि जिसकी तोहमत पर भी ईर्ष्या होती है ८. साथी ९. रोते हुये।

हरीफ[१] न हुआ और सोहबत और इजतिमाअ[२] की जगह खिलवत ओ तनहाई में राहत महसूस करे :

हरीफ़े-साफ़ी ओ दुर्दे नई खता ई जा स्त
तमीज़े-नाखुश ओ खुश मीकुनी बला ईं जा स्त[३]

लेकिन अब तबीयत का साँचा इतना पुख्ता हो चुका है कि उसे तोडा जा सकता है, मगर मोडा नही जा सकता :

क़तरा अज़ तशवीशे-मौज आखिर निहां शुद दर सदफ़
गोशागीरीहाये - खल्क़ अज़ इनफ़िआले-सोहबत स्त[४] ।

इस उफ़्तादे-तबीयत के हाथो हमेशा तरह तरह की बदगुमानियों का मौरिद[५] रहता हूँ और लोगो को हकीकते-हाल समझा नही सकता । लोग इस हालत को गरूर ओ पिदार[६] पर महमूल[७] करते है और समझते है मैं दूसरों को मुबकसर[८] तसव्वुर करता हूँ, इसलिए उनकी तरफ बढता नही । हालाकि मुझे खुद अपना ही बोझ उठने नही देता, दूसरों की फिक्र मे कहाँ रह सकता हूँ ? गनी कश्मीरी ने एक शेर क्या खूब कहा है :

ताक़ते-बरखाश्तन अज़ गर्दे-नमनाकम न मांद
खल्क़ पिंदारद कि मय खुर्दस्त ओ मस्त उफ़्तादा अस्त[९]

सरखुश ने कलमात उश्शुअरा मे जो शेर नकल किया है, उसमे "खल्क मीदानद" है। मगर मै खयाल करता हूँ यह महल "दानिस्तन[१०]" का नही है "पिदाश्तन" का है, इसलिए "पिदारद" ज़्यादा मौज़ू होगा और अजब नही असल में ऐसा ही हो ।

बहर हाल जो सूरते-हाल पेश आई है उससे जो कुछ भी इन्कबाजे-खातिर[११] हुआ था वो सिर्फ़ इसलिए हुआ था कि बाहर के अलायक[१२] अचानक यककलम[१३] कता[१४] हो गये और रेडियो सेट और अखबार तक रोक दिये गये । वर्ना कैद ओ बंद की तनहाई का कोई शिकवा न पहले हुआ है न अब है :

---

१. साथी २. जमाव, गोष्ठी ३. निर्मलता और तलछट दोनो का साथी नही है बुराई यही है । इष्ट और अनिष्ट का फ़र्क करता है बुराई यही है । ४. बूद लहरों की परेशानी और थपेड़ों से (घबराकर) आखिर सीप मे छिप गयी । दुनिया से (अलग हटकर) एकांत सेवन यह सोहबत की बुराइयों के कारण है । ५. पात्र, भाजन ६. अहकार ७. गुमान करना ८. तुच्छ ९. मेरे आस पास के कीचड़ से मुझ मे उठने की ताक़त नही रही और दुनिया समझती है कि शराब पीये हुये है और मस्त पड़ा है १०. दानिस्तन का मतलब जानना और पिदाश्तन का मतलब समझना है ११. दिल की घुटन या खिन्नता १२. सबंध १३. बिल्कुल १४. कट गये थे ।

दिमाग़-इत्रे-पैराहन नहीं है
ग़मे - ग्रावारगीहाये - सबा क्या ?

ग्रौर फिर जो कुछ भी जबाने-कलम पर तारी हुग्रा, सूरते-हाल की हिकायत[१] थी, शिकायत न थी। क्योकि इस राह मे शिकवा ग्रो शिकायत की गुजाइश ही नही होती। ग्रगर हमे इख्तियार है कि ग्रपना सर टकराते रहे, तो दूसरे को भी इख्तियार है कि नई-नई दीवारे चुनता रहे। बेदिल का यह शेर मौजूदा सूरते-हाल पर क्या चस्पा हुग्रा है :

दूरिये-वस्लश तिलिस्मे-ऐतबारे-मा शिकस्त
वर्ना ई ग्रज्ज़े कि मीबीनी, ग़ुबारे-नाज़ बूद ![२]

ग्रगरचे यहाँ तनहा नही हूँ, ग्यारह रफीक[३] साथ है। लेकिन चूँकि उनमे से हर शख्स ग्रज राहे-इनायत[४] मेरे मामूलात का लिहाज रखता है, इसलिए हस्बे-दिल-ख्वाह[५] यकसूई ग्रौर मशगूलियत की जिदगी बसर कर रहा हूँ। दिन भर मे सिर्फ चार मर्तबा कमरे से निकलना पडता है। क्योकि खाने का कमरा कतार का ग्राखिरी कमरा है ग्रौर चाय ग्रौर खाने के ग्रौकात मे वहाँ जाना ज़रूरी हुग्रा। बाकी तमाम ग्रौकात की तनहाई ग्रौर खुद मशगूली बगैर किसी खलल के जारी रहती है :

खुश फ़र्शे-बोरिया व गदाई ग्रो ख्वाबे-ग्रम्न
कीं ऐश नेस्त दरखुरे-ग्रौरंगे-खुशरुई ![६]

जिदगी की मशगूलियतो का वो तमाम सामान जो ग्रपने वजूद[७] से बाहर था, ग्रगर छिन गया है तो क्या मुजायका[८] ? तमाम सामान जो ग्रपने ग्रदर था ग्रौर जिसे कोई छीन नही सकता, सीने मे छिपाये साथ लाया हूँ। उसे सजाता हूँ ग्रौर उसके सैर ग्रो नज्जारे मे मह्व[९] रहता हूँ।

ग्राईना नक़्शे-बंदे-तिलिस्मे-ख़याल नेस्त
तसवीरे-खुद ब लोहे-दिगर मीकशेम मा ![१०]

गिरफ्तारी चूकि सफर की हालत में हुई थी इसलिए मुताले[११] का कोई सामान साथ न था। सिर्फ दो किताबे मेरे साथ गई थी जो सफ़र मे देखने के लिए

---

१. वर्णन २. उसके मिलन की दूरी ने मेरे ऐतबार का तिलिस्म तोड़ दिया। वरना यह ग्राजिजी जो देख रहे हो यह ग्रभिमान की चीज थी। ३. सहचर, साथी ४. मेहरबानी करके ५. मनचाही ६. टाट का फ़र्श ग्रौर फ़कीरी ग्रौर चैन की नीद ग्रच्छी है क्योकि यह ऐश बादशाहत के तख्त मे नही है। ७. ग्रस्तित्व ८. हर्ज ९. तल्लीन १०. ग्राईना खयालों के तिलिस्म की नक़्शबदी नही कर सकता। हम ग्रपनी ही तसवीर दूसरी तख़्ती पर खीचते है ११. पढने का।

रख ली थी। इसी तरह दो चार किताबे बाज़ साथियो के साथ आई। यह ज़खीरा[1] बहुत जल्द खत्म हो गया। और मजीद[2] किताबो के मँगवाने की कोई राह नही निकली। लेकिन अगर पढ़ने के सामान का फुकदा[3] हुआ तो लिखने के सामान की कोई कमी नही हुई। कागज़ का ढेर मेरे साथ है और रोशनाई की अहमदनगर के बाज़ार में कमी नही। तमाम वक्त खामाफरसाई[4] मे खर्च होता है :

दर जुनूं बेकार न तवां ज़ीस्तन
आतिशम तेज़ स्त ओ दामां मीज़नम[5]

जब थक जाता हूँ तो कुछ देर के लिए बरामदे मे निकलकर बैठ जाता हूँ या सहन मे टहलने लगता हूँ .

बेकारिये जुनूं में है सर पीटने का शग़ल
जब हाथ टूट जायें तो फिर क्या करे कोई

मैंने जो खत इंस्पेक्टर जनरल को लिखा था वो उसने गवर्नमेंट को भेज दिया था। कल उसका जवाब मिला। अब नये अहकाम[6] हमारे लिए ये है कि अखबार दिये जायेगे, करीबी रिश्तेदारो को खत लिखा जा सकता है, लेकिन मुलाकात किसी से नही की जा सकती। चीताखा ने यहाँ के फौजी मेस से टाइम्स आफ इंडिया का ताजा परचा मँगवा लिया था। वो उसने खत के साथ हवाले किया। अखबार का हाथ मे लेना था कि तीन हफ्ते पहले की दुनिया जो हमारे लिए मादूम[7] हो चुकी थी, फिर सामने आ खडी हुई। मालूम हुआ कि हमारे गिरफ्तार हो जाने से मुल्क मे अमन चैन नही हो गया बल्कि नये हंगामो ने नये गलगले[8] बरपा[9] किये।

है एक ख़ल्क़ का खूं अश्के-खूंफ़िशां[10] पै मेरे
सिखाई तर्ज़ उसे दामन उठा के आने की !

मैंने चीताखां से कहा कि अगर ९ अगस्त से २७ तक के पिछले परचे कही से मिल सके तो मँगवा दे। उसने ढुंढवाया तो बहुत से परचे मिल गये। रात देर तक उन्हे देखता रहा था :

दीवानगां हज़ार गरेबां दरीदा अंद
दस्ते-तलब ब दामने-सहरा न मीरसद[11]

---

१. सचय २. ज्यादा ३. कमी, अभाव ४. लिखने में ५. बदहवासी की हालत मे बेकार नही जी सकते, मेरी आतिश या आग तेज़ है और मैं दामन झोंकता हूँ ६. हुक्म का बहुवचन अहकाम ७. विनष्ट ८. शोर ९. खड़े किये १०. खून के आँसू ११. दीवानो ने हज़ारों गरेबां फाड़ डाले लेकिन तलब का हाथ सहरा के दामन तक नहीं पहुँचता।

मगर मुझे यह किस्सा यहां नही छेड़ना चाहिए। मेरी आपकी मजलिस आराई[1] इस अफसाना सराई[2] के लिए नहीं हुआ करती :

अज़ मा बजुज़ हिकायते-महर ओ वफ़ा मपुर्स[3]

मेरी दुक्काने-सुखन में एक ही तरह की जिस नही रहती। लेकिन आपके लिए कुछ निकालता हूँ तो एहतियात की छलनी में अच्छी तरह छान लिया करता हूँ कि किसी तरह की सियासी मिलावट बाकी न रहे। देखिये, इस छान लेने के मजमून को शरीफ खा शीराजी ने कि जहाँगीर के अहद मे अमीर-उल-उमरा हुआ क्या खूब बाँधा है :

शररे-नाला ब गिरबाले-अदब मीबेज़म
कि ब गोशे-तू मबादा रसद आवाज़े-दुरुश्त[4]

यह वही अमीर-उल-उमरा है जिसके हस्बे-जेल शेर पर जहाँगीर ने शोअराये-दरबार से गजले लिखवाई थी और खुद भी नबा आजमाई[5] की थी :

बगुज़र मसीह अज़ सरे-मा कुश्तगाने-इश्क़
यक ज़िंदा करदने-तू ब सद ख़ूं बराबर स्त[6]

अबुलकलाम

---

१. बैठक की रचना या सजावट २. कहानी कहना ३. मुझसे सिवा प्रेम और मेहरबानी की बातों के और कुछ मत पूछो ४. अपनी शिकायतों की आवाज की चिगारियों को अदब की छलनी में छान लेता हूँ ताकि तुम्हारे कानों में कोई कठोर आवाज न पहुँचे। ५. तबीयत आजमाना ६. अय मसीह मेरे सिरहाने से गुजर जा कि हम इश्क के मारे हुए है। क्योंकि तेरा एक को ज़िंदा करना सौ खून के बराबर है।

क़िलअ़े-अहमदनगर
१२, अक्तूबर, सन् १९४२ ई.

सदीके-मुकर्रम

आज गालिबन सुबह ईद है। ईद की तबरीक[१] आप तक पहुँचा नहीं सकता। अलबत्ता आपको मुखातिब तसव्वुर करके सफये-कागज पर नक्श कर सकता हूँ :

अय गायब अज़ नज़र कि शुदी हमनशीने-दिल
मी गोयमत दुआ ओ सना मीफ़िरिस्तमत !
दर राहे-दोस्त मरहलये-क़ुर्ब ओ बुअ़द नेस्त
मी बीनमत अयां ओ दुआ मीफ़िरिस्तमत ![२]

अपनी हालत क्या लिखूं ?

खमियाज़ासंजे - तोहमते-ऐशे-रमीदा अेम
मय आं क़दर न बूद कि रंजे-खुमार बुर्द ![३]

मालूम नही एक खास तरह के जहनी[४] वारिदे[५] की हालत का आपको तजरुबा हुआ है या नहीं ? बाज़ औक़ात ऐसा होता है कि कोई बात बरसो तक हाफ़िजे में ताजा नही होती। गोया किसी कोने मे सो रही है। फिर किसी वक़्त अचानक, इस तरह जाग उठेगी जैसे इसी वक़्त दिमाग ने किवाड खोलकर अंदर ले लिया हो। अशआर[६] ओ मतालिब[७] की याददाश्त मे इस तरह की वारदात अकसर पेश आती रहती है। तीस चालीस बरस पेशतर के मुताले के नुक़ूश[८] कभी अचानक इस तरह उभर आयेगे कि मालूम होगा अभी किताब देखकर उठा हूँ। मजमून के साथ किताब याद आ जाती है, किताब के साथ जिल्द, जिल्द के साथ सफहा, सफहे के साथ यह तअ़य्युन[९] कि मजमून इब्तदाई सतरों में था, या दरमियानी सतरो मे, या आखिरी सतरों मे। नीज़[१०] सफ़हे का रुख कि दहनी तरफ का था या बाईं तरफ का। अभी थोडी देर हुई हस्बे-मामूल सोकर उठा तो बगैर किसी ज़ाहिरी मुनासिबत[११] और तहरीक[१२] के यह शेर खुद बखुद ज़बान पर तारी था :

१. मुबारकबादी २. दोस्ती की राह मे मंज़िल की निकटता और दूरी नही होती, मैं तो तुम्हे प्रगट देख रहा हूँ और तुम्हारे लिए दुआयें भेज रहा हूँ। ३. पहले आ चुका है ४. दिमागी ५. प्रगटन, अवतरण ६. शेर का बहुवचन ७. मतलब का बहुवचन ८. रेखायें ९. निश्चय, खास बात १०. साथ ही ११. संबंध १२. प्रवृत्ति।

कम लज्जतम ओ क़ीमतम अफ़ज़ूं ज़ शुमार स्त
गोई समरे-पेशतर अज़ बाग़े-वजूदम ![1]

साथ ही याद आ गया कि शेर हकीम सदराये शीराजी का है जो अवाखिर अहदे-अकबरी[2] में हिन्दुस्तान आया और शाहजहाँ के अहद तक जिंदा रहा, और आफताबे-आलमताब में नजर से गुज़रा था। गालिबन बाईं तरफ के सफहे में और सफहे की इब्तदाई सतरो मे। आफताबे-आलमताब देखे हुए कम से कम तीस बरस हो गये होंगे। फिर इत्तिफाक नही हुआ कि उसे खोला हो।

गौर फ़रमाइये क्या उम्दा मिसाल दी है आपने अकसर बेफसल के मेवे खाये होंगे। मसलन जाड़ों मे आम। चूँकि बेफसल की चीज होती है, नायाब[3] और तोहफा[4] समझी जाती है। लोग बडी-बडी कीमते देकर खरीदते है और दोस्तो को बतौर तोहफे के भेजते है। लेकिन जो अिल्लत[5] उसकी तोहफगी और गरानी[6] की हुई वही बेलज्जती की भी हो गई। खाइये तो मज़ा नही मिलता और मजा मिले तो कैसे मिले ? जो मौसम अभी नही आया उसका मेवा नावक्त पैदा हो गया। यह जमीन की गलत अदेशी थी कि वक्त की पाबदी भूल गई और इस गलत अदेशी की पादाश[7] जरूरी है कि मेवे के हिस्से मे आये। ताहम चूँकि चीज़ कमयाब होती है इसलिए बेमजा होने पर भी बेकदर नही हो जाती। खानेवालो को मजा नही मिलता फिर भी ज्यादा से ज्यादा कीमत देकर खरीदेगे और कहेगे यह जिसे-नायाब जितनी भी गरा हो, अरजा[8] है।

गौर कीजिये तो इंसान के अफकार[9] ओ ऐमाल[10] की दुनिया का भी यही हाल है। यहाँ सिर्फ मौसम के ही दरख्त नहीं उगते, मौसम के दिमाग भी उगा करते है। और फिर जिस तरह यहाँ का हर फजाई[11] मौसम अपने मिजाज की एक खास नौअियत[12] रखता है और उसी के मुताबिक उसकी तमाम पैदावार जहूर मे आती रहती है। इसी तरह वक्त का हर दिमागी मौसम भी अपना एक खास मानवी[13] मिज़ाज रखता है और जरूरी है कि उसी के मुताबिक तबीयतें और ज़हनियते[14] जहूर में आये। लेकिन चूँकि यहाँ फितरत[15] की यकसानियों[16] और हम आहगियो[17] की तरह उसकी गाह-गाह की नाहमवारियाँ[18] भी हुईं।

---

१. मैं स्वाद मे कम हूँ और क़ीमत मेरी हिसाब से ज्यादा है। तुम यही कहो कि दुनिया के बाग में वक़्त से पहले फला हुआ फल हूँ। २. अकबर के आखिरी ज़माने में ३. अमूल्य, अप्राप्य ४. उपहार ५. गुण ६. मँहगाई ७. सजा ८. सस्ती ९. चिंतन १०. आचरण ११. प्राकृतिक १२. ढंग १३. अर्थ का १४. दिमाग़ १५. प्रकृति १६. एक रंगता १७. एक सुरता ८. असमानता।

और यहाँ का कोई कानून अपने फिलतात[१] और शवाज़से खाली नही। इसलिए कभी-कभी ऐसा भी होने लगता है कि नावक्त के फलो की तरह नावक़्त की तबीयते जहूर मे आ जाती है। इसे कारखानये-नश्व[२] ओ नुमा के कारोबार का नुक्स कहिये या जमाने की गलतअदेशीये-वक्त (Anachronism) लेकिन बहर हाल ऐसा होता जरूर है। ऐसी नावक्त की तबीयते जब कभी जहूर में आयेगी तो नावक्त के फलों की तरह मौसम के लिए अजनबी होगी। न तो वो वक्त का साथ दे सकेगी, न वक्त उनके साथ मेल खा सकेगा। ताहम चूँकि उनकी नमूद[३] मे एक तरह की गरावत[४] होती है इसलिए नावक्त की चीज होने पर भी बेकदर नही हो जाती। लोगो को मजा मिले या न मिले लेकिन उनकी गरा कीमती का ऐतराफ[५] जरूर करेगे। सदराये शीराजी के दिक्कते-तखय्युल ने इसी सूरतेहाल का सुराग लगाया और दो मिसरो मे एक बडी कहानी सुना दी।

यह शेर सुनाते हुये मुझे खयाल हुआ, मेरा और जमाने का बाहमी मुआमला भी शायद कुछ ऐसी ही नौइयत का हुआ। तबीयत की बेमेल उफ्ताद[६] फिक्र और अमल के किसी गोशे मे भी वक्त और मौसम के पीछे चल न सकी। इसे वजूद[७] का नुक्स कहिये। लेकिन यह एक ऐसा नुक्स था जो अव्वल रोज से तबीयत अपने साथ लाई थी और इसलिये वक्त की कोई खारजी[८] तासीर[९] इसे बदल नही सकती थी। जमाना जो कुदरती तौर पर मौसमी चीजो का दिलदादा[१०] होता है, इस नावक्त के फल मे क्या लज्ज़त पा सकता था ? लोग खाते है तो मजा नही मिलता। ताहम इस बेमज़गी पर भी अपनी कीमत हमेशा गरा ही रही। लोग जानते है कि मजा मिले न मिले मगर जिस अरजा नही हो सकती :

मताअे-मन कि नसीबश मबाद अरज़ानी ![११]

बाजार मे हमेशा वही जिस रखी जाती है जिसकी माँग होती है और चूकि माँग होती है इसलिये हर हाथ उसकी तरफ बढ़ता है और हर आँख उसे कबूल करती है। मगर मेरा मआमला इसमे बिल्कुल उल्टा रहा। जिस जिस की भी आम माँग हुई मेरी दूकान मे जगह न पा सकी। लोग ज़माने के रोजे-बाजार मे ऐसी चीज़े ढूँढ कर लायेगे जिनका रिवाज आम हो। मैने हमेशा ऐसी जिस ढूँढ ढूँढ़ कर जमा की जिसका कहीं रिवाज न हो। औरो के लिये पसद ओ इतखाब[१२] की जो अिल्लत[१३] हुई वही मेरे लिये तर्क ओ ऐराज[१४] की

---

१. त्रुटि २ सृष्टि के कारख़ाने का ३. अस्तित्व ४. विचित्रता ५. स्वीकार ६. रुझान, प्रवृति ७. अस्तित्व ८. बाह्य ९. प्रभाव १०. चाहनेवाला ११. मेरी पूंजी के नसीब में सस्तापन न हो १२. चयन १३. कारण १४. छोड देना।

ग्रिल्लत बन गई। उन्होने दूकानो मे ऐसा सामान मजाया जिसके लिये सबके हाथ बढ़ सके :

क़माशे-दस्तजदे-शहर ग्रो दिह ज मन मतलब
मताग्र्-मन हमा दरयायी ग्रस्त या कानी ![1]

लोग बाजार मे दूकान लगाते है तो ऐसी जगह ढूंढ कर लगाते है जहाँ खरीदारों की भीड लगती हो। मैने जिस दिन ग्रपनी दूकान लगाई तो ऐसी जगह ढूँढकर लगाई जहाँ कम से कम गाहको का गुजर हो सके :

दर कूये-मा शिकस्तादिली मीख़रंद ग्रो बस
बाजारे-ख़ुदफ़रोशी ग्रजां सूये-दीगर स्त ![2]

मजहब मे, ग्रदब मे, सियासत में, फिक्र ग्रो नज़र की ग्राम राहों मे जिस तरफ़ भी निकलना पडा, किसी राह मे भी वक़्त के काफिलो का साथ न दे सका :

बा रफ़ीक़ाने ज ख़ुदरफ़्ता सफ़र दस्त न दाद
सैरे-सहराये-जुनूं हैफ़ कि तनहा करदेम ![3]

जिस राह मे भी कदम उठाया वक्त की मजिलो से इतना दूर होता गया कि जब मुड के देखा तो गर्दे-राह के सिवा कुछ दिखाई नही देता था ग्रौर यह गर्द भी ग्रपनी ही तेज रफ्तारी की उडाई हुई थी :

ग्रां नेस्त कि मन हमनफ़सारा बिगुज़ारम
बा ग्राबले-पायां च कुनम ? क़ाफ़ला तेजस्त ![4]

इस तेज़ रफ्तारी से तलवो मे छाले पड गये। लेकिन ग्रजब नही राह के कुछ ख़स ग्रो खाशाक[5] साफ भी हो गये हो :

ख़ारहा ग्रज ग्रसरे-गरमीये-रफ़्तारम सोख़्त
मिन्नते बर क़दमे-राहरवान स्त मरा ।[6]

---

१. शहर ग्रौर गाँव की चीजे मुझसे मत तलब करो। मेरी तो सारी सामग्री समदर की है या खान की है ग्रर्थात् मेरे पास या तो मोती है या जवाहरात। २. मेरे कूचे में तो ग्राकर लोग शिकस्तदिली या दुख खरीदते है। वह बाज़ार जहाँ जाकर लोग तल्लीन हो जावें इससे दूसरी तरफ है ३. उन साथियों ने जो ग्रात्मविस्मृत हो सफ़र मे साथ नही दिया। ग्रफसोस है कि पागलपन के जगल की सैर मैंने ग्रकेले ही की ४. बात यह नही है कि मैं ग्रपने साथियों को छोड दूं लेकिन उन लोगों का मैं क्या करूँ जिनके पैर मे छाले पड़ गये है ग्रौर काफिला तेज चाल है ५. झाड फूंस ६. मेरी रफ्तार की गरमी के ग्रसर से काँटे जल गये। राहगीरों के कदमों पर मेरा ग्रहसान है।

अब इस वक्त रिश्तये-फिक्र[1] की गिरह खुल गई है तो यह तवक़्क़ो[2] न रखिये कि इसे जल्द लपेट सकूंगा :

ईं रिश्ता ब अंगुश्त न पेची कि दराज स्त ![3]

जिंदगी मे बहुत से हालात ऐसे पेश आये जो आम हालात मे कम पेश आते है। लेकिन मुआमले का एक पहलू ऐसा है जो हमेशा मेरे लिये एक मुअम्मा[4] रहा और शायद दूसरों के लिये भी रहे। इंसान अपनी सारी बातों में हालात की मखलूक[5] और गिर्द ओ पेश[6] के मुअस्सिरात[7] का नतीजा होता है। ये मुअस्सिरात अकसर सूरतों मे आशकारा[8] होते है और सतह पर से देख लिये जा सकते है। बाज सूरतों मे मखफी[9] होते है और तह मे उतर कर उन्हें ढूंढना पडता है। ताहम सुराग हर हाल मे मिल जाता है। नस्ल, खानदान, सोहबत, तालीम ओ तरबियत इन मुअस्सिरात के असरी[10] सरचश्मे है।

अनिल मरअि ला तसअल व सल अनक़रीनिहि[11]

लेकिन इस ऐतबार से अपनी जिंदगी के इब्तदाई हालात पर नजर डालता हूँ तो बड़ी हैरानी मे पड जाता हूँ। फिक्र ओ तबीयत की कितनी ही बुनियादी तबदीलियाँ है जिनका कोई खारजी सरचश्मा दिखाई नही देता और जो गिर्द पेश के तमाम मुअस्सिरात से किसी तरह भी जोडे नही जा सकते। कितनी ही बातें है जो हालात ओ मुअस्सिरात के खिलाफ जहूर[12] मे आई। कितनी ही है कि उनका जहूर सरतासर मुतजाद[13] शक्लो मे हुआ। दोनो सूरतो मे मआमला एक अजीब अफसाने से कम नही :

फ़रयादे-हाफ़िज़ ईं हमा आखिर ब हरजा नेस्त
हम क़िस्सये अजीब ओ हदीसे ग़रीब हस्त।[14]

जहाँ तक तबीयत की सीरत[15] और आदात ओ खसायल[16] का ताल्लुक है, मै अपनी खानदानी और नस्ली विरासत से बेखबर नही हूँ। हर इसान की अखलाकी और मआशरती[17] सूरत का कालिब[18] नस्ल ओ खानदान की मिट्टी से बनता है और मुझे मालूम है कि मेरी आदात ओ खसायल की मूरती भी

---

१. चितन सूत्र २. आशा ३ इस सूत को उंगली पर मत लपेटना क्योकि लंबा है ४. पहेली ५. सृष्टि, रचना ६. आसपास, परिपार्श्विक ७. प्रभाव ८. प्रगट ९. गुप्त १०. तात्विक ११. अगर आप किसी व्यक्ति के बारे में जानना चाहते है तो उसके बारे मे कुछ न पूछिये उसके दोस्तों के बारे में पूछ लो वे कैसे है १२. अस्तित्व १३. भिन्न भिन्न १४. हाफ़िज की फ़रियाद यह सब कुछ बेहूदा नही है। उसकी कहानी ही अजीब और बातें ही निराली हैं १५. प्रकृति १६. आदतो १७. सामाजिक १८. कलेवर।

इसी मिट्टी से बनी। हर खानदान अपनी रिवायती[1] जिंदगी की एक इनफ़रादियत[2] पैदा कर लेता है और वो नस्लन बाद नस्लिन[3] मुनकिल[4] होती रहती है। मैं साफ महसूस करता हूँ कि इस रिवायती जिंदगी के असरात मेरे खमीर[5] मे रच गये है और मै उनकी पकड़ से बाहर नही जा सकता। मेरी आदात ओ खसायल, चाल ढाल, तौर तरीका, अमयाल[6] ओ अजवाक[7] सबके अन्दर खानदान का हाथ साफ साफ दिखाई दे रहा है। यह खानदानी ज़िंदगी की रिवायते मुझे मेरे दधियाल और ननिहाल दोनों सिलसिलो से मिली और दोनो पर सदियो की कदामत[8] और तसलसुल[9] की मोहरे लगी हुई थी। वो बहर हाल मेरे हिस्से मे आनी थी। उनको कबूल करने या न करने मे मेरी ख्वाहिश और पसद को कोई दखल न था। लेकिन यहाँ सवाल आदात ओ खसायल का नही है, अफकार[10] ओ अकायद[11] का है। और जब इस ऐतबार[12] से अपनी हालत का जायज़ा लेता हूँ तो खानदाद, तालीम, इब्तदाई गिर्द ओ पेश, कोई गोशा भी मेल खाता हुआ दिखाई नही देता। फिक्री मुआस्सिरात के जितने भी अहवाल[13] ओ जरूफ़ (environments) हो सकते है उनमे से एक एक को अपने सामने लाता हूँ और उनमे अपने आपको ढूँढता हूँ। मगर मुझे अपना सुराग कही नही मिलता!

मैने होश सभालते ही ऐसे बुजुर्गो को अपने सामने पाया जो अकायद ओ अफकार मे अपना एक खास मसलक[14] रखते थे और उसमे इस दर्जे सख्त और बेलचक थे कि बाल बराबर भी इधर उधर होना कुफ़ ओ ज़ंदका[15] समझते थे। मैने बचपन से अपने खानदान की जो रिवायते[16] सुनी वो भी सरतासर इसी रंग मे डूबी हुई थी और मेरा दिमागी विरसा इस तसल्लुब[17] और जुमूद[18] से बोझल था। मेरी तालीम ऐसे गिर्द ओ पेश मे हुई जो चारों तरफ से कदामत-परस्ती[19] और तकलीद[20] की चारदीवारी मे घिरा हुआ था और बाहर की मुखालिफ[21] हवाओ का वहाँ तक गुजर ही न था। वालिद मरहूम के अलावा जिन असातजा[22] से तहसील[23] का इत्तिफाक हुआ वो भी वही थे जिन्हें वालिद मरहूम

---

१. खानदानी रीतरिवाज २. व्यक्तिगत रूप ३. पीढी दर पीढी ४. हस्तातरित ५. प्रकृति ६. मैल का बहुबचन, रूझान ७. जौक का बहुवचन, रुचि ८. पुरातनता ९. अनवरतता १०. चितन ११. धार्मिक श्रद्धा १२. अपेक्षा १३. हाल का बहुवचन १४. मार्ग १५. अधर्म, अधार्मिकता १६. बाते, श्रुतियाँ १७. सख्त रुकावट १८. ठोसपन १९. पुराणपंथी २०. अनुकरण २१. प्रतिकूल २२. उस्ताद का बहुवचन २३. प्राप्ति, ज्ञान प्राप्ति।

ने पहले अच्छी तरह ठोक बजा के देख लिया था कि उनके मैयारे-अकायद[१] व फिक्र पर पूरे पूरे उतर सकते है। और यह मैयार[२] इस दर्जे तग और सख्त था कि उनके मआसिरो[३] मे से खास खास[४] अशखास[५] ही की वहाँ तक रसाई हो सकती थी। पस[६] जाहिर है कि इस दरवाजे से भी किसी नई हवा के गुज़रने का इमकान[७] न था। जहाँ तक जमाने के फिक्री इकलाबात का ताल्लुक है, मेरे खानदान की दुनिया वक्त की राहो से इस दर्जे दूर वाके हुई थी कि उन राहों की कोई सदा[८] वहाँ तक पहुँच ही नही सकती थी। और इस ऐतबार से गोया सौ बरस पहले के हिन्दुस्तान मे मैं जिदगी बसर कर रहा था। इब्तदाई सोहबतों को इसानी दिमाग का साँचा ढालने में बहुत दखल होता है। लेकिन मेरी सोसाइटी अवायल[९] उम्र मे घर की चारदीवारी के अदर महदूद[१०] रही और घर के अज़ीज़ो और बुजुर्गो के अलावा अगर कोई दूसरा गिरोह मिला भी तो वो खानदान के मौतकिदो[११] और मुरीदों[१२] का गिरोह था। वो मेरे हाथ पाँव चूमते और हाथ बाँधे खडे रहते या रजअ़ते-कहकरी[१३] करके पीछे हटते और दूर मुअद्दब[१४] होकर बैठ रहते। यह फजा[१५] सूरते-हाल[१६] मे तबदीली पैदा करने की जगह और ज्यादा उसे गहरी करती रहती। वालिद[१७] मरहूम के मुरीदों मे एक बड़ी तादाद अ़ुल्मा[१८] और अग्रेजी तालीम याफ्ता अशखास की भी थी। दीवानखाने मे अकसर उनका मजमा[१९] रहता। मगर यह पूरा मजमा भी सरतासर इसी खानदानी रग मे रगा हुआ था। किसी दूसरे रंग की वहाँ झलक भी दिखाई नही देती थी।

अलावा बरी[२०] मुरीद और मौतकिद जब कभी मुझसे मिलते थे तो मुझे मुरशिदजादा[२१] समझ कर मुतज़िर[२२] रहते थे कि मुझसे कुछ सुने। वो मुझे कुछ सुनाने की गुस्ताखाना[२३] जुरअत[२४] कब कर सकते थे ?

अग्रेजी तालीम की जरूरत का तो यहाँ किसी को वहम ओ गुमान[२५] भी नही गुज़र सकता था। लेकिन कम अज कम यह तो हो सकता था कि कदीम तालीम के मदरिसों मे से किसी मदरिसे से वास्ता पडता। मदरिसे की तालीमी

---

१. चितन और धार्मिक श्रद्धा का स्तर २. कसौटी ३. सम सामयिक ४. कोई कोई ५. शख्स का बहुवचन ६. इसलिये ७. भरोसा ८. आवाज ९. प्रारभिक १०. सीमित ११. श्रद्धालु लोग १२. भक्त, चेले १३. किसी के सामने से अदब के साथ पीछे हटने को रजअ़ते-कहकरी कहते है १४. बा अदब १५. वातावरण १६. वस्तु-स्थिति १७. पिताजी १८. आलिम का बहुवचन, विद्वान १९. जमाव २०. इसके अलावा २१. पीरजाद, गुरुपुत्र २२. प्रतीक्षा मे २३. गुस्ताखी भरी २४. हिम्मत २५. सदेह और शंका।

ज़िंदगी बहर हाल घर की चारदीवारी के गोशये-तग से ज्यादा वुसअत रखती है और इसलिये तबीयत को कुछ न कुछ हाथ पॉव फैलाने का मौका मिल जाता है। लेकिन वालिद मरहूम यह भी गवारा नही कर सकते थे। कलकत्ते के सरकारी मदरिसे यानी मदरिसये-आलिया की तालीम उनकी नजरो मे कोई वकअत[१] नही रखती थी और फिलहकीकत[२] काबिले-वकअत थी भी नही। और कलकत्ते से बाहर भेजना उन्हे गवारा न था। उन्होने यही तरीका इख़्तियार किया कि खुद तालीम दे, या बाज खास असातजा के कयाम का इतज़ाम करके उनसे तालीम दिलाये। नतीजा यह निकला कि जहाँ तक तालीमी ज़माने का ताल्लुक है घर की चारदीवारी से बाहर क़दम निकालने का मौका ही नही मिला। बिला शुबहा[३] इसके बाद कदम खुले और हिन्दुस्तान से बाहर तक पहुँचे, लेकिन ये बाद के वाक़यात है जब कि तालिबइल्मी का जमाना बसर हो चुका था और मैने अपनी नई राहे ढूंढ निकाली थी। मेरी उम्र का वह जमाना जिसे बाकायदा तालिब इल्मी का जमाना कहा जा सकता है चौदह पंद्रह बरस की उम्र से आगे नही बढा।

फिर उस तालीम का हाल क्या था जिसकी तहसील मे तमाम इब्तदाई जमाना बसर हुआ? इसका जवाब अगर इख़्तिसार[४] के साथ भी दिया जाये तो सफहो के सफहे स्याह हो जाये और आपके लिये तफसील[५] ज़रूरी नही। एक फरमूदा[६] निज़ामे-तालीम[७] जिसे फने-तालीम[८] के जिस जावियये-निगाह से भी देखा जाये सरतासर अकीम[९] हो चुका है। तरीके-तालीम[१०] के ऐतबार से नाकिस,[११] मजामीन[१२] के ऐतबार से नाक़िस, इतखाबे-कुतुब[१३] के ऐतबार से नाक़िस, दर्स ओ इम्ला[१४] के अुस्लूब के ऐतबार से नाकिस। अगर फ़ुनूने-आलिया[१५] को अलग कर दिया जाये तो दर्से[१६] निजामिया मे बुनियादी मौजू[१७] दो ही रह जाते हैं—अुलूमे-दीनिया[१८] औ माकूलात[१९]। अुलूमे-दीनिया की तालीम जिन किताबो के दर्स मे मुनहसर[२०] रह गई है उससे उन किताबों के मतालिब ओ इबारत का इल्म हासिल हो जाता हो लेकिन खुद उन अुलूम मे कोई मुज्तहिदाना[२१] बसीरत हासिल नही हो सकती। माकूलात से अगर मंतिक[२२] अलग कर दी जाये तो फिर जो कुछ बाकी रह जाता है उसकी इल्मी

१. प्रतिष्ठा, सम्मान २. हकीकत मे ३. निस्सदेह ४. सक्षेप ५ .विस्तार ६. जीर्ण-शीर्ण ७. शिक्षाक्रम ८. शिक्षा शास्त्र ९. बाझ १०. शिक्षण रीति ११. बुरा, अपूर्ण १२. विषय १३. पुस्तकों का चुनाव १४. लिखने-पढने की रीति १५. न्याय, तर्क वगैरह १६. निजामिया के पठनक्रम मे १७. विषय १८. धर्म शिक्षा १९. वह शिक्षा जिससे अक्ल का सम्बंध है जैसे न्याय २० अवलबित २१. स्वतंत्र दृष्टि २२. न्याय शास्त्र।

कदर ओ कीमत इससे ज्यादा कुछ नही कि तारीखे-फिलसफये-कदीम[1] के एक खास अहद[2] की जहनी काविशों[3] की यादगार है। हालाकि इल्म की दुनिया उस अहद से सदियों आगे बढ चुकी। फुनूने-रियाजिया[4] जिस कदर पढाये जाते हैं वो मौजूदा अहद की रियाजयात के मुकाबले मे बमजिला सिफर के है। और वो भी आम तौर पर नही पढाये जाते, मैंने अपने शौक से पढ़ा था। जामा अज़हर काहरा के नसाबे-तालीम[5] का भी तकरीबन यही हाल है। हिन्दुस्तान मे मुताखरीन[6] की कुतुबे-माकूलात को फरूग[7] हुआ, वहाँ इतनी वुसअत भी पैदा न हो सकी :

अय तबले-बुलंद बांग, दर बातिन हेच ![8]

सैयद जमालउद्दीन असदा बादी ने जब मिसर मे कुतबे-हिकमत[9] का दर्स देना शुरू किया था तो बडी जुस्तजू से चंद किताबें वहाँ मिल सकी थी। और उल्माये-अजहर उन किताबों के नामो से भी आश्ना न थे। बिला शुबहा अब अज़हर का निज़ामे-तालीम बहुत कुछ इस्लाह[10] पा चुका है। लेकिन जिस जमाने का मैं जिक्र कर रहा हूँ उस वक्त तक इस्लाह की कोई सओ[11] कामयाब नही हुई थी और शेख अब्दहू मरहूम ने मायूस होकर एक नई सरकारी दर्सगाह "दारउल उलूम" की बुनियाद डाली थी।

फर्ज कीजिये मेरे कदम इसी मज़िल मे रुक गये होते और इल्म ओ नजर की जो राहें आगे चलकर ढूँढी गई उनकी लगन पैदा न हुई होती तो मेरा क्या हाल होता ? जाहिर है कि तालीम का इब्तदाई सरमाया मुझे एक जामिद[12] नाआश्नाये-हकीकत[13] दिमाग से ज्यादा और कुछ नही दे सकता था।

तालीम की जो रफ्तार आम तौर पर रहा करती है मेरा मआमला उससे मुख्तलिफ रहा। मुझे अच्छी तरह याद है कि सन् १६०० ई. मे जब मेरी उम्र बाहर तेरह बरस से ज्यादा न थी मैं फारसी की तालीम से फारिग और अरबी की मुबादियात[14] से गुजर चुका था और शहरे-मुल्ला और कुतबी वग़ैरह के दौर मे था। मेरे साथियों मे मेरे मरहूम भाई मुझ से उम्र मे दो बरस बड़े थे। बाकी और जितने थे उनकी उम्रें बीस इक्कीस बरस से कम न होंगी। वालिद मरहूम का तरीके-तालीम यह था कि हर इल्म मे पहले कोई एक मुख्तसर मतन[15] हिफ्ज कर लेना जरूरी समझते थे। फरमाते थे कि शाह वली अल्ला

---

१. पुरातन दर्शनशास्त्र का इतिहास २. जमाना ३. जुस्तजू ४. गणितशास्त्र, ५. शिक्षा क्रम ६. आखिरी जमाना ७. वृद्धि ८. अय ऊँची आवाज करनेवाले ढोल, तेरे भीतर कुछ नही है। ६. विज्ञान की किताबें १०. सशोधन ११. कोशिश, प्रयत्न १२. जड़ १३. सत्य से अपरिचित १४. प्रारंभिक ज्ञान १५. मूल पाठ।

रहमतुल्ला अलैह के खानदान का तरीके-तालीम ऐसा ही था। चुनाचे उस ज़माने मे मैंने फ़िकह[1] अकबर, तहजीब, खुलासा केदानी वगैरहा बरजबान हिफ़्ज़ कर ली थी और अपने बरवक्त इस्तहज़ार[2] और इक्तबासात[3] से न सिर्फ तालिब-इल्मों को बल्कि मौलवियो को भी हैरान कर दिया करता था। वो मुझे ग्यारह बारह बरस का लड़का समझ कर बहुत उड़ते तो मीजान[4] ओ मुनशअब के सवालात करते। मैं उनको मंतिक[5] के क़ज़ियों[6] और उसूल की तारीफ़ो मे ले जाकर हक्का-बक्का कर देता। इस तरीके के फ़ायदे मे कलाम नही। आज तक उन मतून[7] का एक-एक लफ़्ज़ हाफ़िज़े मे महफूज है। खुलासा केदानी की लोह[8] का शेर तक भूला नही। किसी अफ़गानी मुल्ला ने के दानी और केदानी की तुकबंदी की थी :

तू तरीक़े-सलात के दानी
गर न ख्वानी खुलासये-केदानी[9]

किताबो की दर्सी तहसील की मुद्दत भी आम रफ़्तार से बहुत कम रहा करती थी। असातजा मेरी तेज़ रफ्तारियों से पहले झुँझलाते, फिर परेशान होते फिर महरबान होकर जुरअत-अफजाई[10] करने लगते। जब किसी किताब का नया दौर शुरू होता तो बाहर के चंद तुलबा[11] भी शरीक हो जाते। लेकिन अभी चंद दिन भी गुजरने न पाते कि मेरा सबक दूसरो से अलग हो जाता। क्योंकि वो मेरी रफ्तार का साथ नही दे सकते थे। मेरे माकूलात के एक उस्ताद लोगो से कहा करते थे "ये छोटे हजरत मुझे आजकल सदरा सुनाया करते है और इस गलतफहमी मे मुब्तिला हैं कि मुझसे दर्स लेते हैं।"

सन् १६०३ ई. मे कि उम्र का पंद्रहवाँ साल शुरू हुआ था। मैं दर्से-निज़ामिया की तालीम से फ़ारिग हो चुका था और वालिद मरहूम की ईमा[12] से चंद मज़ीद[13] किताबें भी निकाल ली थी। चूंकि तालीम के बाब मे कदीम खयाल यह था कि जब तक पढा हुआ पढाया न जाये इस्तअदाद[14] पुख्ता नही होती। इसलिए फ़ातिहये-फिराग[15] की मजलिस ही मे तुलबा का एक हल्का मेरे सुपुर्द कर दिया गया और उनके मसारिफ़े-कयाम[16] के वालिद मरहूम कफ़ील[17] हो गये। मैंने तकमीले-फुनून[18] के लिये तिब[19] शुरू कर दी थो। खुद

१. फ़िकह अकबर मजहबी पुस्तक का नाम है २. प्रदर्शन, याद से हाज़िर करना ३. उद्धरण ४. अरबी व्याकरण की किताब ५. न्याय-शास्त्र ६. बहस ७. पाठों का ८. प्रथम पृष्ठ के सिरे का ९. तूने नमाज़ के तरीके को कब जाना, अगर केदानी का खुलासा नहीं पढा १०. हिम्मत बढ़ाते ११. तालिब का बहुवचन, शिक्षार्थी १२. संकेत, इशारा १३. विशेष १४. जान-कारी १५. अध्ययन से निवृत्ति १६. रहने-सहने के खर्च के १७. पालक १८. विद्या की पूर्णता १९. अरबी मे वैद्यक शास्त्र को तिब कहते हैं।

क़ानून पढता था और तुलबा को मुतव्वल[१], मीरज़ाहिद और हिदाया वग़ैरह का दर्स देता था।

मुझे अच्छी तरह याद है कि अभी पंद्रह बरस से ज्यादा उम्र नही हुई थी कि तबीयत का सुकून[२] हिलना शुरू हो गया था। और शक और शुबहा के कॉटे दिल मे चुभने लगे थे। ऐसा महसूस होता था कि जो आवाज़े चारों तरफ़ सुनाई दे रही है, उनके अलावा भी कुछ और होना चाहिये। और इल्म ओ हकीकत की दुनिया सिर्फ इतनी ही नही है जितनी सामने आ खडी हुई है। यह चुभन उम्र के साथ-साथ बराबर बढती गई। यहॉ तक कि चंद बरसो के अंदर अक़ायद ओ अफकार की वो तमाम बुनियादे जो ख़ानदान, तालीम और गिर्द ओ पेश ने चुनी थीं बयक दफ़ा[३] मुतज़लज़ल[४] हो गई। और फिर वो वक्त आया कि इस हिलती हुई दीवार को खुद अपने हाथो ढाकर उसकी जगह नई दीवारे चुननी पडी :

हेच गह ज़ौक़े-तलब अज़ जुस्तजू बाज़म न दाश्त
दाना मीचीदम दरां रोज़े कि ख़िरमन दाश्तम।[५]

इंसान की दिमाग़ी तरक़्क़ी की राह मे सबसे बड़ी रोक उसके तक़लीदी अक़ायद[६] हैं। उसे कोई ताकत इस तरह जकड़बंद नही कर दे सकती जिस तरह तकलीदी अक़ायद की ज़ंजीरें कर दिया करती है। वो इन ज़जीरों को तोड़ नही सकता। इसलिये कि तोड़ना चाहता ही नही, वो उन्हें जेवर की तरह महबूब रखता है। हर अक़ीदा, हर अमल, हर नुक़्तये-निगाह जो उसे ख़ानदानी रिवायात और इब्तदाई तालीम ओ सोहबत के हाथों मिल गया है उसके लिये एक मुकद्दस[७] विरसा है। वो उस विरसे की हिफ़ाज़त करेगा मगर उसे छूने की जुरअत नही करेगा। बसा[८] औकात मौरूसी अक़ायद की पकड़ इतनी सख्त होती है कि तालीम और गिर्द ओ पेश का असर भी उसे ढीला नही कर सकता। तालीम दिमाग़ पर एक नया रंग चढा देगी लेकिन उसकी बनावट के अंदर नहीं उतरेगी। बनावट के अंदर हमेशा नस्ल, ख़ानदान और सदियो की मुतवारिस[९] रिवायात ही का हाथ काम करता रहेगा।

मेरी तालीम खानदान के मौरूसी अकायद के खिलाफ़ न थी कि इस राह से

---

१. पुस्तक का नाम है जो इल्मे-मानी से संबंध रखती है २ शांति ३. एक ही बार मे ४. हिल गई ५. मेरी तलब की चाह ने किसी भी जगह को ढूंढ़ने से मुझे बाज़ नही रखा। मेरे पास एक खलिहान मौजूद था लेकिन मै उसी दिन से अपना दाना चुनने लगा। ६. धार्मिक बातों का अनुकरण ७. पवित्र ८. बहुत बार ९. उत्तराधिकार में प्राप्त।

कोई कशमकश पैदा होती। वो सरतासर उसी रंग में डूबी हुई थी, जो मुग्रस्सि-राते-नस्ल ग्रौर खानदान ने मुहय्या कर दिये थे। तालीम ने उन्हे ग्रौर ज़्यादा तेज़ करना चाहा ग्रौर गिर्द ग्रो पेश ने उन्हें ग्रौर ज़्यादा सहारे दिये। ताहम क्या बात है कि शक का सबसे पहला काँटा जो खुद बखुद दिल मे चुभा वो इसी तकलीद के ख़िलाफ था? मैं नही जानता था कि क्यों, मगर बार-बार यही सवाल सामने उभरने लगा था कि ऐतक़ाद की बुनियाद इल्म ग्रो नज़र पर होनी चाहिये, तकलीद ग्रौर तवारुस[1] पर क्यो हो? यह गोया दीवार की बुनियादी ईटो का हिल जाना था। क्योंकि मौरूसी ग्रौर रिवायती ग्रकायद की पूरी दीवार सिर्फ तकलीद ही की बुनियादों पर उस्तवार[2] होती है। जब बुनियाद हिल गई तो दीवार कब खडी रह सकती थी? कुछ दिनों तक तबीयत की दर-मादगियाँ[3] सहारे देती रही। लेकिन बहुत जल्द मालूम हो गया कि ग्रब कोई सहारा भी इस गिरती हुई दीवार को सँभाल नही सकता :

ग्रज़ां कि पैरवीये-ख़ल्क़ गुमरही ग्रारद
नमीरवेम बराहे कि कारवां रफ़्त स्त ![4]

शक की यही चुभन थी जो तमाम ग्राने वाले यकीनों के लिये दलीले-राह बनी। बिला शुबहा इसने पिछले सरमायो से तही दस्त कर दिया था, मगर नये सरमायो के हुसूल की लगन भी लगा दी थी ग्रौर बिल ग्राखिर इसी की रहनुमाई[5] थी जिसने यकीन ग्रौर तमानियत[6] की मंज़िले-मकसूद तक पहुँचा दिया। गोया जिस इल्लत ने बीमार किया था, वही बिल ग्राखिर दारूये-शिफा[7] भी साबित हुई :

दर्दहा दादी ग्रो दरमानी हिनोज़ ![8]

हरचंद सुराग लगाना चाहता हूँ कि यह काँटा कहाँ से उड़ा था कि तीर की तरह दिल में तराज़ू हो गया। मगर कोई पता नहीं लगता, कोई तालील[9] काम नही देती :

च मस्ती स्त न दानम के रू ब मा ग्रावुर्द
कें बूद साक़ी ग्रो ईं बादा ग्रज़ कुजा ग्रावुर्द।[10]

---

१. उत्तराधिकार २. खड़ी होती है, मज़बूत होती है ३. परेशानिया, उदासीनता ४. इसलिये कि लोगों की पैरवी करने से ग्राखिर गुमराही होती है मैं उस राह से नही जाता जिससे कि कारवां गुजर गया है ५. पथप्रदर्शन ६. इत्मीनान, संतोष ७. स्वास्थ्यप्रद ग्रौषधि ८. तुमने दर्द दिये है तुम्हीं मेरी दवा भी हो ९. दलील, सबूत १०. यह कैसी मस्ती मुझे हासिल हुई है। साकी कौन था ग्रौर यह शराब कहाँ से लाया।

बिला शुबहा आगे चलकर कई हालात ऐसे पेश आये जिन्होंने इस काँटे की चुभन और ज्यादा गहरी कर दी, लेकिन उस वक़्त तक तो किसी खारजी[1] मुहर्रिक[2] की परछाई भी नही पडी थी। और होश ओ आगही की उम्र ही न थी कि बाहर के मुअस्सिरात के लिये दिल ओ दिमाग़ के दरवाज़े खुल सकते। यह तो वो हाल हुआ कि :

अतानी हवाहा क़ब्ल अन्न आरफ़ुल हवा
फ़सादफ़ क़ल्बन फ़ारिग़न फ़तमक्क ना !*

यही जमाना है जब पीरजादगी और नस्ली बुजुर्गी की ज़िंदगी भी मुझे खुदबखुद चुभने लगी और मौतकिदो और मुरीदों की परस्तारियो[3] से तबीयत को एक गूना[4] तवह्हुश[5] होने लगा। मैं इसकी कोई खास वजह उस वक़्त महसूस नही करता था मगर तबीयत का एक कुदरती तकाज़ा था जो इन बातों के खिलाफ ले जा रहा था।

बूये-आं दूद कि इमसाल ब हमसाया रसीद
ज़ आतिशे बूद कि दर खानये-मन पार गिरफ़्त[6]

सवाल यह है कि तमाम हालात और मुअस्सिरात के खिलाफ़ तबीयत की यह उफ़्ताद[7] क्यो कर बनी और कहाँ से आई। खानदान अकायद ओ अफ़कार का जो साँचा ढालना चाहता था, न ढाल सका। तालीम जिस तरफ ले जाना चाहती थी न ले जा सकी; हल्कये-सोहबत ओ असरात का जो तकाजा था, पूरा न हुआ। इस आलमे-असबाब[8] में हर हालत का दामन किसी न किसी इल्लत[9] से बँधा होता है, आखिर इस रिश्ते का भी तो कोई सिरा मिलना चाहिये ? वाकया यह है कि नहीं मिलता। मुमकिन है, यह मेरी नजर की कोताही[10] हो और कोई दूसरी दकीका संज[11] निगाह हालात का मुताला करे तो कोई न कोई मुहर्रिक[12] ढूंढ निकाले। मगर मुझे तो थक कर दूसरी ही तरफ देखना पड़ा :

कारे-ज़ुल्फ़े-तुस्त मुश्क अफ़सानी, अमा आशिक़ां
मसलहत रा तोहमते बर आहुये-चीं बस्ता अंद ![13]

---

१. बाहिरी २. प्रेरणा ३. उपासना ४. तरह की ५. घबराहट, घृणा। *अरबी का शेर पहले आ चुका है ६. उस धूये की गंध जो कि इस साल मेरे पड़ौसी के यहाँ पहुँची उस आग से थी जो कि पार साल मेरे घर मे लगी थी ७. रुझान ८. कार्यकारण की दुनिया ९. कारण १०. तंगनजरी, तंगी ११. सूक्ष्म दृष्टि १२. कारण १३. तेरी जुल्फों का काम सुगन्ध फैलाना है लेकिन आशिकों ने इस खूबी की तोहमत चीन के हिरणों पर लगाई है।

जिस नामुरादे-हस्ती[1] को चौदह बरस की उम्र में जमाने की आगोश[2] से इस तरह छीन लिया गया हो, वो अगर कुछ अर्से के लिये शाहराहे-आम[3] से गुम होकर आवारये-दश्ते-वहशत[4] न होती तो और क्या होता ? एक अर्से तक तरह-तरह की सरगरदानियों[5] मे निशाने-राह[6] गुम रहा। न मकसद की खबर मिल सकी न मंजिल की :

सगे-आस्तानम, अम्मा हमा शब क़िलादा खायम
कि सरे-शिकार दारम न हवाये-पासबानी
अजब स्त गर न बाशद खिज्र ब जुस्तजूयम
कि फ़तादाअम ब जुल्मत चु जुलाले-जिंदगानी[7]

लेकिन जिस हाथ ने जमाने की आगोश से खीचा था, बिल आखिर उसी ने दश्त निर्वदियों[8] की तमाम बेराहरवियों[9] मे रहनुमाई भी की। और अगरचे कदम कदम पर ठोकरों से दो चार[10] होना पडा और चप्पा चप्पा पर रुकावटों से उलझना पडा, मगर तलब हमेशा आगे ही की तरफ़ बढाये ले गई और जुस्तजू ने कभी गवारा नही किया कि दरमियानी मज़िलों में रुक कर दम ले ले। बिल आखिर दम लिया तो उस वक्त लिया जब मजिले-मकसूद सामने जलवागर[11] थी और उसकी गर्दे-राह मे चश्मे-तमन्नाई रोशन हो रही थी।

ब वस्लश ता रसम सद बार बर खाक अफ़गनद शौक़म
कि नौ परवाजम ओ शाखे-बुलंदे आशियां दारम[12]

चौबीस बरस की उम्र मे जब कि लोग इशरते-शबाब[13] की सरमस्तियों का सफर शुरू करते है, मै अपनी दश्त-निर्वदियाँ[14] खत्म करके तलवो के काँटे चुन रहा था :

---

१. अभागा २. गोद ३. राजमार्ग ४. पागलपन के जगल का आवारा ५. उद्विग्नता ६. पथ चिन्ह ७. तेरी ड्योढी का कुत्ता हूँ लेकिन सारी रात गलपट्टा चबाता रहता हूँ कि दिल मे शिकार की हविस रखता हूँ न कि पहरेदारी की। यह ताज्जुब की बात है अगर खिज्र मेरी जुस्तजू मे न हो कि मैं इस अंधेरे में जीवनामृत की तरह पडा हुआ हूँ। ८. जगल मे भटकना ९. कठिन मार्ग १०. दो चार होना याने सामना होना ११. प्रत्यक्ष, प्रकाशमान १२. उसके मिलन की स्थिति तक जब तक पहुँचूं तब तक मेरी चाह मुझे सौ बार धरती पर पटकती है क्योकि मैं अभी नौसिखिया उड़ने वाला हूँ और बहुत ऊँची शाख़ पर मेरा घोंसला है १३. जवानी की खुशियाँ १४. जंगल का भटकना।

दर बयाबां गर ब शौक़े-काबा ख्वाही ज़द क़दम
सर ज़निशहा गर कुनद ख़ारे-मुगीलां, ग़म मखोर ![1]

गोया इस मामले मे भी अपनी चाल ज़माने से उल्टी ही रही। लोग ज़िंदगी के जिस मरहले मे कमर बाँधते है, मैं खोल रहा था .

काम थे इश्क़ में बहुत, पर 'मीर'
हम तो फ़ारिग़ हुये शिताबी से

उम वक्त से लेकर आज तक कि कारवाने-बाद रफ्तारे-उम्र[2] मज़िले-खमसीन[3] से भी गुज़र चुका, फिक्र ओ अमल के बहुत से मैदान नमूदार हुये और अपनी राह पैमाइयों[4] के नुकूश[5] जा बजा बनाने पड़े। वक्त या तो उन्हे मिटा देगा जैसा कि हमेशा मिटाता रहा है या महफ़ूज रखेगा जैसा कि हमेशा महफूज़ रखता आया है :

आईनये-नक़्श बंद तिलिस्मे-ख़याल नेस्त
तसवीरे-ख़ुद ब लोहे-दिगर मीकशेम मा ![6]

यहाॅ ज़िंदगी बसर करने के दो ही तरीके थे जिन्हें अबू तालिब कलीम ने दो मिसरों मे बना दिया है .

तबअ़े बहम रसां कि बसाज़ी ब आलमे
या हिम्मते कि अज़ सरे-आलम तवां गुज़श्त ![7]

पहला तरीका इख्तियार नही कर सकता था क्योंकि उसकी तबीयत ही नही लाया था, नाचार दूसरा इख्तियार करना पडा :

कार मुश्किल बूद, मा बर खेश आसां कर्दाअेम !

जो नामुराद यह दूसरा तरीका इख्तियार करते है, वो न तो राह की मुश्किलो और रुकावटो से नाआश्ना[8] होते है, न अपनी नातवानियों[9] और दरमादगियों[10] से बेखबर होते है। ताहम वो कदम उठा देते हैं। क्योकि कदम उठाये बगैर रह नही सकते। ज़माना अपनी सारी नामुवाफ़िकतो[11] और बेइम्तियाज़ियो[12] के साथ बार-बार उनके सामने आता है, और तबीयत की ख़िल्की[13] दरमादगियाँ

---

१. काबे की जुस्तजू में अगर जंगल मे कदम रखना पडे और अगर बबूल के काँटे चुभे तो भी गम मत कर। २. उम्र का हवा की रफ़्तार का कारवां ३. पचास साल की उम्र ४. राह चलने ५. नक़्श का बहुवचन ६. पहले आ चुका है ७. ऐसी प्रकृति या मनोवृत्ति पैदा कर कि दुनिया के साथ साज़बाज के साथ रह सके। या ऐसी हिम्मत पैदा कर कि दुनिया से अलग हो सके ८. अपरिचित ९. दुर्बलता १०. बेकसी ११. प्रतिकूलता १२. विभेद १३. स्वाभाविक।

क़दम-कदम पर दामने-अज़्म[1] ओ हिम्मत से उलझना चाहती है — ताहम उनका सफर जारी रहता है। वो जमाने के पीछे नही चल सकते, लेकिन ज़माने के ऊपर से गुजर जा सकते हैं और बिलआखिर बेनियाजाना[2] गुजर जाते है :

वक़्ते-अरफ़ी खुश, कि न कशूदंद गर दर बर रुखश
बर दरे नकशूदा साकिन शुद, दरे-दीगर न जद![3]

अब सुबहे-ईद ने अपने चेहरे से सुबहे-सादिक[4] का हल्का नकाब भी उलट दिया है और बेहिजाबाना[5] मुस्कुरा रही है :

इक निगारे-आतिशीं रुख, सर खुला![6]

मैं अब आपको और ज्यादा अपनी तरफ मुतवज्जा रखने की कोशिश नही करूँगा क्योकि सुबहे-ईद की इस जलवा नुमाई[7] का आपको जवाब देना है। कई साल हुये एक मकतूबे-गरामी[8] में शबहाये रमजान की "अंबरीं चाय" का जिक्र आया था। बेमहल[9] न होगा अगर उसके जुरआहाये[10] पैहम[11] से कबले-सलाते[12] ईद इफ्तार[13] कीजिये कि ईद उल फित्र मे ताजील[14] मसनून[15] हुई और ईद उल अज़हा मे ताखीर[16] :

ईद अस्त, ओ निशात ओ तरब ओ जमजमा आम स्त
मय नोश, गुनह बर मन अगर बादा हराम स्त!
अज़ रोज़ा अगर कोफ़्ताई, बादा रवा गीर
ईं मसअला हल गश्त ज साकी कि इमाम स्त![17]

अबुलकलाम

---

१. दृढता और हिम्मत का पल्लू २. बेपरवाही के साथ ३. अरफी खुश है अगर उसके लिये दरवाजा न खोले, वह उसी बिन खुले दरवाज़े पर बैठ गया और किसी दूसरे दरवाजे पर दस्तक नही दी ४. प्रभात ५. बिना घूंघट के ६. एक ज्वलंत मुखड़ा सामने खुल गया ७. रूप प्रदर्शन ८. कृपापत्र ९. अनुचित १०. घूंटों से ११. अनवरत १२. ईद की नमाज से पहले १३. व्रत के तोडने को मुसलमानों मे इफ़्तार करना कहते है १४. जल्दी, शीघ्रता १५. रसूल के द्वारा की हुई बातें १६. देर १७. ईद है, और खुशी आनंद के तराने चारों तरफ है। शराब पी, अगर शराब हराम हो तो इसका गुनाह मुझ पर है। अगर तू रोजे या व्रत के कष्टों से पीड़ित है तो शराब पी। यह समस्या साक़ी ने हल कर दी है जो कि इमाम है।

क़िलअ़-ए-अहमदनगर
१७, अक्तूबर सन् १६४२

अज़ बहरे च गोयम "हस्त" अज़ ख़ुद खबरम चुं नेस्त
वज़ बहरे च गोयम "नेस्त" बा ऊ नज़रे चुं हस्त ![1]

सदीके-मुकर्रम

सुबह के साढ़े तीन बजे है। इस वक्त लिखने के लिये कलम उठाया तो मालूम हुआ स्याही खत्म हो रही है। साथ ही ख्याल आया कि स्याही की शीशी खाली हो चुकी थी। नई शीशी मँगवानी थी मगर मँगवाना भूल गया। मैंने सोचा थोड़ा सा पानी क्यो न डाल दूँ? यकायक चायदानी पर नज़र पडी। मैंने थीडी सी चाय फिंजान मे उँडेली और कलम का मुँह उसमें डुबोकर पिचकारी चला दी। फिर उसे अच्छी तरह हिला दिया कि रोशनाई की धोवन पूरी तरह निकल आये। और अब देखिये रोशनाई की जगह चाय के तुद ओ गर्म अर्क से अपने नफसहाये-सर्द[2] सफहये-किरतास[3] पर नक्श कर रहा हूँ.

मीकशद शोला सरे अज़ दिले-सद पारये-मा
जोशे-आतिश बुवद इमरोज़ ब फ़व्वारये-मा ![4]

तबीयत अफसुर्दा होती है तो अल्फाज भी अफसुर्दा निकलते है। मैं तबीयत की अफसुर्दगियो का चाय के गर्म जामो से इलाज किया करता हूँ। आज कलम को भी एक घूँट पिला दिया :

ईं कि दर जाम ओ सुबू दारम मुहय्या आतिश स्त[5]

आप इस तरीक़े-कार पर मुतअज्जिब[6] न हो। आज से साढे तीन सौ बरस पहले फैज़ी को भी यही तरीका काम में लाना पड़ा था : नल-दमन में उसने हमे खबर दी है :

ता ताज़ा ओ तर जनम रक़म रा
दर बादा कशीदाअम क़लम रा[7]

---

१. किसलिये तो कहूँ कि 'है' जब खुद मुझे ही खबर नही है। और किसलिये यह कहूँ कि 'नही है' जब कि उसकी तरफ नजर है। २. ठंडी साँसें ३. कागज़ के सफ़े पर ४. मेरे सौ टुकड़े हुये दिल से शोले अपना सिर उठा रहे है, आज के दिन मेरे फव्वारे में आग का जोश है ५. जो कि मेरे प्याले और सुराही में है वह सब आग है ६. आश्चर्यचकित ७. ताकि अपनी लिखावट को ताज़ा और तर लिखूँ मैंने अपने क़लम को शराब मे डुबोया है।

आज भी जाम वही है जो रोज गर्दिश मे आता है लेकिन जाम मे जो कुछ उँडेल रहा हूँ उसकी कैफ़ियते कुछ बदली हुई पाइयेगा :

अज़ मये-दोशीं क़दरे तुंद तर ![1]

बारहा मुझे खयाल हुआ कि हम खुदा की हस्ती का इकरार करने पर इसलिये भी मजबूर है कि अगर न करें तो कारखानये-हस्ती के मुअम्मे[2] का कोई हल बाकी नही रहता। और हमारे अंदर एक हल की तलब है जो हमें मुज्तरिब[3] रखती है :

आं कि ईं नामये सर बस्ता नविश्ता स्त नखुस्त
गिरहे-सख्त ब सरे-रिश्तये-मज़मून ज़दा स्त ![4]

अगर एक उलझा हुआ मामला हमारे सामने आता है और हमे उसके हल की जुस्तजू होती है तो हम क्या करते है ? हमारे अंदर बित्तबा[5] यह बात मौजूद है और मंतिक[6] और रियाजी[7] ने उसे राह पर लगाया है कि हम उलझाव पर गौर करेगे। हर उलझाव एक खास तरह के तकाजे का जवाब चाहता है। हम कोशिश करेगे कि एक के बाद एक तरह तरह के हल सामने लाये और देखे इस तकाज़े का जवाब मिलना है या नही ? फिर जूही एक हल ऐसा निकल आयेगा जो उलझाव के सारे तकाजो का जवाब दे देगा और मामले की सारी कले ठीक ठीक बैठ जायेगी। हमे पूरा यकीन हो जायेगा कि उलझाव का सही हल निकल आया। और सूरते-हाल की यह अदरूनी शहादत[8] हमे इस दर्जे मुतमयिन[9] कर देगी कि फिर किसी बैरूनी[10] शहादत की एहतियाज[11] बाकी नही रहेगी। अब कोई हजार शुबहे निकाले यकीन मुतजलज़ल[12] होने वाला नहीं।

फर्ज़ कीजिये कपडे के एक थान का एक टुकड़ा किसी ने फाड़ लिया हो और टुकड़ा फटा हो इस तरह टेढ़ा तिरछा ददानेदार होकर कि जब तक वैसे ही उलझाव का एक टुकडा वहाँ आकर बैठता नही, थान की खाली जगह भरती नही। अब उसी कपडे के बहुत से टुकडे हमे मिल जाते है और हर टुकड़ा वहाँ बिठाकर हम देखते है कि उस खला[13] की नौइयत का तक़ाज़ा पूरा होता है या नही। मगर कोई टुकडा ठीक बैठता नही। अगर एक गोशा[14] मेल खाता है तो दूसरे गोशे बढने से इंकार कर देते है। अचानक एक टुकड़ा ऐसा निकल आता

---

१. कल रात की शराब से कुछ तेज़ तर २. पहेली ३. बेचैन ४. जिसने कि यह बंद चिट्ठी प्रारंभ में लिखी है उसने विषय के सूत्र मे एक सख्त गाँठ डाल दी है ५. स्वभावतः ६. न्याय ७. गणितशास्त्र ८. गवाही, साक्षी ९. निश्चिंत, संतुष्ट १०. बाहिरी ११. जरूरत १२. हिलने वाला १३. खाली जगह १४. कोना।

है कि टेढे तिरछे कटाव के सारे तक़ाज़े पूरे कर देता है और साफ़ नज़र आ जाता है कि सिर्फ़ इसी टुकड़े से यह खला भरा जा सकता है। अब अगरचे इसकी ताईद[1] में कोई ख़ारजी[2] शहादत मौजूद न हो लेकिन हमे पूरा यकीन हो जायेगा कि यही टुकड़ा यहाँ से फाड़ा गया था और इस दर्जे का यकीन हो जायेगा कि— **लव कुशिफ़ल गिताश्रु लम इज़दादद यक़ीनन**[3]

इस मिसाल से एक कदम और आगे बढाइये और गोरखधंदे की मिसाल सामने लाइये। बेशुमार तरीको से हम उसे मुरत्तब[4] करना चाहते है मगर होता नही। बिल आखिर एक ख़ास तरतीब[5] ऐसी निकल आती है कि उसके हर जुज़[6] का तकाजा पूरा हो जाता है और उसकी चूल ठीक ठीक बैठ जाती है। अब गो कोई ख़ारजी दलील इस तरतीब की सिहत[7] की मौजूद न हो लेकिन यह बात कि सिर्फ इसी एक तरतीब से उसका उलझाव दूर हो सकता है बजाये खुद[8] ऐसी फ़ैसलाकुन[9] दलील बन जायेगी कि फिर हमे किसी और दलील की एहतियाज बाकी ही नही रहेगी। उलझाव का दूर हो जाना और एक नक़्श का नक़्श बन जाना बजाये खुद हज़ारो दलीलो की एक दलील है !

अब इल्म ओ तयक़्क़ुन[10] की राह मे एक कदम और आगे बढ़ाइये और एक तीसरी मिसाल सामने लाइये। आपने हर्फों की तरतीब से खुलने वाले क़ुफ़्ल[11] देखे होंगे। इन्हें पहले कुफ़्ले-अबजद के नाम से पुकारते थे। एक ख़ास लफ़्ज के बनने से वो खुलता है और वो हमे मालूम नही। अब हम तरह तरह के अल्फ़ाज़ बनाते जायेगे और देखेंगे कि खुलता है या नही ? फ़र्ज़ कीजिये एक ख़ास लफ्ज़ के बनते ही खुल गया। अब क्या हमें इस बात का यकीन नही हो जायेगा कि इसी लफ्ज़ में उस कुफ्ल की कुंजी पोशीदा थी ? जुस्तजू जिस हल की थी वो कुफ्ल का खुलना था। जब एक लफ्ज़ ने कुफ्ल खोल दिया तो फिर इसके बाद बाकी क्या रहा जिसकी मजीद[12] जुस्तजू हो !

इन मिसालों को सामने रख कर इस तिलिस्मे-हस्ती के मुअम्मे पर गौर कीजिये जो खुद हमारे अदर और हमारे चारो तरफ़ फैला हुआ है। इंसान ने जब से होश ओ आगही की आँखे खोली हैं इस मुअम्मे का हल ढूँढ रहा है। लेकिन इस पुरानी किताब का पहला और आख़िरी वरक कुछ इस तरह खोया गया

---

१. पुष्टि २. बाहिरी ३. अगर पर्दा उठाया जाये तो भी मेरा विश्वास ज्यादा नही होगा। ४. व्यवस्थित ५. व्यवस्था ६. अंश ७. दुरुस्ती ८. स्वयं ९. अंतिम निर्णयकारी १०. ज्ञान और विश्वास ११. ताला १२. विशेष।

है कि न तो यही मालूम होता है कि शुरू कैसे हुई थी, न इसी का कुछ सुराग मिलता है कि खत्म कहाँ जाकर हुई और क्यो कर होगी ?

अव्वल ओ आखिरे ईं कुहना किताब उफ़्ताद स्त ![1]

जिदगी और हरकत का यह कारखाना क्या है और क्यो है ? इसकी कोई इब्तदा भी है या नही ? यह कही जाकर खत्म भी होगा या नही ? खुद इंसान क्या है ? यह जो हम सोच रहे हैं कि "इसान क्या है ?" तो खुद यह सोच और समझ क्या चीज है ? और फिर हैरत और दरमादगी[2] के इन तमाम पर्दों के पीछे कुछ है भी या नही ?

मुर्दम दर इंतज़ार ओ दरीं पर्दा राह नेस्त
या हस्त ओ पर्दादार निशानम न मीदिहद ![3]

उस वक्त से लेकर जब कि इब्तदाई अहद[4] का इंसान पहाडों के गारों[5] से सर निकाल निकाल कर सूरज को तुलूअ[6] ओ गुरूब[7] होते देखता था, आज तक जब कि वो इल्म की तजुर्बागाहों[8] से सर निकाल कर फ़ितरत[9] के बेशुमार चेहरे बेनकाब देख रहा है इंसान के फ़िक्र ओ अमल की हज़ारों बाते बदल गई मगर यह मुअम्मा मुअम्मा ही रहा :—

असरारे-अज़ल रा न तू दानी ओ न मन
वीं हर्फ़े-मुअम्मा न तू ख्वानी ओ न मन
हस्त अज़ पसे-पर्दा गुफ़्तगूये-मन ओ तू
चूँ पर्दा बर उफ़्तद, न तू मानी ओ न मन ।[10]

हम इस उलझाव को नये नये हल निकाल कर सुलझाने की जितनी कोशिशे करते है वो और ज्यादा उलझता जाता है एक पर्दा सामने दिखाई देता है उसे हटाने मे नस्लो की नस्ले गुज़ार देते हैं । लेकिन जब वो हटता है तो मालूम होता है सौ पर्दे और उसके पीछे पडे थे । और जो पर्दा हटा था वो फिल हकीकत पर्दे का हटना न था बल्कि नये नये पर्दो का निकल आना था । एक सवाल का जवाब अभी मिल नही चुकता कि दस नये सवाल सामने

---

१. इस पुरानी किताब का पहला और आखिरी पृष्ठ गिर पडा है । २. परेशानी ३ मैं इतज़ार मे मर गया और इस पर्दे में कोई राह नही है । या है और पर्दादार उसका संकेत नही देता ४. ज़माना ५. गुफा ६. उगना ७. छिपाना ८. प्रयोगशाला ९. प्रकृति १०. सृष्टि के प्रारम्भ होने के आदि रहस्य को न तो तू जानता है और न मैं जानता हूँ, और इस पहेली के अक्षरो को न तो तूने पढ़ा है और न मैंने, एक पर्दे के पीछे से मेरी और तुम्हारी बातचीत हो रही है और जब पर्दा ऊपर उठ गया तो न मैं रहा न तू ।

आ खडे होते है, एक राज अभी हल नहीं हो चुकता कि सौ नये राज चश्मक[1] करने लगते है।

दरीं मैदाने-पुरनेरंग हैरान स्त दानाई
कि यक हंगामा आराई व सद किश्वर तमाशाई ![2]

आइंस्टाइन ने अपनी एक किताब मे साइंस की जुस्तजूये-हकीकत की सरगर्मियों को शरलाक होम्ज़ की सुरागरसानियों से तशबीह[3] दी है। और इसमे शक नही कि निहायत मानीखेज[4] तशबीह दी है। इल्म[5] की यह सुराग रसानी[6] फितरत की गैर मालूम गहराइयो का खोज लगाना चाहती थी, मगर कदम क़दम पर नये नये मरहलों[7] और नई नई दुश्वारियो से दो चार[8] होती रही। ज़ीमोक्रासीस (Democritus) के जमाने से लेकर जिसने चार सौ बरस कबल[9] मसीह माद्दे[10] के सालिमात (Atoms) की नक्शआराई[11] की थी आज तक जबकि नजरियये-मकादीरे-असरी (Quantum Theory) की रहनुमाई मे हम सालिमात का अज सरे नौ तआकुब[12] कर रहे है। इल्म की सारी कद्द ओ काविश[13] का नतीजा इसके सिवा कुछ न निकला कि पिछली गुत्थियाँ सुलझती गई नई नई, गुत्थियाँ पैदा होती गई। इस ढाई हज़ार बरस की मुसाफिरत मे हमने बहुत सी नई मजिलो का सुराग[14] पा लिया जो अस्नाये-सफर[15] मे नमूदार[16] होती रही। लेकिन हकीकत की वो आखिरी मंज़िले-मक्सूद जिसके सुराग मे इल्म का मुसाफिर निकला था, आज भी उसी तरह गैर मालूम है जिस तरह ढाई हजार बरस पहले थी। हम जिस कदर इससे करीब होना चाहते है उतना ही वो दूर होती जाती है :

बा मन आवेजिशे-ऊ उल्फ़ते-मौज स्त ओ कनार[17]
दम बदम बा मन ओ हर लहज़ा गुरेज़ां अज़ मन !

दूसरी तरफ हम महसूस करते है कि हमारे अन्दर एक न बुझने वाली प्यास खौल रही है जो इस मुअम्मये-हस्ती का कोई हल चाहती है। हम कितना ही उसे दबाना चाहे मगर उसकी तपिश लबो पर आ ही जायेगी। हम

---

१. इशारे, आँख के सकेत २. इस जादू भरे मैदान याने दुनिया मे अक़्ल हैरान है कि एक धूमधाम है और सौ मुल्क तमाशा देख रहे है। ३. उपमा ४. अर्थ पूर्ण ५. ज्ञान ६. अन्वेषण ७. समस्या ८. आमना सामना होने को दो चार होना भी कहते है ९. पूर्व १०. Matter ११. गठन, चित्रण १२. पीछा १३. प्रयत्न और खोज १४. पता सधान १५. सफर के बीच १६. प्रगट १७. मेरा और उसका संबंध ऐसा है जैसा कि लहर और किनारे का मेल है। हर क्षण वह मेरे साथ भी है और दूर भी।

बगैर हल के सुकूने-कल्ब[1] नही पा सकते। बसा औकात[2] हम इस धोके में पड़ जाते है कि किसी तशफ्फीबख्श[3] हल की हमे जरूरत नही। लेकिन यह महज़ एक बनावटी तखय्युल होता है और जू ही जिंदगी के कुदरती तकाज़ों से टकराता है पाश पाश[4] होकर रह जाता है।

योरप और अमरीका के मुफक्किरों[5] के ताज़ातरीन मआसिर[6] का मुताला[7] कीजिये और देखिये मौजूदा जग ने उन तमाम दिमागो मे जो कल तक अपने आपको मुतमयिन तसव्वुर करने की कोशिश करते थे कैसा तहलका मचा रखा है? अभी चंद दिनो की बात है कि प्रोफेसर जोद (Joud) का एक मकाला[8] मेरी नज़र से गुजरा था। वो लिखता है कि उन तमाम फ़ैसलो पर जो हमने मज़हब और खुदा की हस्ती के बारे मे किये थे अब अज़ सरे-नौ गौर करना चाहिये। यह प्रोफेसर जोद का बाद अज़ जंग का ऐलान है। लेकिन प्रोफेसर जोद के कबल अज़ जग के ऐलानात किस दर्जे इससे मुख्तलिफ थे? बरट्रंड रसल (Bertrand Russell) ने भी गुज़श्ता साल एक मुतव्वल[9] मकाले मे जो बाज अमरीकी रसायल[10] मे शाया हुआ ऐसी ही राय जाहिर की थी।

मगर जिस वक्त यह मुअम्मा इंसानी दिमाग के सामने नया नया उभरा था, उसी वक्त उसका हल भी उभर आया था। हम उस हल की जगह दूसरा हल ढूँढना चाहते है और यही से हमारी तमाम बेहासिलियाँ[11] सर उठाना शुरू कर देती है।

अच्छा अब गौर कीजिये इस मुअम्मे के हल की काविश[12] बिल आखिर हमे कहाँ ले जाकर खड़ा कर देती है? यह पूरा कारखानये-हस्ती अपने हर गोशे और अपनी हर नमूद मे सरता सर[13] एक सवाल है। सूरज से लेकर उसकी रोशनी के जर्रो तक कोई नही जो यककलम पुरसिश[14] ओ तकाजा न हो। "यह सब कुछ क्या है?" "यह सब कुछ क्यों है?" "यह सब कुछ किसलिये है?" हम अक्ल का सहारा लेते है, और उस रोशनी मे जिसे हमने इल्म के नाम से पुकारा है जहाँ तक राह मिलती है चलते चले जाते है। लेकिन हमें कोई हल मिलता नही जो इस उलझाव के तकाजो की प्यास बुझा सके। रोशनी गुल हो जाती है। आँखे पथरा जाती है। और अक्ल ओ इदराक[15] के सारे सहारे जवाब दे देते है। लेकिन फिर जू ही हम पुराने हल की तरफ़ लौटते है और अपनी मालूमात मे सिर्फ इतनी बात बढा देते है कि "एक साहबे-इदराक ओ इरादा

---

१. दिल की शांति २. बहुत बार ३. सात्वना देने वाला ४. टुकड़े टुकड़े ५. विचारक ६. अन्वेषण ७. अध्ययन ८. वक्तव्य ९. विस्तृत १०. रिसाले का बहुबचन, पुस्तक ११. नाकामयाबियाँ १२. खोज १३. शुरू से आखिर तक १४. सवाल १५. बुद्धि।

क़ुव्वत[1] पसे-पर्दा मौजूद है" तो अचानक सूरते-हाल[2] यककलम मुन्क़लिब[3] हो जाती है और ऐसा मालूम होने लगता है जैसे अँधेरे से निकलकर यकायक उजाले में आ खडे हुये। अब जिस तरफ़ भी देखते है रोशनी ही रोशनी है। हर सवाल ने अपना जवाब पा लिया। हर तकाजे की तलब पूरी हो गई। हर प्यास को सैराबी[4] मिल गई। गोया यह सारा उलझाव एक कुफ्ल था जो इस कुजी के छूते ही खुल गया।

चंदा कि दस्त ओ पा ज़दम आशुफ़्तातर शुदम
साकिन शुदम, मयानये-दरिया कनार शुद ![5]

अगर एक ज़ी अक़्ल[6] इरादा पसे-पर्दा[7] मौजूद है तो यहां जो कुछ है किसी इरादे का नतीजा है और किसी मुअय्यन[8] और तैशुदा[9] मकसद[10] के लिये है। जूं ही यह हल सामने रखकर हम इस गोरखधंदे को तरतीब देते है मअन[11] इसकी हर कज पेच[12] निकल जाती है और सारी चूले अपनी अपनी जगह ठीक आकर बैठ जाती है। क्योंकि हर "क्या है ?" और "क्यो है ?" को एक मानीखेज़[13] जवाब मिल जाता है। गोया इस मुअम्मे के हल की सारी रूह इन चंद लफ़्जो के अंदर सिमटी हुई थी। जूं ही ये सामने आये मुअम्मा मुअम्मा न रहा एक मानीखेज़ दास्तान बन गया। फिर जूं ही ये अल्फ़ाज़ सामने से हटने लगते है तमाम मानी व इशारात गायब हो जाते है और एक खुनक[14] और बेजान चीस्तान[15] बाकी रह जाती है।

अगर जिस्म मे रूह बोलती है और लफ्ज़ मे मानी उभरता है तो हक़ायके-हस्ती[16] के अजसाम[17] भी अपने अदर कोई रूहे-मानी[18] रखते है। यह हकीकत कि मुअम्मये-हस्ती के बेजान और बेमानी जिस्म मे सिर्फ़ इसी एक हल से रूहे-मानी पैदा हो सकती है, हमें मजबूर कर देती है कि इस हल को हल तसलीम[19] कर ले।

अगर कोई इरादा और मकसद पर्दे के पीछे नही है तो यहाँ तारीकी[20] के सिवा और कुछ नही है। लेकिन अगर एक इरादा और मकसद काम कर रहा है तो फिर जो कुछ भी है रोशनी ही रोशनी है। हमारी फ़ितरत मे

---

१. बुद्धि और इरादा रखने वाली शक्ति २. परिस्थिति ३. परिवर्तित ४. तृप्ति ५. जितने भी मैंने हाथ पैर मारे और ज़्यादा परेशान हुआ लेकिन ज्यों ही निश्चल हुआ कि ऐन दरिया के बीच मे किनारा मिल गया। ६. ज्ञानवान ७. पर्दे के पीछे ८. निश्चित ९. सुनिश्चित १०. लक्ष्य ११. फ़ौरन १२. टेढा तिरछापन १३. अर्थपूर्ण १४. ठंडी १५. पहेली १६. सृष्टि की असलियत या तथ्य १७. जिस्म का बहुवचन, देह, कलेवर १८. अर्थ १९. स्वीकार २०. अंधकार।

रोशनी की तलब है। हमअँधेरे में खोये जाने की जगह रोशनी में चलने की तलब रखते है। और हमे यहाँ रोशनी की राह सिर्फ़ इसी एक हल से मिल सकती है।

फितरते-कायनात[१] मे एक मुकम्मल मिसाल (Pattern) की नमूदारी[२] है। ऐसी मिसाल जो अज़ीम[३] भी है और जमाली भी (Aesthetic)। उसकी अज़मत[४] हमें मरअूब[५] करती है, उसका जमाल हममे महविय्यत[६] पैदा करता है। फिर क्या हम फर्ज़ कर लें कि फितरत की यह नमूद[७] बगैर किसी मुदरिक (intelligent) कुव्वत के काम कर रही है। हम चाहते है कि फर्ज़ कर लें, मगर नहीं कर सकते। हमे महसूस होता है कि ऐसा फ़र्ज कर लेना हमारी दिमागी खुदकुशी होगी।

अगर गौर कीजिये तो इस हल पर यक़ीन करते हुये हम उसी तरीक़े-नज़र से काम लेना चाहते है जो रियाज़ियात[८] के ऐदादी[९] और पैमाइशी[१०] हक़ायक से हमारे दिमागो मे काम करता रहता है। हम किसी अददी और पैमाइशी उलझाव का हल सिर्फ उसी हल को तस्लीम करेगे जिसके मिलते ही उलझाव दूर हो जाये। उलझाव का दूर हो जाना ही हल की सिहत की अटल दलील होती है। बिला शुबहा दोनो सूरतो मे उलझाव और हल की नौइयत एक तरह की नही होती। ऐदादी मसायल[११] मे उलझाव अददी होता है, यहाँ अक़ली है। वहाँ अददी हल अददी हकायक का यकीन पैदा करता है यहाँ अक़ली हल अकली इज़आन[१२] की तरफ रहनुमाई करता है। ताहम तरीक़े-नज़र का साँचा दोनो जगह एक ही तरह का हुआ। दोनो राहे एक ही तरह खुलती और एक ही तरह बंद होती है।

अगर कहा जाये, हल की तलब हम इसलिये महसूस करते हैं कि अपने महसूसात[१३] ओ तअक्कुल[१४] के महदूद दायरे मे इसके आदी हो गये है। और अगर इस हल के सिवा और किसी हल से हमे तशफ़्फ़ी[१५] नही मिलती तो यह भी इसीलिये है कि हम हकीकत तौलने के लिये अपने महसूसात ही का तराज़ू हाथ मे लिये हुये है। तो इसका जवाब भी साफ़ है। हम अपने आपको अपने फ़िक्र ओ नज़र के दायरे से बाहर नही ले जा सकते हम मजबूर है कि इसी के अंदर रह कर सोचे और हुक्म लगाये। और यह जो हम कह रहे है कि "हम मजबूर हैं कि सोचे और हुक्म लगाये" तो :

ईं सुख़न नीज़ ब अंदाज़ये-इदराके-मन स्त ![१६]

---

१. विश्व प्रकृति २. प्रगटन ३. महान ४. महानता ५. चकित ६. तल्लीनता, आत्मविभोरता ७. प्रगटन ८. गणितशास्त्र ९. संख्या संबंधी १०. नापने का ११. समस्या, सवाल १२. विश्वास १३. अनुभूति १४. जानकारी १५. संतोष १६. यह बात भी मेरी बुद्धि के परिमाण के मुताबिक है।

मसले का एक और पहलू भी है जो अगर गौर करें तो फ़ौरन हमारे सामने नुमायाँ हो जायेगा। इंसान के हैवानी[१] वजूद ने मर्तबये-इंसानियत[२] मे पहुँच कर नश्व ओ इर्तका[३] की तमाम पिछली मंज़िले बहुत पीछे छोड़ दी है और बुलदी के एक ऐसे अरफा[४] मुकाम पर पहुँच गया है जो उसे कुर्रये-अरजी[५] की तमाम मख़लूकात[६] से अलग ओ मुमताज़[७] कर देता है। अब उसे अपनी ला महदूद[८] तरक्कियो के लिये एक ला महदूद बुलंदी का नस्ब-उल-ऐन[९] चाहिये जो उसे बराबर ऊपर ही की तरफ खीचता रहे। उसके अंदर बुलंद से बुलंदतर होते रहने की तलब हमेशा उबलती रहती है और वो ऊँची से ऊँची बुलदी तक उड कर भी रुकना नही चाहती। उसकी निगाहें हमेशा ऊपर ही की तरफ लगी रहती है। सवाल यह है कि यह ला महदूद बुलदियो का नस्ब-उल-ऐन क्या हो सकता है? हमे बिला ताम्मुल[१०] तस्लीम कर लेना पडेगा कि खुदा की हस्ती के सिवा और कुछ नही हो सकता। अगर यह हस्ती उसके सामने से हट जाये तो फिर उसके लिये ऊपर की तरफ देखने के लिये कुछ भी बाकी नही रहेगा।

कुर्रये-अरजी की मौजूदात में जितनी चीजें है सब इसान से निचले दर्जे की है। वो उनकी तरफ नजर नही उठा सकता। उसके ऊपर अजरामे-समावी[११] की मौजूदात फैली हुई है। लेकिन उनमे भी कोई हस्ती ऐसी नही जो उसके लिये नस्ब-उल-ऐन बन सके। वो सूरज को अपना नस्ब-उल-ऐन नही बना सकता। वो चमकते हुये सितारो से इश्क नही कर सकता। सूरज उसके जिस्म को गरमी बख्शता है लेकिन उसकी मख्फी[१२] कुव्वतो[१३] की उमगों को गरम नही कर सकना। सितारे उसकी अँधेरी रातो मे कदीलें रोशन कर देते है लेकिन उसके दिल ओ दिमाग के निहाखाने[१४] को रोशन नही कर सकते। फिर वो कौन सी हस्ती है जिसकी तरफ़ वो अपनी बुलंद परवाजियों के लिये नजर उठा सकता है?

यहाँ उसके चारो तरफ पस्तियाँ ही पस्तियाँ है जो उसे इंसानियत की बुलंदी से फिर हैवानियत की पस्तियों की तरफ़ ले जाना चाहती है। हालाकि वो ऊपर की तरफ उडना चाहता है। वो अनासिर[१५] के दर्जे से बुलद होकर नबाताती[१६] ज़िंदगी के दर्जे में आया। नबातात से बुलदतर होकर हैवानी ज़िदगी के दर्जे मे पहुँचा। फिर हैवानी मर्तबे से उड़कर इंसानियत की शाखे-

---

१. पाशविक अस्तित्व २. मनुष्य के दर्जे में ३. विकास ४. ऊँचे ५. पृथ्वी का गोला ६. सृष्टि ७. ऊंचा ८. असीम ९. आदर्श १०. झिझक ११. आसमानी ग्रह नक्षत्र १२. गुप्त १३. शक्ति १४. अंतःपुर १५. पच भूतों को अनासिर कहते है १६. बनस्पति।

बुलंद[1] पर अपना आशियाना[2] बनाया। अब वो इस बुलंदी से फिर नीचे की तरफ नही देख सकता, अगरचे हैवानियत की पस्ती उसे बराबर नीचे ही की तरफ खीचती रहती है। वो फ़ज़ा[3] की लाइंतहा[4] बुलदियों की तरफ आँख उठाता है।

न ब अंदाज़ये-बाज़ू स्त कमंदम हैहात
वरना बा गोशये-बामेम सरोकारे हस्त ![5]

उसे बुलंदियों, लामहदूद बुलंदियो का एक बामे-रफअत[6] चाहिये जिसकी तरफ वो बराबर देखता रहे और जो उसे हरदम बुलंद से बुलंदतर होते रहने का इशारा करता रहे !

तुरा ज़ कंगुरये-अर्श मीज़नंद सफ़ीर
नदानमत कि दरीं दामगह् च उफ़्ताद स्त।[7]

इसी हकीक़त को एक जर्मन फिलसफ़ी रेल (Riehl) ने इन लफ़्ज़ों में अदा किया था : "इंसान तन कर सीधा खडा नही रह सकता जब तक कोई ऐसी चीज़ उसके सामने मौजूद न हो जो खुद उससे बुलंदतर है। वो किसी बुलंद चीज़ के देखने ही के लिये सर ऊपर कर सकता है !"

बुलंदी का यह नस्ब-उल-ऐन खुदा की हस्ती के तसव्वुर के सिवा और क्या हो सकता है ? अगर यह बुलंदी उसके सामने से हट जाये तो फिर उसे नीचे की तरफ देखने के लिए झुकना पड़ेगा। और जू ही उसने नीचे की तरफ़ देखा इंसानियत की बुलदी पस्ती मे गिरने लगी।

यही सूरते-हाल है जो हमें यकीन दिलाती है कि खुदा की हस्ती का अकीदा[8] इसान की एक फ़ितरी एहतियाज[9] के तकाज़े का जवाब है। और चूकि फितरी तक़ाजे का जवाब है इसलिये उसकी जगह इंसान के अन्दर पहले से मौजूद होनी चाहिए, बाद की बनाई हुई बात नही हुई।

जिदगी के हर गोशे मे इंसान के फ़ितरी तकाज़े है। फ़ितरत ने फ़ितरी तकाज़ों के फ़ितरी जवाब दिये है और दोनों का दामन इस तरह एक दूसरे के साथ बॉध दिया है कि अब इसका फ़ैसला नही किया जा सकता—दोनों में से कौन पहले ज़हूर[10] में आया था। तकाज़े पहले पैदा हुए थे या उनके जवाबों ने पहले सर उठाया था ? चुनाँचे जब कभी हम कोई फ़ितरी तक़ाज़ा महसूस

---

१ ऊँची शाखा २. घोंसला ३. आकाश ४. असीम, अपार ५. अफ़सोस कि मेरी कमंद मेरे बाजुओं के मुताबिक अंदाजे की नही है, वरना अटारी के कोने से मुझे सरोकार है ६. ऊँची अटारी ७. तुझे आसमानी कंगुरों से आवाज़ देते है, मैं नही जानता कि इस दुनिया के जजाल में क्या पड़ा हुआ है। ८. विश्वास ९. प्राकृतिक आवश्यकता १०. अस्तित्व।

करते हैं तो हमें पूरा पूरा यकीन होता है कि इसका फ़ितरी जवाब भी ज़रूर मौजूद होगा। इस हकीकत में हमे कभी शुबहा नही होता।

मसलन हम देखते हैं कि इंसान के बच्चे की दिमागी नश्वो नुमा[1] और उसकी कुव्वते-महाकात[2] उभरने के लिए मिसालों और नमूनों की ज़रूरत होती है। वो मिसालों और नमूनो के बग़ैर अपनी फ़ितरी क़ुव्वतों को उनकी असली चाल चला नही सकता। हत्ता[3] कि बात करना भी नही सीख सकता जो उसके मर्तबये-इंसानियत का इम्तियाज़ी[4] वस्फ़[5] है। और चूंकि यह उसकी एक फितरी तलब है इसलिए ज़रूरी था कि ख़ुद फ़ितरत ही ने अव्वल रोज़ से उसका जवाब भी मुहय्या कर दिया होता। चुनाचे यह जवाब पहले मां की हस्ती मे उभरता है, फिर बाप के नमूने मे सर उठाता है। फिर रोज़ ब रोज़ अपना दामन फैलाता जाता है। अब गौर कीजिये कि इस सूरते-हाल का यक़ीन किस तरह हमारे दिमाग़ों में बसा हुआ है? हम कभी इसमे शक कर ही नहीं सकते। हमारे दिमाग़ों में यह सवाल उठना ही नही कि बच्चे के लिए वालदैन[6] का नमूना इब्तदा से काम देता आया है या बाद को इसानी बनावट ने पैदा किया है? क्योंकि हम जानते है कि यह एक फितरी मतालबा[7] है और फ़ितरत के तमाम मतालबे जभी सर उठाते हैं जब उनके जवाब का भी सरोसामान मुहय्या होता है।

ठीक इसी तरह अगर हम देखते हैं कि इंसानी दिमाग की नश्वो नुमा एक ख़ास दर्जे तक पहुँचकर उन तमाम नमूनों से आगे बढ जाती है जो उसके चारों तरफ़ फैले हुए हैं और अपने ऊरूज[8] ओ इर्तका[9] की परवाज़[10] जारी रखने के लिए ऊपर की तरफ़ देखने पर मजबूर हो जाती है तो हमे यकीन हो जाता है कि यह उसकी हस्ती का एक फितरी मतालबा है। और अगर फ़ितरी मतालबा है तो जरूरी है कि उसका फितरी जवाब भी ख़ुद उसकी हस्ती के अंदर ही मौजूद हो और उसके होश ओ खिरद[11] ने आँखें खोलते ही उसे अपने सामने देख लिया हो। यह जवाब क्या हो सकता है? जिस क़दर जुस्तजू करते हैं ख़ुदा की हस्ती के सिवा और कोई दिखाई नही देता।

आस्ट्रेलिया के वहशी क़बायल से लेकर तारीखी अहद के मुतमद्दिन[12] इंसानों तक कोई भी इस तसव्वुर की उमंग से खाली नही रहा। ऋग्वेद के ज़मजमों का फ़िक्री[13] मवाद उस वक्त बनना शुरू हुआ था जब तारीख की सुबह भी पूरी तरह तुलूअ नही हुई थी। और हित्तियों (Hittites) और ईलामियों ने

---

१. विकास २. बोलने की शक्ति ३. यहाँ तक कि ४. विशेष ५. गुण ६. माँ बाप ७. माँग ८. उत्कर्ष ९. विकास १०. उड़ान ११. अक़्ल १२. सभ्य १३. चितनपूर्ण मसाला या सामग्री।

जब अपने तअब्बुदाना[1] तसव्वुरात के नक्श ओ निगार[2] बनाये थे तो इंसानी तमद्दुन की तफ़ूलियत[3] ने अभी अभी आँखें खोली थी। मिसरियों ने वलादते-मसीह[4] से हजारों साल पहले अपने खुदा को तरह-तरह के नामों से पुकारा और कालिडया के सनअतगरों[5] ने मिट्टी की पकी हुई ईंटो पर हम्द ओ सना[6] के वो तराने कदा[7] किये जो गुजरी हुई क़ौमों से उन्हें विरसे मे मिले थे :

दर हेच पर्दा नेस्त नबाशद नवाये-तू
आलम पुर स्त अज़ तू ओ खाली स्त जाये-तू[8]

अबुलफ़ज़ल ने इबादतगाहे-कश्मीर के लिए क्या खूब कतबा[9] तजवीज किया था—"इलाही ब हर खाना कि मीनिगरम जोयाये-तू अंद, व ब हर ज़बा कि मीशुनवम गोयाये-तू।[10]

अय तीरे-ग़मत रा दिले-अुश्शाक़ निशाना
खल्क़े ब तू मशगूल तू ग़ायब ज़ मयाना
गह मौतकिफे-दैरम ओ गह साकिने-काबा
याने कि तुरा मीतलबम खाना ब खाना![11]

अबुलकलाम

---

१. पूजा भक्तिपूर्ण २. चित्र, पट ३. बचपन, बाल्यकाल ४. ईसा के जन्म से ५. शिल्पियो ने ६. स्तुति और प्रार्थना ७. खोदना ८. ऐसा कोई पर्दा नही है जिसमे कि तेरी आवाज़ न हो, सारी दुनिया तुझसे परिपूर्ण है (मगर) तेरी जगह खाली है ९. अभिलेख, शिलालेख १०. हे ईश्वर, जिस घर मे भी देखता हूँ उसमें तेरे चाहने वाले और ढूंढने वाले है, और जो भाषा भी सुनता हूँ उसमें तेरी स्तुति करने वाले हैं। ११. ओ (प्रभु), तेरे गम के तीर के लिए प्रेमियों का दिल ही निशाना है, सारी दुनिया तुझमे लीन है लेकिन तू बीच में से गायब है। मैं कभी मंदिर का पुजारी हूँ और कभी काबे का बासी याने कि तेरी घर घर मे तलाश कर रहा हूँ।

किलअ-ए-अहमदनगर
१८ अक्तूबर सन् १९४२

सर्दाक़े-मुकर्रम,

कल का मक्तूब कागज़ पर खत्म हो चुका था लेकिन दिमाग में खत्म नहीं हुआ था। इस वक़्त क़लम उठाया तो फिर खयालात उसी रुख पर बढ़ने लगे।

ग़ौर ओ फ़िक्र[1] की यही मंज़िल है जो हमें एक दूसरी हकीकत की तरफ़ भी मुतवज्जा[2] कर देती है। यह क्या बात है कि इंसान खुदा के मावराये-तअक़्कुल[3] और ग़ैरशख्सी तसव्वुर[4] पर क़ानिअ[5] न रह सका और किसी न किसी शक्ल मे अपने फिक्र ओ अहसासात के मुताबिक एक शख्सी तसव्वुर पैदा करता रहा? मैं "शख्सी" तसव्वुर यहाँ उस मानी में बोल रहा हू जिस मानी में "पर्सनल गॉड" (Personal God) की इस्तलाह[6] बोली जाती है। शख्सी तसव्वुर के मुख्तलिफ़ मदारिज[7] हैं। इब्तदाई दर्जा तो शख्से-महज़ का होता है जो सिर्फ़ शख्सियत का इसबात[8] करता है। लेकिन फिर आगे चल कर यह शख्सियत खास खास सिफ्तों[9] और फ़आलियतों का जामा पहन लेती है। सवाल यह है कि यह जामा नागुजीर क्यों हुआ? इसकी इल्लत भी यही है कि इंसान की फ़ितरत को बुलंदी के एक नस्ब-उल-ऐन[10] की जरूरत है और इस ज़रूरत की प्यास बग़ैर एक मुशख्खस और अलायक़ नवाज़[11] तसव्वुर के बुझ नही सकती। हकीक़त कुछ ही हो, लेकिन यह तसव्वुर जब कभी उसके सामने आयेगा तो तशख्खुस[12] की एक नकाब चेहरे पर जरूर डाल लेगा। यह नकाब कभी भारी रही कभी हलकी हो गई, कभी डराने वाली रही, कभी लुभाने वाली बन गई, लेकिन चेहरे से उतरी कभी नही। और यही से हमारे दीदये-सूरत परस्त[13] की सारी दरमांदगियां[14] शुरू हो गई:

बर चेहरये-हक़ीक़त अगर मांद पर्दये
जुर्म-निगाहे-दीदये-सूरत परस्ते-मा स्त![15]

---

१. चिंतन और मनन २. ध्यान खींचना ३. ज्ञान अगोचर, जो बुद्धि से परे है ४. खयाल ५. संतुष्ट ६. पारिभाषिक शब्द ७. दर्जे का बहुवचन ८. सबूत ९. गुणों, और कर्मों का १०. आदर्श ११. जिससे कोई संबंध स्थापित किया जा सके १२ वैयक्तिकता १३. रूप उपासक आँखें १४. परेशानियाँ १५. पहले आ चुका है।

दुनिया में वह्दत-उल-वजूद (Pantheism) के अक़ीदे का सबसे क़दीम सरचश्मा हिन्दुस्तान है। ग़ालिबन् यूनान और इस्कंदरिया में भी यहीं से यह अक़ीदा पहुँचा और मज़हबे-अफ़लातून जदीद (Neoplatonism) ने (जिसे ग़लती से अरबों ने अफ़लातून का मज़हब ख़याल किया था) इस पर अपनी इशराक़ी[1] इमारतें उस्तवार[2] की। यह अक़ीदा हक़ीक़त के तसव्वुर को हर तरह के तसव्वुरी तशख़्ख़ुसात[3] से मुनज़्ज़ा[4] करके यक कामिल-मुतलक़[5] और बुहत-तसव्वुर क़ायम कर देता है। इस तसव्वुर के साथ सिफ़ात[6] मुतशक्किल नहीं हो सकतीं और अगर होती भी हैं तो तअय्युनात और मज़ाहिर के ऐतबार से। न कि ज़ाते-मुतलक़[7] की हस्ती के ऐतबार से। इस अक़ीदे का रूशनास उसकी ज़ात के बारे में बजुज़[8] इसके कि है और कुछ नहीं कह सकता। यहाँ तक कि इशारा भी नहीं कर सकता। क्योंकि अगर हम अपने इशारात की परछाईं भी उस पर पड़ने देते है तो ज़ाते-मुतलक़, मुतलक़ नहीं रहती। तशख़्ख़ुस और हुदूद के ग़ुबार से आलूदा हो जाती है। बाबा फ़ुग़ानी ने दो मिसरों के अंदर सब कुछ कह दिया है :

मुश्किल हिकायते स्त कि हर ज़र्रा ऐने-ऊ स्त
अम्मा नमीतवां कि इशारत ब-ऊ कुनन्द![9]

यही वजह है कि हिन्दुस्तान के उपनिषदों ने नफ़ीये-सिफ़ात[10] की राह इख़्तियार की और तंज़ीह[11] की। "नेति-नेति" को बहुत दूर तक ले गये। लेकिन फिर देखिये इसी हिन्दुस्तान को अपनी प्यास इस तरह बुझानी पड़ी कि न सिर्फ़ ब्रह्म (ज़ाते-मुतलक़) को ईश्वर (ज़ाते-मुत्तसिफ़ ओ मुशख़्ख़स[12]) की नमूद में देखने लगे बल्कि पत्थर की मूर्तियाँ भी तराश कर सामने रख लीं कि दिल के अटकाव का कोई ठिकाना तो सामने रहे :

करे क्या काबे में जो सिर्रे-बुतख़ाना से आगह है
यहाँ तो कोई सूरत भी है वां तो अल्लाह ही अल्लाह है!

यहूदियों ने ख़ुदा को एक क़ाहिर ओ जाबिर[13] शहंशाह की सूरत में देखा, और इसराईल के घराने से उसका रिश्ता ऐसा हुआ जैसा एक ग़य्यूर[14] शौहर का अपनी चहेती बीवी के साथ होता है। शौहर अपनी बीवी की सारी ख़तायें

---

१. अफ़लातून की फ़िलसफ़ी २. मज़बूत ३. ख़याली शख़्सियत ४. मुक्त ५. पूर्ण ६. गुण ७. पूर्ण ब्रह्म ८. सिवाय ९. मुश्किल बात तो यह है कि हर ज़र्रा उसकी आँख है लेकिन उसकी तरफ़ इशारा नहीं कर सकते। १०. निर्गुणता ११. निर्गुण रूप से की १२. गुण और व्यक्तित्वता १३. सर्वशक्तिमान १४. स्वाभिमानी।

माफ़ कर देगा मगर उसकी बेवफ़ाई कभी माफ़ नही करेगा। क्योंकि उसकी ग़ैरत गवारा नहीं करती कि उसकी मुहब्बत के साथ किसी दूसरे की मुहब्बत भी शरीक हो—"इन्नलाहा लायग़फ़िरु अईयूशरिका बिही न यग़फ़िरु मादून ज़ालिका लिमइयशाउ"[१] चुनाचे तौरात के अहकामे-अशरा[२] मे एक हुक्म यह था—तू किसी चीज़ की मूर्ति न बनाइयो, न उसके आगे झुकियो। क्योंकि मैं खुदावंद तेरा खुदा एक ग़य्यूर खुदा हूँ। लेकिन फिर ज़माना जूं-जूं बढता गया यह तसव्वुर भी ज़्यादा वुसअत और रिक़्क़त[३] पैदा करता गया। यहाँ तक कि यसअिया (Isaiah) सानी* के ज़माने में उस तसव्वुर की बुनियादें पड़ने लगीं जो आगे चल कर मसीही तसव्वुर की शक्ल इख्तियार करने वाला था। चुनांचे मसीहियत ने शौहर की जगह बाप‡ को देखा। क्योंकि बाप अपने बच्चों के लिये सरतासर रहम ओ शफ़क़त[४] और यक क़लम अफ़्व[५] व दरगुज़र होता है।

मन बद कुनम ओ तू बद मुकाफ़ात दिही
पस फ़र्क़ मयाने-मन ओ तू चीस्त बुगो ![६]

इस्लाम ने अपने अक़ीदे की बुनियाद सरतासर तंज़ीह[७] पर रक्खी "लयशा

---

* उन्नीसवी सदी मे बाइबल के नक़्द व तदब्बुर (आलोचन और चिंतन) को जो मस्लक (रास्ता) "इतकादे-आला" (उच्च आलोचना) के नाम से इख्तियार किया गया था, उसके बाज़ फ़ैसले आज तक तयशुदा समझे जाते है। अज़ांजुम्ला यह कि यसइया नबी के नाम से जो सफ़ीहा मौजूद है वो तीन मुख्तलिफ़ मुसन्निफो ने तीन मुख्तलिफ ज़मानों मे मुरत्तिब किया होगा। बाबे-अव्वल से बाब ३९ तक एक मुसन्निफ का कलाम है। बाब ४० से बाब ५५ आयत १३ तक दूसरे मुसन्निफ का, और इसके बाद का आखिरी हिस्सा तीसरे का। इन तीनो मुसन्निफो को इम्तियाज़ के लिये यसअिया अव्वल, सानी और सालिस (तीसरा) से मौसूम (नामांकित) किया जाता है।

‡ हिन्दू तसव्वुर ने बाप की जगह मा की तमसील इख्तियार की थी। क्योंकि मां की मुहब्बत बाप की मुहब्बत से भी ज़्यादा गहरी और ग़ैर मुतज़लज़ल (न हिलनेवाली) होती है।

---

१. अल्लाह अपने साथ किसी को शरीक करना माफ़ नहीं करता और इसके सिवा चाहे जो कुछ माफ़ कर दे २. दस हुक्मों मे ३. फैलाव और बारीकी ४. प्रेम ५. क्षमा ६. मैं बुरा काम करता हूँ और तू उसका बुरा बदला देता है फिर मुझमें और तुझमें फ़र्क़ क्या है बता ७. निर्गुणता।

कमिस्लिहि शैउन[1]" मे तस्बीह[2] की ऐसी आम और क़तई नफ़ी[3] कर दी कि हमारे तसव्वुरी तशख़्ख़ुस के लिये कुछ भी नहीं रहा। "ला तदरिबु लिल्लाहि अमसाल[4]" ने तमसीलों के सारे दरवाज़े बंद कर दिये। "ला तुदरि-कुहुल अबसार[5]" और "लंतरानी वलाकिन उनज़ुर हलल जबल[6]" ने इदराके-हक़ीक़त की कोई उम्मीद बाक़ी न छोड़ी :

ज़बां बिबंद ओ नज़र बाज़ कुन कि मनअ़े-कलीम
इशारत अज़ अदब आमोज़िये तक़ाज़ाई स्त।[7]

ताहम इंसान के नज़ारये-तसव्वुर[8] के लिये उसे भी सिफ़ात की एक सूरत आराई[9] करनी ही पड़ी, और तंज़ीहे-मुतलक़[10] ने सिफाती तशख़्ख़ुस का जामा पहन लिया "वलिल्लाहिल अस्माउल हुस्न फ़दउहो बिहा[11]" और फिर सिर्फ़ इतने पर मामला नहीं रुका जा बजा मजाज़ात[12] के झरोखे भी खोलने पड़े "बलयदाहु मबसूततान[13]" और "यदुल्लाहि फौक़ अयदिहिम[14]" और "मा रमैता इज़ रमैता व लाकिन्नल्लाहा रमा[15]" और "अर्रहमान अललअर्शि-स्तवा[16]" और "इन्नरब्बक लबिलमिरसाद[17]" और "कुल्ल यौमिन हुव फ़ी शान[18]" :

हर चंद हो मुशाहिदये-हक़ की गुफ़्तगू
बनती नहीं है बादा ओ साग़र कहे बग़ैर !

इससे मालूम हुआ कि बुलंदी के एक नस्ब-उल-ऐन की तलब इंसान की फ़ितरत की तलब है और वो बग़ैर किसी ऐसे तसव्वुर के पूरी नहीं हो सकती जो किसी न किसी शक्ल में उनके सामने आये, और सामने तभी आ सकता है

---

१. उसके (ईश्वर) के समान कोई चीज नही है २. उपमा ३. मनाही ४. अल्लाह के लिए मिसालें मत दो ५. उसे आंखें नहीं देख सकती ६. तू मुझे नही देख सकता लेकिन देख पहाड़ की तरफ़ ७. ज़बान बंद कर लो और आंखें खोल लो कि मूसा की यह मनाही अदब सिखाने की तरफ़ इशारा करती है। ८. ख़याली नज़्ज़ारा ९. सूरत निकालनी पड़ी १०. पूर्ण निर्गुणवाद ने ११. और अल्लाह के अच्छे-अच्छे नाम हैं उन नामों से उसे पुकारो १२. कल्पित बातें १३. उसके हाथ खुले हुए हैं १४. अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है १५. और जब तुम मार रहे थे तब तुमने नहीं मारा बल्कि अल्लाह ने मारा १६. खुदा तख़्त पर बैठ गया १७. बिला शुबहा तेरा परवरदिगार तुझे हरदम झांक लगाये ताक रहा है। १८. और हर रोज़ वह एक अलग शान में होता है।

कि उसके मुतलक़ और ग़ैर मुशख़्ख़स[1] चेहरे पर कोई न कोई नकाब तशख़्ख़ुस[2] की पड़ गयी हो :

आह अज़ां हौसलये-तंग ओ अज़ां हुस्ने-बुलंद
कि दिलमरा गिला अज़ हसरते-दीदारे-तू नेस्त ![3]

ग़ैर सिफाती[4] तसव्वुर को इंसानी दिमाग पकड नही सकता। और तलब उसे ऐसे मतलूब की हुई जो उसकी पकड़ में आ सके। वो एक ऐसा जलवये-महबूबी[5] चाहता है जिसमे उसका दिल अटक सके, जिसके हुस्ने-गुरेज़ा[6] के पीछे वालिहाना[7] दौड़ सके, जिसके दामने-किब्रियाई[8] पकड़ने के लिये अपना दस्ते-अिज्ज़ ओ नियाज[9] बढा सके, जिसके साथ राज़ ओ नियाज़े-मुहब्बत की रातें बसर कर सके। जो अगरचे ज्यादा से ज्यादा बुलंदी पर हो, लेकिन फिर भी उसे हरदम झाँक लगाये ताक रहा हो कि—"इन्नरब्बिक लबिलमिरसाद[10]" और "व इजालअलक इबादी अन्निफ़इन्नि करीब" उजीबुदावत अद्दाइ इज़ा दआनि[11]।

दर पर्दाई ओ बर हमा कस पर्दा मी दरी
बा हरकसी ओ बा तू कसेरा विसाल नेस्त ![12]

ग़ैर सिफ़ाती तसव्वुर महज़ नफ़ी ओ सल्ब[14] होता है। मगर सिफाती तसव्वुर नफ़ी तशब्बुह[15] के साथ एक ईजाबी[16] सूरत भी मुतशक्किल[17] कर देता है। इसीलिये यहाँ सिफ़ात की नक़्शआराइयाँ नागुज़ीर हुयी। और यही वजह है कि मुसलमानों मे अुलमाये-सलफ़[18] और असबाबे-हदीस[19] ने तफ़वीज़[20] का मस्लक[21] इख़्तियार किया, और तावीले सिफ़ात[22] से गुरेज़ा[23] रहे और इसी बिना पर उन्होने जहमिय्या[24] के इंकारे-सिफ़ात[25] को तअत्तुल[26] से ताबीर किया और

१. निराकार २. आकार, व्यक्तित्व ३. साहस की कमी और उसके हुस्न की बुलंदी के कारण मेरे दिल को तेरे दर्शन की आकांक्षा की शिकायत तक नही है। ४. निर्गुण ५. प्रियतम का रूप ६. अदृश्य रूप ७. पागल की तरह ८. महानता का दामन ९. विनय और चाह का हाथ १०. बिला शुबहा तेरा परवरदिगार तुझे हर दम झाँक लगाये ताक रहा है ११. अय पैग़ंबर! जब मेरी निस्बत मेरे बंदे तुझसे दरयाफ़्त करे तो उनसे कह दे—मैं उनसे दूर कब हूँ। मै तो हर पुकारनेवाले की पुकार का जवाब देता हूँ १२. तू पर्दे मे है और सब पर पर्दा डालता है, तू सबके साथ है और तुझसे किसी का मेल नही है १४. सब गुणो से खिंचाव १५. निर्गुणता १६. गुण १७. आरोपित १८. पुराने विद्वान १९. हदीस कहनेवाले २०. सब कुछ मान लेने का २१. रास्ता २२. गुणों की व्याख्या २३. कतराना २४. जहम के पथ का नाम २५. निर्गुणता २६. निरंकारता।

मौतजला[1] व मुतकल्लिमीन[2] की तावीलों[3] में भी तातील[4] की बू सूंघने लगे। मुतकल्लिमीन ने असहाबे-हदीस को तशब्बुह और तजस्सुम (Anthropomorphisn) का इल्जाम दिया था। मगर वो कहते थे तुम्हारे तअत्तुल से तो हमारा नाम-निहाद तशब्बुह ही बेहतर है क्योंकि यहाँ तसव्वुर के लिये एक ठिकाना तो बाकी रहता है। तुम्हारी सल्ब ओ नफ़ी की काविशों के बाद तो कुछ भी बाकी नही रहता !

हिन्दुस्तान के उपनिषदों ने जाते-मुतलक[5] को ज़ाते-मुत्तसिफ में उतारते हुये जिन तनज्जुलात[6] का नक्शा खींचा है, मुसलमान सूफियों ने इसकी तावीर "अहदिय्यत" और "वाहदिय्यत" के मरातिब में देखी। "अहदिय्यत" का मर्तबा यकताई महज़ का हुआ, लेकिन "वाहदिय्यत" की जगह अव्वल की हुई। और अव्वलियत का मर्तबा चाहता है कि दूसरा तीसरा चौथा भी हो— "कुन्तु कन्जन मख़फीहन व अहबब्तु अनउरिफ़ा फ़ खलक़्तुल खल्क[7]" हदीस कुदसी[8] नही है मगर जिस किसी का भी क़ौल है, इसमें शक नही कि एक बड़े ही गहरे तफक्कुर[9] की खबर देता है :

दिल कुश्तये-यकताइये-हुस्न स्त वगरना
दर पेशे तू आईना शिकस्तन हुनरे बूद ![10]

तर्जुमान-अुल-कुरान जिल्द अव्वल मे बज़िम्न[11], तफसीर सूरये-फातिहा और जिल्द दोम में बज़िम्न तफसीर "व्लातदरिबु लिल्लाहिल अमसाल"[12] इस मबहस की तरफ इशारात किये गये हैं। और मबहस ऐसा है कि अगर फैलाया जाये तो बहुत दूर तक फैल सकना है :—

तल्क़ीने-दर्स-अहले-नज़र यक इशारत स्त
कर्दम इशारते ओ मुकर्रर नमीकुनम ![13]

इस सिलसिले में एक और मुकाम भी नुमायां होता है, और उसकी वुसअत भी हमें दूर-दूर तक पहुँचा देती है। अगर यहां माद्दे[14] के सिवा और

१-२. ये भी पंथों के नाम है ३. व्याख्या ४. निरंकारता ५. पूर्ण ब्रह्म ६. उतार का ७. मैं छिपा हुआ खजाना था मैंने चाहा कि मुझे लोग जाने इसलिये मैंने ससार की सृष्टि की ८. मुहम्मद साहब के मुँह से कुरान के अलावा निकली हुई बातों को हदीस कहते है और जो उन्ही के शब्दों मे हो उसे हदीस कुदसी कहते है। ९. विचार १०. तेरे सौन्दर्य की अद्वितीयता से दिल घायल है वरना तेरे सामने शीशा तोड़ देना ही ठीक था ११. अंतर्गत १२. ईश्वर के लिए मिसाले मत देना १३ दृष्टि वालों के समझने के लिए एक इशारा है और मैंने इशारा कर दिया है और दुबारा नही करता १४. पदार्थ।

कुछ नही है तो फिर मर्तबये-इंसानी मे उभरने वाली वो क़ुव्वत जिसे हम फिक्र ओ इदराक[1] के नाम से पुकारते हैं, क्या है ? किस अगीठी से यह चिंगारी उठी ? यह क्या है जो हममे यह जौहर पैदा कर देती है कि हम खुद माद्दे की हकीकत मे ग़ौर ओ खोज करने लगते है और इस पर तरह-तरह के अहकाम[2] लगाते हैं ? यह सच है कि मौजूदात की हर चीज़ की तरह यह जौहर भी बतदरीज[3] इस दर्जे तक पहुँचा। वो अर्से तक नबातात[4] में सोता रहा, हैवानात में करवट बदलने लगा और फिर इसानियत के मर्तबे मे पहुँच कर जाग उठा। लेकिन सूरते-हाल का यह इल्म हमें इस गुत्थी के सुलझाने मे कुछ मदद नही देता। यह बीज फ़ौरन बर्ग ओ बार ले आया हो या मुद्दतों के नश्वो इर्त्तका[5] के बाद इस दर्जे तक पहुँचा हो। बहरहाल मर्तबये-इंसानियत का जौहर व खुलासा है और अपनी नमूद व हकीकत में तमाम मजमूये-मौजूदात से अपनी जगह अलग और बालातर रखता है। यही मुकाम है जहाँ पहूँच कर इंसान हैवानियत की पिछली कड़ियों से जुदा हो गया और किसी आयंदा कड़ी तक मुर्तफा[6] होने की इस्तैदाद[7] उसके अदर सर उठाने लगी। वो जमीन की हुक्म-रानी के तख्त पर बैठ कर जब ऊपर की तरफ नजर उठाता है तो फजा[8] के तमाम अजराम[9] उसे इस तरह दिखाई देने लगते है जैसे वो भी सिर्फ उसी की कारबरारियों के लिये बनाये गये हो। वो उनकी भी पैमाइश करता है और उनके खवास ओ अफ़आल[10] पर भी हुक्म लगाता है। उसे कारखानये-क़ुदरत की लाइतहाइयो के मुकाबले में अपनी दरमांदगियो[11] का कदम-कदम पर ऐतराफ़[12] करना पडता है। लेकिन दरमादगियो के इस अहसास से उसकी सई व तलब[9] की उमंगें पजमुर्दा[10] नही हो जाती बल्कि और ज्यादा शिगुफ्त-गियो[11] के साथ उभरने लगती हैं और उसे और ज्यादा बुलंदियों की तरफ़ उडा ले जाना चाहती है। सवाल यह है कि फ़िक्र ओ इदराक की यह फजाये ला मुतनाही[12] जो इसान को अपनी आग़ोशे-परवाज मे लिये हुये उड रही है, क्या है ? क्या इसके जवाब मे इस कदर कह देना काफी होगा कि यह महज एक अधी बहरी कुव्वत है जो अपने तबई खवास और तबई अहवाल ओ जरूफ से तरक्क़ी करती हुई फिक्र ओ इदराक का शोलये-जव्वाला बन गई ? जो लोग माद्दियत के दायरे से बाहर देखने के आदी नही वो भी इसकी जुर्रत

१. सोच समझ, विवेक २. हुक्म ३. सिलसिलेवार ४. बनस्पति जगत ५ विकास, (evolution) ६. ऊँचा होना ७. योग्यता ८. आकाश ९. गृह नक्षत्र १०. गुण कर्म ११. कमजोरियों का १२. स्वीकार ९. प्रयत्न और चाह १०. मुर्झा जाना ११. ताजगी १२. असीम दुनिया।

बहुत कम कर सके कि इस सवाल का जवाब बिला ताम्मुल ग्रिसबात[1] में दे दें।

मैं अभी उस इंकलाब की तरफ इशारा करना नही चाहता जो उन्नीसवी सदी के आखिर में रुनुमा होना शुरू हुआ और जिसने बीसवी सदी के शुरू होते ही क्लासिकल तबिश्रिय्यात[2] के तमाम बुनियादी मुसल्लिमात[3] यक क़लम मुतज़लज़ल कर दिये। मैं अभी उससे अलग रह कर आम नुक़्तये-निगाह से मसले का मुताला कर रहा हूं।

और फिर खुद सूरते-हाल जिसे हम नश्वो इर्तका (Evolution) से ताबीर करते है, क्या है ? और क्यो है ? क्या वो एक खास रुख की तरफ़ ऊँगली उठाये इशारा नहीं कर रही है ? हमने सैकड़ो बरस की सुराग़रसानियों के बाद यह हकीकत मालूम की कि तमाम मौजूदाते-हस्ती आज जिस शक्ल श्रो नौइयत मे पाई जाती हैं, यह बयक दफा ज़हूर मे नही आ गई। याने किसी बराहे-रास्त तखलीकी अमल ने इन्हे यकायक यह शक्ल श्रो नौइयत नही दे दी। बल्कि एक तदरीजी[4] तगय्युर[5] का आलमगीर कानून यहाँ काम करता रहा है और उसकी अताअत[6] व इंकियाद[7] मे हर चीज़ दर्जा बदर्जा बदलती रहती है। और एक ऐसी आहिस्ता चाल से जिसे हम फ़लकी ऐदाद श्रो शुमार की मुद्दतों से भी बमुश्किल अंदाजे में ला सकते हैं। नीचे से ऊपर की तरफ बढती चली आती है — ज़र्रात से लेकर अजरामे-समावी[8] तक सबने इसी कानूने-तगय्युर श्रो तहव्वुल के मातहत अपनी मौजूदा शक्ल श्रो नौइयत का जामा पहना है। यही नीचे से ऊपर की तरफ चढती हुई रफ़्तारे-फ़ितरत है जिसे हम "नश्वो इर्तका" के नाम से ताबीर करते हैं। यानी एक मुअय्यन[9] तैशुदा, हम आहंग[10] और मुनज्ज़म[11] इर्तकाई[12] तकाज़ा है जो तमाम कारखानये-हस्ती पर छाया हुआ है और उसे किसी खास रुख की तरफ़ उठाये और बढाये ले जा रहा है। हर निचली कडी बतदरीज अपने से ऊपर की कडी का दर्जा पैदा करेगी और हर ऊपर का दर्जा निचले दर्जे की रफ़्तारे-हाल पर एक खास तरह का असर डालते हुये उसे एक खास साँचे में ढालता रहेगा। यह इर्तकाई सूरते-हाल खुद तोजीह (Self Explanatory) नही है। यह अपनी एक तौज़ीह चाहती है। लेकिन कोई माद्दी तौजीह हमें मिलती नही। सवाल यह है कि क्यों सूरते-हाल ऐसी ही हुई कि यहाँ एक

---

१. स्वीकारात्मक २. पदार्थ विज्ञान ३. सिद्धान्त ४. क्रम बद्ध ५. परिवर्तन ६. आज्ञा पालन ७. कैद बंधन ८. आसमान के ग्रह-नक्षत्र ९. निश्चित १०. एक दूसरी से जुड़ी हुई ११. सुव्यवस्थित १२. विकास।

इर्तकाई तकाज़ा मौजूद हो और वो हर तखलीकी[1] ज़हूर को निचली हालतों से उठाता हुआ बुलदतर दर्जो की तरफ बढाये ले जाये ? क्या फ़ितरते-वजूद में रफग्रत-तलबियों[2] का ऐसा तकाज़ा पैदा हुआ कि सिलसिलये-अजसाम की एक मुरत्तब सीढी नीचे से ऊपर तक उठती हुई चली गई, जिसका हर दर्जा अपने मा बाद[3] से ऊपर मगर अपने मा सबक[4] से नीचे वाके हुआ है। क्या यह सूरते-हाल बग़ैर किसी बालाखाने की मौजूदगी के बन गई और यहाँ कोई बामे-रफ़अत[5] नही जिस तक यह हमे पहुँचाना चाहती हो ?

यारां खबर दिहेद कि ईं जलवागाहे कीस्त ![6]

ज़मानये-हाल के अुलमा इल्म-उलहयात मे प्रोफेसर लाइड मारगन (Liayd morgan) ने इस मसले का इल्म-उल-हयाती (Biological) नुक्तये-खयाल से गहरा मुताला किया है। लेकिन बिलआखिर उसे भी इसी नतीजे तक पहुँचना पडा कि इस सूरते-हाल की कोई माद्दी तौज़ीह नही की जा सकती। वो लिखता है कि जो हासिलात (Resultants) यहाँ काम कर रही हैं हम उनकी तौजीह इस ऐतबार से तो कर सकते हैं कि उन्हें मौजूदा अहवाल ओ ज़रूफ़ का नतीजा करार दें। लेकिन इर्तकाई तकाज़े का फ़ज़ाई ज़हूर (Emergence) जिस तरह उभरता रहा है, मसलन ज़िंदगी की नसूद ज़हन ओ इदराक की जलवातराजी, ज़हनी शख्सियत और मानवीय इंफरादिय्यत[7] का ढलाव — इनकी कोई तौज़ीह बग़ैर इसके नही की जा सकती कि एक इलाही कुव्वत[8] की कारफरमाई यहाँ तसलीम कर ली जाये। हमें यह सूरते-हाल बिल आखिर मजबूर कर देती है कि फितरते-कायनात में एक तखलीकी असल (Creative Principle) की कारफरमाई के ऐतकाद से गुरेज़ न करें। एक ऐसी तखलीकी असल जो इस कारखानये-ज़र्फ़ ओ ज़मा[9] में एक लाज़मां (Timeless) हकीकत है।

हकायके-हस्ती का जब हम मुताला करते हैं तो एक खास बात फौरन हमारे सामने उभरने लगती है। यहाँ फितरत का हर निज़ाम कुछ इस तरह का वाके हुआ है कि जब तक उसे उसकी सतह से बुलंद होकर न देखा जाये उसकी हकीकत बेनकाब नही हो सकती। याने फितरत के हर नज्म को देखने के लिये हमें एक ऐसा मुकामे-नज़र पैदा करना पड़ता है जो खुद उससे बुलंदतर जगह पर

१. सृष्टि के सर्जन को २. ऊँचे की तरफ बढने की चाह का ३. पिछले ४. आनेवाले से ५. उच्च स्थान ६. यारो खबर दो कि यह रंगभूमि किसकी है ७. मानसिक अनोखापन ८. ईश्वरीय शक्ति ९. स्थान काल की दुनिया में।

वाके हो। आलमे-तबश्रिय्यात के गवामिज़[१] इल्म-उल-हयाती (Biological) आलम में खुलते है। इल्म-उल-हयाती गवामिज़ नफ्सयाती (Psychological) आलम मे नुमायां होते हैं। नफ्सयाती गवामिज के लिये हमे मंतकी[२] बहस व तहलील के आलम मे आना पड़ता है। लेकिन मतकी बहस ओ तहलील के मुअम्मो[३] को किस मुकाम से देखा जाये ? इससे ऊपर भी कोई मुकामे-नज़र है या नही जो हकीकत की किसी आखिरी मंज़िल तक हमे पहुँचा दे सकता हो ?

हमें मानना पडता है कि इससे ऊपर भी एक मुकामे-नज़र है। लेकिन वो इससे बुलदतर है कि अकली नज़र ओ तालील[४] से उसकी नक्श आराई की जा सके। वो मावराये महसूसात (Supra sensible) है, अगरचे महसूसात से मआरिज[५] नही। वो एक ऐसी आग है जो देखी नही जा सकती, अलबत्ता उसकी गरमी से हाथ ताप लिये जा सकते है। व मनलमयज़ुक लम यदरि[६]

तू नज़रबाज़ नई, वर्ना तग़ाफ़ुल निगह स्त
तू ज़बां फ़हम नई, वर्ना ख़मोशी सुखन स्त ![७]

कायनात साकिन[८] नही है, मुतहर्रिक[९] है। और एक खास रुख पर बनती और सँवरती हुई बढी चली जा रही है। इसका अंदरूनी तक़ाज़ा हर गोशे में तामीर ओ तकमील[१०] है। अगर कायनात की इस आलमगीर इर्तकाई रफ्तार की कोई माद्दी तौजीह हमे नही मिलती तो हम गलती पर नही हो सकते अगर इस मुअम्मे का हल रूहानी हकायक मे ढूंढना चाहते है।

इस मौके पर यह हकीकत भी पेशे-नज़र रखनी चाहिये कि माद्दे की नौइयत के बारे मे अठारहवी और उन्नीसवी सदी ने जो अकायद पैदा किये थे वो इस सदी के शुरू होते ही हिलना शुरू हो गये और अब यकसर मुनहदिम[११] हो चुके हैं। अब ठोस माद्दे की जगह मुजर्रद कुव्वत[१२] ने ले ली है और इलेक्ट्रोन (Electron) के खवास ओ अफ़आल ओ सालिमात के ऐदादी व शुमारी इज़बात के मबाहिस ने मामले को साइंस के दायरे से निकाल कर फिर फिलसफ़ा के सहरा मे गुम कर दिया है। साइंस को अपनी खारजिय्यत (objectivity) के इल्म व इंजबात का जो यकीन था, वो अब यकसर मुतज़लज़ल हो

---

१. भेद २. न्याय शास्त्र की बहस और हलों की दुनिया मे ३. समस्याओं को ४. कारण ५. विरोधी ६. जिसने स्वाद ही नही चखा वह क्या जाने ७. तू देखना नहीं जानता वरना उपेक्षा भी एक निगाह है, तू ज़बान का समझनेवाला नही है वरना खामोशी भी गुफ्तगू है ८. स्थिर ९. सचल १०. निर्माण और पूर्णता ११. ढह जाना १२. विशुद्ध शक्ति (Pure force)।

चुका, और इल्म फिर दाखिली ज़हनिय्यत (Subjectiviy) के उसी ज़हनी और कुल्लियाती मुकाम पर वापस लौट रहा है जहाँ से नशाते-जदीदा[१] के दौर के बाद उसने नई मुसाफ़रत के क़दम उठाये थे। लेकिन अभी यह दास्तान नहीं छेड़ूँगा, क्योंकि बजाये खुद यह एक मुस्तकिल मबहस है।

यह सच है कि यह राह महज़ इस्तदलाली[२] जरियये-इल्म से तै नहीं की जा सकती। यहाँ की असली रोशनी कश्फ़ ओ मुशाहिदे[३] की रोशनी है। लेकिन अगर हम कश्फ़ ओ मुशाहिदे के आलम की खबर नहीं रखनी चाहते, जब भी हक़ीकत की निशानियाँ अपने चारो तरफ देख सकते हैं, और अगर गौर करें तो खुद हमारी हस्ती ही सरतासर निशाने-राह है। व लकद अहसन मनकाल[४]

खल्क़े निशाने-दोस्त तलब मी कुनंद ओ बाज़
अज़ दोस्त ग़ाफ़िल अंद ब चंदीं निशां कि हस्त ![५]

अबुलकलाम

---

१. यूरोपीय नौजागरण २. दलील ३. अंतर्प्रेरणा और आत्मिक ज्ञान ४. जिसने भी कहा है क्या खूब कहा है ५. दुनिया उस दोस्त (ईश्वर) के चिन्हों की तलाश करती है लेकिन जो थोड़े बहुत निशान हैं उनकी तरफ़ ध्यान नहीं देती और अपने दोस्त से ग़ाफ़िल है।

क़िलग्रे-ग्रहमदनगर
५, दिसम्बर, सन् १६४२,

सदीक़े-मुकर्रम

पाँचवे सलीबी[1] हमले की सरगुज़श्त एक फ्रांसीसी मजाहिद Crusader ज़ां द ज्वैन वेल (Jean De Jain Ville) नामी ने बतौर याददाश्त के क़लमबंद की थी। इसके कई अंग्रेजी तर्जुमे शाया हो चुके है। ज्यादा मुतदाविल[2] नुस्खा एवरीमेन्स लायब्रेरी का है।

पाँचवा सलीबी हमला सेंट लुइस (Lewis) शाहे-फ्रांस ने बराहे-रास्त[3] मिसर पर किया था। दिमियात (Demietta) का आरज़ी[4] कब्ज़ा, क़ाहिरा की तरफ़ अिक्दाम[5], साहिले-नील की लड़ाई, सलीबियो की शिकस्त, खुद सेंट लुइस की गिरफ्तारी और ज़रे-फ़िदया[6] के मुआहिदे[7] पर रिहाई, तारीख़ के मशहूर वाक़यात हैं। और अरब मुवर्रिखो[8] ने इनकी तमाम तफसीलात क़लमबंद की है। लुइस रिहाई के बाद अक्का (Acre) आया जो चंद दूसरे साहिली[9] मुक़ामात के साथ सलीबियो के कब्ज़े मे बाक़ी रह गया था, और कई साल तक वहाँ मुक़ीम रहा। ज्वैन वेल ने यह तमाम ज़माना लुइस की हमराही[10] मे बसर किया था। मिसर और अक्का के तमाम अहम[11] वाक़यात उसके चश्मदीद[12] वाक़यात है।

लुइस सन् १२४८ ई. मे फ्रांस से रवाना हुआ। दूसरे साल दिमियात पहुँचा, तीसरे साल अक्का। फिर सन् १२५४ ई. मे फ्रांस वापस हुआ। ये सनीन[13] अगर हिजरी सनीन के मुताबिक किये जाये तो तक़रीबन सन् ६४६ हि. और सन् ६५२ हि. होते है।

ज्वैन वेल जब लुइस के हमराह फ्रांस से रवाना हुआ तो उसकी उम्र चौबीस बरस की थी। लेकिन यह याददाश्त उसने बहुत अर्से के बाद अपनी ज़िंदगी के आखिरी सालो मे लिखी। याने सन् १३०६ ई. (सन् ७०८ हि.) मे जब उसकी उम्र खुद उसकी तसरीह[14] के मुताबिक पचासी बरस की हो चुकी थी और सलीबी हमले के वाक़यात पर निस्फ[15] सदी की मुद्दत गुजर चुकी थी। इस तरह की कोई तसरीह[16] मौजूद नही जिसकी बिना पर ख्याल किया जा सके कि मिसर और फ़िलस्तीन के क़याम के जमाने मे वो अहम वाक़यात कलमबंद कर लिया करता था। पस[17] जो कुछ उसने लिखा है वो पचास बरस से

१. Crusade २. प्रचलित ३. सीधे ४. अस्थायी ५. आगे बढ़ना ६. सरबहा के एवज़ मे धन ७. वचन ८. इतिहासकार ९. तटीय प्रदेश १०. साथ ११. मुख्य १२. आँखो देखे १३. सन का बहुवचन १४. कथन १५. आधा १६. लिखित आधार १७. इसलिये।

पेशतर के हवादिस[1] की एक ऐसी रवायत[2] है जो उसके हाफिज़े ने महफूज़ रख ली थी। बा-ईं[3]-हमा उसके बयानात जहाँ तक वाक़यातें-जग का ताल्लुक है आम तौर पर काबिले-वसूक[4] तसलीम किये गये है।

मुसलमानो के दीनी अकायद व ऐमाल और अखलाक व आदात की निस्बत उसकी मालूमात अज-मनए-उस्ता[5] की आम फिरगी मालूमात से चदा[6] मुख्तलिफ नही। ताहम दर्जे का फ़र्क जरूर है। चूकि अब योरप और मशरिक़े-उस्ता[7] के बाहमी ताल्लुकात पर जो सलीबी लडाइयो के साये मे नश्वो नुमा पाते रहे थे तक़रीबन डेढ़ सौ बरस का जमाना गुज़र चुका था और फिलस्तीन के नौ-आबाद सलीबी मुजाहिद अब मुसलमानो को ज्यादा करीब होकर देखने लगे थे। इसलिये क़ुदरती तौर पर ज्वैन वेल के जहनी तास्सुरात[8] की नौइयत उन तास्सुरात की नौइयत से मुख्तलिफ़ दिखाई देती है जो इब्तदाई अहद के सलीबियो के रह चुके है। मुसलमान काफ़िर है, हीदेन (Heathen) है, पेनीम (Paynim) है, पगान (Pagan) है, मसीह के दुश्मन है, ताहम कुछ अच्छी बाते भी उनकी निस्बत खयाल मे लाई जा सकती हैं। और उनके तौर-तरीक़े में तमाम बातें बुरी ही नही है। मिसरी हुकूमत और उसके मुल्की और फ़ौजी निज़ाम के बारे मे उसने जो कुछ लिखा है वो सत्तर फ़ी सदी के क़रीब सही है। लेकिन मुसलमानो के दीनी अकायद व ऐमाल के बयानात मे पच्चीस फ़ी सदी से ज्यादा सिहत[9] नही। पहली मालूमात गालिबन उसकी जाती है, इसलिये सिहत से करीबतर है। दूसरी मालूमात ज्यादातर फ़िलस्तीन के कलीसाई हल्को से हासिल की गई है इसलिये तास्सुब[10] व नफरत पर मबनी[11] है। उस अहद की आम फ़ज़ा देखते हुये यह सूरते-हाल चदां ताज्जुब अंगेज़ नहीं।

एक अर्से के बाद मुझे इस किताब के देखने का यहाँ फिर इत्तिफाक हुआ। एक रफ़ीके-ज़िदां ने एवरी मेन्स लायब्रेरी की कुछ किताबें मँगवाई थी उनमे यह भी आ गई। इस सिलसिले में दो वाकयात खुसूसियत के साथ क़ाबिले-गौर है।

कयामे-अक्का के जमाने मे लुइस ने एक सफीर सुल्ताने-दमिश्क के पास भेजा था जिसके साथ एक शख्स एवे ला ब्रेतां बतौर मुतरज्जिम के गया था। यह शख्स मसीही वाइज़ो के एक हल्के से ताल्लुक रखता था और "मुसलमानों की ज़बान" से वाकिफ़ था। "मुसलमानो की ज़बान" से मक़सूद यकीनन अरबी ज़बान है। ज्वैन वेल इस सफ़ारत[12] का ज़िक्र करते हुये लिखता है :

"जब सफ़ीर[13] अपनी क़यामगाह से सुल्दान (सुल्तान) के महल की तरफ़ जा रहा था तो लाब्रेतां को रास्ते मे एक मुसलमान बुढ़िया औरत मिली।

---

१. घटनाओ की २. कहानी ३. इसके अलावा ४. प्रामाणिक ५. मध्य युग ६. ज्यादा ७. मध्य पूर्व ८. असर, प्रभाव ९. शुद्धता, सचाई १०. धार्मिक पक्षपात ११. आधारित १२. दूत यात्रा १३. दूत।

उसके दहने हाथ में एक बर्तन आग का था, बायें हाथ में पानी की सुराही थी। लाब्रेतां ने उस औरत से पूछा—"ये चीजें क्यों और कहाँ ले जा रही हो?" औरत ने कहा—"मैं चाहती हूँ इस आग से जन्नत को जला दूं और पानी से जहन्नुम की आग बुझा दूं ताकि फिर दोनों का नामो निशां बाक़ी न रहे।" लाब्रेतां ने कहा—"तुम ऐसा क्यो करना चाहती हो?" उसने जवाब दिया—"इसलिये ताकि किसी इंसान के लिये इसका मौका बाक़ी न रहे कि जन्नत के लालच और जहन्नुम के डर से नेक काम करे। फिर वो जो कुछ करेगा सिर्फ़ ख़ुदा की मुहब्बत के लिये करेगा!"

Memoirs of the Crusades 240.

इस रवायत का एक अजीब पहलू यह है कि यही अमल और यही कौल हजरत राबिआ बसरिय्या से मन्कूल[1] है इस वक्त किताबें यहाँ मौजूद नही लेकिन हाफिज़े से मदद लेकर कह सकता हूँ कि कुशैरी, अबू तालिब मक्की, फ़रीदुद्दीन अत्तार साहिबे-अरायिस-उल-मजालिस, साहबे-रूह-उल-बयान और शेरानी सबने यह मकूला नकल किया है और इसे राबिआ-बसरिय्या के फ़ज़ायल[2] मुकामात मे से करार दिया है।

राबिआ बसरिय्या पहले तबके की किबारे-सूफिया[3] में शुमार की गई हैं। दूसरी सदी हिजरी याने आठवी सदी मसीही मे उनका इंतकाल हुआ। उनके हालात मे सब लिखते है कि एक दिन इस आलम में घर से निकली कि एक हाथ में आग का बर्तन था, दूसरे मे पानी का कूजा। लोगों ने पूछा कहाँ जा रही हो। जवाब मे बिजिन्सही[4] वही बात कही जो लाब्रेतां ने दमिश्क की औरत की जबानी नकल की है। "आग से जन्नत को जला देना चाहती हूँ, पानी से दोजख की आग बुझा देनी चाहती हूँ। ताकि दोनों ख़त्म हो जायें और फिर लोग ख़ुदा की इबादत सिर्फ ख़ुदा के लिये करे, जन्नत और दोज़ख़ के तमा[5] ओ खौफ से न करे।" कुदरती तौर पर यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि दूसरी सदी हिजरी की राबिआ बसरिय्या का मकूला किस तरह सातवीं सदी हिजरी की एक औरत की ज़बान पर तारी हो गया जो दमिश्क की सड़क से गुज़र रही थी? यह क्या बात है कि ताबीरे-मुआरिफ[6] की एक खास तमसील (पार्ट) जो पाँच सौ बरस पहले बसरा के एक कूचे मे दिखाई गई थी, बिऐनिहि[7] अब दमिश्क़ की एक शाहराह पर दुहराई जा रही है? क्या यह महज अफ़कार ओ अहवाल का तवारुद[8] है या तकरार और नक़्क़ाली है? या फिर रावी[9] की एक अफ़साना तराशी[10]?

---

१. उद्धृत २. उच्च ३. उच्च सूफी ४. ज्यों की त्यों ५. लालच ७. द्रष्टा की उक्ति ७. ज्यों की त्यों ८. एक ही बात दो दिमागों में ज्यों की त्यों आना ९. वक्ता १०. मनगढंत कहानी।

हर तौजीह[1] के लिये करायन[2] मौजूद हैं और मामला मुख्तलिफ़ भेसों में सामने आता है। (१) यह वो जमाना था जब सलीबी जमायतों की क़ुव्वत फ़िलस्तीन में पाश पाश[3] हो चुकी थी। साहिल की एक छोटी सी धज्जी के सिवा उनके क़ब्जे मे और कुछ बाकी नही रहा था और यहाँ भी अमन और चैन की जिंदगी बसर नहीं कर सकते थे। रात दिन के लगातार हमलों और मुहासरों[4] से पामाल होते रहते थे। लुइस उनकी अमानत[5] के लिए आया लेकिन वो खुद अमानत का मोहताज हो गया। जंगी कुव्वत के इफलास[6] से कहीं ज्यादा उनका इखलाकी इफलास उन्हें तबाह कर रहा था। इब्तदाई अहद का मजनूनाना[7] मजहबी जोश ओ खरोश जो तमाम योरप को बहा ले गया था अब ठंडा पड़ चुका था और उसकी जगह जाती खुदगर्जियाँ और सलीबी हल्काबदियों की बाहमी रकाबतें[8] काम करने लगी थी। पैंदर पैं[9] शिकस्तों और नाकामियों से जब हिम्मतें पस्त हुईं तो अमल मकसद की कशिश भी कमजोर पड गई और बदअमलियों[10] और हवसरानियों[11] का बाजार गर्म हो गया। मजहबी पेशवाओं[12] की हालत उमरा और अवाम[13] से भी बदतर थी। दीनदारी के इखलास[14] की जगह रियाकारी[15] और नुमायश[16] उनका सरमायये-पेशवाई था। ऐसे अफराद[17] बहुत कम थे जो वाकई मुखलिस[18] और पाक अमल हों।

जब उस अहद के मुसलमानों की जिंदगी से इस सूरते-हाल का मुकाबला किया जाता था तो मसीही जिंदगी की मजहबी और अखलाकी पस्ती और ज्यादा नुमायाँ होने लगती थी। मुसलमान अब सलीबियों के हमसाये में थे और इल्तवाये-जंग[19] के बड़े बड़े वक्फों[20] ने बाहमी मेल-जोल के दरवाजे दोनों पर खोल दिये थे। सलीबियों मे जो लोग पढे लिखे थे उनमे से बाज ने शामी ईसाइयों की मदद से मुसल्मानों की जबान भी सीख ली थी और उनके मजहबी और अखलाकी अफकार ओ अकायद से वाकफियत पैदा करने लगे थे। कलीसाई वाइजों[21] के जो हल्के यहाँ काम कर रहे थे उनमे भी बाज मुतजस्सिस[22] तबीयतें ऐसी पैदा हो गई थी जो मुसलमान आलिमों और सूफियों से मिलती और दीनी और अखलाकी मसायल पर मजाकिरे[23] करती। उस

---

१. व्याख्या २. अनुमान ३. खंड खंड ४. सेना का घेरा ५. मदद ६. कमी ७. पागलों का सा ८. शत्रुतायें ९. लगातार १०. दुराचार ११. लोभ, लालच १२. मुखिया १३. सर्व साधारण लोग १४. सच्चा प्रेम १५. ढोंग १६. दिखावा १७. फ़र्द का बहुवचन, व्यक्ति १८. सच्चे प्रेमी १९. युद्ध स्थगन २०. बीच का वक़्त २१. धर्मोपदेशक २२. खोजी, अन्वेषक २३. विचार विनिमय।

अहद के मुतअद्दद[1] आलिमों और सूफियों के हालात मे ऐसी तसरीहात मिलती है कि सलीबी क़िस्सीस[2] और रुहबान[3] उनके पास आये और बाहम दिगर सवाल ओ जवाब हुए। बाज़ मुसलमान उलमा जो सलीबियों के हाथ गिरफ़्तार हो गये थे, अर्से तक उनमें रहे और उनके मज़हबी पेशवाओ से मजहबी मबाहिसे किये। शैख़ सादी शीराजी को इसी अहद मे सलीबियों ने गिरफ्तार कर लिया था और उन्हे अर्से तक तराब्लिस मे गिरफ्तारी के दिन काटने पड़े थे।

इस सूरते-हाल का लाज़मी नतीजा यह था कि सलीबियों में जो लोग मुख़लिस और असर पिज़ीर तबीयते रखते थे वो अपने गिरोह की हालत का मुसलमानों की हालत से मुकाबला करते, वो मुसलमानो का मजहबी और अखलाकी तफव्वुक[4] दिखाकर ईसाइयो को गैरत[5] दिलाते कि अपनी नफ़्स परस्तियों[6] और बदअमलियों[7] से बाज़ आये और मुसलमानो की दीनदाराना[8] जिंदगी से इबरत[9] पकडे। चुनाचे ख्वुद ज्वैन वेल की सरगुज़श्त में जा बजा इस जहनी इफिआल[10] की झलक उभरती रहती हे। मुतअद्दद मुकाम ऐसे मिलते हैं जहाँ वो मुसलमानो की ज़बानी इस तरह के अकवाल[11] नक्ल करता हे जिससे ईसाइयो के लिये इबरत और तनब्बुह[12] का पहलू निकलता है। इसी दमिश्क की सफारिशात के सिलसिले में उसने जॉन दी आरमीनियन (John the Armenian) के सफरे-दमिश्क का एक वाक़या नकल किया है। यह शख़्स दमिश्क इसलिये गया था कि कमानें बनाने के लिए सींग और सरेश खरीद करे। वो कहता है कि मुझे दमिश्क मे एक उम्र रसीदा मुसलमान मिला जिसने मेरी वज़ा कता[13] देखकर पूछा: "क्या तुम मसीही हो?" मैंने कहा—हाँ। मुसलमान शैख ने कहा: "तुम मसीही आपस मे एक दूसरे से अब नफरत करने लगे हो इसीलिये ज़लील[14] ओ ख्वार हो रहे हो। एक ज़माना वो था जब मैंने यरूशलम के सलीबी बादशाह बाल्डविन (Baldwin) को देखा था। वो कोढ़ी था और उसके साथ मुसल्लह आदमी सिर्फ तीन सौ थे। फिर भी उसने अपने जोश ओ हिम्मत से सालादीन (सलाह उद्दीन) को परेशान कर दिया था। लेकिन अब तुम अपने गुनाहो की बदौलत इतने गिर चुके हो कि हम जंगली जानवरों की तरह तुम्हे रात दिन शिकार करते रहते हैं।"

पस मुमकिन है कि लाब्रेतॉं ऐसे ही लोगों मे से हों जिन्हे मुसलमान सूफ़ियों के ऐमाल ओ अकवाल से यकगूना[15] वाकफियत हासिल हो गई हो और

---

१. कई २. पादरी ३. राहिब, ईसाई साधु सन्यासी ४. विशेषता, उच्चता ५. स्वाभिमान ६. स्वार्थांधता ७. दुराचार ८. धार्मिक ९. शिक्षा १०. पश्चाताप ११. क़ौल का बहुवचन अकवाल, उक्ति १२. आगाही, चेतावनी १३. रंग ढंग १४. पतित १५. थोड़ी सी।

वो वक़्त के हर मामले को ईसाइयों की इबरत पिज़ीरी के लिये काम में लाना चाहता हो। लाब्रेता की निस्बत हमे बताया गया है कि मसीही वाइज़ों के हल्के से वाबस्तगी[1] रखता था और अरबी ज़बान से वाकिफ़ था। कुछ बईद[2] नही कि उसे उन ख़यालात से वाकफियत का मौका मिला हो जो उस अहद के तालीम याफ़्ता मुसलमानों में आम तौर पर पाये जाते थे। चूंकि राबिआ-बसरिय्या का यह मकूला आम तौर पर मशहूर था और मुसलमानों के मेलजोल से उसके इल्म मे आ चुका था इसलिये सफरे-दमिश्क के मौके से फ़ायदा उठाकर उसने एक इबरत अंगेज कहानी गढ ली। मकसूद यह था कि ईसाइयो को दीन के इखलासे-अमल[3] की तरगीब[4] दिलाई जाये और दिखाया जाये कि मुसलमानों में एक बुढिया औरत के इखलासे-अमल का जो दर्जा है, वो उस तक भी नहीं पहुँच सकते।

यह भी मुमकिन है कि खुद ज्वैनवेल के इल्म मे यह मकूला आया हो और उसने लाब्रेतां की तरफ मसूब[5] करके इसे दमिश्क के एक बरवक़्त वाकये की शक्ल दे दी हो।

हमें मालूम है कि उन्नीसवी सदी के नक्कादों[6] ने ज्वैनवेल को सलीबी अहद का एक सिकह्[7] रावी[8] करार दिया है। इसमे भी शक नही कि वो बज़ाहिर एक दीनदार और मुख्लिस मसीही था, जैसा कि उसकी तहरीर से जाबजा मुतरश्शह्[9] होता है। ताहम यह जरूरी नही कि एक दीनदार रावी मे दीनी और अखलाकी अगराज़[10] से मुफीद मकसद रवायतें गढने की इस्तैदाद[11] न रही हो। फने-रवायत की गहराइयो का कुछ अजीब हाल है। नेक से नेक इंसान भी बाज़ औकात जाल ओ सनाअत[12] के तकाजो से अपनी निगरानी नही कर सकते। वो इस धोके मे पड जाते है कि अगर किसी नेक मकसद के लिये एक मसलहत आमेज़ जाली रवायत गढ ली जाये तो कोई बुराई की बात नही। मसीही मजहब के इब्तदाई अहदों मे जिन लोगो ने हवारियों के नाम से तरह तरह के नविश्ते[13] गढ़े थे और जिन्हे आगे चल कर कलीसा ने ग़ैर मारूफ ओ मदफून (Apocrypha) नविश्तो में शुमार किया था वो यकीनन बडे ही दीनदार और मुकद्दस आदमी थे। ताहम यह दीनदारी उन्हे इस बात से न रोक सकी कि हवारियो के नाम से जाली नविश्ते तैयार कर ले।

तारीख़े-इस्लाम की इब्तदाई सदियों मे जिन लोगों ने बेशुमार झूठी

---

१. सम्बंध, लगाव २. दूर ३. आचरण की सचाई और शुद्धता ४. प्रेरणा ५. जोड़ कर ६. आलोचकों ने ७. विश्वस्त ८. श्रुतिकार, सुनी हुई बात कहने वाला ९. प्रगट होता है । १०. ग़रज़ का बहुवचन ११. जानकारी १२. गढत १३. लेख।

हदीसें बनाई उनमे एक गिरोह दीनदार वाइज़ों और मुकद्दस ज़ाहिदों का भी था। वो खयाल करते थे कि लोगों में दीनदारी और नेक अमली का शौक पैदा करने के लिये झूठी हदीसे गढ़ कर सुनाना कोई बुराई की बात नहीं। चुनाचे इमाम अहमद बिन हबल को कहना पड़ा कि हदीस के वाज़िओ[1] में सबसे ज़्यादा खतरनाक गिरोह ऐसे ही लोगों का है।

इस सिलसिले मे यह बात भी पेशे-नज़र रखनी चाहिये कि यह ज़माना यानी सातवी सदी हिजरी का ज़माना सूफ़ियाना अफकार ओ ऐमाल के शुयूअ[2] ओ अहाते का जमाना था। तमाम आलम इस्लामी खुसूसन बिलादे[3] मिस्र ओ शाम मे वक्त की मजहबी ज़िंदगी का आम रुझान तसव्वुफ और तसव्वुफ़ आमेज़ खयालात की तरफ जा रहा था। हर जगह कसरत के साथ खानकाहें[4] बन गई थी। और अवाम और उमरा दोनों की अकादत मदियाँ[5] उन्हे हासिल थी। तसव्वुफ की अक्सर मुतदावल[6] मुसन्निफात[7] तकरीबन उसी सदी और उसके बाद की सदी मे मुदव्वन[8] हुई। हाफिज़ जहबी जिन्होने इस ज़माने में साठ सत्तर बरस बाद अपनी मशहूर तारीख लिखी है, लिखते हैं कि इस अहद के तमाम मुलूक और उमराये-इस्लाम सूफियो के ज़ेरे-असर थे। मकरेज़ी ने तारीखे-मिस्र मे जिन खानकाहो का हाल लिखा है इनकी बडी तादाद तकरीबन इसी अहद की पैदावार है। ऐसी हालत मे यह कोई ताज्जुबअंगेज़ बात नहीं कि जिन सलीबियो को मुसलमानो के खयालात से वाकफियत हासिल करने का मौका मिला हो वो मुसलमान सूफ़ियो के अकबाल पर मुत्तला हो गये हों। क्योंकि वक्त का आम रंग यही था।

(२) यह भी मुमकिन है कि लाब्रेतां ऐसे लोगों मे से हो जिनमें अफ़साना सराई[10] और हिकायतसाज़ी[11] का एक कुदरती तकाज़ा पैदा हो जाता है। ऐसे लोग बगैर किसी मकसद के भी महज़ सामईन[12] का ज़ौक[13] ओ इस्तैजाब[14] हासिल करने के लिये फर्ज़ी वाकयात गढ लिया करते हैं। दुनिया मे फन्ने-रवायत की आधी गलत बयानियाँ रावियो के इसी जज्बये-दास्तांसराई[15] से पैदा हुई। मुसलमानों मे वअ्आज़[16] ओ कस्सास[17] का गिरोह यानी वाइज़ों और किस्सागोयो का गिरोह महज सामईन के इस्तैजाब ओ तवज्जो की तहरीक के लिये सैकड़ों रवायतें बरजस्ता[18] गढ लिया करता था। और फिर

---

१. बनाने या सुनाने वाले २. प्रगट होने का ३. मिस्र और शाम के मुल्क ४. धार्मिक मठ ५. श्रद्धा ६. प्रचलित ७. रचनायें ८. संग्रहीत ९. वाकिफ़, अभिज्ञ १०. कहानी कहना ११. कहानी गढना १२. श्रोता १३. रुचि १४. ताज्जुब १५. कहानी कहने की भावना १६. धर्मोपदेशक १७. किस्सा कहने वाले १८. तत्काल

वही रवायतें कैदे-किताबत[१] मे आकर एक तरह के नीम तारीखी[२] मवाद की नौइयत पैदा कर लेती थी। मुल्ला मुईन वाइज काशिफी वगैरह की मुसन्निफ़ात ऐसे क़िस्सों से भरी हुई है।

(३) यह भी मुमकिन है कि वाकया सही हो, और उस अहद मे एक ऐसी सूफी औरत मौजूद हो जिसने राबिआ-बसरिय्या वाली बात बतौर नक़ल ओ इत्तिबा[३] के या वाकई अपने इस्तगिराके[४]-हाल की बिना पर दुहरा दी हो।

अफकार ओ अहवाल के अशबाह[५] ओ अमसाल[६] हमेशा मुख्तलिफ़ वक्तों और मुख्तलिफ़ शख्सीयतो मे सर उठाते रहते हैं। और फिक्र ओ नजर के मैदान से कही ज्यादा अहवाल ओ वारदात[७] का मैदान अपनी यकरंगियाँ और हम आहगियाँ[८] रखता है। बहुत मुमकिन है कि सातवी सदी की एक साहबे-हाल[९] औरत की जबान से भी इखलासे-अमल[१०] और इश्के-इलाही की वही ताबीर निकल गई हो जो दूसरी सदी की राबिआ-बसरिय्या की जबान से निकली थी। अफ़सोस है कि यहाँ किताबे मौजूद नही। वरना मुमकिन था कि इस अहद के सूफियाये-दमिश्क के हालात मे कोई सुराग मिल जाता। सातवीं सदी का दमिश्क तसव्वुफ ओ असहाबे-तसव्वुफ[११] का दमिश्क था।

यह याद रहे कि तजकिरो मे एक राबिआ शामिया का भी हाल मिलता है। अगर मेरा हाफिजा गलती नही करता तो जामी ने भी नफ़हात के आखिर मे इनका तर्जुमा लिखा है। लेकिन इनका अहद उससे बहुत पेश्तर का है। उस अहद के शाम मे इनकी मौजूदगी तसव्वुर मे नही लाई जा सकती।

(४) आखिरी इमकानी[१२] सूरत जो सामने आती है वो यह है कि उस अहद मे कोई नुमायश पसंद औरत थी जो बतौर नक्काली के सूफियो का पार्ट दिखाया करती थी, और वो लाबे तां से दो चार हो गई। या यह सुन कर कि अक्का की मसीही सफारत आ रही है, कसदन[१३] उसकी राह मे आ गई। मगर यह सबसे ज्यादा बईद और दूर अज करायन[१४] सूरत है जो जहन मे आ सकती है।

ज्वैन वेल ने एक दूसरा वाकया "दि ओल्ड मैन आफ दि माउण्टैन" की सफ़ारत का नकल किया है। याने कोहिस्ताने-अलमूत के "शेख अलजिबाल" की सफ़ारत का। जैसा कि आपको मालूम है "शेख अलजिबाल" के लक़ब से पहले हसन बिन सब्बाह मुलक्कब हुआ था। फिर उसका हर जा-

---

१. लिपि बद्ध २. अर्ध-ऐतिहासिक ३. पैरवी करने के ४. पागलपन ५. सूरतें ६. मिसालें ७. घटनाओं का ८. समानता ९. वेदाती १०. कर्म की सचाई ११. तसव्वुफ वाले १२. विश्वासप्रद १३. जानबूझ कर १४. परिस्थितियों से दूर।

नशीन इसी लक़ब से पुकारा जाने लगा। फ़िर्क़ये-वातिनिया[1] की दावत का यह अजीब ओ ग़रीब निजाम तारीखे-आलम के गरायिबे-हवादिस[2] मे से है। यह बगैर किसी बड़ी फ़ौजी ताकत के तक़रीबन डेढ सौ बरस तक कायम रहा और मग़रिबी एशिया की तमाम ताकतो को इसकी हौलनाकी के आगे झुकना पड़ा। उसने यह इक़्तिदार[3] फ़ौज और ममलिकत के ज़रिये हासिल नहीं किया था। बल्कि सिर्फ जाफ़रोश फ़िदाइयों[4] के बेपनाह कातिलाना हमले थे जिन्होंने उसे एक नाक़ाबिले-तसखीर[5] ताकत की हैसियत दे दी थी। वक्त का कोई बादशाह, कोई वज़ीर, कोई अमीर, कोई सरबरआवुर्दा[6] इंसान ऐसा न था जिसके पास उसका पुर असरार[7] खंजर न पहुँच जाता हो। उस खंजर का पहुँचना इस बात की अलामत[8] थी कि अगर शैख अलजिबाल की फरमाइश की तामील नही की जायेगी तो बिला ताम्मुल[9] कत्ल कर दिये जाओगे। ये फ़िदाई तमाम शहरो मे फैले हुये थे। वो साये की तरह पीछा करते और आसेब[10] की तरह महफ़ूज से महफ़ूज गोशो मे पहुँच जाते।

सलीबी जंग आज़माओ का भी उनसे साबिका पड़ा। कई टेम्पलर (Templar) और हास्पिटलर (Hospitaller) फिदाइयों के खंजरो का निशान बने और बिल आखिर मजबूर हो गये कि शैख उलजिबाल की फरमाइशों की तामील कर। यरूशलम (बैतउल-मुकद्दस) जब सलीबियों ने फतह किया था और बाल्डविन तख्त नशीन हुआ था तो उसे भी एक सालाना रकम बतौर नज़र के अस्तमूत भेजनी पड़ी थी। फ्रेडरिक सानी[11] जब सन् १२२६ ई० मे सुल्ताने मिस्र की इजाज़त लेकर यरूशलम की ज़ियारत[12] के लिये आया तो उसने भी अपना एक सफीर गरांकदर[13] तोहफो के साथ शैख उलजिबाल के पास भेजा था। योरप मे किलअ-अस्तमून के अजायब की हिकायतें इन्ही सलीबियो के ज़रिये फैली जो बाद की मुसन्निफात मे हमें तरह तरह के नामो से मिलती है। उन्नीसवी सदी के बाज अफसानानिगारो ने इसी मवाद[14] से अपने अफसानो की नक़्शआराइयाँ की, और बाज़ इस धोके में पड़ गये कि शैख उलजिबाल से मकसूद कोहिस्ताने-शाम का कोई पुर असरार शैख था जिसका सदर मुकाम लबनान था!

ज्वैन वेल लिखता है :

"अक्का में पादशाह (लुइस) के पास कोहिस्तान के "ओल्ड मेन" के एलची आये। एक अमीर उम्दा लिबास मे मलबूस[15] आगे था, और एक खुश-पोश नौजवान उसके पीछे। नौजवान की मुट्ठी मे तीन छुरियाँ थी जिनके फल

१. गुप्त संस्था २. विचित्र घटना ३. ताकत, शक्ति ४. जान देने वाले ५. अनउपेक्षणीय ६. प्रतिष्ठित ७. रहस्यभरा ८. निशानी ९. वेझिझक १०. भूत ११. द्वितीय १२. यात्रा १३. बहुमूल्य १४. सामग्री १५. भेष में।

एक दूसरे के दस्ते में पैवस्त[1] थे। ये छुरियाँ इस गरज से थी कि अगर पादशाह अमीर की पेशकर्दा तजवीज़ मंजूर न करे तो इन्हे बतौर मुकाबले की अलामत के पेश कर दिया जाये। नौजवान के पीछे एक दूसरा नौजवान था। उसके बाजू पर एक चादर लिपटी हुई थी। यह इस गरज से थी कि अगर बादशाह सफ़ारत का मुतालबा[2] मंजूर करने से इंकार कर दे तो यह चादर उसके कफ़न के लिये पेश कर दी जाये। (याने उसे मुतनब्बा[3] कर दिया जाये कि अब उसकी मौत नागुजीर[4] है)"

"अमीर ने बादशाह से कहा — मेरे आका[5] ने मुझे इसलिये भेजा है कि मैं आप से पूछूं, आप उन्हे जानते हैं या नही ? बादशाह ने कहा मैंने उनका ज़िक्र सुना है। अमीर ने कहा – फिर यह क्या बात है कि आपने इस वक़्त तक उन्हे अपने खज़ाने के बेहतरीन तोहफे नही भेजे, जिस तरह जरमनी के शहंशाह हंगरी के पादशाह, "बाबिल" के सुल्दान (सुल्तान) और दूसरे सलातीन उन्हें साल बसाल भेजते रहते हैं ? इन तमाम पादशाहों को अच्छी तरह मालूम है कि उनकी जिंदगियाँ मेरे आका की मर्जी पर मौकूफ है। वो जब चाहे उनकी ज़िंदगियों का खात्मा करा दे सकता है।"

इस मकालमे[6] मे शाहंशाहे-जरमनी और शाहे-हंगरी के साल बसाल तहायिफ[7] ओ नुज़ूर[8] का हवाला दिया गया हैं। इससे मालूम होता है कि उन्होंने सिर्फ एक ही मर्तबा अपने जमानये-वरूदे-फिलस्तीन[9] मे तोहफे नही भेजे थे बल्कि हर साल भेजते रहे थे। "सुल्दाने-बाबिल" से मकसूद सुल्ताने-मिस्र है। क्योंकि सलीबी जमाने के फिरंगी आम तौर पर काहरा को "बाबिल" के नाम से पुकारते थे और ख़याल करते थे कि जिस बाबिल का ज़िक्र कुतुबे-मुकद्दसा[10] में आया है, वो यही शहर है। चुनाचे इस दौर के तमाम रज़्मिया[11] नज़्मों मे बार-बार "बाबिल" का नाम आता है। एक सलीबी नाइट का सबसे बड़ा कारनामा यह समझा जाता था कि वो काफिरो को रगेदता हुआ ऐसे मुकाम तक चला गया जहाँ से "बाबिल" के सर बफ़लक[12] मनारे साफ दिखाई देते थे !

इसके बाद ज्वैन वेल लिखता है कि उस ज़माने मे शैख उलजिबाल टम्पल और हास्पिटल को एक सालाना रकम बतौर खिराज[13] के दिया करता था। क्योंकि टम्पलर और हास्पिटलर उसके कातिलाना हमलों से बिल्कुल निडर थे और वो उन्हें कुछ नुकसान नही पहुँचा सकता था। शैख उलजिबाल के सफीर

---

१. घुसे हुये २. तलब ३. सूचित ४. अटल ५. मालिक ६. उक्ति ७. तोहफ़े का बहुवचन ८. नज़र का बहुवचन ९. फ़िलस्तीन मे आने के ज़माने मे १०. पवित्र किताबें, बाइबल वग़ैरह ११. वीर रस प्रधान १२. गगनचुंबी १३. कर।

ने कहा—"अगर पादशाह मेरे आक़ा की फ़रमाइश की तामील नहीं करनी चाहता तो फिर यही करे कि जो खिराज टम्पल को अदा किया जाता है, उससे मेरे आका को बरी अुज्जिम्मा[1] करा दे।" पादशाह ने यह पूरा मामला टम्पलर्स के हवाले कर दिया। टम्पलर्स ने दूसरे दिन सफीर को बुलाया और कहा—"तुम्हारे आका ने यह बड़ी गलती की कि इस तरह का गुस्ताखाना पैगाम पादशाहे-फ्रांस को भेजा। अगर पादशाह के एहतराम[2] से हम मजबूर न होते जिसकी हिफाजत तुम्हें बहैसियत सफीर के हासिल है तो हम तुम्हे पकड़ कर समंदर की मौजों के हवाले कर देते। बहर हाल अब हम तुम्हें हुक्म देते हैं कि यहाँ से फ़ौरन रुखसत हो जाओ और फिर पंद्रह दिन के अंदर अत्तमूत से वापस आओ। लेकिन इस तरह वापस आओ कि हमारे पादशाह के नाम एक दोस्ताना खत और कीमती तहायिफ तुम्हारे साथ हो। इस सूरत मे पादशाह तुम्हारे आका से खुशनूद[3] हो जायेगा और हमेशा के लिये उसकी दोस्ती तुम्हें हासिल हो जायेगी।" चुनाचे सफीर इस हुक्म की तामील मे फौरन रुखसत हो गये और ठीक पंद्रह दिन के अंदर शैख का दोस्ताना खत और कीमती तहायिफ लेकर वापस हुये।

ज्वैन वेल की रवायत का यह हिस्सा महल्ले-नज़र[4] है, और अरब मुवर्रिखों की तसरीहात[5] इसका साथ नहीं देती। हमे मालूम है कि सलीबी जमायतें अपने अरूज[6] ओ इक्तिदार[7] के जमाने मे मजबूर हुई थीं कि अपनी जानो की सलामती के लिये शैख उलजिबाल को नजराने भेजती रहे। हत्ता कि फ्रेडरिक सानी ने भी जरूरी समझा था कि इस तरह की रस्म ओ राह[8] कायम रखे। फिर यह बात किसी तरह समझ मे नही आ सकती कि सन् १६५१ ई. मे जब कि सलीबियों की तमाम ताकत का खात्मा हो चुका था, और फिलस्तीन के चंद साहिली मुकामात मे एक महसूर[9] ओ मकहूर[10] गिरोह की मायूस[11] जिंदगी बसर कर रहे थे क्यो अचानक सूरते-हाल मुन्कलिब हो जाये और शैख उलजिबाल टम्पलरों से खिराज लेने की जगह खिराज देने पर मजबूर हो जाये? इतना ही नहीं बल्कि उन तबाहे-हाल टम्पलरो से इस दर्जे खौफज़दा हो कि उनके हाकिमाना अहकाम की बिला चू ओ चरा तामील कर दे?

जो बात क़रीने-कयास मालूम होती है, वो यह कि टम्पलरो और हास्पिटलरो के ताल्लुकात शैख उलजिबाल से कदीमी थे और इस वाबस्तगी की वजह से हर तरह की साज़-बाज़ उसके कारिंदो के साथ करते रहते थे। शैख उलजि-

---

१. मुक्त २. सम्मान ३. प्रसन्न ४. शंकास्पद ५. व्याख्या ६. उत्कर्ष ७. महानता ८. संबंध ९. घिरे हुये १०. संकटग्रस्त ११. निराश।

बाल ने जब लुइस की आमद का हाल सुना और यह भी सुना कि उसने एक गरांक़दर फ़िदया देकर सुल्ताने-मिस्र की कैद से रिहाई हासिल की है, तो हस्बे-मामूल उसे मरअूब[1] करना चाहा मौर अपने सफीर कातिलाना हमलों के मरमूज़[2] पयामों के साथ भेजे। लुइस को मालूम हो चुका था कि टम्पलरों से शैख के पुराने ताल्लुक़ात हैं। उसने मामला उनके सुपुर्द कर दिया और उन्होंने बीच मे पडकर दोनो के दरम्यान दोस्ताना इलाका कायम करा दिया। फिर तरफैन[3] से तोहफा तहायिफ एक दूसरे को भेजे गये और दोस्ताना ख़त ओ किताबत जारी हो गई। अरब मुवरिंखो की तसरीहात से भी सूरते-हाल का ऐसा ही नक्शा सामने आता है। वो लिखते है कि शैख़ उलजिबाल और सलीबियो के बाहमी ताल्लुक़ात इस दर्जे बढे हुए थे कि सलीबियो ने कई बार उसके फिदाइयो के जरिये बाज़ सलातीने-इस्लाम को कत्ल कराना चाहा था।

लेकिन फिर ज्वैन वेल के बयान की क्या तौजीह की जाये ?

मामला दो हालतों से खाली नही। मुमकिन है कि टम्पलरो ने हकीकते-हाल मखफी रखी हो और शैख उलजिबाल के तर्जे-अमल की तबदीली को अपने फ़र्ज़ी इक्तिदार[4] ओ तहक्कुम[5] की तरफ मंसूब कर दिया हो। इसलिये ज्वैन वेल पर असलियत न खुल सकी और जो कुछ सुना था, याददाश्त मे लिख दिया। फिर मानना पडेगा कि खुद ज्वैन वेल की दीनी और कौमी असबियत[6] बयाने-हकीकत में हायल हो गई। और उसने सलीबियो का गैर मामूली तफव्वुक[7] और इक्तिदार दिखाने के लिये असल वाके को एक क़लम उलट दिया। ज्वैन वेल ने सलीबियों की शिकस्तों की सर गुजश्त जिस बेलाग[8] सफाई के साथ कलम बद की है उसे पेशे-नज़र रखते हुये गालिबन करीने-सवाब[9] पहली ही सूरत होगी।

इस रवायत की कमजोरी इस बात से भी निकलती है कि टम्पलरो की निस्बत बयान किया गया है कि उन्होने सफीरों से कहा — पन्द्रह दिन के अंदर शैख का जवाब लेकर वापस हो। यानी सात दिन जाने मे सर्फ करो, सात दिन वापस आने मे। यह ज़ाहिर है कि उस जमाने मे अक्का और अलमूत की बाहमी मसाफत[10] सात दिन के अंदर तै नहीं की जा सकती थी। मुस्तौफी ने नुजहत-उलकुलूब मे उस अहद की मंजिलों का नक्शा खींचा है। उससे हमे मालूम हो चुका है कि शुमाली ईरान के काफले बैतुलमुकद्दस तक की मसाफत दो माह से कम मे तै नही कर सकते थे और अलमूत तक पहुँचने के लिए तो

---

१. रौब डालना २. सांकेतिक ३. दोनों तरफ से ४. झूठी महानता ५. पराक्रम प्रदर्शन ६. धार्मिक पक्षपात ७. उच्चता ८. निष्पक्ष ९. सत्य के निकट १०. दूरी।

ईरान से भी आगे की मजीद[1] मसाफत तै करनी पडती होगी। हाँ बरीद यानी घोडों की डाक के जरिये कम मुद्दत मे आमद श्रो रफ्त मुमकिन होगी। लेकिन सफीरों का बरीद के जरिये सफर करना मुस्तबग्रद[2] मालूम होता है।

ज्वैन वेल लिखता है कि शैख उलजिबाल ने लुइस को जो तोहफे भेजे थे उनमे बिल्लोर का तराशा हुआ एक हाथी और एक जीराफ (Giraffe) याने जर्राफ भी था। नेज बिल्लोर के सेद और शतरंज के मोहरे थे। यह उसी तरह की बिल्लोरी मसनूआत[3] होगी जिनकी निस्बत बयान किया गया है कि अलमूत का बागे-अहिश्त उनसे आरास्ता किया गया था। बिल्लोरी मसनूआत मगरिबी एशिया मे पहले चीन से आती थी, फिर अरब सन्नाअ[4] भी बनाने लगे।

इसके बाद उस सिफारत का हाल मिलता है जो लुइस ने शैख उलजिबाल के पास भेजी थी। इस सिफारत मे भी हमारा पुराना दोस्त लाब्रेता बतौर मुतरजिम[5] के नुमाया होता है और उसकी जबानी शैख का एक मकालमा नक्ल किया गया है। लेकिन पूरा मकालमा बईद अज क्यास बातों पर मबनी है और काबिले-एतना[6] नही। बाज हिस्से सरीह[7] बनावटी मालूम होते है। या सरतासर गलतफहमियो से वजूदपिजीर[8] हुए हैं। मसलन शैख उलजिबाल ने सेंट पीटर (पितरस) की तक्दीस[9] की और कहा—"हाबेल की रूह नूह मे आई, नूह के बाद इब्राहीम मे, और फिर इब्राहीम से पीटर मे मुन्तकिल हुई, उस वक्त जब कि "खुदा जमीन पर नाजिल[10] हुआ था" (याने हजरत मसीह का जहूर हुआ था!)

मुमकिन है शैख ने यह बात जाहिर करने के लिये कि वो हजरत मसीह का मुन्किर[11] नही है यह कहा हो कि जिस वहिये-इलाही[12] का जहूर पिछले नबियो मे हुआ था, उसी का जहूर हजरत मसीह मे हुआ और लाब्रेता ने उसे दूसरा रंग दे दिया।

ज्वैन वेल शीया सुन्नी इख्तिलाफ[13] से वाकिफ है, लेकिन उसकी तशरीह[14] यों करता है :

"शीया मुहम्मद की शरीयत[15] पर नही चलते, अली की शरीयत पर चलते है। अली मुहम्मद का चचा था। उसी ने मुहम्मद को इज्जत की मसनद पर बिठाया। लेकिन जब मुहम्मद ने कौम की सरदारी हासिल कर ली तो अपने चचा को हिकारत की नजर से देखने लगा और उससे अलग हो गया।

---

१. ज्यादा २. दूर की बात ३. कृत्रिम चीजें, शिल्पवस्तु ४. कारीगर ५. अनुवादक ६. ध्यान देने लायक ७. स्पष्ट ८. सर्जित ९. सम्मान करना १०. अवतरित ११. इंकार करने वाला, अस्वीकार करने वाला १२. ईश्वरीय ज्ञान १३. विरोध १४. व्याख्या, टीका १५. धर्म मार्ग।

यह हाल देखकर अली ने कोशिश की कि जितने आदमी अपने गिर्द जमा कर सकता है जमा कर ले और फिर उन्हे मुहम्मद के दीन के अलावा एक दूसरे दीन की तालीम दे। चुनाचे इस इख्तिलाफ का नतीजा यह निकला कि जो लोग अब अली की शरीयत पर आमिल[1] है वो मुहम्मद के मानने वालो को बेदीन समझते हैं। इसी तरह पैरवाने-मुहम्मद[2] पैरवाने-अली को बेदीन कहते हैं।"

फिर लिखता है : "जब लाअ्रेता शैख उलजिबाल के पास गया तो उसे मालूम हुआ कि शैख मुहम्मद पर ऐतकाद[3] नही रखता, अली की शरीयत मानने वाला है।"

ज्वैन वेल का यह बयान तमामतर उन खयालात से माखूज[4] है जो उस अहद[5] के कलीसाई[6] हल्को मे आम तौर पर फैले हुए थे, और फिर सदियों तक योरप मे नस्लन् बाद नस्लिन्[7] इनकी अशायत[8] होती रही। ये बयानात कितने ही गलत हों ताहम उन बयानात मे तो बहरहाल ग़नीमत है जो सलीबी हमले के इब्तदाई दौर मे हर कलीसाई वाइज़ की जबान पर थे। मसलन यह बयान कि "मोहामत एक सोने का खौफनाक बुत[9] है, जिसकी मुसलमान पूजा करते है। चुनाचे फ्रासीसी और तुलयानी (इटालियन) जबान के कदीम ड्रामों मे त्रवागा (Tervagant) और (Trivigante) मुसलमानो के एक हौलनाक बुत की हैसियत से पेश किया जाता था। यही लफ्ज़ कदीम अंग्रेजी मे आकर ट्रिवेगेंट (Tervagant) बन गया। और अब टरमेगेट (Termagant) ऐसी औरत के लिए बोलने लगे है जो वहशियाना और बेलगाम मिज़ाज रखती हो।

एक सवाल यह पैदा होता है कि यह शैख उलजिबाल कौन था ? यह ज़माना तकरीबन सन् ६४९ हि. का जमाना था। इसके थोडे अर्से बाद तातारियों की ताकत मगरिबी एशिया मे फैली, और उन्होने हमेशा के लिये इस पुर असरार[10] मरकज़[11] का खातमा कर दिया। पस गालिबन यह आखिरी शैख़ उलजिबाल खुद शाह होगा। यहाँ किताबे मौजूद नही इसलिये कतई[12] तौर पर नही लिख सकता।

सलीबी जिहाद ने अज़मिनए-उस्ता[13] के योरप को मशरिके-उस्ता[14] के दोश बदोश[15] खड़ा कर दिया था। योरप उस अहद के मसीही दिमाग की नुमायंदगी[16] करता था, मशरिके-उस्ता मुसलमानों के दिमाग की। और दोनों

---

१. अमल करने वाले २. मुहम्मद के अनुयायी ३. श्रद्धा ४. लिया गया ५. ज़माना ६. ईसाई ७. पीढ़ी दर पीढी ८. प्रचार ९. प्रतिमा १०. भेद भरे, रहस्यमय ११. केन्द्र १२. निश्चित १३. बीच के ज़माने के १४. मध्यपूर्व १५. बराबर, कंधे से कंधा लगाये १६. प्रतिनिधित्व।

की मुत्तक़ाबिल[1] हालत से उनकी मुतज़ाद[2] नौइयतें[3] आश्कारा[4] हो गई थीं। योरप मजहब के मजनूनाना जोश का अलम बरदार[5] था, मुसलमान इल्म ओ दानिश के अलम बरदार थे। योरप दुआओं के हथियार से लडना चाहता था, मुसलमान लोहे और आग के हथियारों से लड़ते थे। योरप का ऐतमाद[6] सिर्फ़ खुदा की मदद पर था, मुसलमानो का भी खुदा की मदद पर था, लेकिन खुदा के पैदा किये हुए सरोसामान पर भी था। एक सिर्फ़ रूहानी कुव्वतो का मौतकिद[7] था, दूसरा रूहानी और माद्दी[8] दोनों का। पहले ने मुअजिज़ों[9] के जहूर का इतजार किया; दूसरे ने नतायजे-अमल[10] के ज़हूर का। मुअजिज़े ज़ाहिर नही हुये, लेकिन नतायजे-अमल ने ज़ाहिर होकर फ़तह ओ शिकस्त का फैसला कर दिया।

ज्वैन वेल की सरगुजश्त मे भी यह मुतज़ाद तकाबुल[11] हर जगह नुमायां है। जब मिसरी फौज ने मिजनीको (Petrays) के ज़रिये आग के बान फेकने शुरू किये तो फ्रासीसी जिनके पास पुराने दस्ती हथियारो के सिवा और कुछ न था बिल्कुल बेबस हो गये। ज्वैन वेल इस सिलसिले मे लिखता है :

"एक रात जब हम उन बुर्जियों पर जो दरिया के रास्ते की हिफाजत के लिये बनाई गई थी, पहरा दे रहे थे तो अचानक क्या देखते है कि मुसलमानो ने एक अंजन जिसे पडेरी (यानी मिजनीक) कहते है लाकर नस्ब[12] कर दिया और उससे हम पर आग फेकने लगे। यह हाल देखकर मेरे लार्ड वाल्टर ने जो एक अच्छा नाइट था हमें यो मुखातिब किया—"इस वक़्त हमारी ज़िंदगी का सबसे बड़ा खतरा पेश आ गया है। क्योकि अगर हमने इन बुर्जियो को न छोड़ा और मुसलमानो ने उनमे आग लगा दी तो हम भी बुर्जियो के साथ जलकर खाक हो जायेगे। लेकिन अगर हम बुर्जियों को छोड़कर निकल जाते है तो फिर हमारी बेइज्ज़ती मे कोई शुबहा नही। क्योकि हम इनकी हिफाजत पर मामूर[13] किये गये थे। ऐसी हालत में खुदा के सिवा कोई नही जो हमारा बचाव कर सके। मेरा मशविरा आप सब लोगों को यह है कि जू ही मुसलमान आग के बान चलाये, हमे चाहिए कि घुटनो के बल झुक जाये और अपने नजात-दिहंदा[14] खुदावंद से दुआ मांगे कि इस मुसीबत मे हमारी मदद करे।" चुनाचे हम सबने ऐसा ही किया। जैसे ही मुसलमानों का पहला बान चला, हम घुटनों के बल झुक गये और दुआ मे मशगूल हो गये। ये बान इतने बड़े

---

१. विरोधी २. भिन्न भिन्न ३. किस्मे ४. प्रगट ५. झंडा उठाने वाला ६. भरोसा ७. श्रद्धालु ८. पार्थिव ९. ईश्वरीय चमत्कार १०. कर्म के परिणाम ११. मुकाबला १२. स्थापित कर दिया १३. तैनात १४. मुक्ति देने वाले।

होते थे जैसे शराब के पीपे, और आग का शोला जो उनसे निकलता था उसकी दुम इतनी लबी होती थी जैसे एक बहुत बडा नेज़ा। जब यह आता तो ऐसी आवाज़ निकलती जैसे बादल गरज रहे हो। उसकी शकल ऐसी दिखाई देती थी जैसे एक आतिशी अज़दहा[1] हवा मे उड रहा है। उसकी रोशनी निहायत तेज़ थी। छावनी के तमाम हिस्से इस तरह उजाले में आ जाते जैसे दिन निकल आया हो।"

इसके बाद खुद लुइस की निस्बत लिखता है :

"हर मर्तबा जब बान छूटने की आवाज़ हमारा वलीसिफ्त[2] पादशाह सुनता था तो बिस्तर से उठ खडा होता था और रोते हुये हाथ उठा उठाकर हमारे नजात दिहदा से इल्तजायें[3] करता। महरबान मौला! मेरे आदमियों की हिफाजत कर! मैं यकीन करता हूँ कि हमारे पादशाह की इन दुआओं ने हमे जरूर फ़ायदा पहुँचाया।"

लेकिन फायदे का यह यकीन खुश ऐतकादाना वहम[4] से ज्यादा न था। क्योंकि बिल आखिर कोई दुआ भी सूदमद[5] न हुई और आग के बानो ने तमाम बुर्जियो को जला कर खाकसार[6] कर दिया!

यह हाल तो तेरहवी सदी मसीही का था। लेकिन चंद सदियो के बाद जब फिर योरप और मशरिक का मुकाबला हुआ, तो अब सूरते-हाल यकसर उलट चुकी थी। अब भी दोनों जमायतो के मुत्तज़ाद खसायस उसी तरह नुमायां थे जिस तरह सलीबी जंग के अहद मे रहे थे। लेकिन इतनी तबदीली के साथ जो दिमागी जगह पहले योरप की थी, वो अब मुसलमानो की हो गई थी, और जो जगह मुसलमानों की थी उसे अब योरप ने इख्तियार कर लिया था।

अठारवी सदी के अवाखिर मे जब नेपोलियन ने मिस्र पर हमला किया तो मुरादबे ने जामे अज़हर के उलमा[7] को जमा करके उनसे मशविरा किया था कि अब क्या करना चाहिये। उलमाये-अज़हर ने बिलइत्तिफ़ाक यह राय दी थी कि जामे अजहर में सहीबुखारी का खत्म शुरू कर देना चाहिये कि ऩिजाहे मकासिद[8] के लिये तीर बहदफ[9] है। चुनाचे ऐसा ही किया गया। लेकिन अभी सही बुख़ारी का खत्म खतम नही हुआ था कि अहराम की लडाई ने मिस्री हुकूमत का खात्मा कर दिया! शेख अबुलरहमान अलजबरती ने इस अहद के चश्मदीद[10] हालात कलमबंद किये हैं और बडे ही इबरत अगेज़[11] हैं। उन्नीसवीं

---

१. आग का अजगर २. धार्मिक प्रकृति का ३. अरदास ४. लुभावना-वहम ५. फ़ायदेमंद ६. राख, भस्म ७. आलिमों को ८. मक़सद की पूर्णता के लिये ९. निशाने पर तीर १०. आँखों देखे ११. नसीहत भरे।

सदी के अवायल मे जब रूसियो ने बुख़ारा का मुहासिरा[1] किया था तो अमीरे बुख़ारा ने हुक्म दिया कि तमाम मदरिसो और मस्जिदो में ख़त्मे-ख्वाजगान पढ़ा जाये। उधर रूसियों की किलाशिकन[2] तोपे शहर का हिसार[3] मुनहदिम[4] कर रही थी, इधर लोग ख़त्मे-ख्वाजगान के हल्को में बैठे "या मुकल्लिबुल-कुलूब या मुहव्विलुल अहवाल"[5] के नारे बुलद कर रहे थे। बिल आखिर वही नतीजा निकला जो एक ऐसे मुक़ाबले का निकलना था — जिसमे एक तरफ़ गोला बारूद हो, दूसरी तरफ ख़त्मे-ख्वाजगान!

दुआये जरूर फायदा पहुँचाती हैं मगर उन्ही को पहुँचाती हैं जो अज़्म ओ हिम्मत[6] रखते है; बेहिम्मतों के लिये तो वो तर्के-अमल[7] और तअत्तुले कुवा[8] का हीला बन जाती है।

ज्वैन वेल ने इस आतिशफिशानी[9] को "यूनानी आग" से ताबीर किया है और इसी नाम से इसकी योरप मे शोहरत हुई। गालिबन इस तस्मिया[10] की वजह यह थी कि जिस मवाद[11] से यह आग भडकती थी वो कुस्तुतुनिया में सलीबियो ने देखा था। और इसलिये उसे यूनानी आग के नाम से पुकारने लगे थे।

आतिशफिशानी के लिये रोगने-नफ़्त याने मिट्टी का तेल काम मे लाया जाता था। मिट्टी के तेल का यह पहला इस्तेमाल है जो अरबो ने किया। अज़रबैजान के तेल के चश्मे उस ज़माने मे भी मशहूर थे। वही से यह तेल शाम और मिस्र मे लाया जाता था। इब्ने फ़ज़लुल्लाह और नुवैरी ने इसके इस्तेमाल का मुफस्सल[12] हाल लिखा है।

आतिशफिशानी के लिये दो तरह की मशीनें काम मे लाई जाती थी। एक तो मिजनीक की क़िस्म की थी जो पत्थरो के फेकने के लिये ईजाद हुई थी। दूसरी एक तरह का आला[13] कमान की शक्ल का था और तोप की बेडियो की तरह ज़मीन मे नस्ब कर दिया जाता था। इसकी मार मिजनीक से भी ज्यादा दूर तक पहुँचती थी। ज्वैल वेल ने पहले को (Petray) से और दूसरे को (Swivel cross bow) से मौसूम[14] किया है। "मिजनीक" का लफ्ज़ उसी यूनानी लफ्ज़ की तारीब[15] है जिससे अंग्रेज़ी का (Mechanic), फ्रासीसी का (Mechanicus) और जरमन का (Mechanikus)

---

१. घेरा डालना २. किला तोड़ने वाली ३. प्राचीर ४. ध्वस्त, नष्ट ५. अय ख़ुदा! दिलों के बदलने वाले और हालात बदलने वाले ६. दृढता और हिम्मत ७. निष्क्रियता ८. निष्क्रियता ९. आग फेकना १०. नाम ११. सामग्री १२. विस्तृत १३. औजार १४. नाम देना १५. किसी शब्द को अरबी बनाना तारीब कहलाता है।

निकला है। यह आला अरबों ने रूसियों और ईरानियों से लिया था। लेकिन दूसरा खुद अरबों की ईजाद था। चुनाचे उसे अरबी मे "मिदफा" कहते थे याने फेकने वाला। यही "मिदफा" बाद को तोप के लिये बोला जाने लगा।

अरबी मे मिट्टी के तेल के लिये "नफ्त" मुस्तअमल[1] हुआ, यही "नफ्त" है जिसने योरप की ज़बानों में Naphthalene और Naphtha वग़ैरह की शक्ल इख़्तियार कर ली है।

अबुलकलाम

---

१. इस्तेमाल।

किलअे-अहमदनगर
१७ दिसंबर सन् १९४२ ई०

सदीके-मुकर्रम

वक्त वही है, मगर अफ़सोस, वो चाय नही है जो तबअे-शोरिशपसंद[1] को सरमस्तियो की और फ़िक्रे-आलम-आशोब[2] को आसूदगियों[3] की दावत दिया करती थी :

फिर देखिये अंदाजे-गुलअफ़सानिये-गुफ़्तार[4]
रख दे कोई पैमानये-सहबा[5] मेरे आगे !

वो चीनी चाय जिसका आदी था, कई दिन हुये खत्म हो गई और अहमदनगर और पूना के बाजारों मे कोई इस जिंसे-गरामाया[6] से आश्ना नही :

यक नालये-मस्ताना ज जाये न शुनीदेम
वीरां शवद आं शहर कि मयखाना नदारद ।[7]

मजबूरन हिन्दुस्तान की उसी स्याह पत्ती का जोशांदा[8] पी रहा हूँ जिसे ताबीर ओ तस्मिया[9] के इस कायदे के बमुजिब कि—

बर अक्स निहंद नामे-जंगी काफ़ूर ![10]

लोग चाय के नाम से पुकारते है और दूध डाल कर इसका गर्म शरबत बनाया करते है।

दरमांदये-सलाह ओ फ़सादेम, अलहजर
जीं रस्महा कि मुर्दुमे-आक़िल निहांदा अंद ![11]

इस कारगाहे-सूद ओ जया[12] की कोई इशरत[13] नही कि किसी हसरत[14] से पैवस्ता[15] न हो। यहाँ जुलाले-साफी[16] का कोई जाम नही भरा गया कि दुर्दे-कुदूरत[17]

१. विक्षुब्ध २. दुनिया को परेशान करने वाली चिंता ३. राहत, चैन ४. वाणी की पुष्प वृष्टि के अदाज ५ अगूरी शराब का प्याला ६ बहुमूल्य वस्तु ७ किसी जगह से एक भी शराबी के शोर ओ गुल की आवाज नहीं सुनी। वह शहर वीरान हो जाये जहाँ कि मयखाना न हो। ८ अर्क ९. वर्णन और नामकरण १० काले हब्शी का नाम उल्टे काफूर (कपूर) रख लेते है। जैसे कि हिन्दी मे कहते है आँख के अधे नाम नैनसुख। ११. इन विद्वानो ने जो तरह तरह की रस्मे डाल दी है उसके कारण अफसोस है कि हम लोग इष्ट और अनिष्ट की दुविधा मे पडे हुये है १२. लाभ हानि की दुनिया १३. ऐश्वर्य १४. पश्चाताप १५. संबद्ध १६. निर्मल जीवनामृत १७ मैल की गाद।

अपनी तह में न रखता हो । बादये-कामरानी[1] के तआक्कुब[2] में हमेशा खुमारे-नाकामी[3] लगा रहा, और खदये-बहार[4] के पीछे हमेशा गिरियये-खिजा[5] का शीवन[6] बरपा हुआ । अबुलफजल क्या खूब कह गया है—कदहे पुर नशुद कि तिही न करदंद,—सफहा तमाम न शुद कि वरक बर नगरदीद[7]

नेकू न बुवद हेच मुरादे ब कमाल
चुं सफ़हा तमाम शुद वरक़ बर गरदद ![8]

उम्मीद है, कि आपकी "अयरी" चाय का जखीरा जिसका एक मर्तबा रमजान में आपने जिक्र किया था, इस नायाबी[9] की गजद[10] से महफूज[11] होगा :

उम्मीद कि चुं बंदा तुनुक माया न बाशी
मय खुरदने-हर रोजा ज़ आदाते-किराम स्त[12]

मालूम नही कभी इस ममले के हकायक[13] व मआरिफ[14] पर भी आपकी तवज्जो[15] मबजूल[16] हुई है या नही ? अपनी हालत क्या बयान करूं ? वाकया यह है कि वक्त के बहुत से मसायल की तरह इस मामले में भी तबीयत कभी सवादे-आजम[17] के मसलक[18] से मुत्तफिक[19] न हो सकी । जमाने की बेराह-रवियों[20] का हमेशा मातमगुसार[21] रहना पड़ा :

अजां कि पैरवीये-खल्क़ गुमरही आरद
न मीरवेम ब राहे कि कारवां रफ़्ता स्त[22]

चाय के बाब[23] मे अब्नाये-जमाने[24] से मेरा इख्तिलाफ[25] सिर्फ शाखों और पत्तों के मामले ही मे नही हुआ कि मुफाहिमत[26] की सूरत निकल सकती ।बल्कि सिरे से जड़ मे हुआ । यानी इख्तिलाफ फरअ[27] का नही असलुल उसूल[28] का है :

---

१. सफलता की शराब २ पीछे ३. असफलता की अलसता ४. बसंत की हँसी ५. पतझड के आँसू ६. रोना धोना ७. कोई प्याला नहीं भरा गया कि खाली न किया गया हो, और कोई पृष्ठ पूरा नही हुआ कि पन्ना न उलट दिया गया हो । ८. किसी इच्छा का पूर्ण हो जाना अच्छा नही होता क्योंकि जब पृष्ठ पूरा हो जाता है तो पन्ना उलट जाता है । ६. अप्राप्यता १०. मुसीबत ११. सुरक्षित १२. तू मेरी तरह कम पूजी वाला न हो यही आशा है, रोज़ शराब पीना यह गुरुजनों की आदतें है । १३. सूक्ष्मता १४. साक्षात्कार या ज्ञान का स्तर १५. ध्यान १६. लगना, आकर्षित १७. बहुमत majority १८. रास्ता १६. सहमत २०. कुमार्ग गामिता २१. शोक संतप्त २२. इसलिये कि दुनिया के मार्ग पर चलने से गुमराही का परिणाम निकलता है मैं उस मार्ग से नही जाता जिस मार्ग से कि कारवां गुज़र गया है । २३. अध्याय २४. जमाने के लोगों से २५. विरोध २६. समझौता २७. शाखा २८. जडों की जड़ याने मूल सिद्धान्त ।

दहन[1] का जिक्र क्या, यां सर ही गायब है गरेबां से !

सबसे पहला सवाल चाय के बारे में खुद चाय का पैदा होता है। मैं चाय को चाय के लिये पीता हूँ, लोग शकर ओ दूध के लिये पीते है। मेरे लिये वो मकासिद[2] में दाखिल हुई, उनके लिये वसायल[3] में। गौर फ़रमाइये मेरा रुख किस तरफ है और जमाना किधर जा रहा है ?

तू व तूबा ओ मा ब क़ामते-यार
फ़िक्रे-हर कस बक़द्रे-हिम्मते-ऊ स्त ![4]

चाय चीन की पैदावार है और चीनियो की तसरीह[5] के मुताबिक पद्रह सौ बरस से इस्तेमाल की जा रही है। लेकिन वहाँ कभी किसी के खयाल मे भी यह बात नही गुजरी कि इस जौहरे-लतीफ[6] को दूध की कसाफत[7] से आलूदा[8] किया जा सकता है। जिन-जिन मुल्कों मे चीन से बराहे-रास्त[9] गई, मसलन रूस, तुर्किस्तान, ईरान वहाँ भी किसी को यह खयाल नही गुज़रा। मगर सतरहवी सदी मे जब अग्रेज इससे आश्ना हुये तो नही मालूम उन लोगो को क्या सूझी, उन्होने दूध मिलाने की बिदात[10] ईजाद की। और चूंकि हिन्दुस्तान मे चाय का रिवाज उन्ही के जरिये हुआ इसलिये यह बिदाते-सैयआ[11] यहाँ भी फैल गई। रफ्ता रफ्ता मामला यहाँ तक पहुँच गया कि लोग चाय में दूध डालने की जगह दूध मे चाय डालने लगे। बुनियादे-जुल्म दर जहां अदक बूद, हर कि आमद बर आ मजीद कर्द[12]। अब अग्रेज तो यह कह कर अलग हो गये कि ज्यादा दूध नही डालना चाहिये। लेकिन उनके तुख्मे-फसाद[13] ने जो बर्ग[14] ओ बार फैला दिये है, उन्हे कौन छांट सकता है ? लोग चाय की जगह एक तरह का सय्याल[15] हलवा बनाते है, खाने की जगह पीते है और खुश होते है कि हमने चाय पी ली। इन नादानो से कौन कहे कि .

हाय कमबख़्त तूने पी ही नहीं !

फिर एक बुनियादी सवाल चाय की नौइयत[16] का भी है। और इस बारे मे भी एक अजीब आलमगीर[17] गलतफहमी फैल गई है। किस किस से

---

१ मुंह २ साध्य ३ साधन ४ तेरा खयाल स्वर्गके वृक्ष तूबा की तरफ है और मेरा प्रियतम के कद की तरफ, प्रत्येक व्यक्ति का खयाल उसकी हिम्मत के मुताबिक होता है। ५. व्याख्या, टीका ६. नाजुक चीज़ ७. मैल ८ मलिन ९ सीधी १० मज़हब मे कोई नई बात पैदा करने को बिदात कहते है। ११. बुरी बिदात १२. दुनिया में जुर्म की बुनियाद बहुत थोड़ी थी लेकिन जो आया उसने उसे ज्यादा किया। १३. झगड़े का बीज १४. पत्ते १५. तरल बहना हुआ १६. किस्म १७. विश्वव्यापी।

झगड़िये और किस किस को समझाइये।

रोज़ ओ शब अर्बदा बा खल्क़े-खुदा न तवां कर्द ![1]

आम तौर पर लोग एक खास तरह की पत्ती जो हिन्दुस्तान और सीलोन में पैदा होती है, समझते है चाय है। और फिर उसकी मुख्तलिफ किस्में करके एक को दूसरी पर तरजीह[2] देते है और इस तरजीह के बारे मे बाहम रद्द ओ कद[3] करते है। एक गिरोह कहता है सीलोन की चाय बेहतर है, दूसरा कहता है दार्जिलिंग की बेहतर है। गोया यह भी वो मामला हुआ कि :

दर रहे-इश्क़ न शुद कस ब यक़ीं महरमे-राज़
हर कसे बर हस्बे-फ़हम गुमाने दारद ![4]

हालांकि इन फ़रेबखुर्दगाने[5]-रग ओ बू को कौन समझाये कि जिस चीज़ पर झगड़ रहे है, वो सिरे मे चाय है ही नही :

चुं न दीदंद हक़ीक़त रहे-अफ़साना ज़दंद ![6]

दर असल यह आलमगीर गलती इस तरह पैदा हुई कि उन्नीसवीं सदी के अवायल[7] मे जब चाय की माँग हर तरफ बढ रही थी हिन्दुस्तान के बाज़ अंग्रेज काश्तकारों को खयाल हुआ कि सीलोन और हिन्दुस्तान के बुलंद और मरतूब मुकामात मे चाय की काश्त का तजरुबा करें। उन्होने चीन से चाय के पौदे मँगाये और यहाँ काश्त शुरू की। यहाँ की मिट्टी ने चाय पैदा करने से तो इंकार कर दिया मगर तकरीबन इसी शक्ल ओ सूरत की एक दूसरी चीज़ पैदा कर दी। इन जयाकारों[9] ने इसीका नाम चाय रख दिया और इस गरज से कि असली चाय से मुमताज[10] रहे, इसे काली चाय के नाम से पुकारने लगे :

ग़लतीहाये - मज़ामीन मत पूछ
लोग नाले को रसा बाँधते है

दुनिया जो इस जुस्तजू मे थी कि किसी न किसी तरह यह जिसे-कमयाब अरज़ां[11] हो, बेसमझे बूझे इसी पर टूट पडी, और फिर तो गोया पूरी नौए-इसानी[12] ने इस फ़रेबखुर्दगी पर इजमा[13] कर लिया। अब आप हज़ार सर पीटिये सुनता कौन है :

---

१. रात दिन दुनिया के लोगों मे झगड़ा नही कर सकते २. प्रधानता ३. लड़झगड़ ४. इश्क की राह मे विश्वासपूर्वक कोई भी रहस्य का जानने वाला नहीं हुआ, प्रत्येक अपनी जानकारी और समझ के मुताबिक गुमान रखता है। ५. रग और महक से छले हुये ६. जब हकीक़त का इल्म नही होता तो किस्से और कहानियाँ गढ लेने है ७. प्रारंभ ८. आर्द्रनम ९. बदकार १०. विशिष्ट ११. सस्ती १२. मानव जाति १३. सबकी एक राय होना, सहमति।

उसी की सी कहने लगे अहले-महशर[1]
कहीं पुरसिशे - दादख़्वाहां[2] नहीं !

मामले का सबसे दर्दअंगेज पहलू यह है कि खुद चीन के बाज साहिली[3] बाशिंदे भी इस आलमगीर फरेब की लपेट मे आ गये और इसी पत्ती को चाय समझ कर पीने लगे। यह वही बात हुई कि बदख्शानियों ने लाल पत्थर को लाल समझा, और कश्मीरियो ने रंगी हुई घास को जाफरान समझ कर अपनी दस्तारें रँगनी शुरू कर दी :

चु कुफ़् अज़ काबा बरख़ेज़द कुजा मानद मुसलमानी ![4]

नौए-इमानी की अक्सरियत[5] के फैसलो का हमेशा ऐसा ही हाल रहा है। जमीय्यते-बशरी[6] की यह फितरत है कि हमेशा अक्लमंद आदमी इक्का दुक्का होगा, भीड़ बेवकूफो की ही रहेगी। मानने पर आयेगे तो गाय को खुदा मान लेंगे, इंकार पर आयेगे तो मसीह को सूली पर चढ़ा देगे। हकीम सनाई जिंदगी भर मातम करता रहा :

गाव रा दारंद बावर दर ख़ुदाई आमियां
नूह रा बावर न दारंद अज़ पये पैग़ंबरी ![7]

इसीलिये उर्फाये-तरीक को कहना पड़ा :

इंकारिये - ख़ल्क़ बाश, तस्दीक़ ईनस्त
मशग़ूल ब ख़ेश बाश, तौफ़ीक़ ईनस्त
तबग्रिय्यते ख़ल्क़ अज़ हक़्क़त बातिल कर्द
तर्के - तक़लीद गीर, तहक़ीक़ ईनस्त[9]

यह तो उसूल की बहस हुई, अब फ़रूअ[10] मे आइये। यहाँ भी कोई गोशा नही जहाँ ज़मीन हमवार मिले। सबसे अहम मसला शकर का है। मिक़दार[11] के लिहाज़ से भी और नौइयत के लिहाज़ से भी :

---

१. क़यामत के दिन खुदा के सामने सब जमा होते है उन्हे अहले-मशहर कहते है। २. न्याय चाहने वालो की पूछ ३. तटीय ४. जब कुफ़् काबे से उठने लगा तो फिर मुसलमानी कहाँ रही ५. बहुमत ६. लोगो की भीड़ ७. जाहिल और मूर्ख लोग गाय पर भी भरोसा करते है और उसे खुदा मान लेते है, और नूह के पैगंबर होने पर भी विश्वास नही करते। ८. ईश्वर का साक्षात्कार करने वाले धार्मिक लोग ९. दुनिया की बातों को अस्वीकार करो सचाई यही है और अपने आप मे लीन और प्रवृत्त रहो ईश्वर कृपा यही है। दुनिया के अनुकरण ने तुझे सचाई से झुठला दिया है, अनुकरण का त्याग कर सचाई और हक़ीक़त यही है १०. भेदों में ११. परिमाण।

दर्दा कि तबीब सब्र मीफ़रमायद
वीं नफ़्से हरीस रा शकर मीबायद ![1]

जहाँ तक मिकदार का ताल्लुक है, इसे मेरी महरूमी[2] समझिये या तल्ख-कामी[3] कि मुझे मिठास के जौक[4] का बहुत कम हिस्सा मिला है । न सिर्फ चाय मे बल्कि किसी चीज मे भी ज्यादा मिठास गवारा नही कर सकता । दुनिया के लिये जो चीज़ मिठास हुई वही मेरे लिये बदमजगी हो गई । खाता हूँ तो मुंह का मजा बिगड जाता है । लोगो को जो लज्जत मिठास मे मिलती है, मुझे नमक मे मिलती है । खाने मे नमक पडा हो मगर मै ऊपर से और छिड़क दूंगा । मैं सबाहत[5] का नही, मलाहत का कतील[6] हूँ :

वलिन्नासि फ़ीमा या शिकून मज़ाहिबु[7]

गोया कह सकता हूँ कि — "अखि युसुफ ! असबहु व अना अमलहु मिनहु[8]

गर नुक्तादाने-इश्क़ी, खुशबिशनौ ईं हिकायत ![9]

इस हदीस के तजकिरे ने याराने-कसस[10] व मवाइज[11] की वो खानासाज[12] रवायत याद दिला दी कि — "अलईमानु हुल्वुन् वलमोमिनु युहिब्बुल हलवा[13]" लेकिन अगर मदारिजे-ईमानी[14] के हुसूल और मरातिबे ईकानी[15] की तकमील का यही मैयार[16] ठहरा तो नही मालूम उन तिहीदस्ताने-नक्दे-हलावत[17] का क्या हश्र होने वाला है, जिनकी मुहब्बते-हलावत की सारी पूंजी चाय की चंद प्यालियों से ज्यादा नही हुई । और उनमे भी कम शकर पडी हुई, और फिर इस कम शकर पर भी तास्सुफ[18] कि न होती तो बेहतर था । हा, मौलाना शिब्ली मरहूम का बेहतरीन शेर याद आ गया :

दो दिल बूदन दरीं रह सख्ततर ऐबे स्त सालिकरा
खजिल हस्तम ज कुफ्रे खुद कि दारद बूये ईमां हम ![19]

---

१. अफसोस कि वैद्य तो सब्र और परहेज करने को कहते हैं और इस लालची जी को शकर चाहिये २. वचना ३. कटु स्वाद को पसद करना ४. रुचि ५. सबाहत गौर वर्ण को और मलाहत साँवलेपन को कहते है इसे हिन्दी मे लावण्य कहते है और लावण्य लवण याने नमक से संबधित है । ६. मारा हुआ ७. लोगो की पसद अलग-अलग होती है । ८. मेरा भाई यूसफ़ गोरा चिट्टा जरूर है मगर मैं उससे ज्यादा नमकीन हूँ । ९. अगर तू इश्क का पारखी है तो यह कहानी अच्छी तरह सुन १०. कहानीकार ११. उपदेश १२. घर की बनी १३ ईमान मीठा है और मोमिन को मिठास पसंद है १४. ईमान के दर्जे १५ निष्ठा के पद की पूर्णता १६. मापदंड १७. मिठास की पूँजी से वंचित १८ अफ़सोस १९. इस प्रेम की राह मे पुजारी के लिये दिल मे दुई रखना सबसे बड़ा दोष है । अपने कुफ्र से शर्मिंदा हूँ कि उसमें ईमान की बू भी है ।

बच्चों का मिठास का शौक जर्बुलमसल[1] है, मगर आपको सुन कर ताज्जुब होगा कि मैं बचपने मे भी मिठास का शायक[2] न था। मेरे साथी मुझे छेड़ा करते थे कि तुझे नीम की पत्तियाँ चबानी चाहिये। और एक मर्तबा पिसी हुई पत्तियाँ खिला भी दी थीं।

इसी बायस[3] से दाया तिफ्ल[4] को अफ़यून[5] देती है
कि ता हो जाये लज्जत-आश्ना[6] तल्खीये-दौरां[7] से !

मैंने यह देख कर कि मिठास का शायक न होना नुक्स समझा जाता है कई बार बतकल्लुफ कोशिश की कि अपने आपको शायक बनाऊँ मगर हर मर्तबा नाकाम रहा। गोया वही चंद्रभान वाली बात हुई कि :

मरा दिले स्त ब कुफ़ आश्ना, कि चंदीं बार
ब काबा बुरदम ओ बाज़श बरहमन आवुर्दम।[8]

बहरहाल यह तो शकर की मिकदार का मसला था, मगर मामला इस पर खत्म कहाँ होता है ?

कोतह नज़र बबीं कि सुख़न मुख़्तसर गिरफ़्त ![9]

एक दकीक सवाल उसकी नौइयत का भी है। आम तौर पर समझा जाता है कि जो शकर हर चीज मे डाली जा सकती है, वही चाय मे भी डालनी चाहिये। इसके लिये किसी खास शकर का एहतिमाम[10] ज़रूरी नहीं चुनांचे बारीक दानो की दोबारा शकर जो पहले जावा और मोरिशस से आती थी और अब हिन्दुस्तान मे बनने लगी है, चाय के लिये भी इस्तेमाल की जाती है हालाकि चाय का मामला दूसरी चीज़ो से बिल्कुल मुख़्तलिफ वाके हुआ है। इसे हलवे पर क़यास[11] नही करना चाहिये। इसका मिजाज इस क़दर लतीफ़[12] और बेमेल है कि कोई चीज भी जो खुद उसी की तरह साफ और लतीफ़ न होगी फौरन इसे मुकद्दर कर देगी। गोया चाय का मामला भी वही हुआ कि :

नसीमे-सुबह जो छू जाय, रंग हो मैला !

यह दोबारा शकर अगरचे साफ़ किये हुये रस से बनती है मगर पूरी तरह साफ नही होती। इस गरज़ से कि मिकदार कम न हो जाये, सफाई के आखिरी

---

१. लोकोक्ति २. प्रेमी ३. वजह से ४. बालक ५. अफ़ीम ६. स्वाद से परिचित ७. दुनिया की कटुता ८. मेरा दिल कुफ़ का प्रेमी है कि कई बार इसे काबे ले गया लेकिन फिर भी उसे ब्राह्मण का ब्राह्मण ही लाया। ९. नज़र की कोताही को देखो कि बात को संक्षिप्त ही लेती है। १०. प्रबंध ११. अनुमान १२. सुकुमार १३. गंदला।

मरातिब[1] छोड़ दिये जाते है। नतीजा यह है कि जू ही इसे चाय मे डालिये, मअ़न उसका ज़ायका मुतासिर[2] और लताफत[3] आलूदा[4] हो जायेगी। अगरचे यह असर हर हाल मे पड़ता है, ताहम दूध के साथ पीजिये तो चंदा[5] महसूस नही होता। क्योकि दूध के ज़ायके की गरानी[6] चाय के ज़ायके पर गालिब[7] आ जाती है और काम चल जाता है। लेकिन सादा चाय पीजिये तो फ़ौरन बोल उठेगी। इसके लिये ऐसी शकर चाहिये जो बिल्लोर की तरह बेमैल और बर्फ की तरह शफ्फाफ[8] हो। ऐसी शकर डलियो की शक्ल मे भी आती है और बड़े दानो की शक्ल मे भी। मै हमेशा बडे दानो की शफ़्फ़ाफ़ शकर काम में लाता हूँ, और उससे वो काम लेता हूँ जो मिर्जा गालिब गुलाब से लिया करते थे।

आसूदा बाद खातिरे-ग़ालिब की खूये-ऊ स्त
आमेख़्तन ब बादये-साफ़ी गुलाबरा[9]

मेरे लिये शकर की नौइयत का यह फर्क वैसा ही महसूस और नुमाया हुआ जैसे शरबत पीने वालो के लिये क़ंद और गुड का फ़र्क हुआ। लेकिन यह अजीब मुसीबत है कि दूसरों को किसी तरह भी महसूस नही करा सकता। जिस किसी से कहा उसने या तो इसे मुबालगे[10] पर महमूल[11] किया, या मेरा वहम ओ तखय्युल समझा। ऐसा मालूम होता है कि या तो मेरे ही मुँह का मजा बिगड़ गया है या दुनिया मे किसी के मुँह का मजा दुरुस्त नही। यह न भूलिये कि वहस चाय के तकल्लुफात[12] मे नही है, उसकी लताफत ओ कैफियत[13] के जौक[14] ओ अहसास मे है। बहुत से लोग चाय के लिये साफ़ डलियाँ और मोटी शकर इस्तेमाल करते है, और योरप में तो ज्यादातर डलियों ही का रिवाज है। मगर यह इसलिये नही किया जाता कि चाय के जायके के लिये यह कोई जरूरी चीज़ हुई, बल्कि महज तकल्लुफ के खयाल से क्योंकि इस तरह की शकर निस्बतन[15] कीमती होती है। आप उन्हे मामूली शकर डाल कर चाय दे दीजिये वे ग़िल ओ गश भी जायेगे और ज़ायके में कोई तबदीली महसूस नही करेगे।

शकर के मामले मे अगर किसी गिरोह को हकीक़त आशना पाया तो वो ईरानी है। अगरचे चाय की नौइयत के बारे मे चंदा जीहिस[16] नही, मगर यह नुक्ता उन्होंने पा लिया है। ईराक और ईरान मे आम तौर पर यह बात नज़र

---

१. दर्जे २. प्रभावित ३ निर्मलता ४. गंदगी मलिन ५. इतना ६. भारीपन ७. छा जाना ८. साफ ९ गालिब का दिल खुश रहे कि उसकी आदत है कि वो साफ शराब मे गुलाब की पत्तियाँ मिलाता है। १०. अतिशयोक्ति ११. आश्रित १२. आडंबर १३. मजा १४. रुचि १५. अपेक्षाकृत १६. जानकार।

आई थी कि चाय के लिये कंद की जुस्तजू में रहते थे और उसे मामूली शकर पर तरजीह देते थे। क्योंकि कंद साफ़ होती है, और वही काम देती है जो मोटे दानों की शकर से लिया जाता है। कह नहीं सकता कि अब वहाँ का क्या हाल है।

और अगर "तुअरफुल अशियाउ ब अजदादिहा[1]" की बिना पर पूछिये कि चाय के मामले में सबसे ज्यादा ख़ीरा मजाक[2] गिरोह कौन हुआ ? तो मैं बिला ताम्मुल[3] अंग्रेजों का नाम लूंगा। यह अजीब बात है कि योरप और अमरीका में चाय इंगलिस्तान की राह से गई, और दुनिया में इसका आलमगीर रिवाज भी बहुत कुछ अंग्रेजों ही का मिन्नतपिज़ीर[4] है। ताहम ये नजदीकाने-बेबसर[5] हकीकते-हाल से इतने दूर जा पड़े कि चाय की हकीकी लताफत ओ कैफ़ियत का ज़ौक उन्हें छू भी नहीं गया। जब इस राह के इमामों[6] का यह हाल है तो उनके मुकल्लिदों[7] का जो हाल होगा, मालूम है।

आश्नारा हाल ईं अस्त, वाये बर बेगानये ![8]

उन्होंने चीन से चाय पीना तो सीख लिया मगर और कुछ सीख न सके। अव्वल तो हिन्दुस्तान और सीलोन की स्याह पत्ती उनके जौके-चायनोशी[9] का मुंतिहाये-कमाल[10] हुआ। फिर कयामत यह है कि उसमें भी ठंडा दूध डालकर उसे यककलम गंदा कर देंगे। मजीद[11] सितमजरीफी[12] देखिये कि इस गंदे मशरूब[13] की मैयारसजियों[14] के लिये माहरीने-फन[15] की एक पूरी फौज मौजूद रहती है। कोई इन ज़याकारों से पूछे कि अगर चायनोशी से मकसूद इन्हीं पत्तियों को गरम पानी में डाल कर पी लेना है तो इसके लिये माहरीने-फन की दकीका सजियों[16] की क्या जरूरत है ? जो पत्ती भी पानी को स्याही मायल कर दे, और एक तेज़ बू पैदा हो जाये, चाय है। और इसमें ठंडे दूध का एक चमचा डालकर काफ़ी मिकदार में गंदगी पैदा कर दी जा सकती है। चाय का एक माहिरे-फ़न भी इससे ज्यादा क्या ख़ाक बतलायेगा ?

है यही कहने को वो भी, और क्या कहने को है ?

अगरचे फ्रांस और बर्रे-आज़म में ज़्यादातर रिवाज काफी का हुआ, ताहम आला तबके के लोग चाय का भी शौक रखते हैं। और उनका जौक

---

१. वस्तु को उससे प्रतिकूल वस्तु से पहचानो २. कुरुचि रखने वाला ३. निस्संकोच ४. कृतज्ञ ५. अंधों के निकटवर्ती ६. अग्रदूत, मुखिया ७. अनुकरणकर्ता ८. परिचितों का यह हाल है तो अपरिचितों पर तो अफ़सोस है ९. चाय पीने की रुचि १०. चरम उत्कर्ष ११. विशेष १२. हँसी की बात १३. पेय १४. कसौटी १५. कला के विशेषज्ञ १६. सूक्ष्म परख।

बहर हाल अंग्रेजो से बदर्जहा[1] बेहतर है। वो ज्यादातर चीनी चाय पीयेंगे। और अगर स्याह चाय पीयेंगे भी तो अकसर हालतों में बगैर दूध के या लीमू की एक काश[2] के साथ जो चाय की लताफ़त को नुकसान नही पहुचाती। बल्कि और निखार देती है। यह लीमू की तरकीब दरअसल रूस, तुर्किस्तान और ईरान से चली। समरक़ंद और बुखारा मे आम दस्तूर है कि चाय का तीसरा फिजान लीमूनी होगा। बाज ईरानी भी दौर का खात्मा लीमूनी ही पर करते हैं। यह कमबख़्त दूध की आफत तो सिर्फ अंग्रेजो की लाई हुई है :

सरे ईं फ़ितना ज जाये स्त कि मन मीदानम ![3]

अब इधर एक और नयी मुसीबत पेश आ गयी है। अब तक तो सिर्फ शकर की आम किस्म ही के इस्तेमाल का रोना था। मगर अब मामला साफ़-साफ़ गुड तक पहुँचने वाला है। हिन्दुस्ताने-क़दीम मे जब लोगो ने गुड़ की मंजिल से कदम आगे बढ़ाना चाहा था तो यह किया था कि गुड़ को किसी कदर साफ़ करके लाल शकर बनाने लगे थे। यह सफाई मे सफ़ेद शकर से मज़िलों दूर थी। मगर नासाफ गुड़ के एक क़दम आगे निकल आयी थी। फिर जब सफेद शकर आम तौर पर बनने लगी तो इसका इस्तेमाल ज्यादातर देहातों मे महदूद[4] रह गया। लेकिन अब फिर दुनिया अपनी तरक़्क़ीये-माकूस[5] मे उसी तरफ लौट रही है जहाँ से सैकड़ों बरस पहले आगे बढ़ी थी। चुनांचे आजकल अमरीका में इस लाल शकर की बड़ी माँग है। वहाँ के अहले-जौक[6] कहते है — काफ़ी बग़ैर इस शकर के मजा नही देती। और जैसा कि कायदये-मकर्ररा[7] है, अब उनकी तकलीद[8] में यहाँ के असहाबे-जौक[9] भी "ब्राउन शुगर" की सदायें बुलंद करने लगे है। मेरी यह पेशीनगोई[10] लिख रखिये कि अन्क़रीब[11] यह ब्राउन शुगर का हल्का सा पर्दा भी उठ जायेगा और साफ-साफ़ गुड की माँग हर तरफ शुरू हो जायेगी। याराने-जौके-जदीद[12] कहेगे कि गुड़ के डले डाले बग़ैर न चाय मज़ा देती है न काफ़ी। फ़रमाइये, अब इसके बाद क्या बाक़ी रह गया है जिसका इंतज़ार किया जाये ?

वाये गर दर पसे-इमरोज़ बुवद फ़र्दाये ![13]

शकर और गुड़ की दुनियायें इस दर्जे एक दूसरे से मुख़्तलिफ वाक़े हुई है कि आदमी एक का होकर फिर दूसरे के क़ाबिल नही रह सकता। मैंने देखा

---

१. कई दर्जे २. फाँक ३. इस झगड़े की शुरुआत जहां से है वह मैं जानता हूँ ४. सीमित ५. प्रतिकूल प्रगति ६. अच्छी रुचि के लोग ७. निश्चित क़ायदा ८. अनुकरण ९. रुचि रखनेवाले साहबान १०. भविष्यवाणी ११. जल्दी ही १२. नई रुचि के लोग १३. हा, अगर आज के पर्दे के पीछे कल हो।

है कि जिन लोगों ने ज़िंदगी में दो चार मर्तबा भी गुड खा लिया, शकर की लताफ़त का अहसास फिर उनमे बाक़ी नही रहा। जवाहरलाल चूंकि मिठास के बहुत शायक है इसलिये गुड़ का भी शौक रखते है। मैंने यहां हजार कोशिश की कि शकर की नौइयत का यह फर्क जो मेरे लिये इस दर्जे नुमाया है, उन्हे भी महसूस कराऊं। लेकिन न करा सका और बिल आखिर थक के रह गया।

बहरहाल जमाने की हकीकत फरामोशियो पर कहाँ तक मातम किया जाय :

कोतह न तवां कर्द कि ईं क़िस्सा दराज़ स्त ![1]

आइये, आपको कुछ अपना हाल सुनाऊँ। असहाबे-नजर का क़ौल है कि हुस्न और फ़न के मामले में हुब्बुलवतनी[2] के जज्बे[3] को दखल नही देना चाहिये :

मताअे-नेक़, हर दुकां कि बाशद[4]

पर अमल करना चाहिये। चुनाचे मै भी चाय के बाब मे शाहिदाने-हिंद का नही, खूबाने-चीन का मौतक़िद हूँ :

दवाये-दर्दे-दिले-खुद अज़ां मुफ़र्रह जोये
कि दर सुराहिये-चीनी ओ शीशये-हलबी स्त ![5]

मेरे जुगराफिया में अगर चीन का जिक्र किया गया है तो इसलिये नही कि जनरल चांग काई शेक और मैडम चाग वहां से आये थे। बल्कि इसलिये कि चाय वहीं से आती है : —

मये-साफ़ी ज़ फ़िरंग आयद ओ शाहिद ज़ ततार
मा न दानेम कि बुस्तामी ओ बग़दादी हस्त ![6]

एक मुद्दत से जिस चीनी चाय का आदी हूँ वो व्हाइट जेस्मिन (White jasmine) कहलाती है। याने "यास्मने-सफेद" या ठेठ उर्दू मे यूं कहिये कि "गोरी चम्बेली"

कसे कि महरमे-राज़े-सबा स्त, मीदानद
कि बावजूदे-ख़िज़ां बूये-यास्मन बाक़ी स्त ![7]

---

१. संक्षिप्त नही कर सकते कि कहानी लम्बी है २. देश प्रेम, देशभक्ति ३. भावना ४. अच्छी चीज जिस किसी दूकान पर भी हो (लेने योग्य है) ५. अपने दर्दे-दिल की दवा उस मुफर्रह (Cardial यानी दिल खुश करनेवाली चीज़) से लो जो चीनी सुराही और हलब के शीशे में है। ६. निर्मल शराब फ़िरंग याने योरप से और माशूक तातार से आता है, हम नही जानते कि बुस्ताम और बगदाद भी है। ७. जो कोई भी प्रातः समीर के रहस्यों को जानता है वह जानता है कि पतझड़ के बावजूद भी चंबेली की खुशबू बाक़ी है।

इसकी खुशबू जिस क़दर लतीफ़ है, उतना ही कैफ़[1] तुंद ओ तेज़ है। रंगत की निस्बत क्या कहूँ ? लोगों ने आतिशे-सय्याल[2] की ताबीर से काम लिया है :

मय मयाने - शीशये - साक़ी निगर
आतिशे गोया बआब आलूदा अन्द ![3]

लेकिन आग का तखय्युल फिर अरजी[4] है और इस चाय की अुल्वियत[5] कुछ और चाहती है। मैं सूरज की किरनों को मुट्ठी में बंद करने की कोशिश करता हूँ और कहता हूँ कि यूं समझिये जैसे किसी ने सूरज की किरनें हल करके बिल्लोरी फिजान में घोल दी हों। मुल्ला मुहम्मद माज़िदरानी साहबे-बुतखाना ने अगर यह चाय पी होती तो खानखाना की खानासाज शराब की मदह में हरगिज यह न कहता :

न मीमानद ईं बादा असलन ब आब
तू गोई कि हल कर्दा अंद आफ़ताब[6]

लड़ाई की वजह से जहाजों की आमद ओ रफ़्त बंद हुई तो इसका असर चाय पर भी पड़ा। मैं कलकत्ते के जिस चीनी स्टोर से मँगवाया करता था, उसका ज़खीरा जवाब देने लगा था। फिर भी चंद डिब्बे मिल गये थे। और बाज चीनी दोस्तों ने बतौर तोहफ़े के भी भेजकर चारासाजी की थी। जब कलकत्ते से निकला तो एक डिब्बा साथ था। एक घर में छोड़ आया था। बंबई से गिरफ़्तार करके यहाँ लाया गया तो सामान के साथ वो भी आ गया और फिर क़बल इसके कि खत्म हो, घर वाला डिब्बा भी पहुँच गया। इस तरह यहाँ और चीज़ों की कितनी ही कमी महसूस हुई हो, लेकिन चाय की कमी महसूस नहीं हुई। और अगर चाय की कमी महसूस नहीं हुई तो नतीजा यही निकलता है कि किसी चीज की कमी भी महसूस नहीं हुई।

हाफ़िज़ दिगर च मीतलबी अज़ नओमे-दहर ?
मय मीखुरी ओ तुर्रये-दिलदार मीकशी ![7]

इसकी फ़िक्र कभी नहीं हुई कि आख़िरी डिब्बा चलेगा कब तक ? क्योंकि ख्वाजये शीराज़ की मवाज़त[8] हमेशा पेशे-नज़र रहती है :

ता साग़रत पुर स्त, बनोशां ओ नोश कुन ![9]

---

१. नशा २. तरल अग्नि ३. साकी के शीशे में शराब को देख मानो पानी में आग घोली है ४. पार्थिव ५. उच्चता, अलौकिकता ६. यह शराब हरगिज़ पानी नहीं है, तुम यह कहो कि पानी में सूरज घोला है। ७. दुनिया के ऐश से अय हाफ़िज और क्या चाहता है ? शराब पी रहा है और प्रिया की अलकें खींच रहा है। ८. उपदेश ९. जब तक तेरा प्याला भरा हुआ है पिला और खुद पी।

यहाँ हमारे ज़िंदानियों के क़ाफ़िले में इस जिंस का शनाशा कोई नहीं है। अक-सर हज़रात दूध और दही के शायक़ हैं। और आप समझ सकते हैं कि दूध और दही की दुनिया चाय की दुनिया से कितनी दूर वाके हुई है? उम्रें गुजर जायें फिर भी यह मसाफ़त[1] तै नहीं हो सकती। कहाँ चाय के ज़ौके-लतीफ़[2] का शहरिस्ताने- कैफ ओ सुरूर[3] और कहाँ दूध और दही की शिकमपुरी[4] की नगरी!

इक उम्र चाहिये कि गवारा हो नेशे-इश्क[5]
रक्खी है आज लज्जते-ज़ख्मे-जिगर कहाँ!

जवाहरलाल बिला शुबहा चाय के आदी हैं। और चाय पीते भी हैं खवासे-योरप[6] की हम मशरबी[7] के ज़ौक में बगैर दूध की। लेकिन जहाँ तक चाय की नौइयत का ताल्लुक है, शाहराहे-आम से बाहर कदम नहीं निकाल सकते और अपनी लीचू-पीचू ही की क़िस्मों पर कानिअ[8] रहते है। ज़ाहिर है कि ऐसी हालत में उन हज़रात को इस चाय के पीने की जहमत देना न सिर्फ बेसूद था बल्कि "वज़अ अुश्शईये फी गैरे महल्लिहि"[9] के हुक्म में दाखिल था।

मय ब ज़ुह्हाद मकुन अर्ज़ा कि ईं जौहरे-नाब
पेशे-ईं क़ौम ब शोराबये-ज़मज़म नरसद[10]

इन हज़रात में सिर्फ एक साहब ऐसे निकले जिन्होंने एक मर्तबा मेरे साथ सफर करते हुये यह चाय पी थी। और महसूस किया था कि अगरचे बग़ैर दूध की है, मगर अच्छी है। यानी बेहतर चीज तो वही दूध वाला गर्म शरबत हुआ जो रोज़ पिया करते है। मगर यह भी चंदां बुरी नहीं। ज़माने की आलमगीर खीरामज़ाक़ी देखते हुये यह उनकी सिर्फ "अच्छी है" की दाद भी मुझे इतनी ग़नीमत मालूम हुई कि कभी-कभी उन्हें बुला लिया करता था कि, आइये एक, प्याली इस "अच्छी है" की भी पी लीजिये:

उम्रत दराज़ बाद कि ईं हम ग़नीमत स्त!"[11]

उनके लिए यह सिर्फ "अच्छी" हुई। यहाँ चाय का सारा मामला ही खत्म हो जाये अगर यह "अच्छी है" खत्म हो जाये। गालिब क्या खूब कह गया है:—

---

१. दूरी २. सुरुचि ३. नशे और मस्ती की नगरी ४. पेट भरने की ५. प्रेम का काँटा ६. योरप के खास लोग ७. एक पंथता ८. संतुष्ट ९. चीज को गलत जगह रखना १०. शराब तपस्वियों के सामने पेश मत कर क्योंकि यह पवित्र चीज़ इस क़ौम के लोगों के सामने ज़मज़म के खारी पानी के बराबर नहीं है ११. तेरी उम्र लंबी हो कि यह भी गनीमत है।

ज़ाहिद अज़ मा खोशये-ताके ब चश्मे-कम मबीं
हीं, न मी दानी कि यक पैमाना नुक़सां कर्दा ग्रेम ![1]

मगर एक डिब्बा कब तक काम दे सकता था ? आखिर खत्म होने पर आया। चीताखां ने यहाँ दरयाफ़्त कराया। पूना भी लिखा। लेकिन इस किस्म की चाय का कोई सुराग नही मिला। अब बंबई और कलकत्ता लिखवाया है। देखिए क्या नतीजा निकलता है। एक हफ्ते से वही हिन्दुस्तानी स्याह पत्ती पी रहा हूँ, और मुस्तकबिल की उम्मीदों पर जी रहा हूँ :

न कुनी चारा लबे-खुश्क मुसलमानेरा
श्रय ब तरसा बचगां कर्दा मये-नाब सबील ।[2]

आज कल चीनी हिन्दुस्तान के तमाम शहरों मे फैल गये हैं और हर जगह चीनी रस्टोरां खुल गये है। चूँकि अहमदनगर अंग्रेज़ी फ़ौज की बड़ी छावनी है। इसलिये यहाँ भी एक चीनी रेस्टोरां खुल गया है। जेलर को ख्याल हुआ कि इन लोगों के पास यह चाय ज़रूर होगी। उसने खाली डिब्बा भेज कर दरयाफ्त कराया। उन्होने डिब्बा देखते ही कहा कि यह चाय अब कहाँ मिल सकती है ? लेकिन तुम्हे यह डिब्बा कहाँ से मिला ? और इस चाय की यहां जरूरत क्या पेश आई ? क्या चीन का कोई बडा आदमी यहाँ आ रहा है ? जो वार्डर बाजार गया था उसने हरचंद बातें बनाईं मगर उनकी तशफ्फ़ी[3] नही हुई। दूसरे दिन सारे शहर मे यह अफ़वाह फैल गई कि मेडम चाग काई शेक किले के कैदियों से मिलने आ रही है और उसके लिये चीनी चाय का एहतिमाम किया जा रहा है।

ब बीं कि नक़्शे-अमलहा च बातिल उफ़्ताद स्त ![4]

चाय के डिब्बे की तह मे हमेशा कुछ न कुछ पत्तियों का चूरा बैठ जाया करता है और उसे डिब्बे के साथ फेक दिया करते है। यह आखिरी डिब्बा खत्म होने पर आया तो थोड़ा सा चूरा उसकी तह में भी जमा था। मैंने छोड दिया कि इसे क्या काम में लाऊँ। लेकिन चीता खां ने देखा तो कहा — आज-कल लडाई की वजह से "जाया मत करो" का नारा ज़बानों पर है। यह चूरा भी क्यों न काम मे लाया जाये ? मैने सोचा कि :

---

१. अय ज़ाहिद हमारी तरफ़ से तू अंगूर के दरख्त के गुच्छे की तरफ़ उपेक्षा से मत देख, अफ़सोस है कि तू यह नही जानता कि मैंने एक पैमाना बरबाद कर दिया है। २. मुसलमान के शुष्क होठों का कोई इलाज नही करता और तूने काफिरों के बच्चों के लिये पवित्र शराब की प्याउएँ बना दी है ३. सांत्वना ४. देखो उम्मीदों की रेखायें कैसी झूठी हुई हैं।

ब दुर्द ओ साफ़ तुरा हुक्म नेस्त, दम दर कश
कि हर च साक़िये- मा रेख़्त ऐन अल्ताफ़ स्त[1]

चुनांचे यह चूरा भी काम में लाया गया, और उसका एक एक ज़र्रा दम देकर पीता रहा। जब फिंजान में चाय डालता था तो उन ज़र्रों की ज़बाने-हाल पुकारती थी :

हर चंद कि नेस्त रंग ओ बूयम
आख़िर न गयाहे- बाग़े-ऊयम ![2]

इस तखय्युल ने कि इन ज़र्रों के हाथ से कैफ ओ सुरूर का जाम ले रहा हूँ, तौसने फिक्र[3] की जोलानियों[4] के लिये ताज़ियाने[5] का काम दिया, और अचानक एक दूसरे ही आलम मे पहुँचा दिया। हा, मिर्जा बेदिल ने मेरी ज़बानी कहा था :

अगर दिमाग़म दरीं शबिस्तां ख़ुमारे-शर्मे-अदम न गीरद
ज़ चश्मके-ज़र्रा जाम गीरम ब आ शिकोहे कि जम न गीरद।
दरीं क़लमरौ कफ़े-ग़ुबारम, ब हेच कस हमसरी न दारम
कमाले-मीज़ाने-ऐतबारम बस अस्त कज़ ज़र्रा कम न गीरद ![6]

इस तजरुबे के बाद बेइख्तियार ख्याल आया कि हम तिश्ना-कामों[7] की किस्मत मे अब सर-जोश खुम[8] की कैफियते नही रही है, तो काश इस तहे-शीशये-नासाफ[9] ही के चंद घूंट मिल जाया करें। गालिब ने क्या खूब कहा है :

कहते हुये साक़ी से हया आती है, वर्ना
यूं है कि मुझे दुर्दे-तहे-जाम[10] बहुत है।

शकर के मसले ने भी यहाँ आते ही सर उठाया था। मगर मुझे फौरन इसका हल मिल गया, और अब इस तरफ से मुतमयिन हूँ। मोटे दानों की साफ शकर थोड़ी सी मेरे सफरी सामान मे थी जो कुछ दिनों तक चलती रही।

---

१. वस्तु मलिन है या निर्मल इससे तुझे कोई सरोकार नही और शांत रह। क्योंकि मेरे साकी ने जो कुछ ढाला है वह सब उसकी मेहरबानी है २. यद्यपि मुझमें रंग और बू नही है पर आखिरकार हूँ तो मैं उसी के बाग की घास। ३. विचारो का घोडा ४. रफ्तार, दौड़ ५. चाबुक ६. अगर मेरा दिमाग इस दुनिया में मृत्यु के भय से न डरे तो मैं एक छोटे से छोटे कण से आनद का जाम पा सकता हूँ और उस शान से कि जमशेद को भी नसीब न हुआ हो। इस दुनिया मे मै एक मुट्ठी खाक हूँ और मेरी किसी से बराबरी नही है, लेकिन मेरे ऐतबार की तुला का यही कमाल है कि वह ज़र्रे से कम नहीं स्वीकार करती। ७ तृषित, प्यासे ८. लबरेज मटके ९. शीशों की तलछट १०. शराब की प्याली की तलछट

जब खत्म हो गई तो मैने ख्याल किया कि यहाँ ज़रूर मिल जायगी। नही मिली तो डलियों के बक्स तो जरूर मिल जायेंगे। लेकिन जब बाजार में दरयाफ्त कराया तो मालूम हुआ, अमन के वक्तों में भी यहाँ इन चीजों की माँग न थी और अब कि जंग की रुकावटों ने राहें रोक दी है इनका सुराग कहाँ मिल सकता है? मजबूरन मिसरी मँगवाई और चाहा कि कुटवाकर शकर की तरह काम मे लाऊँ। लेकिन कूटने के लिये हावन की ज़रूरत हुई। जेलर से कहा हावन और हावनदस्ता मँगवा दिया जाये। दूसरे दिन मालूम हुआ कि यहाँ न हावन मिलता है न दस्ता। हैरान रह गया कि क्या इस बस्ती में कभी किसी को अपना सर फोड़ने की जरूरत पेश नही आती? आखिर लोग जिंदगी कैसे बसर करते है?

हदीसे-इश्क च दानद कसे कि दर हमा उम्र
ब सर न कोफ़्ता बाशद दरे-सरायेरा।[1]

मजबूरन मैंने एक दूसरी तरकीब निकाली। एक साफ कपडे मे मिसरी की डलियाँ रखीं और बहुत सा रद्दी कागज़ ऊपर तले धर दिया। फिर एक पत्थर उठाकर एक कैदी के हवाले किया जो यहाँ काम-काज के लिये लाया गया है कि अपने सर की जगह इसे पीट:

दरीं कि कोहकन अज़ ज़ौक दाद जां च सुखन?
हमीं कि तीशा ब सर देर ज़द, सुखन बाक़ी स्त।[2]

लेकिन यह गिरफ्तारे-आलातो वसायल[3] भी कुछ ऐसा:

सर गश्तये-खुमारे-रुसूम ओ क़ुयूद था[4]

कि एक चोट भी क़रीने की[5] न लगा सका। मिसरी तो कुटने से रही। अलबत्ता कागज के पुर्ज़े-पुर्ज़े उड गये। और कपड़े ने भी उसके रूये-सबीह[6] का नकाब बनने से इंकार कर दिया:

चली थी बरछी किसी पर किसी के आन लगी!

बहर हाल कई दिनों के बाद खुदा-खुदा करके हावन का चेहरये-ज़श्त[7] नज़र आया। "ज़श्त" इसलिये कहता हूँ कि कभी ऐसा अनघढ़ ज़र्फ़ नजर से नही गुजरा था। आजकल टाटा ने एक किताब शाया की है। यह खबर देती है कि

---

१. वह प्रेम की बाते क्या जानता है जिसने तमाम उम्र किसी घर के दरवाजे को सरसे न पीटा हो २. इस बात मे तो शक नहीं कि कोहकन ने अपने अनुराग के कारण जान दे दी। लेकिन बात यही है कि अपने माथे पर बमूला देर में मारा, यह बात शक की है। ३. साधन सामग्री का मोहताज ४. रस्मों और बंदिशों मे फँसा था ५. उपयुक्त ६. गोरे चेहरे का ७. बुरा चेहरा, कलमुहाँ।

हज़ारों बरस पहले वस्त[1] हिंद के एक क़बीले ने मुल्क को लोहे और लोहारी की सनअत[2] से आश्ना किया था। अजब नहीं यह हावन भी उसी कबीले की दस्तकारियों का बकिया[3] हो, और इस इंतज़ार मे गर्दिशे-लैल ओ नहार[4] के दिन गिनता रहा हो कि कब किलए-अहमदनगर के जिदानियों का क़ाफ़िला यहाँ पहुँचता है और कब ऐसा होता है कि उन्हें सर फोड़ने के लिये तीशे[5] की जगह हावन दस्ते की जरूरत पेश आती है :

शोरीदगी[6] के हाथ से सर है वबाले-दोश[7]
सहरा[8] में अय खुदा कोई दीवार भी नहीं !

ख़ैर कुछ हो, मिसरी कूटने की राह निकल आई। लेकिन अब कुटी हुई मिसरी मौजूद है, तो वो चीज मौजूद नहीं जिसमे मिसरी डाली जाये :

अगर दस्ते कुनम पैदा, नमीयाबम गरेबां रा ![9]

देखिये सिर्फ इतनी बात कहनी चाहता था कि चाय खत्म हो गई। मगर बाईस सफे तमाम हो चुके और अभी तक बात तमाम नही हुई :

यक हर्फ़ बेश नेस्त सरासर हदीसे-शौक़
ईं तुर्फ़ातर कि हेच ब पायां नमीरसद ![10]

अबुलकलाम

---

१. मध्य २. कारीगरी ३. अवशिष्ट ४. रात दिन का चक्कर ५. बसूला ६. परेशानी ७. कंधो का भार ८. जंगल ९. अगर हमारे हाथ हो भी जायें तो गरेबां नही है, वह कहाँ से लाऊँ १०. प्रेम की कहानी एक शब्द से ज्यादा नही है फिर भी यह आश्चर्य है कि कोई उसकी अंतिम सीमा तक नही पहुँचती।

क़िलए-अहमदनगर
७, जनवरी सन् १६४३ ई.

सदीके-मुकर्रम

वही सुबह चार बजे का जांफिजा वक़्त है। सर्दी अपने पूरे अरूज पर[1] है। कमरे का दरवाजा और खिड़की खुली छोड़ दी है। हवा के बर्फ़ानी झोके दम ब-दम आ रहे है। चाय दम देके अभी-अभी रखी है। मुंतज़िर बैठा हूँ कि पाँच-छह मिनट गुजर जाये और रंग ओ कैफ अपने मैयारी दर्जे पर आ जाये तो दौर शुरू करूँ। दो मर्तबा निगाह घड़ी की तरफ उठ चुकी है, मगर पांच मिनट है कि किसी तरह होने पर नही आते। ख्वाजये-शीराज़ का तरानये-सुबहगाही दिल ओ दिमाग में गूँज रहा है। बेइख्तियार जी चाहता है कि गुन-गुनाऊँ मगर हमसायों[2] की नींद में खलल पड़ने का अंदेशा लबों को खुलने की इजाज़त नहीं देता। नाचार नोके-कलम के हवाले करता हूँ :

सुबह स्त ओ जाला मीचकद अज अब्रे-बहमनी
बर्गे-सुबूह साज़ ओ बिज़न जामे-यकमनी
गर सुबह दम खुमार तुरा दर्दे-सर दिहद
पेशानिये-खुमार हमाँ बिह की बिशिकनी
साक़ी, बहोश बाश, कि गम दर कमीने-मा स्त
मुतरिब, निगाह दार हमीं रह कि मीज़नी
साक़ी, व बेनियाज़िये-यज़दां कि मय बयार
ता बशुनवी ज़ सौते मुग़न्नी "हुवलग़नी"[3]

इस इलाके में आम तौर पर सर्दी बहुत हल्की होती है। मालूम नही कभी इस तरफ भी आपका गुजर हुआ है या नही ? और अगर हुआ है तो किस मौसम

---

१. चरम सीमा २. पड़ौसी ३. सुबह का वक़्त है और बहमनी याने फागुनी बादलों से ओस चू रही है। शराब पीने के सामान की तैयारी करो और दस रतल का जाम भर भर कर पीओ याने खूब शराब पीओ। अगर सुबह के वक़्त खुमार की वजह से सर मे दर्द हो, तो बेहतर यही है कि खुमार की पेशानी फोड़ दो याने फिर शराब पीओ। साकी सावधान रह क्योंकि गम मेरे घात में लगा हुआ है, और अय गायक जो गीत गा रहा है इसी गीत को गाता रह। ओ साकी तुझे खुदा की बेनियाजी याने बेपरवाही की कसम है तू शराब ला, ताकि गायक के गीत से भी 'हुवलगनी' की याने वह बेनियाज़ है की आवाज सुनने लगे।

मे ? लेकिन पूना तो आप बारहा गये होंगे। दिसंबर सन् १९१५ ई. का सफ़र मुझे भी याद है जब मुस्लिम एजुकेशनल कान्फरेंस के इजलास के मौके पर आपसे वहाँ मुलाकात हुई थी। पूना यहाँ सिर्फ़ अस्सी मील की मसाफत पर वाके है। और दकन का यह तमाम हिस्सा एक ही सतह-मुर्तफा[1] है। इसलिये यहाँ की मौसमी हालत को पूना पर कयास कर लीजिये। अलावा बरी[2] वक्त के जिदानी[3] कुछ पूना मे रखे गये है, कुछ यहाँ। इसलिये वैसे भी अहले-कयास के नजदीक बकौल उर्फी दोनों का हुक्म एक ही हुआ :

यके स्त निस्बते शीराज़ी ओ बदख़्शानी ![4]

फैजी को जब अकबर ने सफारत पर यहाँ भेजा था तो मामलात की पेचीदगियों ने उसे दो साल तक हिलने नहीं दिया और यहाँ के हर मौसम के तजरुबे का मौका मिला। उसने अपने मकातीब मे अहमदनगर की आबो-हवा के ऐतदाल[5] की बहुत तारीफ की थी। फैजी से बहुत पहले का यह वाकया है कि मलिक उत्तुज्जार शीराजी ने मौलाना जामी को दकन आने की दावत दी थी और लिखा था कि इस मुल्क मे बारह महीने हवाये मौतदिल का लुत्फ उठाया जा सकता है। खैर, बारह महीना कहना तो सरीह मुबालगा था। मगर इसमे शक नही कि यहाँ गरमी के दिन बहुत कम होते है और यहाँ की बरसात मालवे की बरसात की तरह बहुत ही पुर लुत्फ़ होती है। गालिबन सन् १९०५ ई० की बात है कि बबई मे मिर्जा फुरसत शीराजी साहबे-आसार उलअजम से मिलने का इत्तिफाक हुआ था। वो बरसात का मौसम पूना मे बसर करके लौटे थे और कहते थे —पूना की हवा के ऐतदाल ने हवाये-शीराज की याद ताजा कर दी :

अय गुल ब तू ख़ुरसंदम, तू बूये-कसे दारी ![6]

मेरा ज़ाती तजरुबा मामले को यहाँ तक नही ले जाता। लेकिन बहर हाल मैं शीराज में मुसाफिर था और मिर्जाये-मौसूफ साहबुल बैत थे — व साहबुल-बैते अदरा बिमा फीहा।[7]

औरंगजेब जब दकन आया था तो यहाँ के वर्शकाल का ऐतदाल उसकी तबअे-ख़ुश्क को भी तर किये बगैर न रहा था। आपने तारीखे ख्वानीखां और मासिरूल उमरा वगैरह मे जा बजा पढा होगा कि बरसात का मौसम अकसर अहमदनगर या पूना मे बसर करता था। पूना का नाम उसने "महीनगर"

---

१. पठार २. इसके अलावा ३. कैदी ४. शीराजी और बदख़्शानियों की एक ही निस्बत है ५. सतुलित ६ ओ फूल मैं तुझसे खुश हुआ हूँ, क्योंकि तू किसी की (माशूक की) खुशबू रखता है। ७ घर वाला अपने घर की चीजो को ज्यादा जानता है।

रखा था। मगर जबानों पर नहीं चढा। उसका इंतकाल अहमदनगर ही में हुआ था।

जहाँ तक इस ऐतदाल का ताल्लुक गरमी और बरसात के मौसम से है, उसके हुस्न ओ खूबी में कलाम नही। मगर मुसीबत यह है कि यहाँ का सर्दी का मौसम भी मौतदिल होता है। हालांकि सर्दी का मौसम एक ऐसा मौसम हुआ कि उसमें जिस कदर भी ज्यादती हो, मौसम का हुस्न और जिंदगी का ऐश है। इसकी कमी नुक्स ओ फ़ुतूर का हुक्म रखती है। इसे ऐतदाल कहकर सराहा नही जा सकता :

दर मांदये-सलाह ओ फसादेम, अलहज़र
ज़ीं रस्महा कि मर्दुमे-आक़िल निहांदा अन्द !

शायद आपको मालूम नही कि अवायले-उम्र से मेरी तबीयत का इस बारे में कुछ अजीब हाल रहा है। गरमी कितनी ही मौतदिल हो, मगर मुझे बहुत जल्द परेशां कर देती है, और हमेशा सर्द मौसम का ख्वास्तगार[1] रहता हूँ। मौसम की खुनकी मेरे लिये जिंदगी का असली सरमाया है। यह पूंजी खत्म हुई और गोया जिंदगी की सारी कैफ़ियतें[2] खत्म हो गई। चूंकि ज़िदगी बहर-हाल बसर करनी है, इसलिये कोशिश करता रहता हूँ कि हर मौसम से साज़गार रहूँ। लेकिन तबीयत के असली तक़ाजे पर गालिब नहीं आ सकता। अफ़सोस यह है कि हिन्दुस्तान का मौसमे-सरमा[4] इस दर्जे तुनुकमाया[5] है कि अभी आया नही कि जाना शुरू कर देता है, और देखते ही देखते खत्म हो जाता है। मेरी तबअ्-सरासीमा[6] के लिये इस सूरते-हाल मे सब्र ओ शिकेब[7] की एक अजीब आज़माइश पैदा हो गई है। जब तक वो आता नहीं उसके इंतजार मे दिन काटता हूँ। जब आता है तो उसकी आमद की खुशियो मे मह्व हो जाता हूँ। लेकिन इसका कयाम इतना मुख्तसर होता है कि अभी उसकी पिजीराइयों[8] के सर ओ बर्ग से फारिग़ नही हुआ कि अचानक हिजरान[10] ओ विदा का मातम सर पर आ खडा होता है·

हम चु ईद कि दर अय्यामे-बहार आमद ओ रफ़्त ![11]

मैं आपको बतलाऊँ, मेरे तखय्युल में ऐशे-जिंदगी का सबसे बेहतर तसव्वुर क्या हो सकता है ? जाडे का मौसम हो, और जाड़ा भी करीब-करीब दर्जे इंजमाद[12] का। रात का वक़्त हो। आतिशदान मे ऊँचे-ऊँचे शोले भड़क

१. इच्छुक २. खुशियाँ ३. परिचित ४. जाड़े का मौसम ५. थोड़ा ६. परेशान तबीयत ७. सब्र और धीरज ८. स्वागत ९. साजसामान १०. वियोग ११. ईद की तरह बहार के दिनों में आयी और चली गई १२. जमने के दर्जे का Freezing point।

रहे हों। और मैं कमरे की सारी मसनदें छोड़कर उसके क़रीब बैठा हूँ और पढ़ने या लिखने मे मशग़ूल हूं :

मन ईं मुक़ाम बदुनिया ओ आक़बत न दिहम
अगरचे दर पैयम उफ़्तंद ख़ल्क़ अंजुमने ![1]

मालूम नही बहिश्त के मौसम का क्या हाल होगा ? वहाँ की नहरों का ज़िक्र बहुत सुनने में आया है। डरता हूँ कि कही गरमी का मौसम न रहता हो :

सुनते है जो बहिश्त की तारीफ़, सब दुरुस्त
लेकिन ख़ुदा करे, वो तेरी जलवागाह हो !

अजीब मामला है। मैंने बारहा गौर किया कि मेरे तसव्वुर में आतिशदान की मौजूदगी को इतनी अहमियत[2] क्यो मिल गई ? लेकिन कुछ बतला नही सकता। वाक़्या यह है कि सर्दी और आतिशदान का रिश्ता चोली दामन का रिश्ता हुआ। एक को दूसरे से अलग नही कर सकते। मैं सर्दी के मौसम का नक़्शा अपने जहन मे खीच ही नही सकता, अगर आतिशदान न सुलग रहा हो। फिर आतिशदान भी वही पुरानी रविश का होना चाहिये जिसमे लकड़ियों के बड़े-बड़े कुंदे जलाये जा सकें। बिजली के हीटर से मेरी तस्कीन नही होती। बल्कि उसे देखकर तबीयत कुछ चिढ सी जाती है। हा गैस के आतिशदान की तरकीब उतनी बेमानी महसूस नही होती। क्योकि पत्थर के टुकड़े रखकर अंगारो के ढेर की सी शक्ल बना देते है और उसके नीचे से शोले निकलते रहते है। कम से कम शोलों की नौइयत बाकी रहती है। फिर भी मैं उसे तरजीह देने के लिये तैयार नही। दरअसल मैं सिर्फ़ गरमी ही के लिये आतिशदान का शैदाई नही हूँ। मुझे शोलों का मजर[3] चाहिये। जब तक शोले भड़कते नजर न आयें, दिल की प्यास बुझती नही। वेदर्दो को जो दिल की जगह बर्फ़ की सिल सीने मे छिपाये फिरते है, इन मामलात की क्या ख़बर ?

सीनये-गर्म न दारी मतलब सोहबते-इश्क़
आतिशे नेस्त चु दर मिजमरात्रत, ऊद मख़र ![4]

आप सुनकर हँसेगे। बारहा ऐसा हुआ कि इस ख़याल से कि सर्दी का ज़्यादा से ज़्यादा अहसास पैदा करूँ, जनवरी की रातों मे आसमान के नीचे बैठकर सुबह की चाय पीता रहा, और अपने आपको इस धोके में डालता रहा कि आज सर्दी ख़ूब पड़ रही है :

---

१. मैं यह स्थान इस लोक और परलोक की कसम नही दूंगा। अगर सारी दुनिया मेरे पैरों पर लोगो की भीड ही क्यों न पटक दे २. मुख्यता ३. दृश्य ४. पहले आचुका है।

अज़ यक हदीसे-लुत्फ़ कि आं हम दरोग़ बूद
इमशब ज़ दफ़्तरे-गिला सद बाब शुस्ता अेम ![1]

मेरी तबीयत का भी अजीब हाल है। दूसरों से पहले खुद अपनी हालत पर हँसता हूँ। बचपने मे चद महीने चिनसुरा मे बसर किये थे। क्योंकि कलकत्ते मे ताऊन[2] फैल रहा था। यह जगह ऐन दरयाये-हुगली पर वाके है। मैंने यही सबसे पहले तैरना सीखा। सुबह ओ शाम घंटो दरया में तैरता रहता फिर भी जी सैर न होता। अब भी तैराकी के लिये तबीयत हमेशा तरसती रहती है। सुभान अल्ला! तबअे-बूकलमू[3] की नैरंग आराइयाँ देखिये! एक तरफ दरया मे हम अिनानी[4] का यह जौक ओ शौक, दूसरी तरफ आग के शोलों से सैराब[5] होने की यह तश्नगी[6]! शायद यह इसलिये हो कि अक्लीमे जिदगी की सतह पर पानी बहता है, तह मे आग भडकती रहती है। इसीलिये नुक्ता सराइयाने[7] हकीकत को कहना पड़ा कि .

हम समंदर बाश ओ हम माही, कि दर अक़्लीमे-इश्क़
रूये-दरया सलसबील ओ क़ारे-दरया आतिश स्त ![8]

लोग गर्मियो में पहाड जाते है कि वहाँ की गर्मियों का मौसम बसर करे। मैंने कई बार जाडों मे पहाडों की राह ली कि वहाँ जाने का असली मौसम यही है। मुतनब्बी भी क्या बदजौक था कि लुबनान के मौसम की क़द्र न कर सका। मेरी जिंदगी के चद बेहतरीन हफ्ते लुबनान मे बसर हुये है।

वजबालु लुबनानि व कैफ़ बिक़तिअिहा
वहिअश्शताअु व सैफ़ुहुन्न शिताउ[9]

जिदगी का एक जाडा जो मूसिल में बसर हुआ था, मुझे नही भूलता। मूसिल अगरचे जुगराफिया की लकीरों में मौतदिल खित्ते[10] से बाहर नही है, लेकिन गिर्द ओ पेश ने उसे सर्द सैर हुदूद में दाखिल कर दिया है। और कभी कभी तो दियार बकर[11] मे ऐसी सख्त बर्फ पड़ती है कि जब तक सड़कों पर खुदाई न हो ले, घरो के किवाड खुल नही सकते। जिस साल मैं गया था, गैर मामूली बर्फ पड़ी थी। बर्फ़बारी के बाद जब आसमान खुलता और आरमीनिया के पहाड़ों की हवाये चलती तो क्या अर्ज करूँ, ठंडक का क्या आलम

---

१. एक प्यार भरी बात से और वो भी झूठी थी मैने आज की रात शिकायतों के दफ़्तर के सौ अध्यायों को धो डाला है २ महामारी ३. रगारग तबीयत ४. निकटता ५. तृप्त ६. प्यास ७. सत्यद्रष्टा ८. पहले आ चुका है ९. लेबनान के जो पहाड़ है उनको कैसे पार किया जा सकता है, यह सर्दी का मौसम है हालांकि वहाँ की गर्मी भी सर्दी होती है। १०. प्रदेश ११. शहर का नाम।

होता ? मुझे याद है कि कभी कभी सर्दी की शिद्दत का यह आलम होता कि मटकों का ढकना हटाते तो पानी की जगह बर्फ की सिल दिखाई देती। लेकिन मैं फिर भी सर्दी की बेऐतदालियों का गिलामद न था। जिस शैख के घर मेहमान था, उसके बच्चे दिन भर बर्फ के गोलो से खेलते रहते, और कभी कभी कोई छोटी सी गोली मुँह मे भी डाल लेते। सित्ती कबीरा यानी शैख की मां का लौंडियों को हुक्म था कि मेरा आतिशदान चौबीस घंटे रोशन रखे। खुद भी दिन मे दो तीन मर्तबा पुकार के मुझसे पूछ लिया करती कि मिजमरा का क्या हाल है ? एक लोहे की केतली आतिशदान की मेहराब मे जंजीर से लटकी रहती और पानी हर वक्त जोश खाता रहता। जिस वक़्त चाहो क़हवा बना कर गरम गरम पी लो। चूंकि देर तक जोश खाये हुये पानी में चाय या काफी बनाना ठीक नही, इसलिये मैं उसे उतार कर रख दिया करता। लेकिन लौंडी फिर लटका देती और कहती कि सित्ती का हुक्म ऐसा ही है। चाय बनाने का यही तरीका मैने शुमाली[1] ईरान के आम घरों में भी देखा। आतिशदान की आग सिर्फ कमरा गर्म करने ही के काम मे नही लाई जाती, बल्कि बावरचीखाने का भी आधा काम दे देती है। लोग आतिशदान की आग पर चाय का पानी भी गरम कर लेते हैं और खाना भी पका लेते हैं। अगर शुमाली ईरान के लोग ऐसा न करे तो इतना ईधन कहाँ से लायें कि कमरों को भी गर्म रक्खें और बावरचीखाने का चूल्हा भी सुलगता रहे ? वहाँ के मकानों में आतिशदान इतने कुशादा होते है कि कई कई देगचियाँ उनमें बयक वक़्त लटक सकती है। आतिशदान की मेहराब मे तामीर के वक़्त हल्के[2] डाल दिये जाते है, ठीक उसी तरह के जैसे हमारे मकानो की छतो मे पड़े होते है। इन्ही हल्कों मे जंजीर डाल दी और केतली या देगची लटका दी। बाज शहरो की सरायों के हर कमरे में आतिशदान बना है। जाड़ों में सरायची इसी आतिशदान पर पुलाव दम देकर आपको खिला देगा और कहेगा "जाये-गर्म मगुजारीद ओ बखुरीद !"[3]

अगस्त के महीने में जब हम यहाँ लाये गये तो बारिश का मौसम अरूज पर था और हवा खुशगवार थी। बिल्कुल ऐसी फज़ा रहती थी जैसी आपने जौलाई और अगस्त में पूना की देखी होगी। पानी यहाँ आम तौर पर बीस पच्चीस इंच से ज़्यादा नही बरसता। लेकिन पानी की दो चार बूंदें भी काफ़ी खुशगवारी पैदा कर देती है। ऊमस बहुत कम होती है। हवा बराबर चलती रहती है।

सितंबर और अक्तूबर इसी आलम मे गुजरा। लेकिन जब नवबर शुरू

---

१. उत्तरी २. कड़े ३. गर्म जगह को मत छोड़ो और खालो।

हुआ तो तबीयत इस खयाल से अफसुर्दा रहने लगी कि यहाँ सर्दी का मौसम बहुत हल्का होता है। छावनी का कमांडिंग आफ़ीसर जो पिछला जाड़ा यहाँ बसर कर चुका है, कहता था कि पूना से कुछ ज्यादा सर्दी थी। लेकिन वो भी बमुश्किल दस बारह दिन तक रही होगी। आम तौर पर दिसंबर और जनवरी का मौसम यहाँ ऐसा रहता है जैसा देहली और पंजाब मे जाड़े के इब्तदाई दिनों का होता है। इन खबरो ने तबीयत को बिल्कुल मायूस[1] कर दिया था। लेकिन जूं ही दिसंबर शुरू हुआ मौसम ने अचानक करवट बदली। दो दिन तक बादल छाया रहा और फिर जो मतला[2] खुला तो कुछ न पूछिये मौसम की फ़ैयाज़ियों[3] का क्या आलम हुआ ? देहली और लाहौर के चिल्ले[4] का मजा याद आ गया। यहाँ के कमरों मे भला आतिशदान कहाँ ? लेकिन अगर होता तो मौसम ऐसा जरूर हो गया था कि मै लकड़ियाँ चुननी शुरू कर देता। चीताखां जो हर वक़्त खाकी तख्फीफा (याने शर्ट) पहने रहता था, यकायक गर्म सूट पहन कर आने लगा और कहने लगा कि सर्दी से मेरे घुटनों मे दर्द होने लगा है। छावनी से खबर आई कि एक अंग्रेज सिपाही जो रात के पहरे पर था, सुबह निमोनिया मे मुब्तिला पाया गया और शाम होते होते खत्म हो गया। हमारे काफिले के जिंदानियों का यह हाल हुआ कि दोपहर के वक्त भी चादर जिस्म से चिपटी रहने लगी। जिसे देखो, सर्दी की बेजासितानियो का शाकी[5] है, और धूप मे बैठ कर तेल की मालिश करा रहा है कि तमाम जिस्म फटकर छलनी हो गया। हत्ता कि जो साहब देहली और यू. पी. के रहने वाले है और नैनीताल के मौसम के आदी रह चुके हैं वो भी यहाँ के जाड़े के क़ायल हो गये।

चुनां क़हत साली शुद अंदर दमिश्क़
कि यारां फ़रामोश करदंद इश्क़[6]

जिले का कलक्टर इसी इलाके का बाशिदा है। वो आया तो कहने लगा कि सालहा साल गुज़र गये, मैंने ऐसा जाड़ा इस इलाके मे नही देखा। पारा चालीस दर्जे से भी नीचे उतर चुका है। यहाँ सब हैरान है कि इस साल कौन सी नई बात हो गई है कि अचानक पंजाब की सर्दी अहमदनगर पहुँच गई। मैंने जी मे कहा, इन बेखबरो को क्या मालूम कि हम ज़िंदानियो और खराबातियों की दुआयें क्या असर रखती हैं "रुब्ब अशअ्रस मदफूअिन बिल अबवाबि

१. निराश २. आसमान साफ होना ३. दाक्षिण्यता ४. पोस महीने से ४० दिन तक बड़े जोरो का जाड़ा पड़ता है उसे चिल्ले का जाड़ा कहते हैं। ५. शिकायत करनेवाला ६. शैखसादी का शेर है कहता है कि दमिश्क़ मे ऐसा अकाल पड़ा कि मित्र-दोस्त आपस के प्रेम को भूल गये।

लव अक्सम अलल्लाहे लअबर्रहु[1]

फ़िदाये - शेवये - रहमत कि दर लिबासे-बहार
बअुज़् ख्वाहीये - रिंदाने - बादा-नोश आमद ![2]

यहाँ के लोग तो सर्दी की सख्तियो की शिकायत कर रहे है, और मेरे दिले-आरज़ूमंद से अब भी सदाये हल्मिनमज़ीद[3] उठ रही है। कलकत्ते से गरम कपड़े आये पड़े हैं। मैंने अभी तक उन्हे छूआ भी नही। इस डर से कि अगर गरम कपड़े पहनूगा तो सर्दी का अहसास कम हो जायगा और तखय्युल को जौलानियों का मौका नही मिलेगा। अभी तक गर्मियों ही के लिबास में वक़्त निकाल रहा हूँ। अलबत्ता सुबह उठता हूँ तो ऊनी चादर दुहरी करके काँधों पर डाल लेता हूँ। मेरा और सर्दी के मौसम का मामला तो वो हो गया जो नज़ीरी नीशापुरी को पेश आया था :

ऊ दर विदाअ ओ मन ब जज़ा, कज़ मय ओ बहार
रतले सह चार मान्दा व रोज़े सह चार खुश ![4]

यहाँ तक लिख चुका था कि खयाल हुआ तमहीद मे ग्यारह सफ़े स्याह हो गये, और अभी तक हर्फ़े-मुद्दआ जबाने-कलम पर नही आया। ताज़ा तरीन वाकया यह है कि एक माह की महरूमी और इंतजार के बाद परसों चीताखा ने मुज़्दये-कामरानी[5] सुनाया कि बंबई के आर्मी एंड नेवी स्टोर ने व्हाइट जेस्मीन चाय कही से ढूंढ निकाली है, और एक पौंड का पारसल वी. पी. कर दिया है। चुनाचे कल पारसल पहुँचा। चीताखां ने उसकी कीमत का गिला करना शुरू कर दिया, कि तुम्हे एक पौंड चाय के लिये इतनी क़ीमत देनी पड़ी। हालांकि वाक़या यह है कि मुझे इसकी अरज़ानी ने हैरान कर दिया है। इस नायाबी के ज़माने मे अगर स्टोर इससे दुगनी रकम का भी तलबगार होता, जब भी यह जिसे-गरांमाया[6] अरज़ां थी :

---

१. बहुत से ऐसे लोग कि जिनके बाल बिखरे हुये होते हैं और लोग जिन्हें अपने दरवाजों से दुत्कार देते है अगर वे अल्लाह पर भरोसा करके किसी चीज़ की कसम खा बैठे तो अल्लाह उनकी कसम को पूरा कर ही देता है २. तेरी मेहरबानियों की बलिहारी कि बहार के भेस मे पियक्कड़ रिंदों के लिये बहाना बनकर आई ३. और हो तो लाओ की आवाज ४ वह जाने के लिये है और मैं अधीर होकर रो रहा हूँ, कि शराब और बहार के दिन तीन या चार पैमाने लुढाये और तीन चार दिन खुशी रही ५. कामयाबी की ख़बर ६. क़ीमती।

अय कि मी गोई "चरा जामे बजाने मी खरी ?"
ईं सुख़न बा साक़िये मा गो कि अरज़ां कर्दा अस्त[1]

हुस्ने-इत्तिफ़ाक देखिये कि इधर यह पारसल पहुँचा, उधर बंबई से बाज दोस्तों ने भी चंद डिब्बे चीनी दोस्तों से लेकर भिजवा दिये। अब गिरफ़्तारी का ज़माना जितना भी तूल खींचे चाय की कमी का अंदेशा बाकी नहीं रहा।

बहर हाल जो बात कहना चाहता हूँ वो यह है कि इस एक वाकये ने सुबह के मामले की पूरी फ़िज़ा बदल दी, और जूये-तबग्रे अफ़सुर्दा[2] का आबे-रफ़्ता[3] फिर वापस आ गया। अब फिर वही सुबह की मजलिसे-तरब[4] आरास्ता है, वही तबग्रे-सियहमस्त[5] की आलमफरामोशियाँ[6] है, और वही फ़िक्रे-दरमांदाये कार[7] की आसमां-पैमाइयाँ :

गौहरे-मख़ज़ने-असरार हमानस्त कि बूद
हुक़्क़ये-मिहर बदां मुहर ओ निशानेस्त कि बूद
हाफ़िज़ा बाज़ नुमा क़िस्सये-ख़ूनाबये-चश्म
कि दरी चश्मा हमां आब-रवानस्त कि बूद[8]

अबुलकलाम

---

१. तू कहता है कि मैं जान के बदले में शराब क्यों खरीदता हूँ। यह बात मेरे साकी से कह कि उसने इसे सस्ता कर दिया है, याने कि मेरी जान उसकी अपेक्षा बहुत सस्ती है २. तबियत की सूखी नदी ३. गया हुआ पानी ४. खुशी की मजलिस ५. मदमस्त प्रकृति ६. विश्वविस्मृतता ७. काम से थकी हुई फ़िक्र ८. (ईश्वरीय) रहस्य के खजाने मे वही मोती है जो कि था और (उसकी) कृपा की पिटारी पर वही मुहर और निशान है जो कि था। अय हाफ़िज़ रक्तमिश्रित आँसू बरसानेवाली आँखों की कहानी कह क्योंकि इस दरया मे वही पानी बह रहा है जो कि था।

क़िलये-अहमदनगर
६, जनवरी सन १९४३ ई.

सदीके-मुकर्रम

अनानियती अदबियात (Egotistic Literature) की निस्बत जमानये-हाल के बाज नक्कादों ने यह राय जाहिर की है कि वो या तो बहुत ज्यादा दिलपिजीर होंगी या बहुत ज्यादा नागवार। किसी दरम्यानी दर्जे की यहाँ गुंजाइश नही। "अनानियती अदबियात" से मकसूद तमाम इस तरह की खामाफरसाइयाँ[१] है जिनमें एक मुसन्निफ का इगो (Ego) याने "मैं" नुमाया तौर पर सर उठाता है। मसलन खुदनविश्ता[२] सवानह उम्रियाँ[३] जाती वारदात ओ तास्सुरात, मशाहिदात ओ तजारिब[४], शख्सी अस्लूबे-नजर[५] ओ फ़िक्र। मैंने "नुमाया तौर"[६] की क़ैद इसलिये लगाई कि अगर न लगाई जाये तो दायरा बहुत ज्यादा वसीअ[७] हो जायेगा। क्योकि गैर नुमायां तौर पर तो हर तरह की मुसन्नफात[८] मे मुसन्निफ[९] की अनानियत उभर सकती है और उभरती रहती है। अगर इस ऐतबार से सूरते-हाल पर नजर डालिये तो हमारी दरमादगियो का कुछ अजीब हाल है। हम अपने जहनी आसार को हर चीज़ से बचा ले जा सकते है, मगर खुद अपने आप से बचा नही सकते। हम कितना ही जमीरे-गायब[१०] और जमीरे मुखातिब[११] के पर्दो मे छिप कर चलें, लेकिन जमीरे-मुतकल्लिम[१२] की परछाई पडती ही रहेगी। हम जहाँ जाते हैं, हमारा साया हमारे साथ जाता है। हमारी कितनी ही खुदफ़रामोशियाँ है जो दर असल हमारी खुद परस्तियो ही से पैदा होती है। यही वजह है कि एक नुक्ता-शनासे हकीक़त को कहना पड़ा था :

फ़कुल्तुलहा मा अजनब्तु क़ालत मुजीबतन
उजूदुक जंबुन लायुका सुबिहि जंबू[१३]

कल एक जेरे-तस्वीद[१४] किताब का एक खास मुकाम लिख रहा था कि मबहस की मुनासिबत से क़ौले-मुदरजये-सदर[१५] जहन मे ताजा हो गया और

---

१. स्वलिखित २. लेख ३. जीवन चरित्र ४. स्वानुभव ५ अपना दृष्टिकोण और चिंतन ६. प्रगटतः ७. विस्तृत ८ रचना ९. लेखक १०. अन्य पुरुष ११. मध्यम पुरुष १२. उत्तम पुरुष १३. मैंने उससे पूछा कि मैंने क्या गुनाह किया है उसने जवाब दिया कि तेरा अस्तित्व ही गुनाह है जिसकी कोई गुनाह बराबरी नही कर सकता १४. जो लिख रहा था १५. उपरोक्त बात।

इस वक़्त हस्बे-मामूल सुबह को लिखने बैठा तो बेइख़्तियार सामने आ खड़ा हुआ। आइये आज थोड़ी देर के लिये रुक कर इस मामले पर गौर कर लें।

एक अदीब,[1] एक शायर, एक मुसव्विर,[2] एक अहले-क़लम[3] की अनानियत (Egotism) क्या है? अभी न तो फ़िलसफ़ा व अख़लाक के मज़हबे-अना (Egoism) का रुख़ कीजिये, न "ख़ुदी" (I am-ness) मुस्तलहये-तसव्वुफ में जाइये। सिर्फ़ एक आम तहलीली ज़ावियये-निगाह से मामले को देखिये। आपको साफ़ दिखाई देगा कि यह अनानियत दर असल इसके सिवा कुछ नहीं है कि उसकी फ़िक्री इंफरादिय्यत[4] का एक कुदरती सर-जोश[5] है जिसे वो दबा नही सकता। अगर दबाना चाहता है तो और ज्यादा उभरने लगती है और अपनी हस्ती का असबात करती है: अबुलअला मुअर्री ने जब अपना मशहूर लामिया कहा था:

अला फ़ी सबीलिल मज्दि मा अना फ़ाइलुन्
अफ़ाफ़ुन् व अिक़दामुन्[6] व हज्मुन् व नाइलु

या जब अबू-फ़रास हमदानी ने अपना लाफानी राइय्या कहा:

अराक आसद्दमअे शीमतुकस्सब्रू
अमालिल हवा नहा अलैक बला अम्रू[7]

या जब इब्ने-सनाउलमुल्क ने अपने ज़माने को मुख़ातिब किया था:

व इन्नक अबदी या ज़मानु व इन्ननि
अलररंामे मिन्नी इन अरालक सैयदा
व मा अनाराज़िन इन्ननि वातियुस्सरा
वलि हिम्मतुन् ला तरतज़ल उफ़ुक़ मक़अ़द[8]

या जब फ़िरदौसी के क़लम से निकला था:

बसे रंज बुर्दम दरीं साल सी
अजम ज़िंदा कर्दम बदीं पारसी![9]

---

१. साहित्यकार २. चित्रकार ३. लेखक ४. विचारों की वैयक्तिता ५. उबाल ६. देखो बुजुर्गी के रास्ते में मैं क्या करने वाला हूँ, मन की पवित्रता, प्रगति, सम्हाल और दृढ़ता ७. मैं देख रहा हूँ कि तू आँसू बहाने से इंकार करता है और तेरी आदत सब्र करने की है, क्या मुहब्बत ने तुझे इस बात के करने का कोई हुक्म नही दिया। ८ ओ ज़माने तू मेरा गुलाम है और मैं अपनी तबियत से मजबूर हूँ कि तुझे अपना सरदार मानूं और मैं ख़ुश नही हूं कि मैं जमीन पर चलू और मेरी हिम्मत तो यह है कि मैं असमान पर बैठना भी पसंद नही करता ९. इन तीस सालों में मैंने बहुत सी तकलीफ़ें उठाई और इस शाहनामे से फ़ारस को ज़िंदा कर दिया।

या मसलन जब फैजी ने नल दमन नज़्म करते हुये ये अशआर कहे थे :

इमरोज़ न शायरम, हकीमम
दानिंदये-हादिस ओ क़दीमम
हर मूये ज मन तमाम गोशस्त
ख़ामोशिये-मन बसद ख़रोशस्त
ईं बादा कि जोशद अज़ अयाग़म
ख़ूने स्त चकीदा अज़ दिमाग़म
सद दीदा बवर्तये-दिल उफ़्ताद
कीं मौज गुहर ब साहिल उफ़्ताद
बगुदाख़्ता आबगीनये - दिल
आईना दिहम बदस्ते - महफ़िल
आनम कि बसहरकारीये-ज़र्फ़
अज़ शोला तराशकर्दाअम हर्फ़
बांगे क़लमम दरीं शबे - तार
बस मानिये-ख़ुफ़्ता कर्दा बेदार
मी रेख़्त ज सहरकारीये - ज़र्फ़
अज़ सुबह सितारा ओ ज मन हर्फ़
हर नग़मा कि बस्ताअम बरीं तार
नाक़ूश निहुफ़्ताअम ब ज़ुन्नार
ईं गुल कि ब बोस्तां निसारी स्त
अज़ मन ब बहार यादगारी स्त ![1]

---

१. आज मैं कवि नहीं, बल्कि ज्ञानी हूँ। नित्य और अनित्य सब बातों का जानने वाला हूँ। मेरे प्रत्येक बाल एक कान है, मेरी खामोशी में भी सैकड़ों बातें है। यह शराब जो मेरे प्याले से छलक रही है, मेरे दिमाग से टपका हुआ खून है। दिल के भँवर मे सैकडों आँखें पड़ी है और इस मौज ने मोतियों को किनारे पर ला पटका है। दिल का नगीना पिघला दिया है और उससे मैंने आईना बना कर महफिल के हाथ में दिया है। मैं वो हूँ कि अपने जादू से अँगारे से शब्द तराशे हैं और मेरी कलम की आवाज ने इस अँधेरी रात मे बहुत से गूढ अर्थो को जगा दिया है। जादूगरी से सुबह से सितारे और मुझ से शब्द लेकर बखेर दिये है। हर गीत जो मैंने इस तार पर बांधा है मैंने जनेऊ के डोरे में शंख छिपा दिया है। यह गुल जो बाग़ पर निछावर है वह मेरी तरफ से बहार की यादगारी है।

या जब हमारे मीर अनीस ने कहा था :

लगा रहा हूँ मज़ामीने-नौ के फिर अंबार
ख़बर करो मिरे ख़िरमन के खोशाचीनों को

तो यह महज़ शायराना तअल्लियाँ[1] न थी। यह उनकी पुरजोश इंफरादिय्यत[2] थी जो बेइख्तियार चीख रही थी !

लेकिन साथ ही हम देखते है कि अनानियत का यह शऊर कुछ इस नौइयत[3] का वाक़े हुआ है कि हर इंफरादी अनानियत अपने अंदरूनी आईने मे जो अक्स डालती है, बैरूनी आईनो में उससे बिल्कुल उल्टा अक्स पड़ने लगता है। अंदर के आईनो मे एक बड़ा वजूद दिखाई देता है, बाहर के तमाम आईनों में एक छोटी से छोटी शक्ल उभरने लगती है :

ख़ुदी आईना दारद कि महरूम स्त इज़हारश ![4]

यही सूरते-हाल है जहाँ से हर मुसन्निफ की जो ख़ुद अपनी निस्बत कुछ कहना चाहता है, सारी मुश्किलें उभरनी शुरू हो जाती है। वो जबकि ख़ुद अपने अक्स को जो उसके अंदरूनी आईने मे पड रहा है, झुठला नही सकता तो अचानक क्या देखता है कि बाहर के तमाम आईने उसे झुठला रहे है। जो "मै" ख़ुद उसके लिये बेहद अहमियत[5] रखती है, वही दूसरों की निगाहों में यकसर[6] ग़ैर अहम हो रही है। वो अपने आपको एक ऐसी हालत में महसूस करने लगता है जैसे एक मुसव्विर तसवीर खीचने के लिये मू कलम[7] उठाये, मगर उसे यकीन हो कि मैं कितनी ही मुसव्विराना कुव्वत काम मे लाऊँ, मेरी निगाह के सिवा और कोई निगाह इस मुरक़्क़े[8] की दिलावेज़ी नही देख सकेगी :

आईना नक़्शे-बंद तिलिस्मे-ख़याल नेस्त
तसवीरे-ख़ुद बलोहे-दिगर मीकशेम मा ![9]

इस मुश्किल से सिर्फ खाल खाल[10] मुसन्निफ़ ही ओहदा बरा[11] हो सकते थे, और हुये है। ये वो लोग है जो अपनी "अनानियत" को बगैर किसी नुमाइशी वजा[12] में सजाये दूसरों के सामने ले आने की सलाहियत[13] रखते थे। दुनिया के सामने उनकी "अनानियत" आई, मगर इस तरह आई जैसे एक बेतकल्लुफ आदमी बगैर सज धज बनाये आ खड़ा हो। यह बात कि एक आदमी बग़ैर किसी बनावट के अपनी वाकई सूरत में सामने आ गया, नमूदे हकीकत की एक

---

१. बडप्पन २. अहं ३. प्रकार का ४. ख़ुदी वह आईना है कि जिसका इज़हार नहीं हो सकता ५. विशेषता ६. बिल्कुल ७. तूलिका ८. चित्र की ९. आईना ख़यालों के तिलिस्म की नक़्शबंदी नही कर सकती हम अपनी तसवीर दूसरे कागज़ पर उतारते हैं १०. थोड़े ही ११. सफल १२. प्रदर्शन के रूप में १३. योग्यता।

ख़ास दिलकशी रखती है और इसलिये दुनिया की निगाहों को बेइख़्तियार अपनी तरफ खींच लेती है। जो खास खास अदीब ऐसा कर सके उनकी "मैं" खुद उनके लिये कितनी ही बड़ी और दूसरो के लिये कितनी ही छोटी वाके हुई हो, लेकिन दुनिया उसकी दिलपिज़ीरी से इंकार न कर सकी। दुनिया को उनकी अनानियत की मिकदार नापने की मोहलत ही नहीं मिली। वो उसकी बेतकल्लुफाना वाकईयत देखकर बेखुद हो गई!

एक आदमी जब अपनी तसवीर उतरवानी चाहता है तो खुद उसे इसका शऊर हो या न हो, लेकिन इस ख्वाहिश की तह में उसकी अनानियत की एक धीमी आवाज जरूर बोलने लगती है। तसवीर उतरवाने की मुख्तलिफ हालतें होती हैं। एक हालत वो है जिसे मुसव्विराना वजा (Pose) से ताबीर किया जाता है। यानी तसवीर उतरवाने के लिये एक खास तरह का अंदाज बतकल्लुफ इख्तियार कर लेना। एक माहिरे-फन मुसव्विर जानता है कि किस चेहरे और जिस्म की मुसव्विराना वजा कैसी होनी चाहिये? वो जब तक निशस्त ओ वजा[1] की नोक पलक दुरुस्त नही कर लेगा, तसवीर नही उतारेगा। सौ मे निन्यानवे आदमियों की ख्वाहिश यही होती है कि निशस्त और ढंग सजा के तसवीर उतरवाये। लेकिन फ़र्ज करो, एक आदमी बगैर किसी तैयारी और वजई अंदाज[2] के आलये-इनअकास[3] के सामने आ गया। और इसी आलम मे उसकी तसवीर उतर आई, तो ऐसी तसवीर किस निगाह से देखी जायेगी? ऐसी तसवीर महज इसलिये कि बेसाख्तगी और वाकईयत की ठीक ठीक ताबीर पेश करती है, यकीनन एक खास कद्र ओ कीमत पैदा कर लेगी। और जिस साहबे-नजर के सामने जायेगी उसकी तवज्जो अपनी तरफ खीच लेगी। वो यह नही देखेगा कि जिसकी तसवीर है वो खुद कैसा है? वो इसमें मह्व[4] हो जायेगा कि खुद तसवीर कितनी बेसाख्ता है!

बिऐनिहि[5] यही मिसाल उस सूरते-हाल की भी समझ लीजिये। जो मुसन्निफ अपनी अनानियत की बेसाख्ता तसवीर खीच दे सकते है, वो इस मामले की सारी मुश्किलो पर गालिब आ जाते है। उन्होने अपनी तसवीर खुद अपने कलम से खीची, लेकिन यह बात उसकी दिलावेजी मे कुछ मुख्लि[6] न हो सकी। क्योकि तसवीर बेतकल्लुफ और बेसाख्ता खीचीं। वो लोगों को बा अज़मत[7] दिखाई दे या न दे लेकिन उसकी बेसाख्तगी की गीराई[8] सबकी निगाहों को लुभा लेगी। ऐसे ही मुसन्निफ है जो अपनी अनानियत को लाफानी दिलपिजीरी का जामा पहना देते है।

---

१. बैठने का तौर तरीका २. तौर तरीके के ढंग के ३. कैमरे के ४. तल्लीन ५. ज्यों की त्यों ६. खलल डालनेवाली ७. शानदार ८. पकड़।

लेकिन यह बात भी याद रखनी चाहिये कि इंसान की तमाम मानवी महसूसात[1] की तरह उसकी इंफरादिय्यत की नमूद भी मुख्तलिफ हालतों में मुख्तलिफ तरह की नौइयत रखती है। कभी वो सोती रहती है, कभी जाग उठती है, कभी उठकर बैठ जाती है, और फिर कभी ज़ोर शोर से उछलने लगती है। इंसान की सारी क़ुव्वतों की तरह वो भी नश्वो नुमा की मोहताज हुई। जिस तरह हर इंसान का जहन ओ इदराक यकसां दर्जे का नही होता, उसी तरह इंफरादिय्यत का जोश भी हर देग मे एक ही तरह नही उबलता। मदारिज का यही फर्क है जो हम तमाम अदीबों, शायरों, मुसव्विरों और मूसीकी नवाजों में पाते है। अक्सरों की इंफरादिय्यत इतनी पुरजोश होती है कि जब कभी बोलेगी, सारा गिर्द ओ पेश गूंज उठेगा :

यक बार नाला कर्दअम अज दर्दे-इश्तियाक़
अज शिश जहत हनूंज सदा मीतवां शुनीद ![2]

इसीलिये अरब शायर को कहना पड़ा था :

व मद्दहरु इल्ला मिन रुवाति क़सायिदी
इजाक़ुल्तु शैरन् अस्बहद्दहरु मुंशिदन्[3]

ऐसे अफराद[4] अपनी "मैं" का सर-जोश किसी तरह नही दबा सकते। उनकी खामोशी भी चीखने वाली और उनका सुकून[5] भी तड़पने वाला होता है। उनकी इंफरादिय्यत दबाने से और ज्यादा उछलने लगेगी। ऐसे अफराद जब कभी "मैं" बोलते है, तो उसमें कस्द[6] बनावट, और नुमाइश को कोई दखल नही होता। वो सरतासर हकीकते-हाल की एक बेइख्तियाराना चीख होती है। फ़ैज़ी की एक चीख भी जो इस वक़्त तक हमारे सामिआ[7] से टकरा रही है :

मी कशद शोला सरे अज दिले-सद पारये-मा
जोशे-आतिश बुवद इमरोज़ बफ़व्वारये मा ![8]

लेकिन हर कानून की तरह यहाँ भी मुस्तस्नियात है। हमें तसलीम[9] करना पड़ता है कि कभी कभी ऐसी शख्सीयते भी दुनिया के मसरह (स्टेज) पर नमूदार हो जाती है जिनकी अनानियत की मिकदार इजाफी[10] नहीं होती,

---

१. स्वानुभव २. मैंने प्रेम के दर्द के कारण एक बार चीख की है आज छहों दिशाओं से उसकी आवाज़ सुनी जा सकती है ३. दुनिया के सिवा मेरे क़शीदों का कोई पढने वाला नही है, जब मैं शेर कहता हूँ तो सारी दुनिया शेर कहने लगती है ४. व्यक्ति ५. मौन ६. इरादा ७. कानों से ८. मेरे दिल के सौ टुकड़ों से शोले उठ रहे हैं आज मेरे फ़व्वारे में आग का जोश है ९. अपवाद १०. सापेक्ष।

बल्कि मुतलक[1] नोइयत रखती है। याने खुद उन्हे उनकी अनानियत जितनी बड़ी दिखाई देती है, उतनी ही वडी दूसरे भी देखने लगते है। उनकी अनानियत की परछाई जब कभी पड़ेगी, तो ख्वाह अंदर का आईना हो ख्वाह बाहर का, उसके अबआदे-सलासा (Dimensions) हमेशा यकसां तौर पर नमूदार होगे।

ऐसे अखस्सुलख्वास[2] अफराद को आम मैयारे-नजर से अलग रखना पडेगा। ऐसे लोग फिक्र ओ नजर के आम तराजुओ मे नही तोले जा सकते। अदब ओ तसनीफ के आम कवानीन[3] उन्हें अपने कुल्लियों[4] से नही पकड़ सकते। जमाने को उनका यह हक तस्लीम कर लेना पड़ता है कि वो जितनी मर्तबा भी चाहे "मै" बोलते रहे। उनकी हर "मै" उनकी हर "वो" और "तुम" से कही ज्यादा दिलपिजीर होती है।

अनानियती अदबियात की कोई खास किस्म ले लीजिये। मसलन खुद-नविश्ता सवानह ओ वारदात। और फिर मिसाल के लिये बगैर काविश[5] के चंद शख्सीयतें चुन लीजिये। मसलन सेंट आगस्टाइन, (Augustine) रूसो, स्ट्रेंडबर्ग (Strind Berg) टालस्टाय, अनातोले-फ्रांस, आन्द्री जीद (Andre Gide)। इनके खुद नविश्ता सवानह छह मुख्तलिफ नौइयतो की छह मुख्तलिफ तस्वीरे है। लेकिन सबने यकसा तौर पर अदबियाते-आलम[6] मे दायमी[7] जगह हासिल कर ली। क्योंकि तसवीरे बेसाख्ता और वाकई है। मशरिकी अदबियात मे मसलन गजाली, इब्ने-खल्लदून, बाबर, जहाँगीर और मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी के खुद नविश्ता हालात सामने लाइये। हम कितनी ही मुखालिफाना निगाहो से उन्हे पढे, लेकिन उनकी दिलावेजी के मुतालबे[8] से इकार नही कर सकते। गजाली ने अपने फिक्री इंफआलात[9] की सरगुजश्त सुनाई। इब्ने खल्लदून ने अपने तालीमी और सियासी अलायक की दास्तांसराई की, बाबर ने जंग ओ अमन के वाकयात ओ वारदात कलमबंद किये। जहाँगीर ने तख्ते-शहशाही पर बैठकर वकाया-निगारी का कलमदान तलब किया। इन सब में उनकी अनानियतें बेपर्दा बोल रही है। हम इन्हे खुद उनकी निगाहों मे नहीं देख सकते। ताहम देखते है और उनकी लाफानी दिलावेजी से इंकार नही कर सकते। क्योंकि बगैर किसी बनावट के सामने आ गई है।

बदायूनी का मामला औरो से अलग है। तबकये-अवाम[10] का एक फ़र्द

---

१. विशुद्ध २. विशिष्टो मे विशिष्ट व्यक्ति ३. कानून का बहुवचन ४. सिद्धान्तो में ५ प्रयत्न के ६ दुनिया के साहित्य मे ७. शाश्वत ८. तलब ९. वैचारिक प्रतिक्रियाये १०. आम लोगों में का।

जिसने वक्त की दर्सयाती तालीम हासिल करके उल्मा के हल्के मे अपनी जगह बनाई और दरबारे-शाही तक रसाई हासिल कर ली। उसकी जिंदगी की तमाम सरगर्मियों मे अगर खुसूसियत के साथ कोई चीज उभरती है तो वो उसकी बेलचक तंगनजरी, बेरोक तास्सुब, और बेमेल रासिख-उल-ऐतकादी[1] है। हमें उसकी अनानियत न सिर्फ बहुत छोटी दिखाई देती है, बल्कि कदम कदम पर इकार ओ तबर्रा[2] की दावत देती है। ताहम यह क्या बात है कि इस पर भी हम अपनी निगाहों को उसकी तरफ उठने से रोक नही सकते? हम उसे पसंद नही करते, फिर भी उसे पढते है और जी लगाकर पढते है। ग़ौर कीजिये यह वही बात हुई जो अभी थोड़ी देर हुई हम सोच रहे थे। जिस शख्स की यह तसवीर है, वो खुद खूबसूरत नही है लेकिन तसवीर ब हैसियत एक तसवीर के खूबसूरत है। इसलिये हमारी निगाहो को बेइख्तियार अपनी तरफ मुतवज्जा कर लेती है। यह साहबे-तसवीर नही था जिसने हमारी निगाहो को खीचा। यह तसवीर की बेसाख्तगी थी जिसके बुलावे की कशिश से हम अपने आपको न बचा सके।

टालस्टाय गालिबन उन खास शख्सो मे से था जिनकी अनानियत की मिकदार इजाफ़ी होने की जगह एक मुतलक नौइयत रखती थी। उसकी अनानियत खुद उसे जितनी बड़ी दिखाई दी, दुनिया ने भी उसे उतना ही बडा देखा। पिछली सदी के आखिरी और इस सदी के इब्तदाई दौर मे शायद ही वक्त का कोई मुसन्निफ इस खुद ऐतमादी[3] के साथ "मैं" बोल सका, जिस तरह यह अजीब ओ गरीब रूसी बोलता रहा। उसके खुद नविश्ता हालात, उसके शख्सी वारदात ओ तास्सुरात, उसके मुख्तलिफ वक्तो के मकालमे[4] और रोजनामचे, उसके अदबी ओ फन्नी मबाहिस, सब मे उसकी अनानियत बगैर किसी नकाब के दुनिया के सामने आई, और दुनिया उसे आलमगीर नविश्तो के साथ जमा करती रही। उसके खुद-नविश्ता सवानह जो एक बेरंग सादगी के साथ लिखे गये है, उसकी वार एण्ड पीस और अना केरेनिना से कम दिलपिजीर नही है। और दर असल इन दोनों अफसानों मे भी उसकी अनानियत ही की सदायें हम सुन रहे है। जमाना उसकी कलमकारियों का रंग ओ रोगन अभी तक मद्धम नही कर सका। पिछली जग के जमाने मे लोग वार एण्ड पीस अज-सरे-नौ ढूंढने लगे थे और अब फिर ढूंढ रहे है।

मौजूदा अहद[5] में टालस्टाय की अज़मत[6] बहैसियत एक मुफ़क्किर[7] के बहुत दिमाग़ों को मुतवज्जा कर सकेगी। योरप और अमरीका के दिमागी

---

१. धार्मिक कट्टरपन २. बरी होने की ३. आत्मविश्वास ४. संवाद ५. जमाने में ६. महानता ७. चितक।

तबकों में बहुत कम लोग ऐसे निकलेंगे जो उसके मआशिरती[1], फिलस्फी और जमालयाती (Aesthetics) अफकार को उस नजर से देखने के लिए तैयार हों, जिस नजर से इस सदी के इब्तदाई दौर के लोग देखा करते थे। ताहम उसकी अनानियती अदबियात की दिलपिजीरी से अब भी कोई इंकार नही कर सकता। उसकी अजीब जिंदगी का मुअम्मा अब भी बहस ओ नजर का एक दिलपसंद मौजू है। हर दूसरे तीसरे साल कोई न कोई नई किताब निकलती रहती है।

पिछली सदी के आखिरी और इस सदी के इब्तदाई दौर मे बकसरत खुदनविश्ता सवानह उम्रियाँ लिखी गईं। कहा जा सकता है कि इस अहद के हर चौथे मुसन्निफ ने जरूरी समझा कि अपनी गुजरी हुई जिंदगी को आखिरी उम्र मे फिर एक मर्तबा दोहरा ले दुनिया के कुतुबखानो ने उन सबको अपनी अलमारियो मे जगह दी है, लेकिन दुनिया के दिमागो मे बहुत कम के लिये जगह निकल सकी।

मैने इब्तदाई सुतूर[2] मे "ईगो" का लफ्ज इस्तेमाल किया है। यह वही यूनानी "Ego" की तारीब[3] है जो अरस्तू के अरबी मुतरज्जिमों[4] ने इब्तदा ही मे इख्तियार कर ली थी और फिर फाराबी और इब्ने-रुश्द वगैरहुमा बराबर इस्तेमाल करते रहे। मै खयाल करता हूँ कि फिलसफियाना मबाहिस मे "अना" की जगह "ईगो" का इस्तेमाल ज्यादा मौजू होगा। यह बराहे-रास्त फिलसफियाना इस्तलाह[5] को रुनुमा कर देता है और ठीक वही काम देता है जो योरप की जबानो मे "ईगो" दे रहा है। यह उस इश्तबाह[6] को भी दूर कर देगा जो "अना" मुस्तलहये-फिलसफा और "अना" मुस्तलहये-तसव्वुफ मे बाहम दिगर पैदा हो जा सकता है। उर्दू मे हम "इगो" बिजिन्सिहि ले सकते है। क्योकि हमे साफ से एहतराज[7] करने की जरूरत नही।

अबुलकलाम

---

१. समाजी २. प्रारंभिक पक्तियों मे ३. अरबी शब्द है ४. अनुवादकों ने ५. परिभाषा को ६. शका ७. परहेज।

हिकायते-ज़ाग़ ओ बुलबुल[1]

क़िलअ़े-अहमदनगर
२, मार्च सन् '४३ ई.

सदीके-मुकर्रम

कल आलमे-तसव्वुर[2] में हिकायते-जाग ओ बुलबुल तरतीब दे रहा था :

मजमूअ़ये-खयाल अभी फ़र्द फ़र्द था[3]

इस वक्त खयाल हुआ, एक फसल आपको भी सुना दूं।

ता फ़स्ले अज हकीक़ते-अशया नविश्ता अेम
आफ़ाक़ रा मुरादिफे-अन्क़ा नविश्ता अेम[4]

एक दिन सुबह चाय पीते हुये नही मालूम सैयद महमूद साहब को क्या सूझी एक तश्तरी मे थोडी सी शकर लेकर निकले और सहन में जा-बजा कुछ ढूंढने से लगे।

गोई ई तायफ़ा ईं जा गुहरे याफ्ता अंद।[5]

जब उनका तआक्कुब[6] किया गया तो मालूम हुआ, चीटियों के बिल ढूंढ रहे है। जहाँ कोई सूराख दिखाई दिया, शकर की एक चुटकी डाल दी। मैंने जो यह हाल देखा तो यह कह कर उनके समन्दे-सअी[7] पर एक ताजियाना[8] लगा दिया कि —

व लिलअरजी मिन कासिल किरामि नसीबु[9]

कहने लगे इसका तर्जुमा कीजिये। मैने कहा—ख्वाजये-शीराज मय इज़ाफे[10] के कर चुके है :

अगर शराब खुरी जुरअ़ये फ़शां बर खाक़
अज़ां गुनाह कि नफ़अ़े रसद ब गैर च बाक[11]

---

१. कौवे और बुलबुल की कहानी २. खयालों की दुनिया ३. खयालो का मजमुआ अभी अलग-अलग था ४. दुनिया की चीजों के बारे में अर्थात् फलसफे के बारे मे कुछ लिखू मैने दुनिया को अन्का का पर्यायवाची मान लिया है जिसका कि कोई अस्तित्व नही है। यानी दुनिया भी नही है। ५. मानो इस जमात को यहाँ मोती मिला है ६. पीछा ७. प्रयत्न का घोड़ा ८. कौड़ा ९. बुजुर्ग लोग जो शराब पीते है उसमें ज़मीन का भी हिस्सा होता है। १०. वृद्धि ११. अगर तू शराब पीता है तो एक घूट धरती पर भी छिड़क दे। क्योकि जिस गुनाह से दूसरे को फ़ायदा पहुँचे उसमें क्या डर है।

यहाँ कमरो की छतों मे गौरैयाओ के जोड़ो ने जाबजा घोसले बना रखे है। दिन भर उनका शोर ओ हंगामा बरपा रहता है। चंद दिनों के बाद महमूद साहब को खयाल हुआ, इनकी भी कुछ तवाजा[1] करनी चाहिये। मुमकिन है, गौरैयाओ की जबाने-हाल ने उन्हे तवज्जो दिलाई हो कि।

निगाहे-लुत्फ़ के उम्मीदवार हम भी है।

छपरा मे एक मर्तबा उन्होने मुर्गियाँ पाली थी। दाना हाथ मे लेकर आ आ करते तो हर तरफ से दौडती हुई चली आती। यही नुस्खा चिड़ियो पर भी आजमाना चाहा। लेकिन चद दिनो के बाद थक कर बैठ रहे। कहने लगे, अजीब मामला है। दाना दिखा दिखा कर जितना पास जाता हूँ, उतनी ही तेजी से भागने लगती है। गोया दाने की पेशकश[2] भी एक जुर्म हुआ :

खुदाया जज्बये-दिल की मगर तासीर उल्टी है
कि जितना खींचता हूं और खिचता जाय है मुझसे

मैने कहा, तलब ओ नियाज की राह मे कदम उठाया है तो ग्रिश्वा व नाज[3] की तगाफुल कीशियों[4] के लिये सब्र ओ शकेब[5] पैदा कीजिये। नियाजे-इश्क[6] के दावो के साथ नाजे-हुस्न की गिलामदियाँ जेब[8] नही देती —

ब नाज़ुकी न बरी पै ब मंज़िले-मक़सूद
मगर तरीक़े-रहश अज़ सरे-नियाज़ कुनी
अगर ब नाज़ बरानद मरौ कि आख़िरकार
बसद नियाज़ बख़्वानद तुरा व नाज़ कुनी[9]

यहाँ कभी-कभी सुबह को जगली मैनाओ के भी दो तीन जोडे आ निकलते है, और अपनी गुटर गुटर और च्यू च्यू के शोर से कान बहरा कर देते है। अब महमूद साहब ने गोरैयाओं के इश्क पर तो वासोख्त[10] पढ़ा, मगर इन आहवाने-हवाई[11] के लिये दामे-जयाफत[12] बिछा दिया :

मन ओ आहूये सहराये कि दायम मीरमीद अज़ मन[13]

रोज़ सुबह रोटी के छोटे छोटे टुकड़े हाथ मे लेकर निकल जाते और सहन मे

---

१. खातिरदारी २ भेट ३. नाज नखरो ४. उपेक्षाओ के लिये ५. शाति और धीरज ६. प्रेम की विनीतता ७. शिकायते ८. शोभा ९. नजाकत के साथ मकसद की मजिल पर कदम मत रख बल्कि उसकी राह पर विनय के साथ सर झुका कर चल, अगर नाज के साथ चलाये तो मत चल, क्योकि आखिरकार वह तुझे सैकड़ों नियाज के साथ बुलायेगा और तू नाज करेगा १०. मुँह फेर लिया ११. हवाई हिरनों के लिये १२. मेहमानदारी का जाल १३. मै हूँ और जंगल के हिरन है जो कि हमेशा मुझ से दूर भागते हैं।

जा खड़े होते। फिर जहाँ तक हलक[1] काम देता आ, आ, आ करते जाते और टुकड़े फ़जा को दिखा दिखा कर फेकते रहते। यह सलाये-आम[2] मैनाओं को तो मुल्तफित[3] न कर सकी। अलबत्ता शहरिस्ताने-हवा के दर्यूजागराने[4]-हर-जाई याने कौवो ने हर तरफ से हुजूम शुरु कर दिया। मैंने कौवों को शहरिस्ताने-हवा का दर्यूजागर इसलिये कहा कि कभी उन्हे महमानो की तरह कही जाते देखा नही। तुफैलियों[5] के गोल मे भी बहुत कम दिखाई पडे। हमेशा इसी आलम में पाया कि फकीरों की तरह हर दरवाजे पर पहुँचे, सदायें[6] लगाई और चल दिये .

फ़कीराना आये, सदा कर चले।

बहर हाल महमूद साहब आ आ के तसलसुल[7] से थक कर जू ही मुडते, ये दर्यूजागराने-कोतह आस्तीन[8] फौरन बढते और अपनी दराज-दस्तियों[9] से दस्तरख्वान साफ करके रख देते

अय कोतह आस्तीनां! ता कै दराजदस्ती![10]

सहन के शुमाली किनारे मे नीम का एक तनावर दरख्त है। इस पर गिलह-रियों के झुड कूदते फिरते है। उन्होने जो देखा कि

सलाये-आम है याराने-नुक्तादां के लिये!

तो फौरन लब्बैक-लब्बैक[11] और "मरहमते आली जयाद[12]" कहते हुये उस दस्तरख्वान पर टूट पडी—

यारां! सलाये-आम स्त गर मी कुनेद कारे![13]

कौवो की दराजदस्तियो से जो कुछ बचता, इन कोताहदस्तों की कामजोइयों[14] का खाजा बन जाता। पहले रोटी के टुकड़ो पर मुँह मारती, फिर फौरन गरदन उठा लेती। टुकडा चबाती जाती और सर हिला हिलाकर कुछ इशारे भी करती जाती। गोया महमूद साहब को दादे-जयाफत[15] देते हुए बतरीके-हुस्ने-तलब[16] यह भी कहती जाती है कि—

---

१. गला २. आम निमंत्रण ३. आकर्षित ४. हर जगह जाने वाले भिखमगे ५. बिन बुलाये जो मेहमान के साथ आते है उन्हे तुफैली कहते है। ६. आवाज ७. किसी बात के अनवरत होने को तसलसुल कहते हैं ८ ओछे भिखमगे, कोतह आस्तीन का शाब्दिक अर्थ है, जिसकी आस्तीनें छोटी हों ९ हाथ मारना १०. ओ कोतह आस्तीनो अर्थात कमीनो यह कब तक जुल्म करते रहोगे। ११ हाजिर हूँ, हाजिर हूँ १२. आप जो दयालु है ईश्वर करे आपकी दयालुता और ज्यादा हो १३. यारो आम निमत्रण है अगर कुछ करना है तो करो १४. इच्छाओं १५. मेहमाननवाजी की दाद १६. खूबसूरती से माँगना।

गरचे खूब स्त, व लेकिन क़दरे बेहतर अर्ज़ीं ।[1]

खैर, बेचारी गिलहरियो का शुमार तो इस सुफरये-करम[2] के रेजाचीनो[3] मे हुआ । लेकिन कौवे जिन्हे तुफैली समझ कर मेजबाने-आलीहिम्मत ने चंदां[4] तार्रुज[5] नही किया था, अचानक इस कदर बढ गये कि मालूम होने लगा, पूरे अहमदनगर को इस बख्शिशे-आम की खबर मिल गई है। और इलाके के सारे कौवों ने अपने-अपने घरो को खैर बाद कहकर यहाँ धूनी रमाने की ठान ली है । बेचारी मैनाओ को जो इस एहतिमामे-जयाफत की असली मेहमान थी, अभी तक खबर भी नही पहुंची थी । और अब अगर पहुँच भी जाती तो भला तुफैलियो के इस हुजूम मे उनके लिए जगह कहाँ निकलने वाली थी ।

तुफ़ैली जमा शुद चंदां कि जाये-मेहमां गुम शुद[6]

महमूद साहब के सलाये-आम से पहले ही यहा कौवो की कॉय कॉय की रोशन चौकी बराबर बजती रहती थी । अब जो उनका दस्तरख्वाने करम बिछा तो नक्कारो पर भी चोब पड गई । एक दो दिन तक तो लोगों ने सब्र किया । आखिर उनसे कहना पडा कि अगर आपके दस्ते-करम की बख्शिशे रुक नही सकती तो कम अज कम चंद दिनो के लिये मुल्तवी ही कर दीजिये । वर्ना इन तुर्काने-यग्मा[7] दोस्त की तुर्कताजियां[8] कमरों के अदर के गोशानशीनो को भी अमन चैन से बैठने न देगी । और अभी तो सिर्फ अहमदनगर ही के कौवो को खबर मिली है । अगर फैजे-आम का यह लगरखाना इसी तरह जारी रहा तो अजब नही तमाम दकन के कौवे किलए-अहमदनगर पर हमला बोल दे और आपको सायब का शेर याद दिलायें कि—

दूरदस्तांरा ब एहसां याद कर्दन हिम्मत स्त
वर्ना हर नख़्ले बपाये-ख़ुद समर मीअफ़गनद ।[9]

अभी महमूद साहब इस दरख्वास्त पर गौर कर ही रहे थे कि एक दूसरा वाकया जहूर मे आ गया । एक दिन सुबह क्या देखते है कि छत की मुडेर पर दो मुअम्मर[10] ओ मशय्यन[11] गिद्ध की तशरीफ ले आये है —

पीरी से कमर में इक ज़रा ख़म
तौक़ीर की सूरत - मुजस्सम[12]

---

१. यद्यपि यह खूब अच्छा है लेकिन जरा इससे बढ़कर हो २. प्रीतिभोज ३. टुकड़े चुनने वाले ४. इतना ५. विरोध ६. तुफ़ैली इतने जमा हो गये कि मेहमान के लिये जगह नही रही ७. उम्दा माल लेकर भाग जानेवाले तुर्क याने कौवे ८. हमले ९. जो दूर है उन्हे किसी भेट के साथ याद करना हिम्मत की बात है । वरना हर पेड अपने पैरो पर तो फल गिराता ही है १०. बड़ी उम्र के ११ मोटे १२. मानो बड़प्पन की साक्षात् मूर्ति हों ।

और गरदन उठाये सलाये-सुफरा के मुतज़िर है—

अय खाना बर अंदाज़े-चमन ! कुछ तो इधर भी !

मालूम होता है, इन नाख्वादा महमानों की आमद महमूद साहब पर भी बा ई हमा जूद[1] ओ सखाये-आम, गरां[2] गुजरी । कहने लगे, बुजुर्गो ने कहा है गिधो का आना मनहूस होता है । बहर हाल इन हजरात के बारे मे बुजुर्गाने-सलफ[3] का कुछ ही ख्याल रहा हो, लेकिन वाक़या यह है कि उनकी तशरीफ आवरी हमारे लिये तो बडी ही बा बरकत साबित हुई । क्योकि इधर उनका मुबारक कदम आया, उधर महमूद साहब ने हमेशा के लिये अपना सुफरये-करम[4] लपेटना शुरु कर दिया । एक लिहाज से मामले पर यू भी नजर डाली जा सकती है कि उनकी आमद की आबादी मे इस हंगामये-जयाफत[5] की वीरानी पोशीदा थी । देखिये, क्या मौके से मोमिन खा का कसीदा याद आ गया—

शैख जी आपके आते ही हुआ दैर[6] खराब
क़स्द काबे का न कीजियेगा बई युम्ने-क़दूम[7]

खैर, चद दिनो के बाद बात आई गुजरी हुई । लेकिन कौवो के गोलो से अब नजात[8] कहाँ मिलने वाली थी ? दर्यूजागरो ने करीम की चौखट पहचान ली । वो रोज मुअय्यन[9] वक्त पर आते और अपने फरामोशे-कार[10] मेज़बान को पुकार पुकार कर दुआएँ देते—

मियां खुश रहो, हम दुआ कर चले !

इसी असना[11] मे मौसम ने पल्टा खाया । जाडे ने रख्ते-सफर[12] बांधना शुरू किया । बहार की आमद आमद का गलगला बरपा हुआ । अगरचे अभी तक :

उड़ती सी इक खबर थी ज़बानी तुयूर[13] की !

हम जब गुज़श्ता साल अगस्त मे यहाँ आये थे तो सहन बिल्कुल चटियल मैदान था । बारिश ने सब्जा[14] पैदा करने की बार-बार कोशिशे की, लेकिन मिट्टी ने बहुत कम साथ दिया । इस बेरग मंजर[15] से आंखे उकता गई थी और सब्जा ओ गुल के लिये तरसने लगी थी । खयाल हुआ कि बागबानी का मशगला क्यो न इख्तियार किया जाये कि मशगले का मशगला होता है और अशहाबे-सूरत और असहाबे-मानी दोनो के लिये सामाने-जौक[16] बहम पहुचाता है :

---

१. आम दया और दाक्षिण्यता २. भारी ३. पुराने बुजुर्ग लोगो का ४. मेहरबानी का दस्तरख्वान ५. मेहमानदारी की प्रवृत्ति ६. दुनिया, देवालय ७. मुबारक कदम ८. मुक्ति ९. ठीक, निश्चित १०. काम को भूला हुआ ११. बीच मे १२. सफर का सामान १३. चिड़ियो की १४. घास १५. दृश्य १६. रुचि का सामान ।

ब बू असहाबे-मानीरा, बरंग असहाबे-सूरतरा[1]

जवाहरलाल जिनका जौहरे-मुस्तैदी हमेशा ऐसी तजवीजों की राह तकता रहता है, फौरन कमरबस्ता हो गये। और इस खराबे मे रंग ओ बू की तामीर का सरोसामान शुरू हो गया :

दिल के वीराने में भी हो जाय दम भर चाँदनी

इस कारखानये-रग ओ बू के हर गोशे मे वजूद[2] की पैदाइश और जामये-हस्ती[3] की आराइश के लिये दो बातों की दुरुस्तगी जरूरी होती है। पहली यह कि बीज दुरुस्त हो।

गर जां बदिहद संगे-सियह लाल न गरदद
बा तीनते-असली च कुनद बद गुहर उफ़्ताद ![4]

दूसरी यह कि ज़मीन मुस्तैद हो—

जौहरे-तीनते-आदम ज खमीरे दिगर स्त
तो तवक़्क़ो ज गिले-कूज़ागरां मीदारी ![5]

चुनांचे यहाँ भी सबसे पहले इन्ही दो बातों की फिक्र की गई। बीज के लिये चीनाखा को कह कर पूना लिखवाया गया कि वहाँ के बाज बागो के जखीरे बीजो की खूबी ओ सलाहियत के लिये मशहूर है। लेकिन जमीन की दुरुस्तगी का मामला इतना आसान न था। अहाते की पूरी जमीन दर असल किले की पुरानी इमारतो का मलबा है। जरा खोदिये और पत्थर के बड़े-बड़े टुकडे और चूने और रेत का बुरादा हर जगह निकलने लगता है। दरम्यानी हिस्सा तो गोया गुबदो और मकबरो का मदफन है। नही मालूम किन किन फ़रमा-रवाओ और कैसे-कैसे परी चेहरो की हड्डियो से इस खराबे की मिट्टी गूधी गयी है, और जमाने-हाल से कह रही है—

क़दह बशर्ते-अदब गीर, जां कि तरकीबश
ज कासये-सरे-जमशेद ओ बहमन स्त ओ क़बाद ![6]

नाचार तख्तो की दागबेल डाल कर दो-दो तीन-तीन फुट जमीन खोद दी गई।

---

१. खुशबू से असहाबे-मानी अर्थात अर्थ की बारीकियो को समझने वालों को और रंग से रूप परस्तों को खुश करने वाला २. किसी चीज का होना ३. हस्ती का लिबास ४. अगर काला पत्थर जान भी दे दे तो लाल नही हो सकता। अपनी स्वभाव से मजबूर है कि वही खोटा है ५. आदमी की प्रवृत्ति का जौहर किसी और ही खमीर से है लेकिन तेरा ध्यान कूजे बनाने वाले की मिट्टी से है कि वह उसी का बना हुआ है ६. शराब का प्याला अदब के साथ हाथ मे पकड़ो क्योंकि उसकी बनावट जमशेद, बहमन और कैकुबाद की खोपड़ियों से हुई है।

और बाहर से मिट्टी और खाद मँगवाकर उन्हे भरा गया। कई हफ़्ते इसमे निकल गये। जवाहरलाल सुबह ओ शाम फावडा और कुदाल हाथ में लिये कोह कंदन[1] और काह[2] बर आवुर्दन में लगे रहते थे—

आग़िश्ता आयम हर सरे-ख़ारे ब ख़ूने-दिल

क़ानूने-बाग़बानिये-सहरा नविश्ता अेम ![3]

इसके बाद आबपाशी का मरहला पेश आया, और इस पर गौर किया गया कि केमिस्ट्री के हकायक[4] से फने-जराअत[5] के ऐमाल[6] मे कहाँ तक मदद ली जा सकती है। इस मौजू[7] पर अरबाबे-फन[8] ने बडी नुक्ता आफरीनियाँ[9] की। हमारे काफिले मे एक साहब बगाल के है जिनकी साइटिफिक मालूमात हर मौके पर जरूरत हो या न हो अपनी जलवा तराजियो[10] का फय्याज़ाना[11] अिसराफ़[12] करती रहती है। उन्होने यह दकीक[13] नुक्ता सुनाया कि अगर फूलो के पौदों को हैवानी खून से सीचा जाये तो उनमे नबातानी[14] दर्जे से बुलद होकर हैवानी दर्जे मे क़दम रखने का वलवला पैदा हो जायेगा, और हफ्तो की राह दिनो मे तय करने लगेगे। लेकिन आजकल जबकि जंग की वजह से आदमियो को खून की जरूरत पेश आ गई है, और उसके बेक खुल रहे है, भला दरख्तों के लिये कौन अपना खून देने के लिये तैयार होगा ? एक दूसरे साहब ने कहा, यहाँ किले के फौजी मेस मे रोज मुर्गियाँ जिबह की जाती है। उनका खून जडो मे क्यो न डाला जाये ? इस पर मुझे इर्तजालन[15] एक शेर सूझ गया। हालाकि शेर कहने की आदत मुद्दते हुई भुला चुका हूँ—

कलियों में एहतिज़ाज़[16] है परवाज़े हुस्न की
सींचा था किसने बाग़ को मुर्ग़ी के ख़ून से

अगर मुर्गी की जगह बुलबुल कर दीजिये तो ख़याल बदो की तर्ज़ का अच्छा खासा शेर हो जायेगा—

गुंचों में एहतिज़ाज़ है परवाज़े-हुस्न की
सींचा था किसने बाग़ को बुलबुल के ख़ून से

शेर सुनकर आसफ़ अली साहब के शायराना वलवले जाग उठे। उन्होने इस

---

१. पत्थर फोड़ना २. मिट्टी बाहर निकालना ३ अपने दिल के खून से हर कॉटे को रक्त रंजित कर दिया है, याने कि हमने जगल मे बागवानी करने के तरीके लिख दिये है ४ तथ्य ५. कृषि की कला ६. काम ७. विषय ८. कला के जानकार ९. बारीक बाते निकाली १०. प्रगटन ११. जी खोलकर १२. अपव्यय १३. सूक्ष्म १४. वानस्पतिक १५. बिन सोचे १६. खुशी मे हिलना।

जमीन में गजल कहनी शुरू कर दी। लेकिन फिर शिकायत करने लगे कि क़ाफ़िया तंग है। मैंने कहा, वैसे भी यहाँ काफ़िया तग ही हो रहा है।

देखिये, समंदे-फिक्र[1] की वहशत-खरामी[2] बार बार जादये-सुखन[3] से हटना चाहती है और चौक चौक कर बाग खींचने लगता हूँ। जो बात कहनी चाहता था, वो यह है कि सितंबर और अक्तूबर मे बीज डाले गये। दिसंबर के शुरू होते ही सारे मैदान की सूरत बदल गई, और जनवरी आई तो इस आलम मे आई कि हर गोशा मालन की झोली था, हर तख्ता गुलफ़रोश का हाथ था, गोया—

कुनूं कि दर चमन आमद गुल अज अदम ब वजूद
बनफ़्शा दर क़दमे-ऊ निहाद सर ब सजूद
बबाग़ - ताजा कुन आईने दीने - जरदुश्ती
कुनूं कि लाला बरअफ़रोख़्त आतिशे - नमरूद
ज दस्ते शाहिदे सीमीं अिज़ारे - ईसा दम
शराब नोश ओ रिहा कुन हदीसे-आद ओ समूद[4]

का आलम तारी हो गया। लेकिन आईने-जरदुश्ती के ताजा करने का सामान यहाँ कहाँ था ? और शाहिदे-सीमी-अिजार[5] के अन्फासे-ईसवी[6] की ऐजाज-फरमाइयाँ[7] कहाँ मयस्सर आ सकती थी ? सो इसकी कमी आलमे-तसव्वुर की जौलानियों से पूरी की गई। जमाने की तुनुक मायगी[8] जिस कदर कोताहियाँ करती रहती है, फिक्रे-फराग[9] हौसले की आमूदगियाँ[10] उतनी ही बढती जाती है .

चु दस्ते-मा ब दामने-वस्लश नमीरसद
पाये-तलब शिकस्ता बदामां निशस्ता अेम[11]

---

१. विचारो का घोडा २. इधर-उधर भटकना ३. बात का रास्ता ४. अब वह वक्त आ गया है कि बाग मे फूल नेस्ती से हस्ती मे आ गये है याने फूल खिल गये है और बनफ्शे के फूल ने उनके स्वागत मे अपना सिर झुका दिया है। अब बाग मे जरदुश्ती मज़हब के विधान को ताजा करो क्योंकि अब लाला के फूल ने नमरूद की आग भड़का दी है। (नमरूद एक बादशाह का नाम है जिसने अग्नि पूजा प्रारभ की) और ऐसा माशूक जिसके गाल चाँदी की तरह गोरे और जिसकी सास मे ईसा की तरह ज़िदा कर देनेवाली फूक हो उसके हाथ से शराब पी और आद और समूद की बातें छोड़ दे। (आद हज़रत नूह की कौम और समूद भी एक कबीले का नाम है)। ५. गोरे गाल की माशूक ६. ईसा की ज़िदा करनेवाली सासों की ७. चमत्कारपूर्ण बाते ८. पूजी की कमी ९. ऊचे हौसलेवाली कल्पनाये १०. राहत, आराम ११. चूकि मेरा हाथ उसके मिलन के दामन तक नही पहुंचता, मैं अपनी इच्छाओ को तोड़कर उसके दामन पर बैठा हूँ।

वक़्त की रियायत से अक्सर फूल मौसमी थे। चालीस से ज्यादा क़िस्मे गिनी जा सकती थीं। सबसे पहले मॉर्निंग ग्लोरी (Morning Glory) ने इस खराबये-बेरंग को अपनी शिगुफ़्तियों से रंगीन किया। जब सुबह के वक़्त आसमान पर सूरज की किरनें मुस्कुराने लगती तो जमीन पर मॉर्निंग ग्लोरी की कलियाँ खिलखिलाकर हँसना शुरू कर देतीं। अबू तालिब कलीम को क्या खूब तमसील[1] सूझी थी :

शीरीनिये - तबस्सुम हर गुंचारा मपुर्स
दर शीरे-सुबह खंदये-गुलहा शकर-गुज़ाश्त[2]

कोई फूल याक़ूत[3] का कटोरा था, कोई नीलम की प्याली थी, किसी फूल पर गंगा जमनी की कलमकारी की गई थी, किसी पर छींट की तरह रंग बिरंग की छपाई हो रही थी। बाज फूलों पर रंग की बूंदें इस तरह पड़ गयी थीं कि खयाल होता था, सन्नाये-कुदरत[4] के मूकलम मे रंग ज्यादा भर गया होगा। साफ़ करने के लिए छिटकना पड़ा और उसकी छींटे क़बाये-गुल[5] के दामन पर पड़ गईं :

तकल्लुफ़ से बरी है हुस्ने-ज़ाती
क़बाये-गुल में गुलबूटा कहाँ है ?

"ग्लोरी" का उर्दू मे तर्जुमा कीजिये तो बात बनती नही। "अजलाले-सुबह"[6] वगैरह कह सकते है, लेकिन ज़ौके-सलीम[7] हर्फ़गीरी[8] करता है। इसलिये मैं मॉर्निंग-ग्लोरी को "बहारे-सुबह" के नाम से पुकारता हूँ।

यह वक़्त है शिगुफ़्तने-गुलहाये-नाज़ का

बहारे-सुबह की बेले बरामदे की छत तक पहुँचा कर फिर अंदर की तरफ फैला दी गई थी। चंद दिनो के बाद नज़र उठाई तो सारी छत पर फूलों से लदी हुई शाखें फैल गई थी। लोग फूलो की सेज बिछाते है और अपनी करवटों से उसे पामाल करते रहते है। हमारे हिस्से में काँटों का फ़र्श आया तो हमने अपनी फूलों की सेज बिस्तर से उठाकर छत पर उलट दी। तलवों के काँटे चुनते रहते है मगर निगाह हमेशा ऊपर की तरफ रहती है।

गुजर चुकी है यह फ़स्ले-बहार हम पर भी !

सामने दो तख्तो मे जिनिया (Zinnia) के फूल रंग बिरंग के साफे बाँधे नमूदार हो गये। जिनिया के फूल कई किस्म के होते है। ये बड़े जिनिया

---

१. उपमा २. प्रत्येक कली की मुस्कुराहट की मिठास को मत पूछो सुबह के दूध में फूलों की मुस्कुराहट शकर मिला रही है ३. लाल ४. प्रकृति के शिल्पी ५. फूल का चोगा ६. सुबह की शोभा ७. सुरुचि ८. ऐब-गीरी, गलती निकालना।

के फूल थे। उनके साफो की लपेट इतनी मुरत्तब[1] और मुदव्वर[2] वाके हुई थी कि मालूम होता था किसी मश्शाक[3] दस्तारबद[4] ने कालिब[5] पर चढाकर पेचों की एक एक सिलवट निकाल दी है। जूं जूं उम्र बढती गई, साफों की जखामत[6] भी बढ़ती गई। और फिर तो ऐसा मालूम होने लगा जैसे पहरेदारों की सफें रंग बिरंग की पगडियाँ बाँधे खड़ी है और जिदानियाने-किले[7] की तरह इस बागे-नौ रुस्ता[8] की भी पासबानी[9] हो रही है।

कि बुलबुलां हमा मस्तंद ओ बाग़बां तनहा ![10]

इन तख्तों के दरम्यान गुले-खतमी याने हाली हाक (Holly hock) का हल्का है। यह रंग बिरंग के वाइन ग्लास हाथो में लिये खडे थे। हर शाख इतने ग्लास सँभाले हुयी थी कि दिल अंदेशानाक[11] रहता, कही ऐसा न हो हवा के झोंकों की ठोकर लगे और ग्लास गिर कर चूर चूर हो जाये। दानिश मशहदी ने गालिबन इन्ही फूलों की एक शाख देखकर कहा था :

दीदा अम शाखे-गुले, बरखेश मीपेचम कि काश
मी तवानिस्तम बयक दस्त ईं क़दर साग़र गिरफ़्त[12]

तखय्युल दर असल अमीर खुसरू से माखूज[13] है, जिसने इसी जमीन मे कहा था :

हस्त सहरा चूं कफ़े-दस्त ओ बुरद अज़ लाला जाम
खुश कफ़े-दस्ते कि चंदीं जामे-सहबा बर गिरफ़्त[14]

गुले-खतमी के फूलों की तश्बीह[15] कितनी ही दिलकश हो, मगर यह मानना पड़ेगा कि हुस्ने-नजाकत की अदाये यहाँ नही मिल सकती। ग्लास खुशनुमा है, मगर नाजुक नही है। पिटुनिया (Petunia) ने भी मैदान के हर गोशे को दामने-रंगी बना दिया था, लेकिन उसकी रंगतों की सादगी से तखय्युल की प्यास कहाँ बुझ सकती थी ? मैदान के वस्त[16] मे झंडे के चबूतरे के दोनो तरफ अस्टर (Aster) कार्नफ्लावर (Corn flower) स्वीट पीज (Sweet peas) कोकनार (Poppy) फ़्लक्स (Phlax) कलि-

---

१. तरतीबवार २ गोल ३. प्रवीण ४. पगड़ी बांधनेवाला ५. साँचा ६ मुटाई ७. किले के कैदी ८. नया उगा हुआ बाग ९. पहरेदारी १०. सब बुलबुले मस्त है और माली अकेला है ११. सहमा हुआ १२. मैने फूल की डाल देखी है और मुझे खुद पर झुझलाहट होती है कि काश मैं भी एक हाथ मे इतने शराब के प्याले पकड सकता १३. लिया हुआ १४. जंगल हथेली की तरह है और लाला फूल के जाम लिये हुए है। वह हथेली कितनी अच्छी है कि इतने शराब के प्यालों को पकड़े हुए हैं १५. उपमा १६. बीच मे।

योप्सिस (Calliopsis) और कासमस (Casmas) के छोटे छोटे झुड निकल आये थे। गोया मैदान की कमर मे बुकलम्[१] रंगों का एक पटका बँध गया था। लेकिन वो भी तमाशाई का सामाने-दीद[२] था, अहले-बीनश[३] के लिये नज़र का सामान न था। हाला कि—

बज़्म में अहले-नज़र भी थे तमाशाई भी

इस गर्ज के लिये पिक्स (Pinks) सल्विया (Salvia) और पेजी (Pansy) वगैरह के तख्तो का रुख करना पड़ता था, जिनकी जलवा फ़रोशियाँ हर दम दीदा ओ दिल को दावते-नज्ज़ारा देती रहती थी। कुदरत के कलमे-सनअत[४] की यह भी एक अजीब करिश्मा सजी है कि फूलो के वरक और नितलियो के परो पर एक ही मूकलम[५] से मीनाकारी कर दी और एक ही रग की दवातें काम मे लाई गई। इन फूलो के औराक[६] का मुताला[७] कीजिये तो ऐसा मालूम होना है, जैसे बडे फूलो की कतरन से कुछ कागज बच रहा था, उसे भी जाया नही किया गया और कैंची से तराश तराश कर नन्हें नन्हे फूलो के वरक बना लिये। अगर एक चीज नाजुक और खूबसूरत होती है तो हम कहते है, यह फूल है। लेकिन अगर खुद फूलो के लिये कुछ कहना चाहे तो उन्हे किस चीज से तश्बीह दे ? हकीकत यह है कि जबाने-दरमादा को यहाँ याराये-सुखन नही, और खामोशी के बगैर चाराये-कार नही। हुस्न की जलवा-तराजियाँ[८] महवियत[९] का पयाम होती है, खामा-फरसाई[१०] और सुखन-आराई[११] का तकाजा नही होना।

अज़ निगह चश्म तिही गश्त ओ तमाशा मांदा स्त
दर ज़बां हर्फ न मांदा स्त ओ सुख़नहा मांदा स्त[१२]

इन फूलो को मौसमी कहा जाना है, क्योकि इनकी पैदाइश और ज़िदगी सिर्फ मौसम ही तक महदूद रहती है। इधर मौसम खत्म हुआ, उधर उन्होने भी दुनिया को खैर बाद कह दिया। गोया जिदगी का एक ही पैराहन उनके हिस्से मे आया था, वही कफन का भी काम दे गया।

हमचु माही ग़ैर दाग़म पोशिशे-दीगर न बूद
ता कफ़न आमद, हमी यक जामा बर तन दाश्तम[१३]

---

१. रंगारग २. देखने की वस्तु ३. द्रष्टा ४. कारीगरी की कलम ५. तूलिका, Brush ६. वरक का बहुवचन, पृष्ठ ७. अध्ययन। ८. प्रदर्शन ९. तल्लीनता १०. लिखना ११. साहित्य सृजन १२. आँख से दृष्टि चली गई और तमाशा रह गया। जबान में शब्द नही रहा लेकिन बातें रह गई है १३ मछली की तरह उसके जिस्म के दागो के अलावा मेरा कोई दूसरा वस्त्र नही था, मरते दम तक इसी एक वस्त्र को शरीर पर पहने रहा।

मीर मुबारक अल्ला वाजह आलमगीरी को यही खयाल पानी का बुलबुला देख कर हुआ था । देखिये क्या खूब कह गया है ।

इश्क फ़रमाये दिलम नेस्त बजुज़ ऐशे-हुबाब
याफ़्त यक पैरहने-हस्ती ओ आं हम कफ़न स्त[1]

बहार में फूलों से दरख्त लद जाते है, खिजा मे गायब हो जाते है । फिर जूं ही मौसम का दौर पलटता है, दुबारा आ मौजूद होते है । मगर मौसमी फूलों के पौदो का शेवये-यक रंगी[2] ओ यक सास्तगी[3] देखिये कि जब एक मर्तबा दुनिया को पीठ दिखा दी तो फिर दुबारा मुडकर देखना नही चाहते । गोया अबूतालिब कलीम का इशारा इन्हीं की तरफ था ।

वज़ओ - ज़माना क़ाबिले - दीदन दोबारा नेस्त
रू पस न कर्द, हर कि अज़ीं खाकदां गुज़श्त[4]

फूलों के जमालयाती (Aesthetics) मंजर मे अलग नजर हटाइये तो फिर एक और गोशा सामने आ जाता है । यह उनकी अजायब[5] आफरीनियों का गोशा है । रूहे-नबाती[6] भी रूहे-हैवानी की तरह किस्म किस्म के जिस्मों मे उभरती है और तरह तरह के अफआल[7] ओ खवास[8] की नुमाइश[9] करती रहती है । यह कही सोई हुई दिखाई देती है, कहीं करवट बदलने लगती है और फिर कही उठकर बैठ जाती है । हमारे इस छोटे से गोशये-चमन मे अभी सिर्फ एक ही फूल ऐसा है जिसे इस किस्म के गैर मामूली फूलों में से शुमार किया जा सकता है याने ग्लोरिओसा सुपर्बा (Gloriosa Superba) । इसकी पाँच जड़े गमलो मे लगाई गई थी। चार बार आवर[10] हुईं। अब उनकी शाखें कलियों से लदी हुई है । इनका फूल पहले पजे की तरह खिलेगा, फिर प्याले की तरह उलट जायेगा । फिर फानूस की तरह मुदव्वर[11] होने लगेगा, फिर थोडी देर दम लेने के लिये रुक जायेगा । और फिर देखिये तो जिन मंजिलो से गुजरता हुआ आया था उन्ही मजिलो से गुजरता हुआ उल्टे पाँव वापस होने लगेगा । वापसी मे पहले फानूस की उठी हुई शाखे फैलकर एक प्याला बनायेगी । फिर अचानक यह प्याला उलट जायेगा । गोया जिदगी के जामे-वाजगूं[12] में अब कुछ बाकी न रहा —

---

१. बुलबुले की जिंदगी के सिवा मेरा दिल किसी और पर रश्क नहीं करता । जीवन का एक पैरहन पाया है और वह भी कफन है २ एक-रंगी प्रकृति ३. एक बार का अस्तित्व ४. इस दुनिया की बनावट दुबारा देखने लायक़ नही है, इस दुनिया से जो गुजर गया उसने मुँह न फेरा ५. विचित्र बातों का ६. बनस्पति जगत की आत्मा ७-८. प्रवृत्ति और प्रकृति ९. प्रदर्शन १०. सफल हुई, फली ११. गोल १२. उलटा हुआ प्याला ।

लिये बैठा है इक दो चार जामे-वाज़गूं वो भी

हर फूल की आमद ओ रफ्त की यह मुसाफिरत दस से बारह दिन के अंदर तै हुआ करती है। छह दिन आने में लगते है, छह वापसी में। और दर असल उसका आना भी जाने ही के लिये होता है—

तिरा आना न था ज़ालिम, मगर तमहीद[1] जाने की

रंगत के ऐतबार से भी उसकी बूकलमूनियों का कुछ अजीब हाल है। कलियाँ जब नमूदार होंगी तो हल्के सब्ज़ रंग की होंगी। फिर जूं जूं खिलने का वक़्त आने लगेगा, ज़र्दी उभरने लगेगी। और फिर जर्दी बतदरीज[2] सुर्खी-मायल होना शुरू हो जायेगी। पहले आधा सुर्ख आधा जर्द रहेगा, फिर जर्दी तेज़ी के साथ घटने लगेगी और पूरा फूल सुर्ख होकर मिर्च की कलियों की तरह चमकने लगेगा। यह अजीब बात है कि इसकी नस्ल हिन्दुस्तान की तरफ मंसूब[3] की जाती है, मगर यहा इसकी शोहरत नही।

आलम हमा अफ़सानये-मा दारद ओ मा हेच![4]

यह फूल नबातात[5] की उस किस्म मे दाखिल है जिसे इत्तिहादे-तनासुली[6] के लिये खारिज[7] की मदाखलत मतलूब होती है और कभी हवा के झोंको मे और कभी तितलियो और मक्खियो की निशस्त[8] ओ बरखास्त[9] से फितरत[10] यह काम ले लिया करती है। इस फूल का जुज़े-रजूलिय्यत[11] उसके उनूसियत[12] के जुज से इस तरह बेताल्लुक वाके हुआ है कि जब तक खारिज का हाथ माद्दये-तलकीह[13] को एक जगह से उठाकर दूसरी जगह न पहुँचा दे, तलकीह का अमल अंजाम नही पा सकता। जिन फूलों को यह खारजी अयानत[14] मिल जाती है वो बार-दार हो जाते है और अपना बीज छोड जाते है। जिन्हे नही मिलती बाँझ होकर बगैर बीज बनाये खत्म हो जाते है। इन पौधो के लिये तितलियों का एक गिरोह बर वक़्त पहुँच गया था। चुनाचे अक्सर फूल बारदार हो गये।

खैर, यह चमन-आराई का जिक्र तो एक जुमलये-मौतरजा[15] था जो बिला कस्द[16] इतना तूलानी[17] हो गया। अब असल हिकायत की तरफ वापस होना चाहिये। फरवरी मे अब्र[18] ओ बाद[19] की आमद ओ रफ्त से मौसम का उतार-चढाव जारी रहा। मगर जूं ही महीना खत्म होने पर आया, मौसमे-बहार का

---

१. प्रस्तावना २. क्रमश ३. संबंधित होना ४. सारी दुनिया मे मेरी बात है और मैं कुछ नही हूँ ५. वनस्पति ६. वंशवृद्धि के लिये आपस में मिलना, जुफ्ती ७. बाहर की ८-९. उठने बैठने से १०. प्रकृति ११ पराग केसर याने नर-अंश १२. गर्भ केसर या मादा अंश १३. नर-अंश १४. मदद १५ आपत्तिजनक वाक्य या बात, (Parenthatical words) १६. अनिच्छा से १७. लंबा १८-१९. बादल और हवा।

पेशखीमा पहुँच गया। याने मौतदिल हवाओं के झोके चलने लगे। फिर एक दिन क्या देखते है कि खरामां खरामां चलती हुई खुद बहार भी आ मौजूद हुई है और जवानाने-चमन ने उसकी ख़ुशामदीद का जश्न[1] मनाना शुरू कर दिया है।

नफ़से-बादे-सबा मुश्क फ़शां ख्वाहिद शुद
आलमे-पीर दिगर बार जवां ख्वाहिद शुद ![2]

उसी जमाने का वाकया है कि एक दिन दोपहर के वक़्त कमरे में बैठा था कि अचानक क्या सुनता हूँ, बुलबुल की नवाओं[3] की सदाये आ रही है।

बाज़ नवाये-बुलबुलां इश्क़े-तू याद मीदिहद
हर कि ज़ इश्क़ नेस्त ख़ुश उम्र बबाद मीदिहद[4]

बाहर निकल कर देखा तो खतमी के शिगुफ्ता[5] फूलो के हुजूम मे एक जोड़ा बैठा है और गर्दन उठाये नग्मा सजीं[6] कर रहा है। बेइख्तियार ख्वाजये-शीराज की गजल याद आ गई।

सफीरे-मुर्ग बर आमद, बते-शराब कुजा स्त !
फ़ुगां फ़ताद ज़ बुलबुल, "नक़ाबे-गुल के दरीद"[7]

यह इलाका अगरचे सर्द-सैर नही है। लेकिन चूकि बुलंद सतह पर वाके हुआ है, इसलिये पहाडी बुलबुलो से खाली नहीं है। ये बुलबुले अगरचे सर्द सैर ईरान की बुलबुलों की तरह हजार दास्ता नही होती लेकिन रसीले गले की एक तान भी क्या कम है। दोपहर की चाय का, जो कैलूला[9] के बाद पीता हूँ, आखिरी फिजान बाकी था, मैंने उठाया और इस नग्मये-अंदलीब पर खाली कर दिया।

तू नीज़ बादा बचंग आर ओ राहे-सहरा गीर
कि मुर्गे-नग्मा सरा साज़े-खुशनवा आवुर्द[11]

दूसरे दिन सुबह बरामदे मे बैठा था कि बुलबुल के तराने की आवाज फिर उठी। मैंने एक साहब को तवज्जो दिलाई कि सुनना बुलबुल की आवाज आ

---

१. उत्सव २. प्रात: समीर की साँसे खुशबू बखेरती हुई आयेगी, बूढी दुनिया फिर से जवान होगी। ३. रागो ४. फिर से बुलबुलो की आवाजे तेरे प्रेम की याद दिला रही है, जो शख्स प्रेम से खुश नही है वह उम्र जाया करता है। ५. खिले हुये ६. राग अलापना ७. पक्षियों की आवाज आ रही है, शराब की सुराही कहाँ है। बुलबुल आह भर रही है कि फूल की नकाब किसने फाड दी है। ८. ठडा ९. दोपहर की झपकी १०. बुलबुल की रागिनी ११ तू भी शराब हाथ मे ले और जंगल की राह पकड़ क्योंकि राग अलापता हुआ पंछी सुखद रागनी के साज़-सामान ले आया है।

रही है। एक दूसरे साहब जो सहन में टहल रहे थे कुछ देर के लिये रुक गये और कान लगा कर सुनते रहे, फिर बोले कि हां, किले में कोई छकडा जा रहा है, उसके पहियों की आवाज आ रही है। सुबहान अल्ला! जौके-समा[१] की दिक़्क़ते-इम्तियाज[२] देखिये। बुलबुल की नवाओं और छकड़े के पहियों की रीं री में यहाँ कोई फर्क महसूस नही होता।

हुमाये गो मफ़गन सायये-शरफ़ हरगिज़
दरां दयार कि तूती कम अज़ ज़गन बाशद![३]

ख़ुदारा[४] इंसाफ कीजिये, अगर दो ऐसे कान एक कफस[५] मे बद कर दिये जायें कि एक मे तो बुलबुल की नवाये बसी हों, दूसरे मे छकडे के पहियो की री री, तो आप इसे क्या कहेगे?

नवाये-बुलबुल अय गुल कुजा पसंद उफ़्तद
कि गोशे-होश ब फ़रमाने-हरज़ागो दारी[६]

असल यह है कि हर मुल्क की फजा[७] तबीयतो में एक खास तरह का तबग्री जौक[८] पैदा कर दिया करती है। हिन्दुस्तान का आम तबग्री जौक बुलबुल की नवाओ से आश्ना नही हो सकता था। क्योकि मुल्क की फजा दूसरी तरह की सदाओ से भरी हुई थी। यहाँ के परिंदो की शोहरत तोता और मैना के परों से उडी और दुनिया के अजायब मे से शुमार की गई

शक्कर शिकन शवंद हमा तूतियाने-हिंद
ज़ीं कंदे-पारसी कि ब बंगाला मीरवद[९]

बुलबुल की जगह यहाँ कोयल की सदाये शायरी के काम आई। और इसमे शक नही कि उसकी कूक दर्द-आश्ना दिलों को गम ओ अलम की चीखो से कम महसूस नही होती।

बुलबुल की नवाओं का जौक तो ईरान के हिस्से मे आया है। मौसमे-बहार मे बाग ओ सहरा ही नहीं बल्कि हर घर का पाई बाग उनकी नवाओं से गूंज उठता है। बच्चे झूले मे उनकी लोरियाँ सुनते-सुनते सो जायेगे और मायें इशारा करके बतलायेगी कि देख यह बुलबुल है जो तुझे अपनी कहानी

---

१. श्रवण की रुचि २. फर्क करने की मुश्किल ३. हुमा से कहो कि अपनी गरिमा का साया हरगिज उस शहर मे न डाले जहाँ तूती जगन से कम समझा जाता है ४. ईश्वर के लिये ५. पिंजरा ६. बुलबुल की रागिनी ओ फूल तुझे कब पसंद आ सकती है, तेरे होश के कान तो बेहूदा बातों पर लगे हुये है। ७. वातावरण ८. स्वाभाविक रुचि ९. हिन्दुस्तान की तमाम तूतियें शकर खाने वाली होंगी, इस फारसी कंद की वजह से जो कि बंगाल को जाता है।

सुना रही है। जनूब से शुमाल की तरफ जिस क़दर बढते जायें, यह अफ़सूने-फ़ितरत[1] भी ज़्यादा आम और गहरा होता जाता है। हकीकत यह है कि जब तक एक शख़्स ने शीराज या कजवीन के गुलगश्तो की सैर न की हो, वो समझ नहीं सकता कि हाफिज की जबान मे ये शेर किस आलम में टपके थे।

बुलबुल ब शाख़े-सर्व ब गुल बांगे-पहलवी
मीख़्वांद दोश दर्से - मुक़ामते - मानवी
याने बया, कि आतिशे-मूसा नमूद गुल
ता अज़ दरख़्त नुक्तये-तहक़ीक़ बशुनवी।
मुर्गाने-बाग़ क़ाफ़िया संजन्द ओ बज़ला गो
ता ख़्वाजा मय ख़ुरद ब ग़ज़लहाये-पहलवी[2]

यह जो कहा कि मुर्गाने-बाग "काफिया सजी" करते है तो यह मुबालगा[3] नही है, वाकया है। मैने ईरान के चमन जारों में हजार[4] को काफियासंजी करते हुये खुद सुना है। ठहर ठहर के लय बदलती जायेगी, और हर लय एक ही तरह के उतार पर खत्म होगी। जो सुनने में ठीक ठीक शेरों के कवाफी[5] की तरह मुतवाजिन[6] और मुतजानिस[7] महसूस होगे। घंटो सुनते रहिये इन काफियो का तसलसुल[8] टूटने वाला नही। आवाज जब टूटेगी एक ही काफिये पर टूटेगी।

हकीकत यह है कि नवाये-बुलबुल बहिश्त का मलकूती[9] तराना है। जो मुल्क इस बहिश्त से महरूम[10] है, वो इस तराने के जौक से भी महरूम है। गर्म मुल्कों को इस आलम की क्या खबर। जमिस्तान[11] की बर्फ-बारी और पतझड़ के बाद जब मौसम का रुख पलटने लगता है और बहार अपनी सारी रानाइयो[12] और जलवा-फरोशियो[13] के साथ बाग ओ सहरा पर छा जाती है, तो उस वक़्त बर्फ की बेरहमियो से ठिठुरी हुई दुनिया यकायक महसूस करने लगती है कि अब मौत की अफसुर्दगियो की जगह जिदगी की सरगर्मियों की एक नई दुनिया नमूदार हो गई। इसान अपने जिस्म के अन्दर देखता है तो जिदगी का ताज़ा खून एक एक रग के अदर उबलता दिखाई देता है। अपने से बाहर

---

१. प्रकृति का जादू २. बुलबुल सर्व की शाख़ पर पहलवी जबान में कल अर्थ की बारीकियो का पाठ पढ रही थी। याने कि आओ हज़रत मूसा की आग फूलों के रूप में प्रगट हुई है ताकि पेड से सत्य की बारीकियाँ सुन सके। बाग के पंछी दिल लुभाने वाली रागनियाँ गा रहे हैं ताकि मालिक पहलवी गजलो के साथ शराब पीये। ३ अतिशयोक्ति ४. बुलबुल ५. अंत्यानुप्रास ६. एक वजन के ७. एक ही तरह के ८. क्रम ९. फ़रिश्तों का, स्वर्गीय १०. वंचित ११. जाडा १२. सौंदर्य १३. रूप प्रदर्शन।

देखता है तो फज़ा का एक एक जर्रा ऐश ओ निशाते-हस्ती[१] की सरमस्तियों मे रक्स[२] करता हुआ नजर आता है। आसमान ओ जमीन की चीज जो कल तक महरूमियो की सोगवारी और अफसुर्दगियो[३] की जांकाही[४] थी, आज आंखें खोलिये तो हुस्न की इश्वा-तराजी[५] है, कान लगाइये तो नग्मे की जांनवाजी है, सूंघिये तो सरता सर बू की इत्रबेजी है।

सबा ब तहनियते-पीरे-मय फ़रोश आमद
कि मौसमे-तरब ओ ऐश ओ नाय ओ नोश आमद
हवा मसीहे-नफ़स गश्त ओ बाद नाफ़ा कुशा
दरख़्त सब्ज़ शुद ओ मुर्ग़ दर ख़रोश आमद
तनूरे-लाल चुनां बरफ़रोख़्त बादे-बहार
कि गुंचा ग़र्क़े-अर्क़ गश्त ओ गुल ब जोश आमद[६]

ऐन जोश ओ सरमस्ती की इन आलमगीरियों में बुलबुल के मस्ताना तरानों की गत शुरू हो जाती है और यह नग्मा-सराये[७] बहिश्ती इस महवियत[८] और खुदरफ्तगी[९] के साथ गाने लगता है कि मालूम होता है, खुद साजे-फितरत के तारों से नग़मे निकलने लगे। उस वक्त इंसानी अहसासात मे यह तहलका मचने लगता है, मुमकिन नही कि हर्फ ओ सौत[१०] से उनकी ताबीर[११] आशना हो सके। शायर पहले मुज्तरिब होगा कि उस आलम की तसवीर खीच दे, जब नही खीच सकेगा तो फिर खुद उसकी तसवीर बन जायेगा। वो रंग, बू और नग्मे के इस समंदर को पहले किनारे पर खड़े होकर देखेगा, फिर कूद पडेगा और खुद अपनी हस्ती को भी उसी की एक मौज बना देगा।

बया ता गुल बर अफ़शानेम ओ मय दर साग़र अंदाज़ेम
फ़लक रा सक़फ़ बशिगाफ़ेम ओ तरहे-नौ दर अंदाज़ेम

---

१. जीवन का आनन्द २. नृत्य ३. उदासी ४. जीकी घुटन ५. नाज़ नखरों का प्रदर्शन ६. प्रातः समीर मय फरोश पीर को मुबारकबाद देने आई कि आनंद और खुशी और शराब पीने का समय आ गया है। हवा ईसा का दम भरती है और समीर मृगनाभि की सुगंध भरती है। पेड़ हरे हो गये और पंछी चहचहाने लगे। लाला के फूल के तनूर को बसंत की समीर ने ऐसा भडकाया कि कली पसीने में गर्क हो गई और फूल जोश में आ गये ७. स्वर्गीय गीत गाने वाला ८-९ तल्लीनता १०. शब्द और आवाज ११. उपमा।

चु दर दस्त स्त रूदे खुश, बज़न मुतरिब सरुदे खुश
कि दस्त अफ़शां ग़ज़ल ख्वानेम ओ पा कोबां सर अंदाज़ेम ![1]

हिन्दुस्तान में सिर्फ कश्मीर एक ऐसी जगह है जहाँ इस आलम की एक झलक देखी जा सकती है। इसीलिये फैजी को कहना पड़ा था :

हज़ार क़ाफ़िलये-शौक़ मीकशद शबगीर
कि बारे-ऐश कशायद बख़ित्तये-कश्मीर[2]

लेकिन अफसोस है, लोगो को फल खाने का शौक हुआ, आलमे-बहार की जन्नत-निगाहियों[3] का शौक न हुआ। कश्मीर जायेगे भी तो बहार के मौसम में नही, बारिश के बाद फलो के मौसम मे। मालूम नही दुनिया अपनी हर बात मे इतनी शिकम-परस्त[4] क्यो हो गई है? हाला कि इंसान को मेदे के साथ दिल ओ दिमाग भी दिया गया था।

हिन्दुस्तान के पहाड़ों मे पहाडी बुलबुल का तरन्नुम नैनीताल और कागड़ा मे ज्यादा सुना जा सकता है। मसूरी और शिमले की चट्टानी फ़ज़ा उसके लिये काफी कशिश पैदा नहीं कर सकती थी।

हिन्दुस्तान मे आम तौर पर चार किस्म की बुलबुलें पाई जाती है। उनमे सबसे ज्यादा खुश-नवा किस्म वो है जिसके चेहरे के दोनों तरफ़ सफ़ेद बूटे होते है। और इसलिये आजकल नेचरल हिस्ट्री की तकसीम मे उसे ह्वाइट चीक्ड (White Checked) के नाम से मौसूम किया गया है। शामा को अगरचे आम तौर पर बुलबुल नही समझा जाता लेकिन इसे भी मैदानी सर-ज़मीनों का बुलबुल ही तसव्वुर करना चाहिये। मगरिबी यू. पी. और पंजाब में इसकी मुतअ़दद[5] किस्में पाई जाती है।

इस वक्त तक बुलबुल के तीन जोडे यहाँ दिखाई दिये है। तीनों मामूली पहाड़ी किस्म के है जिन्हें अंग्रेजी में (White Whiskered) के नाम से पुकारते है। एक ने तो फूल की एक बेल मे आशियाना भी बना लिया है। दोपहर को पहले बिल्कुल खामोशी रहेगी। फिर जू ही मैं कुछ देर लेटने के बाद उठूंगा और लिखने के लिये बैठूंगा, मअन उनकी नवाये शुरू हो जायेगी गोया उन्हे मालूम हो गया कि यही वक़्त है, जब एक हम सफ़ीर अपने दिल ओ जिगर के जख्मों की पट्टियाँ खोलता है। इसलिये नाला ओ फरियाद के

---

१. आओ ताकि फूल बखेरे और प्यालों मे शराब डालें, आसमान की छत को चीर दे और नई रीत शुरू करें। जब तेरे हाथ मे सुन्दर वीणा है ओ गायक इससे सुन्दर गीत गा ताकि ऐसी गजल पढ़े कि मस्ती से झूमने लगें और हाय पछाड़ने लगें और सिर पटकने लगे २. पहले आ चुका है ३. स्वर्गीय दृश्य देखने का ४. पेट पूजक ५. कई।

पैहम[1] चरके लगाना शुरू कर दे। मेरा यही हाल हुआ जो अरबी के एक शायर का हुआ था।

व मिम्मा शजानी इन्ननि कुंतु नाइमन्
व अल्लिलु मिन बरदिन् बतीबित्तनस्सुमि
इला अनदअ़त वरक़ाअ मिन ग़ुस्ने ऐकतिन
तफ़र्रद मबकाहा बिहुस्नित् तरन्नुमिन्
फलौक़ब्ल मबकाहा बकैतु सबाबतन्
बिसुअ़दा सफ़ैतुन्नफ़्स कब्लत् तनद्दुमि
व लाकिन बकत क़ब्लि फ़हैयजा लिलबुका
बुकाहा फ़कुल्तु अलफ़ज़्लु लिलमुतक़द्दिमि[2]

---

१. लगातार २. और जिस बात ने मुझे गमगीन किया, वो यह है कि जब कि मै सो रहा था और मीठी नीद के मजे ले रहा था, तो अचानक एक ख़ुश आवाज़ परिंद ने दरख्तो के झुड मे तरानासंजी शुरू कर दी। उसकी रोने की आवाज अपने तरन्नुम की ख़ूबी मे आप ही अपनी मिसाल थी। अगर उसके रोने से पहले मैने सुआद के इश्क मे चंद आसू बहाये होते तो मेरे हिस्से मे शर्मिदगी न आती। मगर वाक़या यह है कि मै ऐसा न कर सका और यह उस परिद का रोना था जिससे मेरे अदर भी रोनेधोने का जोश उमड़ आया। इसलिये मुझे शरमिदगी के साथ स्वीकार करना पड़ता है कि बेशक यहाँ बड़प्पन उसी के लिये है जिसने पहला क़दम उठाया।"

चिड़िया चिड़े की कहानी

क़िलअ़े-अहमदनगर
१७, मार्च सन् १९४३ ई.

सदीके-मुकर्रम

जिंदगी मे बहुत सी कहानियां बनाई। खुद जिंदगी ऐसी गुजरी जैसे एक कहानी हो :

है आज जो सरगुज़श्त अपनी
कल इसकी कहानियाँ बनेंगी

आइये आज आपको चिडिया चिडे की कहानी सुनाऊं :

दिगरहा शुनीदस्ती ई हम शुनौ।[1]

यहां कमरे जो हमे रहने को मिले है, पिछली सदी की तामीरात का नमूना है। छत लकडी के शहतीरों की है, और शहतीरो के सहारे के लिए महराबे डाल दी है। नतीजा यह है कि जा बजा घोंसला बनाने के क़ुदरती गोशे निकल आये और गोरैयाओं की बस्तियाँ आबाद हो गई। दिन भर उनका हंगामये-तग-ओ-दौ[2] गरम रहता है। कलकत्ते मे बालीगंज का इलाका चूंकि खुला और दरख्तों से भरा है, इसलिए वहाँ भी मकानों के बरामदों और कार्निसों पर चिडियो के गोल हमेशा हमला करते रहते है। यहाँ की वीरानी देखकर घर की वीरानी याद आ गई।

उग रहा है दरो दीवार से सब्ज़ा ग़ालिब
हम बयाबां में हैं और घर में बहार आई है

गुजश्ता साल जब अगस्त मे यहाँ हम आये थे तो इन चिड़ियों की आशियाँ साज़ियों[3] ने बहुत परेशां कर दिया था। कमरे के मशरिकी[4] गोशे मे मुँह धोने की टेबल लगी है। ठीक उसके ऊपर नही मालूम कब से एक पुराना घोंसला तामीर पा चुका था। दिन भर मैदान से तिनके चुन चुन कर लातीं और घोंसले में बिछाना चाहतीं, वो टेबल पर गिर के उसे कूड़े करकट से अट देते। इधर पानी का जग भरवा के रखा, उधर तिनकों की बारिश शुरू हो गई। पच्छम की तरफ चारपाई दीवार से लगी थी। उसके ऊपर नई तामीरों की सरगर्मियाँ जारी थी। इन नई तामीरों का हंगामा और ज्यादा आजिज[5] कर देने वाला था। इन चिड़ियों को जरा सी तो चोंच मिली है और मुट्ठी भर का भी बदन नही। लेकिन तलब ओ सअ़ी[6] का जोश इस बला का पाया है कि

१. और कहानियाँ सुनी है यह भी सुनो २. भाग दौड़ का हंगामा ३. घोंसला बनाना ४. पूर्वी ५. परेशान ६. प्रयत्न।

चंद मिनटों के अंदर बालिश्त भर कुल्फात[1] खोद के साफ कर देंगी। हकीम अर्शमीदश (Archimedes) का मकूला मशहूर है — Dos moi pan sto kai ten gen kinesi मुझे फजा में खड़े होने को जगह दे दो, मैं कुर्रये-अरजी[2] को उसकी जगह से हटा दूंगा। इस दावे की तस्दीक[3] इन चिड़ियों की सरगर्मियाँ देखकर हो जाती है। पहले दीवार पर चोंच मार मार के इतनी जगह बना लेंगी कि पंजे टेकने का सहारा निकल आये। फिर उस पर पंजे जमा कर चोंच का फावड़ा चलाना शुरू कर देंगी, और इस ज़ोर से चलायेंगी कि सारा जिस्म सुकड़ सुकड़ कर काँपने लगेगा। और फिर थोड़ी देर के बाद देखिये तो कई इंच कुल्फात उड़ चुकी होगी। मकान चूंकि पुराना है, इसलिये नहीं मालूम कितनी मर्तबा चूने और रेत की तहें दीवार पर चढ़ती रही हैं। अब मिल मिलाकर तामीरी मसाले का एक मोटा सा दल बन गया है। टूटता है तो सारे कमरे में गर्द का धूँआ फैल जाता है, और कपड़ों को देखिए तो गुबार की तहें जम गई हैं।

इस मुसीबत का इलाज बहुत सरल था, याने मकान की अज सरे-नौ मरम्मत कर दी जाये और तमाम घोंसले बंद कर दिये जायें। लेकिन मरम्मत बगैर इसके मुमकिन न थी कि मैमार बुलाये जायें। और यहाँ बाहर का कोई आदमी अंदर कदम रख नहीं सकता। यहाँ हमारे आते ही पानी के नल बिगड़ गये थे। एक मामूली मिस्तरी का काम था। लेकिन जब तक एक अंग्रेज फौजी इंजीनियर कमांडिंग आफीसर का परवानये-राहदारी लेकर नहीं आया उनकी मरम्मत न हो सकी।

चंद दिनों तक तो मैंने सब्र किया, लेकिन फिर बरदाश्त ने साफ जवाब दे दिया और फ़ैसला करना पड़ा कि अब लड़ाई के बगैर चारा नहीं।

मन ओ गुर्ज़ ओ मैदां ओ अफ़रासियाब[4]

यहाँ मेरे सामान में एक छतरी भी आ गई है। मैंने उठाई और ऐलाने-जंग कर दिया। लेकिन थोड़ी ही देर के बाद मालूम हो गया कि इस कोताहदस्ती के साथ इन हरीफाने-सक़्फ ओ महराब का मुकाबला मुमकिन नहीं। हैरान होकर कभी छतरी की नारसाई देखता, कभी हरीफ़ों की बुलंद आशयानी बेइख़्तियार हाफ़िज का शेर याद आ गया।

ख़याले-क़द्दे-बुलंदे तू मीकुनद दिले-मन
तू दस्ते-कोतहे-मन बीं ओ आस्तीने-दराज़[5]

---

१. गारा २. धरती का गोला ३. पुष्टि ४. फिरदौसी के शाहनामे से है जिसमें रुस्तम कहता है — मैं हूँ यह गदा है, यह मैदान है और अफरासियाब है ५. मेरा दिल तेरे ऊँचे कद का ख़याल करता है, तू मेरे छोटे हाथों को और मेरी लंबी आस्तीनों को देख।

अब किसी दूसरे हथियार की तलाश हुई। बरामदे में जाला साफ करने का बांस पड़ा था। दौड़ता हुआ गया और उसे उठा लाया। अब कुछ न पूछिये कि मैदाने-कारज़ार[1] में किस ज़ोर का रन पड़ा। कमरे में चारो तरफ हरीफ तवाफ़[2] कर रहा था और मैं बांस उठाये दीवानावार उसके पीछे दौड़ रहा था। फ़िरदौसी और निजामी के रजज[3] बेइख्तियार जबान से निकल रहे थे।

ब खंजर जमींरा मयस्तां कुनम
ब नेज़ा हवारा नयस्तां कुनम[4]

आखिर मैदान अपने ही हाथ रहा और थोड़ी देर के बाद कमरा इन हरीफ़ाने-सक्फ ओ महराब से बिल्कुल साफ था।

बयक ताख्तन ता कुजा ताख्तम
च गर्दन कशांरा सर अंदाख्तम[5]

अब मैने छत के तमाम गोशों पर फतहमंदाना नजर डाली और मुतमइन[6] होकर लिखने मे मशगूल हो गया। लेकिन अभी पंद्रह मिनट भी पूरे नहीं गुजरे होंगे कि क्या सुनता हूँ, हरीफो की रजज़[7] ख्वानियों और हवा पैमाइयो की आवाजें फिर उठ रही है। सर उठा के जो देखा तो छत का हर गोशा उनके कब्जे में था। मैं फौरन उठा और बांस लाकर फिर मार्कये-कारजार[8] गर्म कर दिया।

बर आरम दिमार अज हमा लश्करश
ब आतिश बिसोजम हमा किश्वरश[9]

इस मर्तबा हरीफो ने बडी पामर्दी दिखाई। एक गोशा छोड़ने पर मजबूर होते तो दूसरे मे डट जाते, लेकिन बिल आखिर मैदान को पीठ दिखानी ही पड़ी। कमरे से भाग कर बरामदे मे आये और वहाँ अपना लाव लश्कर नये सिरे से जमाने लगे। मैने वहाँ भी तआक्कुब किया और उस वक्त तक हथियार हाथ से नही रखा कि सरहद से बहुत दूर तक मैदान साफ नही हो गया था।

अब दुश्मन की फौज तितर बितर हो गई थी, मगर यह अंदेशा बाकी था कि कही फिर इकट्ठी होकर मैदान का रुख न करे। तजरुबे से मालूम हुआ था कि बास के नेजे की हैबत दुश्मनो पर खूब छा गई है। जिस तरफ़ रुख

---

१. लड़ाई का मैदान २. प्रदक्षिणा ३. वीर रसपूर्ण कविता को कहते है ४. खंजर से जमीन को शराब की दुनिया और नेजे से हवा को बाँसों की दुनिया करता हूं ५. एक दौड़ मे मै कहाँ भागा और कैसे कैसे सरकशों के सर को निशाना बनाया ६. निश्चित ७. लड़ाई के गीत पढ़ना ८. लड़ाई का हंगामा ९. उसके तमाम लश्कर में हलाकत करता हूं और उसके तमाम मुल्क को आग से जलाता हूं।

करना था, उसे देखते ही कलमये-फ़रार पढ़ते थे। इसलिये फैसला किया कि अभी कुछ अर्से तक इसे कमरे ही मे रहने दिया जाय। अगर किसी इक्का-दुक्का हरीफ ने रुख करने की जुरअत भी की तो यह सरबफलक नेजा देखकर उल्टे पाँव भागने पर मजबूर हो जायगा। चुनांचे ऐसा ही किया गया। सबसे पुराना घोसला मुह धोने की टेबल के ऊपर था। बांस इस तरह वहाँ खड़ा कर दिया गया कि उसका सिरा ठीक ठीक घोसले के दरवाजे के पास पहुँच गया था। अब गो मुस्तकबिल[1] अदेशो से खाली न था, ताहम तबीयत मुतमइन थी कि अपनी तरफ से सरोसामाने-जग मे कोई कमी नही की गई। मीर का यह शेर जबानो पर चढकर बहुत पामाल हो चुका है, ताहम मौके का तकाज़ा टाला भी नही जा सकता।

शिकस्त ओ फ़तह नसीबों से है वले अय मीर
मुक़ाबला तो दिले-नातवां[2] ने खूब किया !

अब ग्यारह बज रहे थे। मै खाने के लिये चला गया। थोड़ी देर के बाद वापस आया तो कमरे में कदम रखते ही ठिठक के रह गया। क्या देखता हूँ कि सारा कमरा फिर हरीफ के कब्जे मे है और इस इत्मीनान ओ फ़रागत से अपने कामों मे मशगूल है, जैसे कोई हादसा[3] पेश आया ही नही। सबसे बढकर यह कि जिस हथियार की हैबत पर इस दर्जे भरोसा किया गया था, वही हरीफ़ों की काम-जोइयो[4] का एक नया आला साबित हुआ। बांस का सिरा जो घोंसले से बिलकुल लगा हुआ था, घोंसले मे जाने के लिये अब दहलीज का काम देने लगा है। तिनके चुन चुन कर लाते है और इस नौतामीर दहलीज पर बैठकर ब इत्मीनाने-तमाम घोंसले मे बिछाते जाते है। साथ ही चू चूं भी करते जाते है। अजब नही यह मिसरा गुनगुना रहे हों कि—

अदू शवद सबबे-खैर गर खुदा ख्वाहद[5]

अपनी वहमी फ़तहमंदियो का यह हसरत अगेज अंजाम देखकर बेइख्तियार हिम्मत ने जवाब दे दिया। साफ़ नजर आ गया कि चद लमहो के लिये हरीफ़ को आजिज कर देना तो आसान है, मगर उनके जोशे-इस्तक़ामत[6] का मुकाबला करना आसान नही। और अब इस मैदान में हार मान लेने के सिवा कोई चारये-कार नही रहा।

बया, कि मा सिपर अदाख्तेम अगर जंग स्त ![7]

अब यह फ़िक्र हुई कि ऐसी रस्म ओ राह इख्तियार करनी चाहिये कि इन ना-

---

१. भविष्य २. कमजोर दिल ३. घटना ४. प्रवृत्तियो का
५. ईश्वर चाहे तो दुश्मन भी शुभ हेतु का कारण बन जाता है ६. दृढ़ता
७. आओ, अगर लड़ाई है तो हमने ढाल फेंक दी है।

ख्वांदा महमानों के साथ एक घर मे गुज़ारा हो सके । सबसे पहले चारपाई का मामला सामने आया । यह बिल्कुल नई तामीरात की जद[1] में थी । पुरानी इमारत के गिरने और नई तामीरों के सरो सामान से जिस कदर गर्द ओ गुबार और कूड़ा करकट निकलता, सबका सब इसी पर गिरता । इसलिये इसे दीवार से इतना हटा दिया गया कि बराहे-रास्त ज़द मे न रहे । इस तबदीली से कमरे की शक्ल जरूर बिगड गई, लेकिन अब इसका इलाज ही क्या था ? जब खुद अपना घर ही अपने कब्ज़े में न रहा तो फिर शक्ल ओ तरतीब की आराइशो[2] की किसे फिक्र हो सकती थी ? अलबत्ता मुँह धोने के टेबल का मामला इतना आसान न था । वो जिस गोशे मे रखा गया था, सिर्फ़ वही जगह उसके लिये निकल सकती थी । ज़रा भी इधर-उधर करने की गुजाइश न थी । मजबूरन यह इंतज़ाम करना पड़ा कि बाजार से बहुत से झाड़न मँगवाकर रख लिये और टेबल की हर चीज पर एक एक झाड़न डाल दिया । थोड़ी थोडी देर के बाद उन्हे उठाकर झाड़ देता और फिर डाल देता । एक झाड़न इस गर्ज़ से रखना पड़ा कि टेबल की सतह की सफाई बराबर होती रहे । सबसे ज्यादा मुश्किल मसला फ़र्श की सफाई का था । लेकिन इसे भी किसी न किसी तरह हल किया गया । यह बात तय कर ली गई कि सुबह की मामूली सफाई के अलावा भी कमरे मे बार बार झाड़ू फिर जाना चाहिये । एक नया झाड़ू मँगवाकर आल-मारी की आड़ मे छुपा दिया । कभी दिन मे दो मर्तबा, कभी तीन मर्तबा, कभी इससे भी ज्यादा उससे काम लेने की जरूरत पेश आती । यहाँ हर दो कमरे के पीछे एक कैदी सफाई के लिये दिया गया है । जाहिर है कि वो हर वक्त झाडू लिये खड़ा नही रह सकता था । और अगर रह भी सकता तो उस पर इतना बोझ डालना इसाफ के खिलाफ था । इसलिये यह तरीका इख्तियार करना पड़ा कि खुद ही झाडू उठा लिया और हमसायों की नजरे बचा के जल्द जल्द दो चार हाथ मार दिये । देखिये इन नाख्वांदा महमानो की खातिर तवाज़ा[3] मे कन्नासी[4] तक करनी पड़ी ।

इश्क़ अज़ीं बिसयार कर्द स्त ओ कुनद ![5]

एक दिन खयाल हुआ कि जब सुलह हो गई तो चाहिये कि पूरी तरह सुलह हो । यह ठीक नहीं कि रहे एक ही घर मे और रहें बेगानो[6] की तरह । मैने बावरची-खाने से थोड़ा सा कच्चा चावल मँगवाया और जिस सोफे पर बैठा करता हूँ उसके सामने की दरी पर चंद दाने छिटक दिये । फिर इस तरह सँभल कर बैठ

१. मार, Range २. सजावट ३. आव भगत ४. झाड़ू देने का काम ५. प्रेम ने इससे ज्यादा काम किये हैं और करता है ६. अपरिचितों की तरह ।

गया जैसे कि शिकारी दाम[1] बिछा के बैठ जाता है। देखिये, उर्फ़ी का शेर सूरते-हाल पर कैसा चस्पा हुआ है।

फ़तादम दाम बर कुंजश्क ओ शादम, यादे-आं हिम्मत
कि गर सीमुर्ग मी आमद ब दाम, आज़ाद मीकर्दम ![2]

कुछ देर तक तो मेहमानो की तवज्जो नही हुई। और अगर हुई भी तो एक गलत अंदाज[3] नजर से मामला आगे नही बढ़ा। लेकिन फिर साफ नज़र आ गया कि माशूकाने-सितम[4] पेशा के तगाफुल की तरह यह तगाफ़ुल भी नज़रबाजी का एक पर्दा है। वर्ना नीले रग की दरी पर सफेद सफेद उभरे हुये दानों की कशिश ऐसी नही कि काम न कर जाये।

हूर ओ जन्नत जलवा बर जाहिद दिहद दर राहे-दोस्त
अंदक अंदक इश्क़ दर कार आवुरद बेगाना रा[5]

पहले एक चिडिया आई और इधर उधर कूदने लगी। बजाहिर चहचहाने मे मशगूल थी मगर नजर दानो पर थी। बहुरी यजदी क्या खूब कह गया है।

च लुत्फ़हा कि दरीं शेवये-निहानी नेस्त
अिनायते कि तू दारी बमन, बयानी नेस्त[6]

फिर दूसरी आई और पहली के साथ मिलकर दरी का तवाफ करने लगी। फिर तीसरी और चौथी भी पहुंच गई। कभी दानो पर नजर पडती, कभी दाना डालने वाले पर। कभी ऐसा मालूम होता जैसे आपस मे कुछ मशविरा हो रहा है। कभी मालूम होता हर फर्द गौर ओ फ़िक्र मे डूबा हुआ है। आपने गौर किया होगा कि गौरैया जब तफतीश और तफहहुस[7] की निगाहों से देखती है तो उसके चेहरे का अजीब संजीदा[8] अंदाज हो जाता है। पहले गर्दन उठाके सामने की तरफ देखेगी। फिर गर्दन मोड़ के दाहिने बायें देखने लगेगी। फिर कभी गर्दन को मरोड़ देकर ऊपर की तरफ नजर उठायेगी और चेहरे पर तफहहुस और इस्तफ़हाम[9] का कुछ ऐसा अदाज छा जायेगा, जैसे एक आदमी हर तरफ़ मुताज्जिबाना[10] निगाह डाल डाल कर अपने आपसे कह रहा हो कि आखिर यह मामला है क्या ? और हो क्या रहा है ? ऐसी ही मुतफ़हि्हस[11] निगाहें इस

---

१. जंगल २. मैंने गोरैया पर जाल फैलाया और खुश हूँ उस हिम्मत की याद करके कि अगर सीमुर्ग भी जाल में फॅस जायगा तो मैं उसे आजाद कर दूंगा ३. उभरी हुई ४. सितम ढानेवाले माशूक ५. प्रियतम की राह में हूर और जन्नत ज़ाहिद को अपना रूप दिखाते हैं, इस प्रकार धीरे धीरे अपरिचितों को भी प्रेम मे मशगूल कर लिया जाता है ६. इस गुप्त आदत में क्या खूबी नही है। तेरी जो मुझ पर मेहरबानियाँ है उनका कोई बयान नही हो सकता ७. जुस्तजू या खोज की निगाह ८. गंभीरता ९. खोज और प्रश्नवाचकता १०. ताज्जुब भरी ११. खोजपूर्ण, प्रश्नवाचक।

वक्त भी हर चेहरे पर उभर रही थी ।

पायम ब पेश अज़ सरे ईं कू नमीरवद
यारां खबर दिहेद कि ईं जलवागाहे-कीस्त ?[1]

फिर कुछ देर के बाद आहिस्ता आहिस्ता कदम बढ़ने लगे । लेकिन बराहे-रास्त दानों की तरफ नही । आड़े तिरछे होकर बढने और कतरा कर निकल जाते । गोया यह बात दिखाई जा रही थी कि खुदा न ख्वास्ता हम दानों की तरफ नही बढ रहे है । दरोगे-रास्त मानिंद[2] की यह नुमाइश देखकर बेइख्तियार जहूरी का शेर याद आ गया ।

बिगो हदीसे-वफ़ा, अज़ तू बा दुरुस्त बिगो
शवम फ़िदाये-दरोग़े कि रास्त मानिंद स्त[3]

आप जानते है कि सैद[4] से कही ज्यादा सय्याद[5] को अपनी निगरानियाँ करनी पडती है । जू ही उनके क़दमों का रुख दानो की तरफ फिरा मैंने दम साध लिया । निगाहे दूसरी तरफ कर ली और सारा जिस्म पत्थर की तरह बेहिस ओ हरकत बना लिया । गोया आदमी की जगह पत्थर की एक मूरती धरी है । क्योंकि जानता था, अगर निगाहे[6]-शौक ने मुज्तरिब[7] होकर जरा भी जल्दबाज़ी की तो शिकार दाम के पास आते आते निकल जायेगा । यह गोया नाजे-हुस्न[8] और नियाजे-इश्क[9] के मामलात का पहला मरहला था ।

निहां अज़ ओ ब रुख़श दाश्तम तमाशाये
नजर ब जानिबे-मा कर्द ओ शर्मसार शुदम[10]

खैर, खुदा खुदा करके इस इश्वये-तगाफुल[11] नुमा के इब्तदाई मरहले तै हुये, और एक बुते-तन्नाज[12] ने साफ साफ दानो की तरफ रुख किया । मगर यह रुख भी क्या कयामत का रुख था । हजार तगाफुल उसके जिलो[13] में चल रहे थे । मैं बेहिस ओ हरकत बैठा दिल ही दिल में कह रहा था ।

ब हर कुजा नाज सर वर आरद, नियाज़ हम पाये कम न दारद
तू ओ ख़रामे व सद तग़ाफ़ुल, मन ओ निगाहे व सद तमन्ना[14]

---

१. इस कूचे से मेरे पाँव आगे नहीं बढ़ते । दोस्तो बताओ कि यह किसकी जलवागाह है २. झूठ जो सत्य की तरह हो ३. वफा की बात कह और तू सच कह । मैं तेरे झूठ पर भी फिदा हूँ जो सच की तरह है ४. शिकार ५. शिकारी ६. अनुरागपूर्ण आँखें ७. चंचल होकर ८. हुस्न के नाज और नखरे ९. प्रेम की भावना १०. मैं उससे छिपकर उसके मुँह को देख रहा था । उसने मेरी तरफ निगाह की और मैं शर्मसार हो गया ११. उपेक्षाभरे हाव भाव १२. इशारों से बात करनेवाला माशूक १३. साथ साथ १४. जहाँ कही नाज होता है वहाँ नियाज भी कम नही होता । तेरी चाल और उसमे सैकड़ों उपेक्षाओं के भाव है और मैं एक निगाह में सैकड़ों अरमान लिये हूँ ।

एक कदम आगे बढ़ता था तो दो क़दम पीछे हटते थे। मैं जी ही जी में कह रहा था कि इल्तफात ओ तगाफुल[१] का यह मिला जुला अंदाज भी क्या खूब अंदाज है। काश थोडी सी तब्दीली इसमें की जा सकती। दो क़दम आगे बढते, एक कदम पीछे हटता। गालिब क्या खूब कह गया है।

विदाअ ओ वस्ल जुदागाना लज्ज़ते दारद
हज़ार बार बिरो, सद हज़ार बार बया[२]

इल्तफात ओ तगाफुल की इन इश्वागरियों की अभी जलवा फरोशी हो रही थी कि नागहां एक तनूमंद[३] चिड़े ने जो अपनी क़लंदराना बेदिमागी और रिदाना जुरअतों के लिहाज से पूरे हल्के में मुमताज था, सिलसिलये-कार की दराजी से उकता कर बेबाकाना[४] कदम उठा दिया। और जबाने-हाल से यह नारये-मस्ताना[५] लगाता हुआ बयक दफा दानो पर टूट पडा कि—

ज़देम बर सफे रिंदां ओ हर च बादा बाद![६]

इस एक कदम का उठना था कि मालूम हुआ जैसे अचानक तमाम रुके हुये कदमो के बंधन खुल पड़े। अब न किसी कदम मे झिजक थी, न किसी निगाह मे तजबज़ुब। मजमे का मजमा बयक दफा दानों पर टूट पड़ा और अगर अंग्रेजी मुहावरे की ताबीर मुस्तआर ली जाये तो कहा जा सकता है कि हिजाब[७] ओ ताम्मुल[८] की सारी बर्फ अचानक टूट गई। या यों कहिये कि पिघल गई। गौर कीजिये तो इस कारगाहे अमल के हर गोशे की कदमरानियां[९] हमेशा इसी एक कदम के इंतजार मे रहा करती है। जब तक यह नहीं उठता सारे कदम ज़मीन में गड़े रहते है। यह उठा और गोया सारी दुनिया अचानक उठ गई।

नामर्दी ओ मर्दी क़दमे फ़ासला दारद![१०]

इस बज्मे सूद ओ जयां[११] मे कामरानी[१२] का जाम कभी कोताहदस्तों[१३] के लिये नही भरा गया। वो हमेशा उन्ही के हिस्से में आया जो खुद बढकर उठा लेने की जुरअत रखते थे। शाद अजीमाबादी मरहूम ने एक शेर क्या खूब कहा था।

यह बज़्मे-मय है, यां कोताहदस्ती में है महरूमी[१४]
जो बढ़कर खुद उठा ले हाथ में, मीना उसी का है

इस चिडे का यह बेबाकाना इकदाम[१५] कुछ ऐसा दिलपसंद वाके हुआ कि उसी वक़्त दिल ने ठान ली, इस मर्दे-कार[१६] से रस्म ओ राह बढ़ानी चाहिये। मैंने

---

१. प्रेम और उपेक्षा २. वियोग और मिलन में अलग अलग आनंद है हजार बार जाओ और सौ हजार बार फिर आओ ३. मोटा ४. निडर होकर ५. मस्त नारा ६. मै रिंदों की कतार में आकर बैठ गया हूँ अब जो होना हो सो हो ७. शर्म ८. संकोच ९. कदम बढना १०. मर्दानगी और नामर्दी में बस एक क़दम का फासला है ११. नफ़े नुकसान की दुनिया १२. सफलता १३. ओछे लोगों के लिये १४. वचना १५. निडर होकर बढ़ना १६. काम के आदमी।

उसका नाम कलंदर रख दिया। क्योंकि बेदिमाग़ी[1] और वारुस्तगी[2] की सर-गरानियों के साथ एक खास तरह का बाँकपन भी मिला हुआ था और उसकी वज़ग्रे-कलंदराना[3] को आब ओ ताब दे रहा था।

रहे इक बाँकपन भी बेदिमाग़ी में तो ज़ेबा है
बढ़ा दो चीने-अब्रू[4] पर अदाये-कजकुलाही[5] को !

दो तीन दिन तक इसी तरह उनकी खातिर तवाजो होती रही। दिन में दो तीन मर्तबा दाने दरी पर डाल देता। एक एक करके आते और एक एक दाना चुन लेते। कभी दाना डालने में देर हो जाती तो क़लदर आकर चूं चू करना शुरू कर देता कि वक़्ते-माहूद[6] गुजर रहा है। इस सूरते-हाल ने अब इत्मीनान दिला दिया था कि पर्दये-हिजाब[7] उठ चुका। वो वक़्त दूर नहीं कि रही सही झिजक भी निकल जायेगी।

और खुल जायेंगे दो चार मुलाक़ातों में !

चंद दिनो के बाद मैंने इस मामले का दूसरा कदम उठाया। सिगरेट के खाली टीन का एक ढकना लिया, उसमें चावल के दाने डाले और ढकना दरी के किनारे रख दिया। फौरन महमानों की नजर पड़ी। कोई ढकने के पास आकर मुँह मारने लगा, कोई ढकने के किनारे पर चढ कर ज्यादा जमीयते-खातिर[8] के साथ चुगने मे मशगूल हो गया। आपस मे रकीबाना[9] रद्द ओ कद[10] भी होती रही। जब देखा कि इस तरीकये-ज़याफत[11] से तबीयतें आश्ना हो गई है तो दूसरे दिन ढकना दरी के किनारे से कुछ हटा कर रखा। तीसरे दिन और ज्यादा हटा दिया और बिल्कुल अपने सामने रख दिया। गोया इस तरह बतदरीज बुअ्द[12] से क़ुर्ब[13] की तरफ मामला बढ रहा था। देखिये, बुअ्द ओ कुर्ब के मामले ने आलिया बिन्तुल महदी का मतला याद दिला दिया :

व हब्बब फ़यिन्नल हुब्ब दायतुल हुब्बि
व कम्मिम बग्रीदिद्दारे मुस्तौजिबल क़ुर्ब[14]

इतना कुर्ब देख कर पहले तो मेहमानों को कुछ ताम्मुल हुआ। दरी के पास आ गये मगर कदमो में झिजक थी और निगाहों मे तजबजुब बोल रहा था। लेकिन इतने मे कलंदर अपने कलंदराना नारे लगाता हुआ आ पहुँचा और उसकी रिदाना जुरअते देख कर सबकी झिजक दूर हो गई। गोया इस राह

१-२. बेपरवाही ३. कलंदर की प्रकृति ४. भौहों की सिलवटों पर ५. टेढी टोपी की अदा ६. तय किया हुआ समय ७. शर्म का परदा ८. दिल जमई के साथ ९. विरोधियों की तरह १०. छीना झपटी ११. मेहमाननवाजी १२. दूर १३. निकट १४. मुहब्बत कर क्योकि मुहब्बत मुहब्बत से बढ़ती है और बहुत से ऐसे दूर रहने वाले है जो नजदीक होने के लायक है।

में सब कलंदर के पैरो हुय। जहाँ उसका क़दम उठा सबके उठ गये। वो दानों पर चोंच मारता, फिर सर उठा के और सीना तान के ज़बाने-हाल[1] से मुतरन्निम[2] होता।

वमद्दहरु इल्लामन रुवाति क़सायिदी
इज़ाक़ुल्तु शेरन् अस्बहद्दहरु मुंशिदा[3]

जब मामला यहाँ तक पहुँच गया तो फिर एक कदम और उठाया गया और दानों का बरतन दरी से उठाके तिपाई पर रख दिया। यह तिपाई मेरे बाईं जानिब सोफे से लगी रहती है और पूरी तरह मेरे हाथ की जद में है। इस तब्दीली से खूगर[4] होने में कुछ देर लगी। बार बार आते और तिपाई का चक्कर लगा के चले जाते। बिल आखिर यहाँ भी कलंदर ही को पहला कदम बढ़ाना पडा। और उसका बढ़ाना था कि यह मंजिल भी पिछली मंजिलों की तरह सब पर खुल गई। अब तिपाई कभी तो उनकी मजलिस-आराइयों का ऐवाने-तरब[5] बनती, कभी बाहमी मारका-आराइयों[6] का अखाड़ा।

जब इस कदर नजदीक आ जाने के खूगर हो गये तो मैंने खयाल किया, अब मामला कुछ और आगे बढ़ाया जा सकता है। एक दिन सुबह यह किया कि चावल का बरतन सोफे पर ठीक अपनी बगल में रख दिया और फिर लिखने मे इस तरह मशगूल हो गया गोया इस मामले से कोई सरोकार नहीं।

दिल ओ जानम ब तू मशगूल ओ नज़र दर चप ओ रास्त
ता नदानंद रक़ीबां कि तू मंज़ूरे-मनी![7]

थोड़ी देर के बाद क्या सुनता हूँ कि जोर जोर से चोंच मारने की आवाज आ रही है। कनखियों से देखा तो मालूम हुआ कि हमारा पुराना दोस्त कलंदर पहुँच गया है और बेतकान चोंच मार रहा है। ढकना चूंकि बिल्कुल पास धरा था इसलिये उसकी दुम मेरे घुटने को छू रही थी। थोड़ी देर के बाद दूसरे याराने-तेजगाम[8] भी पहुंच गये और फिर तो यह हाल हो गया कि हर वक्त दो तीन दोस्तों का हल्क़ये-बेतकल्लुफ मेरे बगल में उछल कूद करता रहता। कभी, कोई सोफे की पुश्त पर चढ जाता, कभी कोई जस्त लगा कर किताबों पर खड़ा हो जाता, कभी नीचे उतर आता और चूं चूं करके फिर

१. अपनी हालत से कहना २. गुनगुना रहा था ३. और दुनिया कुछ भी नहीं है सिर्फ मेरे क़सीदों के पढने वालों से भरी हुई है। जब मैं शेर कहता हूँ तो सारी दुनिया उसे पढने लगती है ४. परिचित ५. खुशी का महल ६ लड़ाई झगड़े का ७. मेरा दिल और जान तो तुझ में लीन है और दृष्टि दायें बायें है। ताकि दुश्मन यह न जानें कि तू मेरी दृष्टि में है। ८. तेज कदम चलने वाले दोस्त।

वापस आ जाता। बेतकल्लुफ़ी की इस उछल कूद मे कई मर्तबा ऐसा भी हुआ कि मेरे कांधे को दरख़्त की एक झुकी हुई शाख़ समझ कर अपनी जस्त ओ खेज़[1] का निशाना बनाना चाहा। लेकिन फिर चौक कर पलट गये, या पंजो से उसे छूआ और ऊपर ही ऊपर निकल गये। गोया अभी मामला उस मंजिल से आगे नही बढा था जिसका नक़्शा वहशी यज़्दी ने खीचा है।

हनूज़ आशिक़ी ओ दिलरुबाइये न शुदा स्त
हनूज़ ज़ोरी ओ मर्द आज़माइये न शुदा स्त
हमीं तवाज़ा आम स्त हुस्न रा बा इश्क़
मयाने-नाज़ ओ नियाज़ आश्नाइये न शुदा स्त[2]

बहर हाल रफ़्ता रफ़्ता इन आहवाने-हवाई[3] को यक़ीन हो गया कि यह सूरत हमेशा सोफ़े पर दिखाई देती है, आदमी होने पर भी आदमियों की तरह ख़तरनाक नही है। देखिये मुहब्बत का अफ़सूं[4] जो इंसानो को राम नही कर सकता, वहशी परिंदों को राम कर लेता है।

दर्से-वफ़ा अगर बुवद ज़मज़मये-मुहब्बते
जुमा ब मकतब आवुरद तिफ़्ले-गुरेज़ पायेरा[5]

बारहा ऐसा हुआ कि मैं अपने ख़यालात मे मह्व,[6] लिखने मे मशग़ूल हूँ, इतने मे कोई दिलनशी बात नोके-क़लम पर आ गई, या इबारत की मुनासिबत ने अचानक कोई पुरकैफ़[7] शेर याद दिला दिया और बेइख़्तियार उसकी कैफ़ियत की ख़ुदरफ़्तगी[8] में मेरा सर ओ शाना[9] हिलने लगा। या मुँह से "हा" निकल गया और यकायक ज़ोर से परो के उडने की एक फ़ुर सी आवाज सुनाई दी। अब जो देखता हूँ तो मालूम हुआ कि इन याराने-बेतकल्लुफ़ का एक तायफ़ा[10] मेरी बगल में बैठा बे-ताम्मुल[11] अपनी उछल कूद मे मशग़ूल था। अचानक उन्होने देखा कि यह पत्थर अब हिलने लगा है तो घबरा कर उड गये। अजब नहीं, अपने जी में कहते हों, यहाँ सोफ़े पर एक पत्थर पड़ा रहता है, लेकिन कभी कभी आदमी बन जाता है!

---

१. उछल कूद २. अभी आशिक और माशूक नही हुआ है, अभी शक्तिशाली और मर्दानगी आज़माने वाला नही हुआ है, रूप और प्रेम में यही आम रीति है अभी नाज नखरों और प्रेम की विनीतता से परिचित नही हुआ है। ३. हवा के हिरनों को ४. जादू ५. वफा का पाठ अगर प्रेम के गीत के समान हो तो स्कूल से भागने वाला लड़का जुमे की छुट्टी के दिन भी स्कूल आ जायगा। ६. तल्लीन ७. मस्ती भरा ८. आत्म विस्मृतता ९. कंधे १० झुंड ११. निस्संकोच।

किलअ्र-अहमदनगर
१८, मार्च सन् १९४३ ई.

सदीके-मुकर्रम

कल जो कहानी शुरू हुई थी, वो अभी खत्म कहाँ हुई ? आइये आज आपको इस "मंतिक़ उत्तैर[1]" का एक दूसरा बाब सुनाऊँ। मालूम नही अगर आप सुनते होते तो शौक़ ज़ाहिर करते या उकता जाते ? लेकिन अपनी तबीयत को देखता हू तो ऐसा मालूम होता है जैसे दास्तांसराइयो[2] से थकना बिल्कुल भूल गई हो। दास्तानें जितनी फैलती जाती है, ज़ौके-दास्तांसराई भी उतना ही बढता जाता है।

फ़रखुंदा शबे बायद ओ खुश महताबे
ता बा तू हिकायत कुनम अज़ हर बाबे ![3]

इन याराने-सकफ़ ओ महारीब[4] मे और मुझमे अब खौफ ओ तज़बज़ुब[5] का एक हल्का सा पर्दा हायल रह गया था। चद दिनो मे वो भी उठ गया।

उन्हें छत से सोफे पर उतरने के लिए चंद दरम्यानी मजिलो की ज़रूरत थी। अब यह तरीका इख्तियार किया गया कि पहली मजिल का काम पखे के दस्तो से लेते, और दूसरी का मेरे सर और कांधो से। बाहर से उड़ते हुए कमरे मे आये और सीधे अपने घोसले मे पहुँच गये। फिर वहाँ से सर निकाल कर हर तरफ नज़र दौडाई और पूरे कमरे का जायज़ा ले लिया। फिर वहाँ से उड़े और सीधे पंखे के दस्ते पर पहुँच गये। फिर दस्ते से जो कूदे तो कभी मेरे सर को अपने क़दमों की जौलानगाह[6] बनाया, कभी कांधों को अपने जुलूस[7] से इज़्ज़त बख्शी। देखिये, इन चिड़ियो ने नही मालूम कितने बरसों के बाद मोमिन खां का तरकीब बद याद दिला दिया।

जौलां[8] को है उसका क़स्दे-पामाल
अय खाक ! नवीदे सर-फ़राज़ी ![9]

पहली दफ़ा तो इस नागहानी नुज़ूले-इजलाल[10] ने मुझे चौंका दिया था और शर्मिंदगी के साथ ऐतराफ[11] करना पडता था कि चौक कर हिल गया था। कुदरती तौर पर इन आश्नायाने-ज़ूदगुसल[12] पर यह नाकदरशनासी गरां

---

१. चिड़ियों की बातें २. कहानी कहने की प्रवृत्ति ३ कोई मुबारक रात हो और सुंदर चाँदनी ताकि तुझसे हर तरह की कहानियाँ कहूं ४. छत और मेहराबों के यार ५. डर और दुविधा ६. अखाड़ा ७. बैठना ८. चलना ९. खाक तेरे लिये सर बुलदी की बात है १० शानदार अवतरण ११. स्वीकार १२. जल्दी तोड़ देने वाले।

गुज़री होगी। लेकिन यह जो कुछ हुआ महज़ एक इज्तिरारी सह्व[1] था। तबीयत फ़ौरन मुतनब्बा[2] हो गई, और फिर तो सर और काँधा कुछ ऐसा बेहिस होकर रह गया कि मिनारे की छतरी की जगह बालाखाने का काम देने लगा। पखे से उतर कर सीधे काँधे पर पहुँचते, कुछ देर चहचहाते और फिर कूदकर सोफे पर पहुँच जाते। कई बार ऐसा भी हुआ कि काँधे से जस्त[3] लगाई और सर पर जा बैठे। आपको मालूम है कि आतिशी कधारी ने अपनी आँखो की कश्ती बनाई थी। बदायूनी ने उसका यह शेर नकल किया है .

सरश्कम रफ़्ता रफ़्ता बे तू दरया शुद, तमाशा कुन
बया, दर कश्तिये-चश्मम नशीं ओ सैरे-दरया कुन ![4]

और हमारे सौदा को ताम्मुल हुआ था।

आँखों में दूँ उस आईना रू को जगह वले
टपका करे है बस कि यह घर, नम बहुत है यां

लेकिन मेरी ज़बाने-हाल को शेख शीराज की इलतजाये-नियाज[5] मुस्तआर लेनी पडी।

गर बर सर ओ चश्मे-मन नशीनी
नाज़त बकशम कि नाज़नीनी[6]

जब मामला यहाँ तक पहुँच गया तो खयाल हुआ अब एक और तजरुबा भी क्यों न कर लिया जाये ? एक दिन सुबह मैंने दानो का बरतन कुछ देर तक नही रखा। मेहमानाने-बा-सफा[7] बार बार आये और जब सुफरये-ज़याफत[8] दिखाई नही दिया तो इधर उधर चक्कर लगाने और शोर मचाने लगे। अब मैंने बरतन निकाल के हथेली पर रख लिया और हथेली सोफे पर रख दी। जूँ ही कलदर की नज़र पडी, मअन जस्त लगाई और एक चक्कर लगा के अँगूठे पर आ खडा हुआ और फिर तेज़ी के साथ दानो पर चोंच मारने लगा। इस तेजी मे कुछ तो तबए-कलदराना[9] का कुदरती-तकाज़ा था, और कुछ यह वजह भी होगी कि देर तक दानो का इतजार करना पड़ा था। चोंच की तेज़ ज़र्बों[10] से दाने उड उडकर ढकने से बाहर गिरने लगे। एक दाना उँगली की जड के पास भी गिर गया। उसने फौरन वहाँ भी एक चोंच मार दी और

---

१. अनिच्छा की भूल २ सचेत ३ छलाग ४. मेरे आँसू तेरे बिना धीरे धीरे दरिया हो गये, यह तमाशा देख। तू आ और मेरी आँखो की कश्ती मे बैठ और दरिया की सैर कर ५. प्रणय प्रार्थना ६. अगर तू मेरे सर और आँखो मे बैठे तो मै तेरे नाज़ उठाऊँगा क्योंकि तू नाज़नीन है ७. सच्चे मेहमान ८. मेहमानी का दस्तरख़्वान ९ क़लंदराना प्रकृति १०. चोट।

ऐसी खारा शिगाफ[1] मारी कि क्या कहूँ। अगर सितमपेशों के जोर ओ जफा का ख़ूगर न हो चुका होता तो यक़ीन कीजिये बेइख़्तियार मुँह से चीख निकल जाती

मन कुश्तये-करिश्मये-मिज़गां कि बर जिगर
ख़ंजर ज़द ग्रां चुनां कि निगहरा ख़बर न शुद ![2]

अब मैने हथेली बरतन समेत ऊपर उठा ली और हवा मे मुअ़ल्लक[3] कर दी। थोडी देर नही गुज़री थी कि एक दूसरी चिडिया आई। अभी थोड़ी देर के बाद आपको मालूम होगा कि इसका नाम मोती है। मोती ने हथेली के ऊपर एक दो चक्कर लगाये और निकल गई। गोया अंदाजा करना चाहती थी कि इस जजीरे[4] पर उतरने के लिये महफूज[5] जगह कौन सी होगी। फिर दुबारा आई और कुहनी के पास उतर कर सीधी पुहँचे के पास पहुँच गई और पुहँचे से हथेली की खाकनाय[6] पर उतर कर बेतकान मिन्कारदराजियाँ[7] शुरू कर दी। इसमे कोई दाना क़ाब[8] के बाहर गिर गया तो चोच का एक नश्तर उस पर भी लगा दिया। देखिये "दस्तदराजी" की तरकीब मे तसर्रुफ[9] करके मुझे "मिन्कार दराज़ी" की तरकीब वजा करनी पड़ी। जानता हू कि मुहावरात मे तसर्रुफात की गुंजाइश नही होती। मगर क्या किया जाये, साबका ऐसे याराने-कोतहआस्तीन से आ पडा जो हाथ की जगह मुँह से "दराज दस्तियाँ" करते है।

दराज़दस्तिये-ई कोतह आस्तीनां बीं ![10]

लेकिन इस आखिरी तजरुबे ने तबए-काविश पसद[11] को एक दूसरी ही फिक्र मे डाल दिया। ज़ौके-इश्क[12] की इस कोताही[13] पर शर्म आई कि हथेली मौजूद है मैं नामुराद[14] टीन के ढकने पर इन मिन्कारो[15] की नश्तरजनी जाया कर रहा हूँ। मैने दूसरे दिन टीन का ढकना हटा दिया। चावल के दाने हथेली पर रखे और हथेली फैला कर सोफे पर रख दी। सबसे पहले मोती आई और गर्दन उठा उठा के देखने लगी कि आज ढकना क्यों दिखाई नही देता ? यह इस बस्ती की सबसे ज्यादा खूबसूरत चिडिया है। आज कल हुस्न की नुमायशों में ख़ूबरूई और दिलावेजी का जो फितनागर सबसे ज्यादा कामयाब होता है उसे

---

१. पत्थर को चीरने वाली २. मैं आँखों की पलकों के करिश्मो का मारा हुआ हूँ कि जिगर पर उसने ऐसा खंजर मारा कि निगाह को खबर तक न हुई। ३. अधर लटकाना ४. टापू ५. सुरक्षित ६. स्थल डमरूमध्य ७. चोंच मारना ८. रकाबी ९. काट छाँट १०. इन कोतह आस्तीनो की दराज़दस्तियाँ देखो ११. कठिन बातों का अन्वेषण करने वाली प्रकृति १२. प्रेम की लगन १३. ओछापन १४. अभागा १५. चोंच।

पूरे मुल्क की निस्बत से मौसूम कर दिया करते है। मसलन कहेंगे मिस इंगलैंड, मादीमोज़ेल फ्रांस (Mademoiselle) गोया एक हसीन चेहरे के चमकने से सारे मुल्क ओ कौम का चेहरा चमक उठता है।

कुनंद ख़ेश ओ तबार अज़ तू नाज ओ मीज़ेबद
ब हुस्ने-यक तन अगर सद क़बीला नाज़ कुनद ![1]

अगर यह तरीक़ा मोती के लिये काम मे लाया जाये तो उसे मादाम किलअ़े-अहमदनगर से मौसूम कर सकते है।

ईं निगाहे स्त कि शाइस्तये-दीदारे हस्त ![2]

छरेरा बदन, निकलती हुई गर्दन, मख़रूती[3] दुम और गोल गोल आँखे एक अजीब तरह का बोलता हुआ भोलापन। जब दाना चुगने के लिये आयेगी तो हर दाने पर मेरी तरफ देखती जायेगी। हम दोनो की जबानें खामोश रहती है मगर निगाहे गोया[4] हो गई है। वो मेरी निगाहो की बोली समझने लगी है। मैंने उसकी निगाहों को पढना सीख लिया है। हा वहशी यज़दी ने इन मामलात को क्या खूब कर कहा है।

करिश्मा गर्मे-सवाल स्त, लब मकुन रंजा
कि एह्‌तियाज़ ब पुरसीदने-ज़बानी नेस्त[5]

बहर हाल इस मौके पर भी उसकी बेसाख्ता निगाहों ने मुझसे कुछ कहा और फिर बगैर किसी झिझक के जस्त लगाके अँगूठे की जड पर आ खडी हुई और दानो पर चोच मारना शुरू कर दिया। यह चोच नहीं थी, नश्तर की नोक थी जो अगर चाहती तो हथेली के आर पार हो जाती। मगर सिर्फ चरके लगा लगाके रुक जाती थी।

यक नाविके-कारी ज़ कमाने तू न ख़ुर्दम
हर ज़ख़्मे-तू मोहताज ब ज़ख़्मे-दिगरम कर्द ![6]

हर मर्तबा गर्दन मोड के मेरी तरफ देखती भी जाती थी गोया पूछ रही थी

---

१. अपने और खानदान के लोग तुझ पर नाज करते है और यह ठीक है अगर एक खूबसूरत चेहरे के होने से सौ कबीले नाज करने लगे। २. यही निगाह है जो दर्शन करने के लायक है ३. वह आकृति जिसका एक सिरा पतला और दूसरा चौडा हो ४. बात करने वाली ५. हाव-भाव मे ही सवाल छिपा हुआ है, होठो को मत तकलीफ दे। यहाँ जबान से पूछने की जरूरत नही है। ६. तेरी कमान से मुझे एक भी कातिल तीर नही लगा। तूने जो भी जख्म दिया उसने मुझे दूसरे ज़ख्म का मोहताज कर दिया।

कि दर्द तो नही हो रहा ? भला मैं जां बाख्तये-लज्ज़ते-अलम[1] इसका क्या जवाब देता ?

ईं सुख़नरा च जवाब स्त, तू हम मीदानी[2] !

मिर्जा सायब का यह शेर आप की निगाहो से गुजरा होगा ।

ख़ेश रा बर नोके-मिज़गाने - सितमकोशां ज़दम
आं क़दर ज़ख्मे कि दिल मीख़्वास्त दर ख़ंजर न बूद[3]

मुझे इसमे इस कदर तसर्रुफ करना पडा कि मिज़गा की जगह "मिन्कार" कर दिया ।

ख़ेश रा बर नोके-मिन्क़ारे-सितमकोशां ज़दम
आं क़दर ज़ख्मे कि दिल मीख़्वास्त दर ख़ंजर न बूद[4]

दर्द का हाल तो मालूम नही, मगर चोच की हर जर्ब जो पडती थी, हथेली की सतह पर एक गहरा ज़ख्म डाल के उठती थी ।

रसीदनहाये मिन्क़ारे-हुमा बर उस्तख़्वां ग़ालिब
पस अज उम्रे ब यादम दाद रस्मो राहे पैकांरा[5]

इस बस्ती के अगर आम बाशिदो से क़ता[6] नज़र कर ली जाये तो ख़वास[7] मे चंद शख्सीयते खुसूसियत के साथ काबिले-ज़िक्र है । कलंदर और मोती से आपकी तकरीब[8] हो चुकी है । अब मुख्तसरन मुल्ला और सूफी का हाल भी सुन लीजिये । एक चिडा बडा ही तनूमद और झगड़ालू है । जब देखो ज़बान फ़र फर चल रही है, सर उठा हुआ और सीना तना हुआ रहता है । जो भी सामने आ जाये दो दो हाथ किये बगैर नही रहेगा । क्या मजाल कि हम-साये का कोई चिडा इस मुहल्ले के अदर कदम रख सके । कई शहज़ोरो ने हिम्मत दिखाई लेकिन पहले ही मुकाबले में चित हो गये । जब कभी फर्श पर याराने-शहर की मजलिस आरास्ता होती है, तो यह सर ओ सीने को जुबिश देता हुआ और दाहिने बाये नजर डालता हुआ फौरन आ मौजूद होता है । और आते ही उचक कर किसी बुलद जगह पर पहुँच जाता है । फिर अपने

---

१. पीडा के स्वाद पर जान से खेलने वाला २ इस बात का क्या जवाब है यह तू भी जानता है । ३. खुद को मैंने सितम ढाने वालो की पलकों की नोक पर दे मारा क्योकि जैसा ज़ख्म दिल चाहता था वह खंजर की नोक में नही था । ४. इसमे पलको की नोंक की जगह चोच की नोक कर दिया है ५ हुमा की चोच जो हड्डियो पर लगी तो बहुत दिनों बाद मुझे तीर की नोक की बाते याद आ गई ६. हटा लेना ७. खास लोगों मे ८. मुलाक़ात

शेवये-खास[1] मे इस तसलसुल[2] के साथ चू चां, चू चां शुरू कर देता है कि ठीक ठीक क़ाआनी के वाज़के-जामे का नक्शा आँखों मे फिर जाता है।

दी वाज़के आमद दर मस्जिदे-जामे
चुं बर्फ़ हमा जामा सपेद अज़ पा ता सर
चश्मश ब सूये-चप, ओ चश्मश ब सूये-रास्त
ता ख़ुद के सलामे कुनद अज़ मुनअम ओ मुज्तर
जां साल कि ख़रामद ब रसन मर्दे-रसन बाज़
आहिस्ता ख़रामीदी ओ मौज़ूं ओ मुवक़्क़र
फ़ारिग़ न शुदा ख़ल्क़ ज़ तस्लीम ओ तशहहुद
बरजस्त चु बूज़ीना ओ बिनिशस्त ब मिंबर
वां गह ब सर ओ गर्दन ओ रीश ओ लब ओ बीनी
बस इश्वा बयावुर्दा सुख़न कर्द चुनीं सर[3]

फरमाइये, अगर इसका नाम मुल्ला न रखता तो और क्या रखता ? ठीक इसके बर अक्स एक दूसरा चिड़ा है। तोरफुल्अशियाअ् बिअज़दादिहा[4] इसे जब देखिये अपनी हालत मे गुम और खामोश है।

कांरा कि ख़बर शुद, ख़बरश बाज़ नयामद[5]

बहुत किया तो कभी कभार एक हल्की सी नातमाम चूं की आवाज निकाल दी और इस नातमाम चू का भी अदाज लफ्ज़ ओ सुखन का सा नही होता। बल्कि एक ऐसी आवाज़ होती है जैसे कोई आदमी सर झुकाये अपनी हालत में गुम पडा रहता हो और कभी कभी सर उठा के "हा" कर देता हो।

ता तू बेदार शवी, नाला कशीदम, वर्ना
इश्क़ कारे स्त कि बे आह ओ फ़ुगाँ नीज़ कुनद[6]

---

१. खास आदत के अनुसार २. अनवरतता ३. कल एक टुच्चा सा धर्मोपदेशक जामे मस्जिद मे आया जो बर्फ़ की तरह सर से पैर तक सफेद कपडे पहने हुये था। उसकी आंखे कभी बायें तो कभी दाहिने देखती थी ताकि उसे बड़ो और छोटो मे से कौन सलाम करता है। उस साल जब एक नट रस्सी पर चला था उसी तरह यह भी धीरे धीरे ठीक उसी तरह शान के साथ चल रहा था। दुनिया उसे सलाम करने से अभी फ़ारिग भी नही हुई थी कि वह बदर की तरह उछला और धर्म मच पर बैठ गया। और तब सिर, गर्दन, दाढी, होठ और नाक से नखरे करते हुये यों कहना शुरू किया। ४. चीज़ों को उनकी विरोधी चीज़ो से जानो ५. जिन्हे खबर हुई उनकी फिर खबर नहीं आती ६. तू जाग जाये इसलिये मैं आह कहता हूँ, वर्ना इश्क वो काम है जो बिना आह के भी करता है।

दूसरे चिड़े उसका पीछा करते रहते है। गोया उसकी कम सुखनी से आजिज़ आ गये है। फिर भी उसकी जबान खुलती नही। अलबत्ता निगाहों पर कान लगाइये तो उनकी सदाये-खामोशी[1] सुनी जा सकती है।

तू नजरबाज नई वर्ना तग़ाफ़ुल निगह स्त !
तू ज़बांफ़हम नई, वर्ना ख़मोशी सुख़न स्त ![2]

मैंने यह हाल देखा तो उसका नाम सूफी रख दिया और वाकया यह है कि यह तलक्कुब[3]

जामये बूद कि बर क़ामते-ऊ दोख़्ता बूद ![4]

सुबह जब इस बस्ती के तमाम बाशिंदे बाहर निकलते है तो बरामदे और मैदान मे अजीब चहल पहल होने लगती है। कोई फूल के गमलो पर कूदता फिरता है, कोई क्रोटन की शाखो मे झूला झूलने लगता है। एक जोड़े ने गुसल[5] का तहइया[6] किया और इस इतजार मे रहा कि कब फूलो के तख्तो पर पानी डाला जाता है। जूंही पानी डाला गया फौरन हौज मे उतर गया और परो को तेज़ी के साथ खोलने और बंद करने लगा। एक दूसरे जोड़े को आस पास पानी नही मिला तो "फतयम्ममू सईदन् तय्यबन्[7]" पढता हुआ मिट्टी ही मे नहाना शुरू कर दिया। पहले चोच मार मार के इतनी मिट्टी खोद डाली कि सीने तक डूब सके। फिर उस गढे में बैठ कर इस तरह पाकोबियाँ[8] और परअफ-शानियाँ[9] शुरू कर दी कि गर्द ओ ख्वाक का एक तूफान उठ खडा हुआ। कुछ फासले पर मुल्ला हस्बे-मामूल किसी हरीफ़ से कुश्ती लडने मे मशगूल है। इनके लड़ने की खुदफरोशियों का भी कुछ अजीब हाल होता है।

लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं !

याने हाथ को देखिये तो हथियार से यक कलम खाली है। बल्कि सिरे मे हाथ है ही नही।

दहन का ज़िक्र क्या, यां सर ही गायब है गरेबां से !

मगर चोंच को देखिये तो सारे हथियारों की कमी पूरी कर रही है। जोशे-गजब मे आकर इस तरह एक दूसरे से गुथ जायेगे कि एक को दूसरे से तमीज करना दुश्वार हो जायेगा। गोया "जिदाले-सादी बा मुद्दई दर बयाने-नवगरी ओ दरवेशी[10]" का मजर आंखो मे फिर जायेगा।

---

१. मूक आवाज २. तू देखने वाला नही है वर्ना उपेक्षा मे भी निगाह है। तू ज़बान को समझने वाला नही है वर्ना मौन ही वाणी है। ३ नामकरण ४. एक ऐसा वस्त्र था जो उसके शरीर के मुताबिक सिला हुआ था। ५ स्नान ६. इरादा ७ पानी नही तो मिट्टी ही मल लो ८ पैर पटकना ९. सिर हिलाना या फैलाना १०. सादी की मद्दई के साथ बहस जो दौलत-मदी और दरवेशी के बीच हुई।

ऊ दर मन ओ मन दर ऊ फ़तादा ![1]

हवा मे जब कुश्ती लड़ते हुये एक दूसरे से गुत्थमगुत्था होते है तो उन्हे इसका भी होश नही रहता कि कहाँ गिर रहे है। कई मर्तबा मेरे सर पर गिर पडे। एक मर्तबा ऐसा हुआ कि ठीक मेरी गोद मे आकर पड गये। मैंने एक को एक हाथ से, दूसरे को दूसरे हाथ से पकड लिया।

मेरे दोनों हाथ निकले काम के !

सारा जिस्म मुट्ठी मे बंद था। सिर्फ गर्दनें निकली हुई थी। दिल इस जोर से धड धड़ कर रहा था कि मालूम होता था अब फटा, अब फटा। लेकिन इस पर भी एक दूसरे को चोच मारने से बाज नही रह सकते थे। जब मैंने मुट्ठियाँ खोल दी तो फुर से उडकर पखे के दस्ते पर जा बैठे और देर तक चू चू करते रहे। गालिबन एक दूसरे से कह रहे थे कि—

रसीदा बूद बलाये वले ब खैर गुज़श्त ![2]

मोती के घोंसले से एक बच्चे की आवाज अर्से से आ रही थी। वो जब दानो पर चोंच मारती तो एक दो दानों से ज्यादा न लेती और फौरन घोंसले का रुख करती। वहाँ उसके पहुँचते ही बच्चे का शोर शुरु हो जाता। दो सेकंड बाद फिर आती और दाना लेकर उड़ जाती। एक मर्तबा मैने गिना तो एक मिनट के अदर सात मर्तबा आई गई।

जिन उलमाये इल्मउलहैवान[3] ने इस जिस के परिदों के ख्सायस[4] का मुताला किया है, उनका बयान है कि एक चिडिया दिन भर के अदर ढाई सौ से तीन सौ मर्तबा तक बच्चे को गिजा देती है। और अगर दिन भर की मजमूई[5] मिकदारे-गिजा[6] बच्चे के जिस्म के मुकाबले मे रखी जाय तो उसका हज्म (Mass) किसी तरह भी बच्चे के जिस्मानी हज्म से कम न होगा। मगर बच्चो की कुव्वते-हाजमा[7] तेजी से काम करती रहती है कि इधर दाना उनके अदर गया और उधर तहलील[8] होना शुरू हो गया। यही बजह है कि परिन्दो के बच्चो के नश्वो नुमा का औसत चारपायो के बच्चो के औसत से बहुत ज्यादा होता है और बहुत थोड़ी मुद्दत के अदर वो बलूग[9] तक पहुँच जाते हैं। मोती की रफ्तारे-अमल से मुझे इस बयान की पूरी तसदीक मिल गई।

फिर जू जू बच्चो के पर बढने लगते है, विजदान[10] का फरिश्ता आता है और मां के कान मे सरगोशियाँ[11] शुरु कर देता है कि अब इन्हें उडने का सबक

१. वह मुझ मे और मै उसमे पडा हुआ था २. एक मुसीबत आई भी लेकिन चलो खैर से चली गई ३. पशुशास्त्र के ज्ञाता ४. विशेषताओं का। ५. सारी ६. खाद्य का परीक्षण ७. पाचन शक्ति ८. हल होना ९. बालिग होना १०. ज्ञान का फरिश्ता ११. कान मे कहना।

सिखाना चाहिये । मालूम होता है मोती के कानों में यह सरगोशी शुरू हो गई थी । एक दिन सुब्ह क्या देखता हूँ घोंसले से उड़ती हुई उतरी तो उसके साथ एक छोटा सा बच्चा भी अबूरी परवाज[1] के पर ओ बाल के साथ नीचे गिर गया । मोती बार बार उसके पास जाती और उडने का इशारा करके ऊपर की तरफ उडने लगती । लेकिन बच्चे मे असरपिजीरी[2] की कोई अलामत[3] दिखाई नही देती थी । वो पर फैलाये आंखे बद किये बेहिस ओ हरकत पड़ा था । मैंने उसे उठा के देखा तो मालूम हुआ अभी पर पूरी तरह बढे नही है । गिरने की चोट का असर भी ताजा है और उसने बेहाल कर दिया है । बेइख्तियार नजीरी का शेर याद आ गया ।

ब वस्लश ता रसम, सद बार बर खाक अफ़गनद शौक़म
कि नौ परवाजम ओ शाखे-बुलंदे आशियाँ दारम[4]

बहर हाल उसे उठा के दरी पर रख दिया । मोती चावल के टुकडे चुन चुन कर मुँह मे लेती और उसे खिला देती । वो मुँह खोलते हुये चू चू की एक मद्धम और उखड़ी सी आवाज निकाल देता और फिर दम बखुद आँखे बंद किये पडा रहता । पूरा दिन इसी हालत मे निकल गया । दूसरे दिन भी उसकी हालत वैसी ही रही । माँ सुबह से लेकर शाम तक बराबर उड़ने की तलकीन[5] करती रही, मगर उस पर कुछ ऐसी मुर्दनी सी छा गई थी कि कोई जवाब नहीं मिलता । मेरा खयाल था कि यह अब बचेगा नही । लेकिन तीसरे दिन सुबह को एक अजीब मामला पेश आया । धूप की एक लकीर कमरे के अंदर दूर तक चली गई थी । यह उसमें जाकर खडा हो गया था । पर गिरे हुये, पाँव मुड़े हुये, आखें हस्बे-मामूल बद थी । अचानक क्या देखता हूँ कि यकायक आँखे खोलकर एक भुरभुरी सी ले रहा है । फिर गरदन आगे करके फ़जा की तरफ देखने लगा । फिर गिरे हुये परों को सुकेड कर एक दो मर्तबा खोला बद किया । और फिर जो एक मर्तबा जस्त लगाकर उड़ा तो वयक दफा तीर की तरह मैदान मे जा पहुँचा और फिर हवाई की तरह फजा में उडकर नजरों से गायब हो गया । यह नजर[6] इस दर्जे अजीब और गैर मुतवक्को[7] था कि पहले तो मुझे अपनी निगाहो पर शुबहा होने लगा, कही किसी दूसरी चिड़िया को उडते देखकर धोके मे न पड गया हूँ । लेकिन एक वाकया जो जहूर मे आ चुका था, अब उसमे शुब्हे की गुजाइश कहाँ बाकी रही थी ? कहाँ तो बेहाली और

---

१. उडान २. प्रभावित होना ३. संकेत, चिन्ह ४. उसके मिलन तक पहुँचने मे मुझे मेरा प्रेम सैकड़ों बार ख़ाक पर पटकता है । क्योंकि मैं नौसिखिया परिदा हूँ और मेरा घोंसला ऊँची टहनी पर है ५. सीख, कहना ६. दृश्य ७. आशातीत ।

दरमांदगी की यह हालत कि दो दिन तक माँ मर खपाती रही मगर ज़मीन से बालिश्त भर भी ऊँचा न हो सका। और कहाँ आसमान पैमाइयो का यह इन्कलाब अंगेज जोश कि पहली ही उडान मे आलमे-हुदूद ओ कुयूद[1] के सारे बंधन तोड डाले, और फजाये-लामितनाही[2] की नापैदा कनार[3] वुसअतो मे गुम हो गया ! क्या कहूँ, इस मंजर ने कैसी खुदरफ़्तगी[4] की हालत तारी कर दी थी। बेइख्तियार यह शेर ज़बान पर आ गया था और इस जोश ओ खरोश के साथ आया था कि हमसाये चौंक उठे थे।

नैरुये - इश्क़ बीं कि दरीं दश्ते - बेकरां
गामे न रफ़्ता अेम ओ ब पायां रसीदा अेम[5]

दर असल यह कुछ न था। ज़िदगी की करिश्मासाज़ियों का एक मामूली सा तमाशा था जो हमेशा हमारी आँखो के सामने से गुजरता रहता है, मगर हम उसे समझना नही चाहते। इस चिड़िया के बच्चे मे उड़ने की इस्तैदाद[6] उभर चुकी थी। वो अपने कुंजे-नशेमन[7] से निकलकर फजाये-आसमानी के सामने आ खडा हुआ था। मगर अभी तक उसकी खुदशनासी[8] का अहसास[9] बेदार[10] नही हुआ था। वो अपनी हकीकत से बेखबर था। माँ बार बार इशारे करती थी, हवा की लहरे बार बार परो को छूती हुई गुजर जाती थी, ज़िदगी और हरकत का हंगामा हर तरफ से आ आकर वढावे देता था, लेकिन उसके अंदर का चूल्हा कुछ इस तरह ठंडा हो रहा था कि बाहर की कोई गरमजोशी भी उसे गर्म नही कर सकती थी।

कलीम शिकवा ज़ तौफ़ीक़े-चंद ? शरमत बाद !
तू चुं ब रह न निही पाये, रहनुमा च कुनद ?[11]

लेकिन ज्यू ही उसकी खोई हुई खुदशनासी जाग उठी और उसे हकीकत का अिरफान[12] हासिल हो गया कि "मैं उडनेवाला परिंद हूँ" अचानक कालिबे बेजान[13] की हर चीज अज सरे-नौ जानदार बन गई। वही जिस्मे-जार[14] जो बेताकती से खडा नही हो सकता था अब सरोकद[15] खडा था। वही काँपते हुये घुटने जो जिस्म का बोझ भी सहार नही सकते थे अब तन कर सीधे हो गये थे।

---

१. सीमा और बंधनों की दुनिया २. असीम वातावरण ३. अपार, असीम ४. आत्मविस्मृति ५. प्रेम की शक्ति को देखो कि इस असीम जंगल मे मैं एक डग भी नही चला हूँ और ठेठ पहुँच गया हूँ ६. ज्ञान, जानकारी ७. घोसले के कूज से ८. आत्म ज्ञान ९. अनुभूति १०. जागृत ११. कलीम तू जरा सी शक्ति और सामर्थ्य की शिकायत करता है ? तुझे शर्म आनी चाहिये जब तू राह पर कदम ही नही रखता तो पथप्रदर्शक क्या करे १२. ज्ञान १३. निष्प्राण शरीर १४. निढाल शरीर १५. सर्व के पेड की तरह।

वही गिरे हुये पर जिनमे जिंदगी की कोई तड़प दिखाई नही देती थी अब सिमट सिमट कर अपने आपको तौलने लगे थे। चश्मजदन[१] के अंदर जोशे-परवाज़[२] की एक बर्कदार[३] तड़प ने उसका पूरा जिस्म हिलाकर उछाल दिया। और फिर जो देखा तो दरमादगी और बेहाली के सारे बंधन टूट चुके थे और मुर्गे-हिम्मत अुकाबवार फजाये-लामितनाही की लाइंतहाइयो की पैमाइश कर रहा था—वलिल्लाहि दर्रु माकाल[४]।

बाल बकुशा ओ सफ़ीर अज़ शजरे-तूबा ज़न
हैफ़ बाशद चु तू मुर्गे कि असीरे-क़फ़सी[५]

गोया बेताकती से तवानाई, गफलत से बेदारी, बेपर ओ बाली[६] से बुलंद, परवाज़ी और मौत से ज़िंदगी का पूरा इंकलाब चश्मजदन[७] के अंदर हो गया। गौर कीजिये तो यही एक चश्मे-जदन का वक़्फा जिंदगी के पूरे अफसाने का खुलासा है।

तय मी शवद ईं रह ब दरख्शीदने-बर्के
मा बेखबरां मुन्तज़िरे-शमा ओ चिरागेम ![८]

उडने के सरो सामान मे से कौन सी चीज़ थी जो इस नौ गिरफ्तारे-कफसे[९] हयात के हिस्से मे नही आई थी? फितरत ने सारा सरो सामान मुहय्या करके उसे भेजा था, और मां के इशारे दमबदम गरमपरवाजी के लिये उभार रहे थे। लेकिन जब तक उसके अंदर की खुदशनासी बेदार नही हुई और इस हकीकत का अिरफान नही हुआ कि वो तायरे-बुलंद परवाज[१०] है, उसके बाल ओ पर का सारा सरो सामान बेकार रहा। ठीक इसी तरह इंसान के अंदर की खुदशनासी भी जब तक सोई रहती है, बाहर का कोई हंगामये[११] सअी उसे बेदार नही कर सकता लेकिन ज्यू ही उसके अंदर का अिरफान जाग उठा और उसे मालूम हो गया कि उसकी छुपी हुई हकीकत क्या है, तो फिर चश्मे-ज़दन के अंदर सारा इंकलाबे-हाल अंजाम पा जाता है। और एक ही जस्त मे हज़ीज खाक[१२] से उडकर रफअ़ते-अफलाक[१३] तक पहुंच जाता है। ख्वाजये-शीराज ने इसी हकीक़त की तरफ इशारा किया था।

---

१. पलक मारने भर मे २. उडने का जोश ३. बिजली की सी ४. जिसने यह बात कही अल्लाह उसका भला करे ५. अपने पर खोल और स्वर्ग के तूबा के वृक्ष से आवाज लगा। बडे अफसोस की बात है कि तू पक्षी और पिंजरे का कैदी हो रहा है ६. पंख और परों का न होना ७. पलक मारने भर मे ८. यह राह बिजली की एक कौंध से पार हो जाती है और हम बेखबर लोग शमा और चिराग की इंतजार मे है ९. जीवन के पिंजरे के इस नये कैदी के १०. ऊँचा उडनेवाला पक्षी ११. प्रयत्नो का ज़ोर १२. सबसे नीची जगह से १३. नभ के उच्च स्थान।

च गोयमत कि ब मयख़ाना दोश मस्त ख़राब
सरुशे-आलमे-ग़ैबम च मुज़्दहा दाद स्त
कि "अय बुलंद नज़र, शाहबाज़ सिदरा नशीन
नशेमने तू न ईं कुंजे-मेहनत आबाद स्त
तुरा ज़ कंगुरये-अर्श मी ज़नंद सफ़ीर
नदानमत कि दरीं दामगह च उफ़्ताद स्त[1]

---

१. मै क्या कहूँ कि कल मयखाने मे मस्त और ख़राब था, गैब की दुनिया के फ़रिश्ते ने मुझे कैसी ख़ुशख़बरी दी कि अय ऊँची नज़रवाले, स्वर्ग के सिदरा नामी वृक्ष पर बैठनेवाले शाहबाज, तेरा घोसला यह नही है जो मेहनत और मशक्कत का घर है। तुझे आसमान के कंगुरों से आवाज देते है कि मैं नही जानता कि तू इस फदे में क्यों पडा हुआ है।

क़िलअ्-अहमदनगर
११ अप्रेल, सन, ४३ ई.

उन् च दिल अज़ फ़िक्रे-ग्रां मीसोख्त, बीमे-हिज्र बूद
आख़िर अज़ बेमह्‌रिये-गर्दूं बग्रां हम साख्तेम ![1]

सदीक़े-मुकर्रम

इस वक्त सुबह के चार नही बजे है बल्कि रात का पिछला हिस्सा शुरू हो रहा है। दस बजे हस्बे-मामूल बिस्तर पर लेट गया था। लेकिन आँखे नीद से आश्ना नही हुईं। नाचार उठ बैठा। कमरे मे आया, रोशनी की और अपने अशगाल[2] मे डूब गया। फिर खयाल हुआ क़लम उठाऊँ और कुछ देर आपसे बाते करके जी का बोझ हलका करूँ। इन आठ महीनो मे जो यहाँ गुज़र चुके हैं यह छठी रात है जो इस तरह गुजर रही है। और नही मालूम अभी और कितनी रातें इसी तरह गुजरेगी।

दिमाग़ बर फ़लक ओ दिल ब पाये महरे-बुतां
चगूना हर्फ़ ज़नम, दिल कुजा दिमाग कुजा ?[3]

मेरी बीवी की तबीयत कई साल से अलील[4] थी। सन ४१ मे जब मैं नैनी जेल मे मुकय्यद था तो इस खयाल से कि मेरे लिये तशवीशे-खातिर[5] का मूजिब होगा मुझे इत्तला नही दी गई। लेकिन रिहाई के बाद मालूम हुआ कि यह तमाम जमाना कम ओ बेश अलालत की हालत मे गुजरा था। मुझे कैदखाने मे उसके खुतूत मिलते रहे। उनमे सारी बाते होती थी लेकिन अपनी बीमारी का कोई जिक्र नही होता था। रिहाई के बाद डाक्टरो से मशविरा किया गया तो उन सब की राय तबदीले-आबोहवा की हुई और वो राँची चली गई। राँची के क़याम से बजाहिर फायदा हुआ था। जौलाई मे वापस आई तो सिहत[6] की रौनक चेहरे पर वापस आ रही थी।

इस तमाम ज़माने मे मैं ज्यादातर सफर मे रहा। वक्त के हालात इस तेज़ी से बदल रहे थे कि किसी एक मजिल में दम लेने की मुहलत नही मिलती

१. जो दिल उसकी फिक्र मे जल गया, यह वियोग का डर था। आखिर दुनिया की बेमेहरबानी से हमने उससे मानो वियोग से भी समझौता कर लिया २. प्रवृत्तियो मे ३. दिमाग आसमान पर है और दिल माशूक के प्रेम के कदमो मे है। किस प्रकार बात कहू, दिल कहाँ है और दिमाग कहाँ है ? ४. खराब ५. दिल की परेशानी ६. स्वास्थ्य।

थी। एक मंज़िल में अभी कदम पहुँचा नहीं कि दूसरी मंज़िल सामने नमूदार हो गई।

सद बयाबां बगुज़श्त ओ दीगरे दर पेश स्त[1]

जौलाई की आखिरी तारीख थी कि मैं तीन हफ्ते के बाद कलकत्ता वापस हुआ। और फिर चार दिन के बाद आल इंडिया कांग्रेस कमीटी के इजलासे-बबई के लिये रवाना हो गया। यह वो वक्त था कि अभी तूफान आया नही था, मगर तूफ़ानी आसार हर तरफ उमडने लगे थे। हुकूमत के इरादों के बारे में तरह तरह की अफवाहें मशहूर हो रही थीं। एक अफवाह जो खुसूसियत के साथ मशहूर हुई यह थी कि आल इंडिया कांग्रेस कमीटी के इजलास के बाद वर्किंग कमीटी के तमाम मेंबरों को गिरफ्तार कर लिया जायेगा और हिन्दुस्तान से बाहर किसी गैर मालूम मुकाम मे भेज दिया जायेगा।[2] यह बात भी कही जाती थी कि लडाई की गैर मामूली हालत ने हुकूमत को गैरमामूली इख्तियारात दे दिये है और वो इनसे हर तरह का काम ले सकती है। इस तरह के हालात पर मुझ से ज्यादा जुलेखा की नज़र रहा करती थी और उसने वक्त की सूरते-हाल का पूरी तरह अदाजा कर लिया था। इन चार दिनो के अदर जो मैने दो सफरो के दरम्यान बसर किये, मै इस कदर कामों मे मशगूल रहा कि हमे आपस में बातचीत करने का मौका बहुत कम मिला। वो मेरी तबीयत की उफ्ताद से वाकिफ थी। वो जानती थी कि इस तरह के हालात मे हमेशा मेरी खामोशी बढ जाती है और मै पसंद नही करता कि इस खामोशी मे खलल पड़े। इसलिये वो भी खामोश थी। लेकिन हम दोनो की यह खामोशी भी गोयाई से खाली न थी। हम दोनो खामोश रहकर भी एक दूसरे की बातें सुन रहे थे और उनका मतलब अच्छी तरह समझ रहे थे। ३, अगस्त को जब मै बबई के लिये रवाना होने लगा तो वो हस्बे-मामूल दरवाज़े तक खुदा हाफिज कहने के लिये आई। मैने कहा—अगर कोई नया वाकया पेश नही आ गया तो १३, अगस्त तक वापसी का क़स्द है। उसने खुदा हाफिज

१. सौ जंगल पार हो गये और दूसरे अभी सामने है २ गिरफ़्तारी के बाद जो बयानात अखबारो मे आये उनसे मालूम होता था ये अफवाहे बेअसल न थी। सेक्रेटरी आफ स्टेट और वायसराय की यही राय थी कि हमे गिरफ़्तार करके मशरिकी अफ्रीका भेज दिया जाये और इस गर्ज से बाज़ इतज़ामात कर भी लिये गये थे। लेकिन फिर राय बदल गई। और बिल आखिर तै पाया कि किलऐ-अहमदनगर मे फ़ौजी निगरानी के मातहत रखा जाये और ऐसी सख्तियाँ अमल मे लाई जाये कि हिन्दुस्तान से बाहर भेजने का जो मकसद था वो यही हासिल हो जाये।

के सिवा और कुछ नही कहा। लेकिन अगर वो कहना भी चाहती तो इससे ज्यादा कुछ नही कह सकती थी जो उसके चेहरे का खामोश इज्तिराब[1] कह रहा था। उसकी आँखे खुश्क थी मगर चेहरा अश्कबार[2] था।

खुद रा ब हीला पेशे-तू खामोश कर्दाअेम ![3]

गुजश्ता पच्चीस बरस के अंदर कितने ही सफर पेश आये और कितनी ही मर्तबा गिरफ्तारियाँ हुई, लेकिन मैने इस दर्जे अफसुर्दा[4] खातिर उसे कभी नही देखा था। क्या यह जज्बात[5] की वक्ती कमजोरी थी जो उसकी तबीयत पर गालिब आ गई थी ? मैने उस वक्त ऐसा ही खयाल किया था। लेकिन अब सोचता हूं तो खयाल होता है कि शायद उसे सूरते-हाल का एक मजहूल[6] अहसास होने लगा था। शायद वो महसूस कर रही थी कि इस ज़िदगी मे यह हमारी आखिरी मुलाकात है। वो खुदा हाफ़िज इसलिये नही कह रही थी कि मै सफ़र कर रहा था। वो इसलिये कह रही थी कि खुद सफर करनेवाली थी।

वो मेरी तबीयत की उफ़्ताद से अच्छी तरह वाकिफ थी। वो जानती थी कि इस तरह के मौको पर अगर उसकी तरफ से ज़रा भी इज्तिराबे-तबा[7] का इजहार होगा तो मुझे सख्त नागवार गुजरेगा और अर्से तक उसकी तलखी[8] हमारे ताल्लुकात में बाकी रहेगी। सन '१६ ई. जब पहली मर्तबा गिरफ्तारी पेश आई थी तो वो अपना इज़्तिराबे-खातिर नही रोक सकी थी और मैं अर्से तक उससे नाखुश रहा था। इस वाकये ने हमेशा के लिये उसकी जिंदगी का ढंग पलट दिया और उसने पूरी कोशिश की कि मेरी ज़िदगी के हालात का साथ दे। उसने सिर्फ साथ ही नही दिया बल्कि पूरी हिम्मत और इस्तिकामत[9] के साथ हर तरह के नाखुशगवार हालात बरदाश्त किये। वो दिमागी हैसियत से मेरे अफकार ओ अकायद में शरीक थी और अमली ज़िदगी मे रफीक[10] ओ मददगार। फिर क्या बात थी कि इस मौके पर वो अपनी तबीयत के इज्तिराब पर गालिब न आ सकी ? गालिबन यही बात थी कि उसके अंदरूनी अहसासात पर मुस्तकबिल की परछाई पड़ना शुरू हो गई थी।

गिरफ्तारी के बाद कुछ अर्से तक हमें अज़ीजो से खत ओ किताबत का मौका नही दिया गया था। फिर जब यह रोक हटा ली गई तो १७ सितंबर को मुझे उसका पहला खत मिला और इसके बाद बराबर खुतूत मिलते रहे। चूकि मुझे मालूम था कि वो अपनी बीमारी का हाल लिखकर मुझे परेशान

१. बेचैनी २. आँसू बरसानेवाला ३. अपने आपको तेरे सामने किसी बहाने से चुप कर लिया है ४ उदास चित्त ५. भावनाओ की ६. अस्पष्ट सा ७. तबीयत की व्याकुलता या घबराहट ८. कड़वाहट ९. दृढ़ता १०. साथी।

खातिर करना पसंद नही करेगी, इसलिये घर के बाज दूसरे अज़ीज़ों से हालत दरयाफ्त करता रहता था। खुतूत यहाँ अमूमन तारीखे-किताबत[1] से दस बारह दिन बाद मिलते है। इसलिये कोई बात जल्द मालूम हो नही सकती। १५, फरवरी को मुझे एक खत २ फरवरी का भेजा हुआ मिला जिसमे लिखा था कि उसकी तबीयत अच्छी नही है। मैंने तार के जरिये मजीद[2] सूरते-हाल दरयाफ़्त की तो एक हफ़्ते के बाद जवाब मिला कि कोई तशवीश[3] की बात नही।

२३ मार्च को मुझे पहली इत्तला उसकी खतरनाक अलालत की मिली। गवर्नमेट बबई ने एक टेलीग्राम के ज़रिये सुपरिटेडेट को इत्तला दी कि इस मज़मून का एक टेलीग्राम उसे कलकत्ते से मिला है। नही मालूम जो टेलीग्राम गवर्नमेट बंबई को मिला वो किस तारीख का था और कितने दिनो के बाद यह फ़ैसला किया गया कि मुझे यह खबर पहुँचा देनी चाहिये।

चूकि हुकूमत ने हमारी कैद का महल[4] अपनी दानिस्त[5] मे पोशीदा[6] रखा है, इसलिये इब्तदा से यह तर्जे-अमल इख्तियार किया गया है कि न तो यहाँ से कोई टेलीग्राम बाहर भेजा जा सकता है, न बाहर से कोई आ सकता है। क्योकि अगर आयेगा तो टेलीग्राफ आफिस ही के ज़रिये आयेगा, और उस सूरत मे आफिस के लोगो पर राज़ खुल जायेगा। इस पाबदी का नतीजा यह है कि कोई बात कितनी ही जल्दी की हो, लेकिन तार के जरिये नही भेजी जा सकती। अगर तार भेजना हो तो उसे लिख कर सुपरिटेडेट को दे देना चाहिये। वो उसे खत के जरिये बंबई भेजेगा, वहाँ से एहतिसाब[7] के बाद उसे आगे रवाना किया जा सकता है। खत ओ किताबत की निगरानी के लिहाज़ से यहाँ कैदियो की दो किस्मे कर दी गई है। बाज़ के लिये सिर्फ बबई की निगरानी काफ़ी समझी गई है, बाज़ के लिये ज़रूरी है कि उनकी तमाम डाक देहली जाये। और जब तक वहाँ से मंज़ूरी न मिल जाये आगे न बढाई जाये। चूंकि मेरी डाक दूसरी किस्म मे दाखिल है, इसलिये मुझे कोई तार एक हफ्ते से पहले नही मिल सकता। और न मेरा कोई तार एक हफ़्ते से पहले कलकत्ते पहुँच सकता है।

यह तार जो २३ मार्च को यहाँ पहुँचा, फौजी ख़ते रम्ज (Code) मे लिखा गया था। सुपरिटेडेट इसे हल नहीं कर सकता था। वो इसे फौजी हेडक्वार्टर में ले गया। वहाँ इत्तफाकन[8] कोई आदमी मौजूद न था। इसलिये पूरा दिन इसके हल करने की कोशिश में निकल गया। रात को इसकी हल-शुदा कापी मुझे मिल सकी।

---

१. जिस दिन लिखे जाते थे उस दिन की तारीख २. विशेष ३. चिता ४. स्थान ५. जानकारी ६. गुप्त ७. जाँच Censor ८. संयोग से।

दूसरे दिन अखबारात आये तो उनमें भी यह मामला आ चुका था। मालूम हुआ डाक्टरों ने सूरते-हाल की हुकूमत को इत्तला दे दी है, और जवाब के मुतजिर है। फिर बीमारी के मुतल्लिक मुआलिजों की रोज़ाना इत्तलाआत निकलने लगी। सुपरिटेडेंट रोज़ रेडियो मे सुनता था और यहाँ बाज़ रुफका[१] से उसका जिक्र कर देता था।

जिस दिन तार मिला उसके दूसरे दिन सुपरिंटेडेट मेरे पास आया और यह कहा कि अगर मैं इस बारे मे हुकूमत से कुछ कहना चाहता हूँ तो वो उसे फौरन बंबई भेज देगा और यहाँ की पाबदियो और मुकर्ररा कायदो से इसमे कोई रुकावट नही पडेगी। वो सूरते-हाल से बहुत मुतास्सिर[२] था और अपनी हमदर्दी का यकीन दिलाना चाहता था। लेकिन मैने उससे साफ साफ कह दिया कि मैं हुकूमत से कोई दरख्वास्त करनी नही चाहता। फिर वो जवाहरलाल के पास गया और उनसे इस बारे मे गुफ्तगू की। वो सहपहर[३] को मेरे पास आये और बहुत देर तक इस बारे मे गुफ़्तगू करते रहे। मैने उनसे भी वही बात कह दी जो सुपरिटेडेंट से कह चुका था। बाद को मालूम हुआ कि सुपरिंटेडेट ने यह बात हुकूमते-बबई के ईमां[४] से कही थी।

जू ही खतरनाक सूरते-हाल की पहली खबर मिली मैंने अपने दिल को टटोलना शुरू कर दिया। इंसान के नफ्स[५] का भी कुछ अजीब हाल है। सारी उम्र हम इसकी देखभाल मे बसर कर देते है, फिर भी यह मुअम्मा[६] हल नही होता। मेरी जिदगी इब्तदा से ऐसे हालात मे गुज़री कि तबीयत को ज़ब्त ओ इन्कियाद[७] मे लाने के मुतवातिर[८] मौक़े पेश आते रहे और जहाँ तक मुमकिन था उनसे काम लेने मे कोताही[९] नही की।

ता दश्त रसम बूद ज़दम चाक गरेबाँ
शर्मिदगी अज़ खिरक़ये-पश्मीना नदारम।[१०]

ताहम मैने महसूस किया कि तबीयत का सुकून[११] हिल गया है और उसे काबू मे रखने के लिये जद ओ जहद करनी पडेगी। यह जद ओ जहद दिमाग को नही मगर जिस्म को थका देती है। वो अंदर ही अंदर घुलने लगता है।

इस जमाने मे मेरे दिल ओ दिमाग का जो हाल रहा, मै उसे छिपाना नही चाहता। मेरी कोशिश थी कि इस सूरते-हाल को पूरे सब्र ओ सुकून के साथ बरदाश्त कर लूँ। इसमे मेरा ज़ाहिर[१२] कामयाब हुआ लेकिन शायद

---

१. रफीक का बहुवचन, साथी २. प्रभावित ३. तीसरे पहर ४. संकेत ५. अंतरात्मा ६. पहेली ७. क़ाबू और कैद ८. लगातार ९. कमी १०. जब तक मेरा हाथ पहुँचा मैं अपना गरेबां फाडता रहा। मुझे अपने पशमीने के खिरके से कोई शर्मिदगी नही है ११. शाति १२. बाह्य शरीर।

बातिन[1] न हो सका। मैंने महसूस किया कि अब दिमाग बनावट और नुमाइश का वही पार्ट खेलने लगा है जो अहसासात और इफ़आलात[2] के हर गोशे मे हम हमेशा खेला करते है और अपने ज़ाहिर को बातिन की तरह नहीं बनने देते।

सबसे पहली कोशिश यह करनी पडी कि यहाँ ज़िदगी की जो रोज़ाना मामूलात ठहराई जा चुकी है, उनमे फर्क आने न पाये। चाय और खाने के चार वक्त हैं जिनमे मुझे अपने कमरे से निकलना और कमरो की कतार के आखिरी कमरे मे जाना पडता है। चूकि ज़िदगी की मामूलात मे वक्त की पाबदी का मिनटो के हिसाब से आदी हो गया हूँ इसलिये यहाँ भी औकात की पाबदी की रस्म कायम हो गई और तमाम साथियो को भी इसका साथ देना पडा। मैंने इन दिनो मे भी अपना मामूल बदस्तूर रखा। ठीक वक्त पर कमरे से निकलता रहा और खाने की मेज पर बैठता रहा। भूक यककलम[3] बद हो चुकी है, लेकिन मैं चद लुक्मे[4] हलक से उतारता रहा। रात को खाने के बाद कुछ देर तक सहन मे चद साथियो के साथ निशस्त[5] रहा करती थी। इसमे भी कोई फर्क नही आया। जितनी देर तक वहाँ बैठता था, जिस तरह बातें करता था, और जिस किस्म की बाते करता था वो सब कुछ बदस्तूर होता रहा।

अखबारात यहाँ बारह से एक बजे के अदर आया करते है। मेरे कमरे के सामने दूसरी तरफ सुपरिटेंडेंट का दफ्तर है। जेलर वहाँ से अख़बार लेकर सीधा मेरे कमरे मे आता है। जू ही उसके दफ्तर से निकलने और चलने की आहट आना शुरु होती थी, दिल धडकने लगता था कि नही मालूम आज कैसी खबर अखबार मे मिलेगी। लेकिन फिर मैं फौरन चौक उठता। मेरे सोफ़े की पीठ दरवाजे की तरफ है, इसलिये जब तक एक आदमी अदर आके सामने खड़ा न हो जाये मेरा चेहरा देख नही सकता। जब जेलर आता था तो मै हस्बे-मामूल मुस्कराते हुये इशारा करता कि अखबार टेबल पर रख दे और फिर लिखने मे मशगूल हो जाता। गोया अखबार देखने की कोई जल्दी नही। मै ऐतराफ़[6] करता हूँ कि यह तमाम जाहिरदारियाँ दिखावे का एक पार्ट थीं जिसे दिमाग का मगरूराना अहसास खेलता रहता था। और इसलिये खेलता था कि कही उसके दामने सब्र ओ वकार पर बेहाली और परेशाँ खातिरी का कोई धब्बा न लग जाये।

बिदह या रब दिले, कीं सूरते-बेजां नमीख़्वाहम[7]

बिलआखिर ९ अप्रेल को ज़हरे-गम का यह प्याला लबरेज हो गया।

---

१. अतर २. प्रतिक्रिया ३. बिल्कुल ४. ग्रास ५ बैठक ६. स्वीकार करना ७. हे मेरे मालिक एक दिल दे, मै यह निष्प्राण शरीर नही चाहता।

फ़इन्न मा तहज़ुरीनि क़द वक़ा[3]

२ बजे सुपरिटेडेंट ने गवर्नमेंट बम्बई का एक तार हवाले किया जिसमे हादसे की खबर दी गई थी। बाद को मालूम हुआ कि सुपरिटेंडेंट को यह खबर रेडियो के जरिये सुबह ही मालूम हो गई थी और उसने यहाँ बाज रुफका[4] से इसका जिक्र भी कर दिया था। लेकिन मुझे इत्तला नही दी गई।

इस तमाम अर्से मे यहाँ के रुफका का जो तर्जे-अमल रहा, उसके लिये मै उनका शुक्रगुज़ार हूँ। इब्तदा मे जब अलालत की खबरे आना शुरू हुईं तो कुदरती तौर पर उन्हे परेशानी हुई। वो चाहते थे कि इस बारे में जो कुछ कर सकते है करें लेकिन जूँ ही उन्हें मालूम हो गया कि मैंने अपने तर्जे-अमल का एक फ़ैसला कर लिया है और मैं हुकूमत से कोई दरख्वास्त करना पसद नही करता तो फिर सबने खामोशी इख्तियार कर ली, और इस तरह मेरे तरीके-कार में किसी तरह की मदाख्लत नही हुई।

इस तरह हमारी छब्बीस बरस की इज़दवाजी[1] ज़िंदगी खत्म हो गई और मौत की दीवार हम दोनों मे हायल हो गई। हम अब भी एक दूसरे को देख सकते है, मगर इसी दीवार की ओट से।

मुझे इन चद दिनो के अंदर बरसों की राह चलनी पडी है। मेरे अज़्म[2] ने मेरा साथ नही छोडा, मगर मैं महसूस करता हूँ कि मेरे पाँव शल[3] हो गये है।

ग़ाफ़िल नयम ज़ राह, वले आह चारा नेस्त
ज़ीं रहज़नां कि बर दिले-आगाह मीज़नंद[4]

यहाँ अहाते के अदर एक पुरानी कब्र है। नही मालूम किसकी है? जब से आया हूँ सैंकडों मर्तबा उस पर नज़र पड़ चुकी है। लेकिन अब उसे देखता हूँ तो ऐसा महसूस होने लगता है, जैसे एक नये तरह का उन्स[5] उससे तबीयत को पैदा हो गया हो। कल शाम को देर तक उसे देखता रहा और मुतम्मिम बिन नुवीरा का मर्सिया जो उसने अपने भाई मालिक की मौत पर लिखा था, बेइख्तियार याद आ गया।

लक़द लामनी इन्दल क़ुबुरि अलल बुका
रफ़ीक़ि लितज़राफ़ि द्दमूइस्सवाफ़िक़ि
फ़क़ाल अतब्की कुल्ल क़बरिन रअैतहु
लिक़ब्रिन् सवा बैनल लवा फ़द्दक़ादिकि

---

३. जिस बात से तू डरता था वह हो गई ४. रफीक का बहुवचन, साथी १. दांपत्तिक २. दृढ़ता ३. बेकार ४. रास्ते से गाफिल नहीं हूँ, लेकिन कोई चारा नही है, ये राहजन इस जानकार दिल पर चोट करते है ५. प्रेम, मुहब्बत।

फ़क़ुल्तु लहु इन्नश्शजा यबसुश्शजा
फ़दानि फ़हाज़ा कुल्लहु क़ब्रु मालिकि[1]

अब क़लम रोकता हूँ। अगर आप सुनते होते तो बोल उठते :

सौदा ख़ुदा के वास्ते कर क़िस्सा मुख़्तसर
अपनी तो नींद उड़ गई तेरे फ़साने में।

१. पहले दीबाचे मे इसका अर्थ दे दिया गया है।

क़िलअ़े-अहमदनगर
१४ जून, सन '४३ ई

सदीके-मुकर्रम

हस्बे-हाले न नविश्तेम ओ शुद अय्यामे चंद
क़ासिदे को कि फ़िरिस्तम ब तू पैग़ामे चंद[1]

गुजश्ता साल जब हम यहाँ लाये गये थे तो बरसात का मौसम था। वो देखते देखते गुज़र गया और जाडे की रातें शुरु हो गई। फिर जाडे ने भी रख्ते-सफर[2] बाँधा और गरमी अपना साज ओ सामान फैलाने लगी। अब फिर मौसम की गर्दिश उसी नुक्ते पर पहुँची है जहाँ से चली थी। गरमी रुखसत हो रही है और बादलो के काफिले हर तरफ से उमडने लगे है। दुनिया मे इतनी तबदीलियाँ हो चुकी, मगर अपने दिल को देखता हूँ तो एक दूसरा ही आलम दिखाई देता है। जैसे इस नगरी मे कभी मौसम बदलता ही नही। सरमद की रुबाई कितनी पामाल हो चुकी है फिर भी भुलाई नही जा सकती।

सरमा बगुज़श्त ओ ईं दिले-ज़ार हमां
गरमा बगुज़श्त ओ ईं दिले-ज़ार हमां
अलक़िस्सा तमाम सर्द ओ गर्मे-आलम
बर मा बगुज़श्त ओ ईं दिले-ज़ार हमां[3]

यहाँ अहाते के शुमाली[4] गोशे मे एक नीम का दरख्त है। कुछ दिन हुए एक वार्डर ने उसकी एक टहनी काट डाली थी और जड के पास फेक दी थी। अब बारिश हुई तो तमाम मैदान सरसब्ज होने लगा। नीम की शाखो ने भी ज़र्द चिथडे उतार कर बहार ओ शादाबी[5] का नया जोडा पहन लिया। जिस टहनी को देखो, हरे हरे पत्तो और सफेद सफेद फूलों से लद रही है। लेकिन इस कटी हुई टहनी को देखिये तो गोया उसके लिये कोई इन्क़लाबे[6]-हाल हुआ ही नही। वैसी ही सूखी की सूखी पडी है और ज़बाने-हाल से कह रही है।

---

१ अपनी हालत के अनुसार लिखे कई दिन हो गये हैं। पत्रवाहक कहाँ है कि तुम्हे कुछ सदेश भेजूं २. सफर का सामान ३. जाडा बीत गया और इस दुखी दिल की हालत वही है, गरमी बीत गई और इस दुखी दिल की हालत वही है। साराश यह कि दुनिया के सारे सर्द गर्म मैंने सहे लेकिन इस दुखी दिल की हालत वही है ४. उत्तरी ५. ताज़गी ६. परिवर्तन।

हम्चु माही ग़ैर दाग़म पोशिशे-दीगर न बूद
ता कफ़न ग्रामद हमीं यक जामा बर तन दाश्तम ![1]

यह भी उसी दरख़्त की एक शाख है जिसे बरसात ने आते ही जिंदगी और शादाबी का नया जोडा पहना दिया। यह भी आज दूसरी टहनियों की तरह बहार का इस्तकबाल[2] करती। मगर अब इसे दुनिया और दुनिया के मौसमी इंकलाबो से कोई सरोकार न रहा। बहार ओ खिज़ां, गरमी ओ सरदी, खुश्की ओ तरावट सब उसके लिये यकसा हो गये !

कल दोपहर को उस तरफ से गुज़र रहा था कि यकायक इस शाखे-बुरीदा[3] से पॉव ठुकरा गया। मैं रुक गया और उसे देखने लगा। बेइख़्तियार शायर की हुस्ने-तालील[4] याद आ गई।

क़तग्र-उम्मीद कर्दा न ख्वाहद नग्रीमे-दहर
शाखे-बुरीदा रा नज़रे बर बहार नेस्त[5]

मैं सोचने लगा कि इंसान के दिल की सरज़मीन का भी यही हाल है। इस बाग मे भी उम्मीद ओ तलब के बेशुमार दरख़्त उगते है और बहार की आमद आमद की राह तकते रहते है। लेकिन जिन टहनियो की जड़ कट गई उनके लिये बहार ओ खिजा की तबदीलियाँ कोई असर नही रखती। कोई मौसम भी उन्हे शादाबी[6] का पयाम नही पहुँचा सकता।

खिज़ां क्या, फ़स्ले-गुल कहते है किसको, कोई मौसम हो
वही हम है, क़फ़स है और मातम बाल ओ पर का है

मौसमी फूलो के जो दरख़्त यहाँ अक्तूबर में लगाये गये थे, उन्होंने अप्रेल के आखिर तक दिन निकाले। लेकिन फिर उन्हे जगह खाली करनी पड़ी। मई मे खयाल हुआ कि बारिश के मौसम की तैयारियाँ शुरु कर देनी चाहिये। चुनाचे नये सिरे से तख़्तों[7] की दुरुस्तगी हुई, नये बीज मॅगवाये गये। और अब नये पौदे लग रहे है। चद दिनों में नये फूलो से नया चमन आरास्ता हो जायेगा। यह सब कुछ हो रहा है मगर मेरे सामने रह रह कर एक दूसरी ही बात आ रही है। सोचता हूँ कि दुनिया का बाग अपनी गुल शिगुफ्तियो मे कितना तग वाके हुआ है ? जब तक एक मौसम के फूल मुरझा नही जाते, दूसरे मौसम के फूल खिलते नही। गोया कुदरत को जितना खजाना लुटाना था, लुटा चुकी। अब इसी में अदल बदल होता रहता है। एक जगह का सामान उठाया दूसरी जगह सजा दिया, मगर नई पूजी यहाँ मिल सकती नही। यही वजह है कि

---

१. पहले आ चुका है २. स्वागत ३. कटी हुई शाख ४. कारण बताना ५. जिसने आशा छोड दी हो वह दुनिया की नेमतें नही चाहता। कटी हुई शाख़ की नज़र बहार पर नही होती ६. तरोताजगी ७. क्यारी।

कुदसी को फूलों का खिलना पसद नही आया था। उसे अंदेशा हुआ था कि अगर बाग का फूल खिलेगा तो उसके दिल की कली बंद की बंद रह जायेगी।

ऐशे-ईं बाग़ ब अंदाज़ये-यक तंग दिल स्त
काश गुल ग़ुंचा शवद ता दिले-मा बकुशायद ![1]

गौर कीजिये तो यहाँ की हर बनाबट किसी न किसी बिगाड ही का नतीजा होती है। या यो कहिये कि यहाँ का हर बिगाड़ दर असल एक नई बनावट है।

बिगड़ने में भी ज़ुल्फ़ उसकी बना की !

मैदानो मे गढे पड जाते है, मगर ईटो का पजावा भर जाता है। दरख्तो पर आरियाँ चलने लगती है, मगर जहाज़ बनकर तैयार हो जाते है। सोने की काने खाली हो गईं, लेकिन मुल्क का खज़ाना देखिये तो अशर्फियों से भरपूर हो रहा है। मजदूर ने अपना पसीना सर से पाँव तक बहा दिया, मगर सरमायादार[2] की राहत ओ ऐश का सरो सामान दुरुस्त हो गया। हम मालन की झोली भरी देखकर खुश होने लगते है, मगर हमे यह ख्याल नही आता कि किसी के बाग की क्यारी उजडी होगी जभी तो वह झोली मामूर हुई। यही वजह है कि जब उर्फ़ी ने अपने दामन में फूल देखे थे तो बेइख्तियार चीख उठा था :

जमाना गुलशने-ऐशे-किरा ब यग़मा दाद ?
कि गुल ब दामने-मा दस्ता दस्ता मीआयद ![3]

अक्तूबर से अप्रेल तक मौसमी फूलों की क्यारियाँ हमारी दिलचस्पियों का मरकज[4] रही। सुबह ओ शाम कई कई घटे उनकी रखवाली में सर्फ़ कर देते थे, मगर मौसम का पलटना था कि उनकी हालत ने भी पलटा खाया। और फिर वो वक्त आ गया कि उनकी रखवाली करना एक तरफ कोई इसका भी रवादार न रहा कि इन अजल रसीदों[5] को चद दिन और उनकी हालत पर छोड़ दिया जाये। एक एक करके तमाम क्यारियाँ उखाड डाली गई। वही हाथ जो कभी ऊँचे हो होकर उनके सर ओ सीने पर पानी बहाते थे, अब बेरहमी के साथ एक एक टहनी तोड़ मरोड कर फेक रहे थे। जिन दरख्तों के फूलों का एक एक वरक[6] हुस्न का मुरक्का[7] और रानाई[8] का पैकर था, अब झुलसी हुई झाडियो और रोदी हुई घास की तरह मैदान के एक कोने मे ढेर हो रहा था, और सिर्फ इसी मसरफ का रह गया था कि जिस बेसरो सामान को जलाने के

---

१ इस बाग की खुशियाँ एक तंग दिल के समान है। काश फूल कली हो तो मेरा दिल खिल जाय २. पूजीपति ३. दुनिया ने किसकी खुशी के बाग़ को लूट लिया है कि फूल मेरे दामन मे गुलदस्तो के रूप मे आ रहे हैं ४. केंद्र ५ भरे हुये ६. पंखुड़ी ७. चित्र पोथी Album ८. सौन्दर्य।

लिये लकड़ियाँ मयस्सर न आये, वो इन्ही को चूल्हे में झोंक कर अपनी हाडी गरम कर ले।

गुलगूनये आरिज़ है, न है रंगे-हिना तू
अय ख़ूं शुदा दिल, तू तो किसी काम न आया

ज़िंदगी और वजूद के जिस गोशे को देखिये, कुदरत की करिश्मासाजियो के ऐसे ही तमाशे नज़र आयेंगे।

दरीं चमन कि बहार ओ ख़िज़ां हम आग़ोश स्त
ज़माना जाम बदस्त ओ जनाज़ा बर दोश स्त[1]

इंसानी जिंदगी का भी बिऐनिहि[2] यही हाल हुआ। सई ओ अमल का जो दरख्त फल फूल लाता है, उसकी रखवाली की जाती है। जो बेकार हो जाता है, उसे छाट दिया जाता है। फ़अम्मज़्ज़बदु फयजहबुफान व अम्मा मायन फअुन्नास फयमकुसु फिलअर्दि[3]।

---

१. इस बाग मे बहार और ख़िज़ां एक दूसरे से मिली हुई है। दुनिया के हाथ मे शराब का प्याला है और कॉधों पर जनाज़ा है। २. ज्यों का त्यो ३. यह कुरान की आयत का एक टुकडा है जिसमे कारखानये-हस्ती की इस असल की तरफ़ इशारा किया गया है कि जो चीज़ फायदेमद होती है वह बाकी रखी जाती है जो बेकार हो गई वह छांट दी जाती है।

क़िलअ्-अहमदनगर
१५ जून, सन् १९४३ ई

सदीक़े-मुकर्रम

अरब के फलसफी अबुलअला मुअर्री ने जमाने का पूरा फैलाव तीन दिनो के अन्दर समेट दिया था। कल जो गुजर चुका, आज जो गुजर रहा है, कल जो आने वाला है।

सलासत अय्यामिन् हियद्दहरु कुल्लहु
व मा हुन्न इल्ललअम्सि व लियौमि व लग़दि
व मल क़मरु इल्ला वाहिदुन् ग़ैरन्नहु
युग़ीबु व याति बिज़्ज़ियायि व मुजद्दि[1]

लेकिन तीन जमानो की तक्सीम[2] मे नुक्स[3] यह था कि जिसे हम 'हाल'[4] कहते है, वो फिलहकीकत है कहाँ ? यहाँ वक्त का जो अहसास भी हमे मयस्सर है वो या तो 'माज़ी'[5] की नौइयत[6] रखता है या मुस्तकबिल[7] की, और इन्ही दोनों जमानों का एक इज़ाफ़ी तसलसुल[8] है जिसे हम 'हाल' के नाम से पुकारने लगते है। यह सच है कि 'माजी' और 'मुस्तकबिल' के अलावा वक्त की एक तीसरी नौइयत भी हमारे सामने आती रहती है, लेकिन वो इस तेजी के साथ आती और निकल जाती है कि हम उसे पकड नही सकते। हम उसका पीछा करते है, लेकिन इधर हमने पीछा करने का ख्याल किया और उधर उसने अपनी नौइयत बदल डाली। अब या तो हमारे सामने 'माज़ी' है जो जा चुका या 'मुस्तकबिल' है जो अभी आया ही नही। लेकिन खुद 'हाल' का कोई नामो निशान दिखाई नही देता। जिस वक्त का हमने पीछा करना चाहा था, वो 'हाल' था, और जो हमारी पकड मे आया है, वो माजी है।

निकल चुका है वो कोसों दयारे-हिरमां से !

शायद यही वजह है कि अबू तालिब कलीम को इंसानी जिंदगी की पूरी मुद्दत दो दिन से ज्यादा नजर नही आई।

---

१ काल के कुल तीन दिन हैं — गुज़रा हुआ कल, आज और आने वाला कल। चाँद एक ही है सिवाय इसके और कोई बात नही है कि वह छिप जाता है और नई रोशनी के साथ आता है। २. विभाजन ३. नुक्स, खराबी ४. वर्तमान ५. भूतकाल ६. रूप ७. भविष्य ८. सापेक्ष शृंखला।

बदनामिये-हयात दो रोजे न बूद बेश
वां हम कलीम बा तू च गोयम चसां गुज़श्त
यक रोज़ सर्फ़-बस्तने-दिल शुद ब ईन ओ आं
रोज़े-दिगर बकन्दने दिल ज़ीं ओ आं गुज़श्त ।[१]

एक अरब शायर ने यही मतलब ज्यादा ईजाजे-बलगात[२] के साथ अदा किया है ।

व मता मुसाअिदुनल विसालु व दहू्ना
यौमान यौमु नवी व यौमु सद्दि[३]

और अगर हकीकते-हाल को और ज्यादा नजदीक हो कर देखिये तो वाकया यह है कि इंसानी जिंदगी की पूरी मुद्दत एक सुबह शाम से ज्यादा नही । सुबह आँखे खुली, दोपहर उम्मीद ओ बीम मे गुज़री, रात आई तो फिर आँखे बद थी "लमयल बिसु इल्लअशीयतन् औ जुहारा[४]"

शोरे शुद व अज़ ख्वाबे-अदम चश्म कुशूदेम
दीदेम कि बाक़ी स्त शबे-फ़ितना ग़नूदेम[५]

लेकिन फिर गौर कीजिये, इसी एक सुबह शाम के बसर करने के लिये क्या क्या जतन नही करने पडते । कितने सहराओ को तै करना पडता है ? कितने समंदरों को लांघना पडता है ? कितनी चोटियो पर कूदना पड़ता है ? फिर आतिश और पुबा का अफसाना है, वर्क ओ खिरमन की कहानी है ।

दरों चमन कि हवा दाग़े-शबनम आराई स्त
तसल्लिये ब हज़ार इज्तराब मीबाफ़ंद[६]

---

१. यह ज़िदगी की बदनामी दो दिन से ज्यादा नही थी और वह भी किस तरह गुज़री यह कलीम तुझसे क्या कहूँ । एक दिन तो इस और उससे दिल लगाने मे लग गया और दूसरा दिन इस और उससे दिल हटाने में लग गया । २. सक्षेप मे ३. और कब हमारी आशा पूरी होगी हालां कि वाकया यह है कि हमारा जमाना सिर्फ दो दिन का है एक आशा का और दूसरा निराशा का ४. उनका कयाम सिर्फ एक सुबह शाम भर का था ५. एक हंगामा हुआ और हम नेस्ती से हस्ती मे आये । हमने देखा कि अभी हंगामे की रात बाकी है इसलिये फिर सो गये । ६. पहले आ चुका है ।

क़िलअ़-अहमदनगर
१६, सितंबर सन् '४३ ई.

सदीक़े-मुकर्रम,

बच्चे रबड के रंगीन गुब्बारो से बहुत खुश होते है। मुझे भी बचपने मे इनका बड़ा शौक था। वालिद मरहूम के मुरीदो[1] मे एक शख्स गुलाम रहमान था जो अंग्रेजी टोपियो के बनाने का कारोबार करता था। वो मुझे ये गुब्बारे ला दिया करता और मै उससे बहुत हिल गया था। ये गुब्बारे वैसे ही होते है जैसे मुँह से फूँकने के होते हैं। लेकिन इनमे गैस भर दी जाती है और वो उन्हें ऊपर की तरफ़ उडाये रखती है। एक मर्तबा मुझे खयाल हुआ इसे छेद के देखना चाहिए अंदर से क्या निकलता है ? शहसराम की एक मुगलानी अमानी नाम हमारे घर मे सिलाई का काम किया करती थी। मैंने अमानी के सिलाई के बक्स से एक सुई निकाली और गुब्बारे मे चुभो दी। इस वाकये पर सैंतालीस बरस गुजर चुके, लेकिन इस वक्त भी खयाल करता हूँ तो उस सनसनी का असर साफ साफ दिमाग में महसूस होने लगता है जो उस वक्त अचानक गैस के निकलने और एक लंबी सी की सी आवाज पैदा होने से मुझ पर तारी हो गई थी। गैस बाहर निकलने के लिये कुछ ऐसी बेताब थी कि सूई का जरा सा छेद पाते ही फौरन फ़व्वारे की तरह मुज्तरिबाना[2] उछली और दो तीन सैकड भी अभी नही गुज़रे थे कि गुब्बारा खाली होके सुकड गया और ज़मीन पर गिर गया।

यकीन कीजिये, आजकल बिऐनिहि[3] ऐसा ही हाल अपने सीने का भी महसूस कर रहा हूँ। गुब्बारे की तरह इसमे भी कोई पुरजोश अन्सर[4] है जो भर गया है और निकलने के लिये बेताब है। अगर कोई हाथ एक सूई उठाकर चुभो दे तो मुझे यकीन है इसमे से भी वैसा ही जोश उमड़ कर उछलेगा जैसा गुब्बारे से एक मुज्तरिब चीख के साथ उछला था।

शुद आं कि अहले-नज़र बर कनारा मीरफ़्तंद
हज़ार गूना सुख़न बर दहाँ ओ लब ख़ामोश !
ब बांगे-चंग बुगोयेम आं हिकायतहा
क़ि अज़ निहुफ़्तने-आं देगे-सीना मीज़द जोश ![5]

---

१. शिष्यों में २. अधीरता से ३. ज्यो का त्यों ४. तत्त्व ५. ऐसा हो गया है कि पारखी लोग किनारे जा रहे हैं और हजारों बातें मुँह पर हैं पर होठ चुप हैं। यह बात मैं तालियाँ बजाकर कहता हूं कि उस बात के बंद हो जाने से जो मैं कहना चाहता था मेरे सीने की हाँडी जोश मारने लगी।

कल रात एक अजीब तरह की हालत पेश आई। कुछ देर के लिये ऐसा महसूस होने लगा कि सूई चुभ रही है और शायद दिल की भाप पानी बनकर बहना शुरु हो जाये। लेकिन यह महज़ एक सानिहा[1] था जो आया और गुज़र गया और तबीयत फिर बद की बंद रह गई। देग ने जोश खाया लेकिन फूटकर बह न सकी !

जुअफ़[2] से गिरिया मबद्दल ब दमे-सर्द हुआ
बावर[3] आया हमें पानी का हवा हो जाना !

मेरे साथ लासलकी का एक सफरी (पोर्टेबल) सेट सफर में रहा करता था। जब बबई मे गिरफ्तार करके यहाँ लाया गया तो सामान के साथ वो भी आ गया। लेकिन जब सामान किले के अदर लाया गया तो उसमें सेट नही था। मालूम हुआ कि बाहर रोक लिया गया है। जेलर से पूछा तो उसने कहा, कमांडिग आफीसर के हुक्म से रोका गया है और अब गवर्नमेट से इस बारे मे दरयाफ़्त किया जायेगा। बहर हाल जब यहाँ अखबारों का आना रोक दिया गया था तो जाहिर है कि लासलकी के सेट की इजाज़त क्यों कर दी जा सकती थी ? तीन हफ्ते के बाद अखबार की रोक तो उठ गई मगर सेट फिर भी नही दिया गया। वो चीताखा के आफिस मे मुकफ्फल[4] पड़ा रहा। अब मैंने चीताखां को दे दिया है कि अपने बगले मे लगाकर काम मे लाये। क्योंकि अब वो जिस बंगले मे मुनकिल[5] हुआ है उसमे लासलकी सेट नही है।

लेकिन आजकल कोई फौजी अफसर हमारे अहाते के क़रीब किले मे फरोकश[6] है। उसके पास लासलकी का सेट है। कभी कभी उसकी आवाज़ यहाँ भी आ निकलती है। कल रात बहुत साफ़ आने लगी थी। गालिबन बी बी सी का प्रोग्राम था और कोई वायोलीन (Violin) बजानेवाला अपना कमाल दिखा रहा था। लय ऐसी थी जैसी कि (Mendolssopn) के मशहूर कतअे "नग्मा बगैर लफ्ज" (सोग विदाउट वर्डज़) की सुनने मे आई थी !

हदीसे-इश्क़ कि अज़ हर्फ़-ओ सौत मुस्तग्नी स्त
ब नालये-दफ़ ओ नै दर खरोश वलवला बूद ![7]

नागहां एक मुगन्नियये-खुश लहजा[8] की सदाये-दर्द अंगेज उटी और उसने साज़ के जेर ओ बम के साथ मिलकर वो आलम पैदा कर दिया जिसकी तरफ

---

१. घटना २. कमजोरी ३. विश्वास हो गया ४. ताले में बद ५. गया है ६. ठहरा हुआ ७. प्रेम की बाते शब्द और वाणी से मुक्त हैं। दफ़ की और बॉसरी की आवाज से एक शोर हो रहा था ८. सुरीली राग से गाने वाले गवैये की ।

ख्वाजये-शीराज ने इशारा किया है :

च राह मीज़नद ईं मुतरिबे-मुक़ामशनास
कि दर मयाने-ग़ज़ल क़ौले-आश्ना आवुर्द ![1]

पहले तबीयत पर एक फौरी असर पडा। ऐसा महसूस हुआ जैसे फोडा फूटने लगा है। लेकिन यह हालत चद लमहो से ज़्यादा नही रही। फिर देखा तो बदस्तूर इंकबाज़े-ख़ातिर[2] वापस आ गया था।

या मगर काविशे-आं नश्तरे-मिज़गां कम शुद
या कि खुद ज़ख्मे-मरा लज़्ज़ते-आज़ार न मांद ![3]

शायद आपको मालूम नही कि एक जमाने मे मुझे फ़ने-मुसीक़ी[4] के मुताले[5] और मश्क़[6] का भी शौक रह चुका है। इसका इश्तगाल[7] कई साल तक जारी रहा था। इब्तदा इसकी यू हुई कि सन १९०५ ई. मे जब तालीम से फारिग हो चुका था और तुलबा[8] को पढाने मे मशगूल था, तो किताबो का शौक मुझे अक्सर एक कुतुब फरोश ख्वुदाबख्श के यहाँ ले जाया करता था जिसने वेलेजली स्ट्रीट मे मदरसा कालेज के सामने दुकान ले रखी थी, और ज्यादातर अरबी और फारसी की कलमी किताबों की खरीद ओ फरोख्त का कारोबार किया करता था। एक दिन उसने फकीरउल्ला सैफखा की राग दर्पण का एक निहायत ख्वुशख़त और मुसव्वर[9] नुस्खा[10] मुझे दिखाया और कहा कि यह किताब फ़न्ने मुसीक़ी[11] मे है। सैफ खा आलमगीरी अहद[12] का एक अमीर था और हिन्दुस्तान की मुसीकी के इल्म ओ अमल का माहिर था। उसने सस्कृत की एक किताब का फारसी मे तर्जुमा किया जो राग दर्पण के नाम से मशहूर हुई। यह नुस्खा जो खुदाबख्श के हाथ लगा था आसफजाह के लडके नासिर जग शहीद के कुतुबख़ाने का था और निहायत एहतिमाम के साथ मुरत्तब[13] किया गया था। मै अभी उसका दीबाचा देख रहा था कि मिस्टर डेन्सन रास आ गये जो उस जमाने मे मदरसये-आलिया के प्रिंसिपल थे और ईरानी लहजे में फ़ारसी बोलने के बहुत शायक[14] थे। यह देखकर कि एक कमसिन लडका फ़ारसी की एक क़लमी किताब का गौर ओ ख़ोज़[15] से मुताला

---

१. यह जानकार संगीतज्ञ कैसी रागरागिनी बजाता है कि गज़ल के बीच मे जानी-बूझी बाते ले आया २. दिल की घुटन ३. या तो उन भौहो के नश्तर की चुभन कम हो गई थी या खुद मेरे ही जख़्म मे पीड़ा की अनुभूति नही रही थी ४. सगीत-शास्त्र ५. पठन ६. अभ्यास ७. प्रवृत्ति ८. विद्यार्थियो को ९. सचित्र १०. पुस्तक, ग्रन्थ ११. सगीत शास्त्र १२. ज़माना १३. तैयार किया गया था १४. शौकीन १५. ध्यानपूर्वक।

कर रहा है, मुतअज्जिब[1] हुये, और मुझसे फारसी मे पूछा—"यह किस मुसन्निफ़[2] की किताब है ?" मैंने फारसी मे जवाब दिया कि सैफखा की किताब है और फन्ने-मुसीकी मे है। उन्होने किताब मेरे हाथ से ले ली और खुद पढने की कोशिश की। फिर कहा कि हिन्दुस्तान का फन्ने-मुसीकी बहुत मुश्किल फन है। क्या तुम इस किताब के मतालिब समझ सकते हो ? मैंने कहा जो किताब भी लिखी जाती है इसीलिये लिखी जाती है कि लोग पढे और समझे। मैं भी इसे पढूँगा और समझ लूंगा। उन्होने हँसकर कहा, तुम इसे नही समझ सकते, अगर समझ सकते हो तो मुझे इस सफ़े का मतलब समझाओ। उन्होने जिस सफे की तरफ़ इशारा किया था उसमे मबादियात[3] की बाज तकसीमों का बयान था। मैने अल्फाज पढ लिये मगर मतलब कुछ समझ मे नही आया। शर्मिन्दा होकर खामोश हो गया और बिल आखिर कहना पडा कि इस वक्त इसका मतलब बयान नही कर सकता। बगौर मुताला[4] करने के बाद बयान कर सकूगा।

मैने किताब ले ली और घर आकर उसे अव्वल से आखिर तक पढ लिया। लेकिन मालूम हुआ कि जब तक मुसीकी की मुस्तलहात[5] पर अबूर[6] न हो और किसी माहिरे-फन[7] से इसकी मबादियात समझ न ली जाये, किताब का मतलब समझ मे नही आ सकता। तबीयत तालिब इल्मी के जमाने मे इस बात की खूगर[8] हो गई थी कि जो किताब भी हाथ आई उस पर एक नजर डाली और तमाम मतालिब पर अबूर[9] हो गया। अब जो यह रुकावट पेश आई तो तबीयत को सख्त उलझन हुई, और खयाल हुआ कि किसी वाकिफ कार से मदद लेनी चाहिए। लेकिन मदद ली जाये तो किससे ली जाये ? खानदानी जिंदगी के हालात ऐसे थे कि इस कूचे से रस्म ओ राह रखने वालों के साथ मिलना आसान न था। आखिर खयाल मसीताखा की तरफ गया। इस पेशे का यही एक आदमी था जिसकी हमारे यहा गुज़र थी।

इस मसीताखाँ का हाल भी काबिले जिक्र है। यह सोनीपत ज़िला करनाल का रहनेवाला था और पेशे का खानदानी गवैया था। गाने के फन मे अच्छी इस्तैदाद[10] बहम[11] पहुंचाई थी, और देहली और जयपुर के उस्तादो से तहसील[12] की थी। कलकत्ते मे तवायफ़ो की मुअल्लिमी किया करता था :

तक़रीब कुछ तो बहरे-मुलाक़ात चाहिये !

यह वालिद मरहूम की खिदमत मे बैअत[13] के लिये हाजिर हुआ। उनका

---

१. आश्चर्यचकित २. लेखक ३. प्रारभिक बाते ४. ध्यान से पढने के बाद ५. परिभाषाओ पर ६. काबू ७. जानकार ८. आदी ९. काबू १०. जानकारी ११. प्राप्त की थी १२. ज्ञान प्राप्त किया था १३. दीक्षा।

कायदा था कि इस तरह के लोगों को मुरीद[1] नही करते थे। लेकिन इस्लाह ओ तवज्जो का दरवाजा बंद भी नही करते। फरमाते, बगैर बैग्रत के आते रहो। देखो खुदा को क्या मजूर है। अक्सर हालतों में ऐसा हुआ कि कुछ दिनों के बाद लोग खुद व खुद अपना पेशा छोडकर तायिब[2] हो गये। चुनाचे मसीताखां को भी यही जवाब मिला। वालिद मरहूम जुमे के दिन वाज के बाद जामा मस्जिद से मकान आते, तो पहले कुछ देर दीवानखाने मे बैठते। फिर अदर जाते। खास खास मुरीद पालकी के साथ चलते हुये आ जाते और अपनी अपनी मारूजात[3] पेश करके रुखसत हो जाते। मसीताखां भी हर जुमा वाज के बाद हाज़िर होता और दूर फर्श के किनारे दस्तबस्ता[4] खडा रहता। कभी वालिद मरहूम की नजर पड जाती तो पूछ लेते — मसीताखा क्या हाल है ? अर्ज़ करता — हुजूर की नजरे-करम[5] का उम्मीदवार हूँ। फ़रमाते — हाँ, अपने दिल की लगन मे लगे रहो। वो बेइख्तियार होकर क़दमों पै गिर जाता और अपने आँसुओ की झडी से उन्हें तर कर देता। हा, ज़ौक ने क्या खूब कहा है :

हुये है तर गिरियये-नदामत[6] से इस क़दर आस्तीन ओ दामन
कि मेरी तर दामिनी के आगे अरक़ अरक़ पाकदामनी है !

कभी अर्ज करता — रात के दरबार मे हाज़िरी का हुक्म हो जाये। यानी रात की मजलिसे-खास में जो मुरीदो की तालीम-ओ-इरशाद के लिये हफ्ते मे एक बार मुनअकद[7] हुआ करती थी उसे वालिद मरहूम टाल जाते। मगर उनके टालने का भी एक खास तरीका था। फरमाते अच्छी बात है। देखो, सारी बाते अपने वक्त पर हो रहेगी। वो जा-बाख्तये-उम्मीद[8] ओ बीम इतने ही मे निहाल हो जाता और रूमाल से आँसू पोछते हुये अपने घर की राह लेता। ख्वाजा हाफिज़ इन मामलात को क्या ख़ूब कर कह गये है :

ज़ हाजिबे - दरे - ख़िलवत सराये - ख़ास बिगो
"फ़ुलां ज़ गोशानशीनाने-ख़ाके-दरगहे-मा स्त !"[9]

लेकिन बिल आखिर उसका अिज्ज-ओ-नियाज[10] और सिद्के-तलब[11] रग लाये बगैर न रहा। वालिद मरहूम ने उसे मुरीद कर लिया था और हल्के में बैठने की इजाज़त भी दे दी थी। उसे भी कुछ ऐसी तोफीक[12] मिली कि तवायफ़ो की नौचियों की मुअल्लिमी से तायिब हो गया और एक बंगाली ज़मीदार की

१. शिष्य, चेला २. तोबा करनेवाला ३. अरदास ४. हाथ बाँधे। ५. कृपादृष्टि ६. पशेमानी का रोना ७. बैठा करती थी ८. आशा निराशा मे जान निछावर किये हुये ९. मेरी खास महफिल के दरबानों से कहो कि वह मेरी दरगाह के एकांतवासियों में से है १०. विनय और श्रद्धा ११. सच्ची तलब १२. ईश्वरी प्रेरणा।

की मुलाजमत पर क़नायत कर ली। वालिद मरहूम को मैंने एक मर्तबा यह कहते सुना था कि मसीताख़ां का हाल देखता हूँ तो पीर चंगी की हिकायत याद आ जाती है। याने मौलाना रूम वाले पीर चंगी की !

पीरे-चंगी कै बुवद मर्दे-ख़ुदा
हब्बजा अय सिर्रे-पिनहां हब्बजा[1]

बहर हाल मेरा ख़याल इसी मसीताख़ां की तरफ गया और उससे इस मामले का ज़िक्र किया। पहले तो उसे कुछ हैरानी सी हुई, लेकिन फिर जब मामला पूरी तरह समझ में आ गया तो बहुत खुश हुआ कि मुरशिदज़ादा[2] की नज़रे-तवज्जो[3] उसकी तरफ मबज़ूल[4] हुई है। लेकिन अब मुश्किल पेश आई कि यह तजवीज़ अमल में लाई जाये तो कैसे लाई जाये ? घर में जहाँ हिदाया और मिश्कात[5] के पढ़ने वालों का मजमा रहता था, सा रा गा मा की सबक़ आमोज़ियों[6] का मौका न था। और दूसरी जगह बिलइल्तज़ाम[7] जाना इश्काल[8] से खाली न था। बहर हाल इस मुश्किल का एक हल निकाल लिया गया और एक राज़दार मिल गया जिसके मकान में निशस्त ओ बरखास्त[9] का इंतजाम हो गया। पहले हफ़्ते में तीन दिन मुकर्रर किये थे। फिर रोज़ सहपहर[10] के वक़्त जाने लगा। मसीताखां पहले से वहाँ मौजूद रहता और दो तीन घंटे तक मुसीकी के इल्म ओ अमल का मशगला जारी रहता :

इश्क़ मीवरज़म ओ उम्मीद कि ईं फ़न्ने-शरीफ़
चुं हुनरहाये-दिगर मूजिबे हिरमां न शवद[11]

मसीताखाँ ने तालीम का सिर्फ एक ही ढंग रटा हुआ था जो इस फन के उस्तादों का आम तरीका होता है। वही उसने यहाँ भी चलाया। लेकिन मैंने उसे रोक दिया और कोशिश की कि अपने तरीके पर मालूमात मुरत्तब करूँ। मुसीकी के आलात[12] मे ज्यादातर तवज्जो सितार पर हुई और बहुत जल्द उससे उँगलियाँ आश्ना हो गईं। अब सोचता हूँ तो हसरत होती है कि वो भी क्या ज़माना था और तबीयत के क्या क्या वलवले थे। मेरी उम्र सतरह बरस से ज्यादा न होगी। लेकिन उस वक़्त भी तबीयत की उफ़्ताद यही थी कि जिस मैदान में कदम उठाइये, पूरी तरह उठाइये और जहाँ तक राह मिले बढ़ते ही

---

१. पीरे चगी कब ईश्वर का भक्त हुआ है, क्या खूब है यह छिपी बात
२. पीरजादा ३. ध्यान ४. आकृष्ट हुआ है ५. इस्लामी न्याय के ग्रंथ
६. पढने का ७. बिना इंतजाम ८. मुश्किल ९. उठने बैठने का
१० तीसरे पहर ११. प्रेम के पाठ का अभ्यास करता हूँ और यह उम्मीद है कि यह ऊँचा फ़न भी और दूसरों की तरह निराशा का कारण न हो।
१२. यंत्रों में।

जाइये। कोई काम भी हो, लेकिन तबीयत इस पर कभी राज़ी नहीं हुई कि अधूरा करके छोड़ दिया जाये। जिस कूचे मे कदम उठाया, उसे पूरी तरह छान कर छोड़ा। सवाब के काम किये तो वो भी पूरी तरह किये, गुनाह के काम किये तो उन्हें भी अधूरा न छोडा। रिंदी का कूचा मिला था तो उसमें भी सबसे आगे रहे थे, पारसाई की राह मिली तो इसमें भी किसी से पीछे न रहे। तबीयत का तकाज़ा हमेशा यही रहा कि जहाँ कहीं जाइये नाकिसों[1] और खाम-कारों की तरह न जाइये। रस्म ओ राह रखिये तो राह के कामिलों से रखिये। शेख अली हज़ीं ने मेरी जबानी कहा था :

ता दस्त रसम बूद ज़दम चाक गरेबां
शर्मिंदगी अज़ खिरक़ाे-पशमीना नदारम[2]

चुनांचे इस कूचे मे भी कदम रखा तो जहाँ तक राह मिल सकी कदम बढ़ाये जाने में कोताही नहीं की। सितार की मश्क चार पाँच साल तक जारी रही थी। बीन से भी उँगलियाँ नाआश्ना[3] नही रहीं। लेकिन ज्यादा दिल-बस्तगी[4] इससे न हो सकी। फिर इसके बाद एक वक़्त आया कि यह मशग़ला[5] अलकल्लम[6] मतरूक[7] हो गया और अब तो गुज़रे हुये वक़्तों की सिर्फ एक कहानी बाक़ी रह गई है। अलबत्ता उँगली पर से मिज़राब का निशान बहुत दिनो तक नहीं मिटा था :

अब जिस जगह कि दाग़ है, यां पहले दर्द था !

इस आलमे-रंग ओ बू में एक रविश तो मक्खी की हुई कि शहद पर बैठती है तो इस तरह बैठती है कि फिर उठ नही सकती :

कि पाँव तोड़कर बैठे हैं पायेबंद तिरे !

और एक भँवरे की हुई कि हर फूल पर बैठे बू-बास ली और उड़ गये :

टुक देख लिया, दिल शाद किया, खुश काम हुये और चल निकले !

चूनांचे ज़िंदगी के चमनिस्ताने-हज़ार रंग का एक फूल यह भी था। कुछ देर के लिये रुककर बू-बास लेली और आगे निकल गये। मकसूद इस इश्तग़ाल[8] से सिर्फ यह था कि तबीयत इस कूचे से नाआश्ना न रहे। क्योंकि तबीयत का तवाज़ुन[9] और फ़िक्र की लताफ़त बग़ैर मुसीकी की मुमारिसत[10] के हासिल नहीं हो सकती। जब एक खास हद तक यह मकसद हासिल हो गया तो फिर मज़ीद इश्तग़ाल न सिर्फ ग़ैर ज़रूरी था बल्कि मवानओ-कार[11] के हुक्म में दाखिल हो

---

१. अपूर्ण, अधूरा २. जब तक मेरा हाथ पहुँचता रहा मैं अपना गरेबाँ फाड़ता रहा मुझे पशमीने की गुदड़ी से कोई शर्म नही है ३. अपरिचित ४. दिल लगाव ५. प्रवृत्ति ६. बिल्कुल ७. छूटना ८. प्रवृत्ति ९. समतोल, तारतम्य १०. अभ्यास ११. निषेध।

गया था। अलबत्ता मुसीकी का जौक़ और तास्सुर जो दिल के एक एक रेशे में रच गया था, दिल से निकाला नहीं जा सकता था। और आज तक नही निकला।

जाती है कोई कशमकश अंदोहे-इश्क़[1] की
दिल भी अगर गया तो वही दिल का दर्द था !

हुस्न आवाज़ में हो या चेहरे मे, ताजमहल में हो या बाग में, हुस्न है। और हुस्न अपना फितरी मतालबा[2] रखता है। अफ़सोस उस महरूमे-अज़ली[3] पर जिसके बेहिस दिल ने इस मतालबे का जवाब देना न सीखा हो !

सीनये-गर्म न दारी मतलब सोहबते-इश्क़
आतिशे नेस्त चु दर मिजमराअत, ऊद मखर ![4]

मैं आपसे एक बात कहूँ। मैंने बारहा अपनी तबीयत को टटोला है। मैं ज़िदगी की एहतियाज़ों[5] मे से हर चीज़ के बग़ैर खुश रह सकता हूँ, लेकिन मुसीकी के बग़ैर नही रह सकता। आवाज़े-खुश मेरे लिये ज़िदगी का सहारा, दिमाग़ी काविशों[6] का मुदावा[7] और जिस्म ओ दिल की सारी बीमारियों का इलाज है :

रूये - निको मुआलिजये - उम्रे - कोतह स्त
ईं नुस्खा अज़ बयाज़े-मसीहा नविश्ता अंद ![8]

मुझे अगर आप ज़िदगी की रही सही राहतो से महरूम[9] कर देना चाहते हैं तो सिर्फ इस एक चीज़ से महरूम कर दीजिये, आपका मकसद पूरा हो जायेगा। यहाँ अहमदनगर के कैदखाने मे अगर किसी चीज़ का फ़ुकदान[10] मुझे हर शाम महसूस होता है तो वो रेडियो सेट का फुकदान है :

लज़्ज़ते - मासियते - इश्क़[11] न पूछ
खुल्द[12] में भी यह बला याद आई !

जिस ज़माने में मुसीकी का इश्तग़ाल जारी था, तबीयत की खुद-रफ्तगी[13] और महवियत[14] के बाज़ नाकाबिले-फ़रामोश अहवाल पेश आये, जो अगरचे खुद गुज़र गये लेकिन हमेशा के लिये दामने-ज़िदगी पर अपना रंग छोड गये। उसी ज़माने का एक वाकया है कि आगरे के सफर का इत्तिफाक हुआ। अप्रैल का महीना था और चाँदनी की ढलती हुई रातें थी। जब रात की पिछली

---

१. इश्क का गम २. स्वाभाविक धर्म ३. शाश्वत वंचना ४. पहले आ चुका है ५. ज़रूरतें ६. गवेषणा ७. इलाज या औषधि ८. सुंदर रूप इस छोटी सी ज़िदगी का इलाज है, यह नुस्खा मसीहा की पोथी से लिखा है ९. वचित १०. कमी ११. प्रेम के गुनाह की लज़्ज़त १२. स्वर्ग १३. आत्म-विस्मृति १४. तल्लीनता।

पहर शुरू होने को होती तो चाँद पर्दये-शब[1] हटाकर यकायक झाँकने लगता। मैंने ख़ास तौर पर कोशिश करके ऐसा इंतज़ाम कर रखा था कि रात को सितार लेकर ताज चला जाता और उसकी छत पर जमना के रुख बैठ जाता। फिर जूं ही चाँदनी फैलने लगती सितार पर कोई गत छेड़ देता और उसमें मह्व[2] हो जाता। क्या कहूँ और किस तरह कहूँ कि फ़रेबे-तख़य्युल[3] के कैसे कैसे जलवे[4] इन्हीं आँखों के आगे गुज़र चुके है :

गदाये-मैकदा अम, लेक वक़्ते-मस्ती बीं
कि नाज़ बर फ़लक ओ हुक्म बर सितारा कुनम ![5]

रात का सन्नाटा, सितारों की छॉव, ढलती हुई चाँदनी और अप्रेल की भीगी हुई रात। चारों तरफ़ ताज के मनारे सर उठाये खड़े थे, बुर्जियाँ दम बख़ुद[6] बैठी थी, बीच में चाँदनी से धुला हुआ मरमरी[7] गुंबद अपनी कुर्सी पर बेहिस ओ हरकत मुतमक्किन[8] था, नीचे जमना की रुपहली जदवले[9] बल खा खाकर दौड रही थीं और ऊपर सितारों की अनगिनत निगाहे हैरत के आलम में तक रही थी। नूर ओ ज़ुल्मत[10] की इस मिलीजुली फजा[11] में अचानक पर्दहाये-सितार से नालहाये-बेहर्फ़[12] उठते और हवा की लहरों पर बेरोक तैरने लगते। आसमान से तारे झड रहे थे और मेरी उँगली के ज़ख़्मों से नग़मे :

ज़ख़्मा बर तारे-रगे-जां मीज़नम
कस च दानद ता च दस्तां मीज़नम[13]

कुछ देर तक फ़ज़ा थमी रहती, गोया कान लगाकर खामोशी से सुन रही है। फिर आहिस्ता आहिस्ता हर तमाशाई हरकत में आने लगता। चाँद बढ़ने लगता। यहाँ तक कि सर पर आ खड़ा होता। सितारे दीदे फाड फाड़कर तकने लगते। दरख़्तों की टहनियाँ कैफ़िय्यत में आ आकर झूमने लगती। रात के स्याह पर्दो के अंदर से अनासिर[14] की सरगोशियाँ[15] साफ़ साफ़ सुनाई देतीं। बारहा ताज की बुर्जियाँ अपनी जगह से हिल गईं और कितने ही मर्तबा ऐसा हुआ कि मनारे अपने काँधों को जुंबिश से न रोक सके। आप बावर करें या न करें मगर यह वाक़या है कि इस आलम मे बारहा मैंने बुर्जियों से बातें की

---

१. रात का पर्दा २. तल्लीन ३. ख़यालों का फ़रेब ४. तमाशे ५. मैकदे का फ़कीर हूँ पर मस्ती के समय देखो कि आसमान पर नाज़ और सितारों पर हुक्म करता हूँ ६. दम साधे ७. सफ़ेद ८. स्थित ९. लहरें १०. प्रकाश और अंधकार ११. वातावरण १२. अक्षरहीन आवाज़ या पुकार १३. अपने प्राणों की रग के तारों पर मिजराब की चोट करता हूँ कोई क्या जाने कि मैं उँगलियों से क्या राग बजा रहा हूँ १४. पंच भूतों की १६. कानाफूसी।

हैं, और जब कभी ताज के गुंबदे-ख़ामोश की तरफ़ नज़र उठाई है तो उसकी लबों को हिलता हुआ पाया है !

तू मपिंदार कि ईं क़िस्सा ज़ ख़ुद मीगोयम
गोश नज़दीके-लबम आर कि आवाज़े हस्त ![1]

इस ज़माने के कुछ अर्से बाद लखनऊ जाने और कई माह तक ठहरने का इत्तिफाक हुआ। आप भूले न होगे कि सबसे पहले आप से वही मुलाक़ात हुई थी। आपने कलमी किताबो के ताजिर[2] अबुलहुसैन से कुल्लियाते-सायब का एक नुस्खा खरीदा था और मुझे यह कहकर दिखाया था कि क़लमी किताबों का भी आपको कुछ शौक है ?

ईं सुखन रा च जवाब स्त, तू हम मीदानी ![3]

इसी कयाम के दौरान में मिर्ज़ा मुहम्मद हादी मरहूम से शनासाई[4] हुई। वो मुसीकी मे काफी दखल रखते थे और चूकि इलम ओ फन की राहो से आश्ना थे इसलिये इल्मी तरीके पर इसे समझते और समझा सकते थे। मुझे उनसे अपनी मालूमात की तकमील[5] में मदद मिली। अफसोस वो भी चल बसे :

पैदा कहाँ हैं ऐसे परागंदा तबा[6] लोग
अफ़सोस तुमको मीर से सोहबत नहीं रही

उस ज़माने मे क्रिश्चियन कालेज के सामने पाँच रुपिया माहवार किराये का एक मकान ले रखा था। वही उनकी दुनिया थी। इलमे-हैयत[7] के शौक ने नज्जारी[8] के मशग़ले से आश्ना कर दिया था। जब कालेज से आते तो मकान की छत पर लकड़ी के दवायरे-कुतर[9] और निस्फ[10] और सुल्स[11] बनाने में मशगूल हो जाते और इस तरह अपनी रसद-बंदियो[12] का सामान करते। छत की सीढी टूटी हुई थी। जस्त[13] लगाकर ऊपर पहुँचते और फिर सारी रात सितारों की हमनशीनी में बसर कर देते।

कि बा जाम ओ सुबू हर शब क़रीने-माह ओ परवीनेम ![14]

कई बरस के बाद फिर लखनऊ जाने का इत्तिफ़ाक हुआ तो उन्हें एक-दूसरे ही आलम मे पाया। एक रिश्तेदार के इंतकाल से कालपी की कुछ जायदाद

---

१. तू यह मत समझ कि मैं खुद कोई किस्सा कह रहा हूँ, अपने कानों को मेरे होठो के पास ला और देख कि यह एक खास आवाज है २. व्यापारी ३. इस बात का क्या जवाब है यह तू भी जानता है ४. परिचय ५. पूर्ण करने में ६. व्यस्त और परेशान प्रकृति के लोग ७. खगोल विद्या ८. बढ़ई-गिरी ९. दायरे का व्यास १०. अर्धांश ११. तृतीयांश १२. वेध करने का काम १३. उछलकर १४. जाम और सुराही के साथ हर रात चाँद और सितारो के क़रीब हो जाता हूं।

विरसे में मिल गई थी, और अब जवानी की महरूमियों का बुढ़ापे की ज़ौक अंदोज़ियों से कफ़्फ़ारा[१] करना चाहते थे :

वक़्ते-अज़ीज़ रफ़्त, बया ता क़ज़ा कुनेम
उम्रे कि बे हुज़ूरे-सुराही ओ जाम रफ़्त ![२]

ये गरमजोशियाँ चूंकि मुसीकी के ज़ौक के पर्दे में उभरी थी, इसलिये शाहिदाने-नग्मा परवाज[३] से सोहबतें गर्म रहती थी। और बाज उस्तादाने-फ़न से भी मजाकिरा[४] जारी रहता। इस मर्तबे अगरचे मेरा कयाम बहुत मुख्तसर रहा लेकिन जितने दिन रहा मुसीकी के मज़ाकिरात होते रहे। इसी ज़माने के कुछ अर्से बाद उन्होने मआरिफुल नग़मात की तरतीब मे मदद दी जो छपकर शाया हो चुकी है।

बचपने मे हिजाज़ की मुतरन्निम[५] सदाओं से कान आश्ना हो गये थे। सदरे-अव्वल के ज़माने से लेकर जिसका हाल हम किताब-उल-अगानी और इक्दुलफरीद वग़ैरह मे पढ चुके है। आज तक हिजाज़ियों का ज़ौके-मुसीकी गैर मुतगय्युर[६] रहा। यह जौक उनके खमीर मे कुछ इस तरह पैवस्त हो गया था कि अज़ा की सदाओ तक को मुसीकी के नक्शों मे ढाल दिया। आजकल का हाल मालूम नही लेकिन उस ज़माने में हरम-शरीफ[७] के हर मनारे पर एक मुअज़्ज़िन मुतैयन होता था और उन सब के ऊपर शैख-उल-मुअज्ज़नीन होता। उस जमाने में शैख-उल-मुअज्ज़नीन शैख हुमन थे और बड़े ही खुश आवाज़ थे। मुझे अच्छी तरह याद है कि रात की पिछली पहर मे उनकी तरहीम* की नवाये एक समाँ बाँध दिया करती थी। हमारा मकान कदवह् में बाबुस्स-लाम के पास था। कोठे की खिडकियों से मीनारों की क़दीलें साफ नजर आती थीं और सुबह की अजान तो इस तरह सुनाई देती जैसे छत पर कोई अज़ान दे रहा हो। जब ईराक और मिसर ओ शाम के सफर का इत्तिफाक हुआ तो मौजूदा अरबी मुसीकी की जुस्तजू हुई। मालूम हुआ कि कुदमा[८] की बहुत सी मुस्तलहात जो हमें किताब-उल-अगानी और ख्वारज़मी वग़ैरह मे मिलती हैं,

---

१. प्रायश्चित २. अच्छा वक्त तो बीत गया है आओ अब उसकी कमी पूरी करे कि जो उम्र जाम और सुराही के बगैर बीत गई है ३. गाने वाली रंडियाँ ४. बहस मुबाहसा ५. लयदार ६. अपरिवर्तित ७. मक्के की भीतरी मस्जिद ८. पुराने लोगों की।

* सुबह की अजान से पहले मुख्तलिफ कल्माते-अदम्रिय्या (प्रार्थना) एक खास लहनमे दुहराये जाते है इसे तरहीम कहते है। कम से कम चार सौ बरस पहले भी यह रस्म जारी थी क्योकि मुल्ला अली कारी और साहबुलबायस ने इसे भी बदअ ओ मुहद्दिसात में से शुमार किया था।

अब कोई नहीं जानता। ताबीर ओ तक़सीम के अस्मा ओ रूमूज़[1] तकरीबन बदल गये है और अरबी की जिन मुस्तलहात ने ईरान पहुँच कर फ़ारसी का जामा पहन लिया था वो अब फिर अरबी मे वापस आकर मुअर्रब हो गई है। अलबत्ता फ़न की पुरानी बुनियादें अभी तक मुतज़लज़ल नही हुई। वही बारह रागनियाँ अब भी असल ओ बुनियाद का काम दे रही हैं जो यूनानी मुसीकी की तकलीद[2] में वज़ा[3] हुई थी। आसमान के बारह बुर्जो की तरफ़ अब भी इन्हें उसी तरह मंसूब किया जाता है जिस तरह कुदमा ने किया था। आलाते-मुसीकी[4] में अगरचे बहुत सी तबदीलियाँ हो गईं लेकिन ऊद[5] के पर्दे अभी तक खामोश नही हुये हैं, और उनके जख्मों से वो नवाये अब भी सुनी जा सकती हैं जो कभी हारूनुर्रशीद की शबिस्ताने-तरब में इसहाक मूसली और इब्राहीम बिन महदी के मिज़राब से उठा करती थी :

ईं मुतरिब अज़ कुजा स्त कि साज़े-"इराक़" साख़्त
व आहंगे-बाजगश्त ज़ राहे "हिजाज़" कर्द ![6]

"ईराक" और "हिजाज" दो रागनियो के नाम है। और "राह" याने सुर

मुतरिब निगाहदार हमीं "रह" कि मीज़नी ![7]

उस ज़माने में शैख़ अहमद सलामा हिजाज़ी का जौक मिसर में बहुत मशहूर और नामवर था। "जौक" वहाँ मंडली के माने मे बोला जाता है। हमने यहाँ मडली के लिये तायफा का लफ्ज़ इख्तियार किया था। फिर इसकी जमा "तवायफ़" हुई और रफ्ता रफ्ता तवायफ़ के लफ्ज़ ने मुफरद[8] मानी पैदा कर लिये। यानी जने-रक़्क़ासा ओ मुगन्निया[9] के मानी मे बोला जाने लगा। शैख़ सलामा का जौक काहरा के ओपेरा हाउस मे अक्सर अपना कमाल दिखाया करता था और शहर की कोई बज्मे-तरब बगैर उसके बारौनक नही समझी जाती थी। मुझे बारहा उसके सुनने का इत्तिफाक हुआ। इसमें शक नही कि अरबी मुसीक़ी आजकल जैसी कुछ और जितनी कुछ भी है, वो इसका पूरा माहिर था। एक दोस्त के जरिये उससे शनासाई[10] पैदा की थी और मौजूदा अरबी मुसीकी पर मज़ाकिरात[11] किये थे।

उस ज़माने मे मिसर की एक मशहूर "आलिमा" ताहिरा नामी बाशि-

---

१. नाम और इशारे २. अनुकरण में ३. बनी थी ४. संगीत के साज़ों की ५. एक प्रकार की सितार ६. यह संगीतकार कहाँ का है जिसने इराक़ की रागनी बनाई और उसे हिजाज़ के सुर में बजा रहा है ७. गाने वाले, इसी सुर का ख्याल रख कि जो बजा रहा है ८. एक अलग ९. नाचने गाने वाली औरत १०. परिचय ११. चर्चा।

न्दये-तंता थी। "ग्रालिमा" मिसर में मुग़न्निया को कहते हैं। याने मुसीक़ी का इल्म जानने वाली। हमारे उल्माये-किराम को इस इस्तलाह से ग़लतफ़हमी न हो। योरप की ज़बानो मे यही लफ़्ज़ (Alima) हो गया है। शैख़ सलामा भी इस ग्रालिमा की फ़नदानी का ऐतराफ़ करता था। वो ख़ुद भी बलाये-जान थी। मगर उसकी आवाज़ उससे भी ज्यादा ग्राफ़ते-होश ग्रो ईमान थी। मैने उससे भी शनासाई बहम पहुँचाई और ग्ररबी मुसीकी के कमालात सुने। देखिये इस ख़ानुमा ख़राब[१] शौक़ ने किन किन गलियो की ख़ाक छनवाई :

जाना पड़ा रक़ीब के दर पर हज़ार बार
अय काश जानता न तिरी रह गुज़र को मैं !

जिस ज़माने के ये वाकयात लिख रहा हूँ उनके कई साल बाद उम्मे-कुलसूम की शोहरत हुई और अब तक क़ायम है। मैंने उसके बेशुमार रेकार्ड सुने हैं और काहरा, अंगारा, तराब्लिस-ग्रलगर्ब[२] फ़िलस्तीन और सिगापुर के रेडियो स्टेशन ग्राजकल भी उसकी नवाग्रों से गूँजते रहते है। इसमे कोई शुबहा नही कि जिस शख़्स ने उम्मे-कुलसूम की आवाज़ नही सुनी है वो मौजूदा ग्ररबी मुसीकी की दिलावेज़ियों का कुछ ग्रदाज़ा नही कर सकता। मशहूर इंशादात[३] मे से एक नशीद ग्रालिया बितुल महदी का मशहूर नसीब[४] है :

व हब्बिब फ़इन्नलहुब्ब दायियतल हुब्बि
व कम मिन बईदिद्दारि मुस्तौजिबुल क़ुर्बि[५]

ग्रलबत्ता यह मानना पडता है कि क़दीम यूनानी मुसीकी की तरह ग्ररबी मुसीक़ी भी निस्बतन सादा और दिक़्कत तालीफ़ की काविशों से ख़ाली है। हिन्दुस्तान ने इस मामले को जिन गहराइयों तक पहुँचा दिया, हक यह है कि क़दीम तमद्दुनों[६] में से कोई तमद्दुन भी इसका मुकाबला नही कर सकता। हुस्ने-तक़सीम[७] और दिक़्कते-तरतीब यहाँ की हर फ़न्नी शाख की ग्राम ख़ुसूसियत रही है। लेकिन जहाँ तक नफ्से-फ़न[८] की दकीका-संजियो[९] का ताल्लुक है, इसमें भी कोई शुबहा नही कि योरप का मौजूदा फ़ने-मुसीकी जिसकी बुनियाद निश्तये सानिया (Renaissance) के जनूबी बाकमालों ने रखी थी, मुतिहाये-कमाल[१०] तक पहुँचा दिया गया है। और गो ज़ौके-समाग्र[११] के इख़्तिलाफ़[१२] से

---

१. घर बरबाद करने वाले शौक़ ने २. एक शहर का नाम ३. गानों में से ४. गाना ५. प्रेम कर क्योंकि प्रेम से प्रेम बढता है और बहुत से दूर रहने वाले ऐसे है जो निकट लाने के योग्य है ६. पुरानी सस्कृतियो मे से ७. विभाजन की खूबी ८. खुद फन ९. बारीकियों का १०. पूरे उत्कर्ष ११. श्रवण की रुचि १४. विरोध।

हमारे कान उसकी पूरी कदरशनासी न कर सकें, लेकिन दिमाग़ उसकी अज़मत से मुतास्सिर हुये बग़ैर नही रह सकता। दर असल अशिया ओ मानी[1] के तमाम मुरक्कब[2] मिज़ाजों की तरह मुसीकी का मिज़ाज भी तरकीबी वाके हुआ है और सारा मामला मुफरद-असवात लय ओ अलहान[3] की तालीफ़[4] से वजूदपिज़ीर[5] होता है। इन मुफरद अजज़ा[6] की बराबर तरकीब का तसविया और तनास्सुब जिस कदर दक़ीक और नाज़ुक होता जायेगा, मुसीकी की गहराइयाँ उतनी ही बढती जायेगी। इस ऐतबार से अठारहवी और उन्नीसवीं सदी के योरप का फन्ने-मुसीकी फिक्रे-इंसानी की दिक़्कत अफ़रीनियों[7] का एक ग़ैर मामूली नमूना है और जरमनी के बाकमालाने-फ़न ने तो इस बाब मे बड़ी ही सहरकारी[8] की है।

हकीकत यह है कि मुसीक़ी और शायरी एक ही हकीकत के दो मुख्तलिफ़ जलवे है, और ठीक एक ही तरीके पर ज़हूरपिज़ीर[9] भी होते है। मुसीकी का मुअल्लिफ इलहान के अजजा को वज़न और तनासुब के साथ तरकीब दे देता है, उसी तरह शायर भी अलफ़ाज़ ओ मानी के अजज़ा को हुस्ने-तरकीब के साथ बाहम जोड देता है:

तू हिना बस्ती ओ मन मानीये-रंगीं बस्तम[10]

जो हकायक शेर मे अल्फाज़ ओ मानी का जामा पहन लेते है, वही मुसीकी में इलहान ओ ईकाअ[11] का भेस इख्तियार कर लेते है। नग्मा भी एक शेर है लेकिन उसे हर्फ ओ लफ़्ज़ का भेस नही मिला। उसने अपनी रूहे-मानी के लिये नवाओं का भेस तैयार कर लिया:

वलउज्नु तअश्शक़ु क़ब्ललऐनि अहियाना[12]

यह क्या बात है कि बाज़ इलहान दर्द ओ अलम के जज़्बात बरअंगेख्ता[13] कर देते हैं, बाज़ के सुनने से मुसर्रत ओ इबिसात[14] के जज्बात उमडने लगते हैं? बाज़ की लय ऐसी होती है जैसे कह रही हो कि ज़िदगी और ज़िदगी के सारे हंगामे हेच हैं। बाज की लय ऐसी महसूस होती है जैसे इशारा कर रही हो कि:

यारां सलाये आम स्त, गर मीकुनेद कारे ![15]

---

१. शब्द और अर्थ २. मिश्रित ३. एक आवाज़ और लय ४. मिलने से ५. बनता है ६. एक एक चीजों की ७. गूढ रचनाओं का ८. जादूगरी ९. व्यक्त होते है १०. तू हिना बाँधता है और मैं रंगीन मानी बाँधता हूँ। ११. राग १२. और कभी-कभी आँख से पहले कान मुग्ध हो जाते है १३. उभारना १४. खुशी और आनंद १५. यारो आम बुलावा है अगर काम करना हो तो।

ये वही मानी हैं जो मुसीकी की ज़बान पर उभरने लगते हैं। अगर ये शेर का जामा पहन लेते तो कभी हाफिज़ का तराना होता, कभी ख़ैयाम का ज़मज़मा, कभी शेली (Shelley) की मातम सराइयाँ होती, कभी वर्डसवर्थ (Wordsworth) की हकायक सराइयाँ :

दरीं मंदाने-पुरनैरंग हैरान स्त दानाई
कि यक हंगामा आराई ओ सद किश्वर तमाशाई ![1]

यह अजीब बात है कि अरबों ने हिन्दुस्तान के तमाम अ़लूम ओ फुनून मे दिलचस्पी ली लेकिन हिन्दुस्तान की मुसीकी पर एक गलत अंदाज़ नजर भी न डाल सके। अबू रेहान अलबरूनी ने किताबुलहिंद मे हिन्दुओ के तमाम अ़लूम ओ अकायद पर नज़र डाली है और एक बाब फ़ीकुतुबिहिम फी साइरिलअ़लूम[2] भी लिखा है। मगर मुसीकी का उसमे कोई ज़िक्र नही। डाक्टर इदवर्ड सखाऊ (Sachau) ने अलआसारुल-बाकिया के मुकदमे में अलबरूनी का एक मकतूब दर्ज किया है, जिसमें उसने अपनी तमाम मुसन्निफात[3] का बतफसील जिक्र किया था। लेकिन उसमे भी इस मौज़ू पर कोई तसनीफ नज़र नही आती, हालाकि यह वो जमाना था जब हिन्दुस्तान के नायक सुल्तान महमूद और सुल्तान मसऊद के दरबारों में अपने कमालाते-फन की नुमायश करने लगे थे। और हिन्दुस्तान के ढोल और बाजे गजनी के गली कूचों में बजाये जा रहे थे। ग़ालिबन इस तगाफुल[4] की वजह कुछ तो यह होगी कि अ़लूमे-अकलिया[5] के शौक ओ इश्तगाल ने इसकी बहुत कम मोहलत दी कि फ़ुनूने-लतीफा[6] की तरफ तवज्जो करते और कुछ यह बात भी होगी कि अरबों का ज़ौके-समाअ[7] हिन्दुस्तान के ज़ौके-समाअ से इस दर्जे मुख्तलिफ था कि एक के कान दूसरे की नवाओ से बमुश्किल आश्ना हो सकते थे।

हिन्दुस्तान की मुसीकी की तरह हिन्दुस्तान के ड्रामों से भी अरब मुसन्निफ यककलम नाआश्ना रहे। अलबेरुनी ने संस्कृत की शायरी और फने-अरूज़[8] का बतफसील जिक्र किया है, लेकिन नाटक का कोई ज़िक्र नही करता। हालांकि यूनानी अदबियात की भी एक खास और मुमताज चीज़ नाटक है।

खुद यूनान के फुनूने-अदबिया के साथ भी अरबों ने ऐसा ही तग़ाफुल बरता। यूनान की शायरी की उन्हे बहुत कम खबर थी। होमर और सोफ़ाक्लीस वगैरहुमा के नाम उन्हें अरस्तू के मक़ालात और अफ़लातून की जमहूरियत

१. इस जादूभरी दुनिया में अक़्ल हैरान है। एक शोर हो रहा है और सैकड़ों मुल्क तमाशा देख रहे है २. कुल इल्मों की किताबो के बयान मे। ३. रचनाओं का ४. ग़फ़लत, उपेक्षा ५. दिमागी ज्ञान ६. ललित कला ७. श्रवण की रुचि ८. काव्यशास्त्र।

से मालूम हो गये थे, लेकिन इससे ज़्यादा कुछ मालूम न कर सके। इब्नरुश्द ने "कामेडी" और "ट्रेजेडी" की जो तारीफ़ अपनी शरह में की है उससे अंदाज़ा किया जा सकता है कि यूनानी ड्रामे की हकीकत से उसका दिमाग किस दर्जे नाआश्ना था। कामेडी को हज्व[1] और ट्रेजेडी को मदह[2] से ताबीर करता है !

यह बात भी साफ नही हुई कि यूनानी फने-बलागत[3] से अइम्माये-बलागते-अरब[4] कहाँ तक मुतास्सिर हुये थे ? बज़ाहिर उन्होंने इसे काबिले-ऐतना[5] नही समझा। अरस्तू के मकालात खताबत और शायरी पर अरबी में मुतकिल हो गये थे और इब्ने रुश्द ने अपनी शुरूह[6] में इन्हे भी शामिल किया है। लेकिन अरब अइम्मये-फन[7] न तो इसकी रूह समझ सके और न बलागते-अरबी की सरगरानियों ने इसकी मोहलत दी कि समझने की कोशिश करते। अरस्तू ने अपने दोनो मकालो मे जो कुछ लिखा है वो तमामतर यूनानी खताबत और शायरी के नमूनो पर मबनी[8] है और अरबी दिमाग उनसे आश्ना न था। आपने इब्ने कुद्दामा की नक्दुश्शेर का ज़रूर मुताला किया होगा। चौथी सदी के बगदाद के इल्मी हल्के मे उसका नश्वोनुमा हुआ था और वो नस्लन रूमी था। चंद साल हुए इस्कोरियाल (स्पेन) के कुतुबखाने मे एक किताब का सुराग मिला जिसकी लोह पर "नक्दुन्नस्र" दर्ज था। मगर मुसन्निफ़ का नाम मिटा हुआ था। बहुत गौर करने से अबू जाफर इब्ने-कुद्दामा से मिलते-जुलते हुरूफ दिखाई देने लगे। जब इस नाम की किताब दुनिया के कुतुबखानों की फहरिस्तों में ढूँढी गई तो मालूम हुआ कि कोई दूसरा नुस्खा इसका मौजूद नही। इस्कोरियाल के कुतुबखाने मे ज्यादातर वही किताबें हैं जो सतरहवी सदी मे सुल्तान मराकश के दो जहाज़ों की लूट से स्पेन के हाथ आई थी। चूकि इस ज़माने में इस्लामी जखीरों को तबाह करने की मसीही सरगर्मियाँ ठडी पड़ चुकी थीं, इसलिये इन्हे ज़ाया नही किया गया और इस्कोरियाल की खानकाह मे रख दी गईं। यकीनन यह नुस्खा भी इसी लूट मे आ गया होगा। पिछले दिनों जामा मिसरिया के इदारे[9] ने इसका अक्स हासिल किया और डाक्टर मंसूर और डाक्टर ताहा हुसैन की तसरीह[10] ओ तरतीब के बाद छपकर शाया हो गया। दोनो ने इस पर अलग अलग मुकदमे भी लिखे है। बज़ाहिर इसमे शक करने की कोई वजह मालूम नही होती कि यह रिसाला भी नक्दुश्शेर के मुसन्निफ़ ही की कलम से निकला है। रिसाले के उसलूबे-बयान में मंतकी

---

१. किसी की बुराई करने को हज्व कहते हैं २. स्तुति ३. अलंकार शास्त्र ४. अरब के अलकार शास्त्र के मुखिया ५. ध्यान देने योग्य ६. टीकाओ में ७. इस फन के मुखिया ८. आधारित है ९. संस्था १०. टीका।

तरीक़े-बहस[1] ओ तहलील[2] साफ नुमायां है जो आगे चलकर फ़न्ने-बलागत पर बिल्कुल छा गया। लेकिन उसूले-फन ख़ालिस अरबी हैं और अमसाल ओ नज़ायर[3] में भी बाहर के असरात की कोई परछाईं दिखाई नही देती। अलबत्ता बलागत की हकीकत पर बहस करते हुये यूनान और हिन्दुस्तान के बाज़ अक़वाल[4] जाहिज़ के हवाले से नकल कर दिये हैं और वो सबने नकल किये हैं।

लेकिन अरबो ने जो तगाफुल यूनानी अदबियात से बरता था, वो उसके फ़न्ने-मुसीकी से वरत नही सकते थे। क्योंकि ख़ुद अरबों का फ़न्ने-मुसीकी कुछ न था, और जितनी कुछ इमारत भी उन्होने उठाई थी उसका तमामतर मवाद ईरान की सासानी मुसीकी के खडरों से हासिल किया गया था :

नवाये-बार बद मांद स्त ओ बस्तां ![5]

चुनांचे काफी तसरीहात मौजूद है जिनसे मालूम होता है कि यूनान के फ़न्ने-मुसीकी पर अरबी मे किताबें लिखी गईं और रियाज़ी की एक शाख़ की हैसियत से इसका आम तौर पर मुताला किया गया। यूनानियों ने आसमान के बारह फर्ज़ी बुर्जों की मुनासिबत से रागनियों की बारह बुनियादी तकसीमें की थीं और हर रागनी को किसी एक बुर्ज की तरफ़ मंसूब कर दिया था। अरबो ने भी इसी बुनियाद पर इमारत उठाईं। यूनान और रोम के आलात में से क़ानून और अरगनून (आरगन) आम तौर पर रायज हो गये थे। अबू-नसर फाराबी ने कानून पर एक मुस्तकिल रिसाला भी लिखा है। इख़वानुस्सफा के मुसन्निफों को भी मुसीकी से ऐतना करना पडा।

सिंध के नौआबाद अरब हिन्दुस्तान की मुसीकी से जो इन अतराफ़ में रायज होगी ज़रूर आश्ना हुये होगे। लेकिन तारीख में सिंध के अरबी अहद के हालात इतने कम मिलते हैं कि जज़्म[6] के साथ कुछ नही कहा जा सकता। अलबत्ता छठी सदी हिजरी से शुमाली हिन्द और दकन के नये इस्लामी दौरों का जो सिलसिला शुरू हुआ, उनसे हम मुसलमानो के ज़ौक और इश्तगाल के नतायज बआसानी निकाल सकते हैं। अब हिन्दुस्तान के अ़लूम ओ फ़ुनून मुसलमानो के लिये गैर मुल्की नहीं रहे थे बल्कि ख़ुद उनके घर की दौलत बन गये थे। इसलिये मुमकिन न था कि हिन्दुस्तानी मुसीकी के इल्म ओ ज़ौक से वो तगाफुल बरतते। चुनांचे सातवी सदी मे अमीर ख़ुसरो जैसे मुज्तहिदे-फ़न का पैदा होना इस हकीकते-हाल का वाजह[7] सुबूत है। इससे साबित होता है कि अब हिन्दुस्तानी मुसीकी हिन्दुस्तानी मुसलमानो की मुसीकी बन चुकी

---

१. न्याय शास्त्र के तरीक़े की बहस २. हल करने का तरीका ३. मिसाल और नजीरें ४. कौल का बहुवचन ५. वारबद का गाना और उसकी रागनी रह गई है ६. पूर्ण अधिकार के साथ ७. स्पष्ट।

थी और फ़ारसी मुसीकी गैर मुल्की समझी जाने लगी थी। साज़गरी, एमन और खयाल तो अमीर ख़ुसरो की ऐसी मुज्तहिदाना इख्तिराआत[1] हैं कि जब तक हिन्दुस्तानियों की आवाज़ में रस और तार के ज़ख्मों में नग्मा है, दुनिया उनका नाम नहीं भूल सकती। मसनवी किरानुस्सअदैन मे ख़ुद कहते हैं :

ज़मज़मये "साज़गरी" दर "इराक़"
कर्दा ब गुल बांगे-इराक़ इत्तिफ़ाक़ ![2]

कौल, तराना, सोहला तो गाने की ऐसी आम चीजे बन गई हैं कि हर गवैये की ज़बान पर है हालाकि ये सब इसी अहद की इख्तराआत हैं। क्लासीकल मुसीकी इनसे आश्ना न थी।

ग़ालिबन मुसलमान पादशाहो से भी पहले मुसलमान सूफियों ने इसकी सरपरस्ती शुरू कर दी थी। मुल्तान, योधन, गोर और देहली की खानकाहों मे वक्त के बड़े बड़े बाकमाल हाजिर होते थे और बरकत ओ क़ुबूलियत के लिये अपना अपना जौहरे-कमाल पेश करते थे। जहाँ तक सलातीने-हिंद का ताल्लुक है खिलजी, और तुगलक के दरबारो मे हिन्दुस्तानी मुसीकी की मकबूलियत और कदरदानियों के वाकयात तारीख मे मौजूद हैं। लेकिन जिस शाही खानदान ने हिन्दुस्तानी मुसीकी से बहैसियत एक फन के खास ऐतना[3] किया वो गालिबन जौनपुर का शरकी खानदान था। चुनाचे इसी अहद मे खयाल आम तौर पर मकबूल हुआ और ध्रुपद की जगह इससे अहले-फन ऐतना करने लगे। इसी अहद के लगभग दकन के बहमनी और निजाम-शाही खानदानो का और फिर बीजापुरी बादशाहों का शौक ओ ज़ौक नुमाया होता है। चूकि उस ज़माने में दकन और मालवा की सरज़मीन मुसीकी के इल्म ओ अमल का तख्तगाह बन गई थी इसलिये यह क़ुदरती बात थी कि मुसलमान पादशाहों की सरपरस्ती उसे हासिल हो जाती। इब्राहीम आदिल शाह तो बकौल ज़हूरी के इस अकलीम का जगतगुरु था और उसके शौके-मुसीकी ने बीजापुर के घर-घर मे वज्द ओ समाअ[4] का चिराग़ रोशन कर दिया था। ज़हूरी उसकी मदह[5] मे क्या ख़ूब कह गया है :

मुरव्वत कर्दा शबहा बर तू सैरे-बाम ओ दर लाज़िम
नमी बाशद चिरागे ख़ानाहाये - बेनवायां रा[6]

मालवा, बंगाल और गुजरात के पादशाहों के जाती इश्तगाल ओ ज़ौक

---

१. आविष्कार २. ज़मज़मा साज़गरी का इराक से मेल कर दिया। ३. ध्यान दिया ४. मस्ती मे झूमना ५. तारीफ ६. तुझ पर रातों ने मेहरबानी की है कि तेरे कोठे और दरवाज़ों की सैर करें और जो गाना नही जानते उनके घर में चिराग तक नही जलता।

के वाकयात तारीख में बकसरत मिलते हैं। गोर के सलातीन मुल्की जबान और मुल्की मुसीक़ी दोनों के सरपरस्त थे। चुनांचे बंगाली जबान की कदीम शायरी ने तमामतर उन्ही की सरपरस्ती मे नश्वोनुमा पाई। मालवे के बाज़बहादुर को तो रूपमती के इश्क ने हिन्दी का शायर भी बना दिया था और मुसीकी का माहिर भी। आज तक मालवा के घरों से उसके दुहरों की नवायें सुनी जा सकती है।

अकवर की कदरशनासियों से इस फ़न को जो उरूज[१] मिला उसका हाल आम तौर पर मालूम है। अबुलफ़ज़्ल ने उन तमाम बाकमालों का जिक्र किया है जो फ़तेहपुर और आगरा मे जमा हो गये थे और उनमे बडी तादाद मुसलमानों की थी। जहाँगीर ने अपनी तुज़ुक मे जा बजा ऐसे इशारे किये हैं जिनसे उसके ज़ाती ज़ौक[२] और इश्तगाल[३] का सबूत मिलता है। उसकी हुस्न-परस्त तबीयत का लाज़मी तकाज़ा यही था कि फुनूने-लतीफ़ा[४] का क़दरशनास[५] हो। चुनाचे शायरी, मुसव्वरी,[६] और मुसीकी तीनो का दिलदादा और आला दर्जे का कमालशनास[७] था। उसके दरबार मे जिस दर्जे शायर, मुसव्विर[८] और गवैये जमा हो गये थे, फिर हिन्दुस्तान की तारीख मे जमा होने वाले न थे। उसके दरबार के एक मुसव्विर ने एलिज़ाबेथ के सफीर[९] को अपना कमाल दिखा कर हैरान कर दिया था। उसके शायराना ज़ौक के लिये उसका यह एक शेर किफ़ायत करता है :

अज़ मन मताब रुख़ कि नयम बे तू यक नफ़स
यक दिल शिकस्तने-तू ब सद ख़ूं बराबर स्त ![१०]

इसी अहद[११] में यह बात हुई कि मुसीकी का फ़न भी फ़ुनूने-दानिशमंदी में दाखिल हो गया और उसकी तहसील[१२] के बगैर तहसीले-इल्म और तकमीले-तहज़ीब[१३] का मामला नाकिस[१४] समझा जाने लगा। उमरा ओ शुरफा[१५] की औलाद की तालीम ओ तरबियत के लिये जिस तरह तमाम फुनूने-मदारिस[१६] की तहसील का एहतिमाम[१७] किया जाता था, उसी तरह मुसीक़ी की तहसील का भी एहतिमाम किया जाता। मुल्क के हर हिस्से से बाकमालाने-फ़न की माँग आती थी और देहली, आगरा, लाहौर और अहमदाबाद के

---

१. उत्कर्ष २. रुचि ३. प्रवृत्ति ४. ललित कला ५. गुण पारखी ६. चित्रकारी ७. गुण पारखी ८. चित्रकार ९. दूत १०. मुझसे अपना मुख मत फेर कि तेरे बिना एक क्षण भी नहीं रह सकता। तेरा एक दिल को तोड़ना सौ खून के बराबर है। ११. ज़माने मे १२. प्राप्ति, जानकारी १३. तहज़ीब की पूर्णता १४. अपूर्ण १५. अमीर और शरीफ़ १६. मदरसों के हुनर १७. बंदोबस्त।

गवैये बड़ी बड़ी तनख्वाहों पर उमरा ओ शुरफ़ा के घरों मे मुलाज़िम रखे जाते थे। जो नौजवान तकमीले-इल्म के लिये बड़े शहरों में आते वो वहाँ के आलिमों और मुदर्रिसों के साथ वहाँ के बाकमालाने-मुसीकी को भी ढूंढते और फिर उनके हल्कये-तालीम[1] मे ज़ानूये-तहसील[2] तह करते। दक्कन मे अहमदनगर, बीजापुर और बुरहानपुर के अहले-फन मशहूर थे, दोआबा में देहली और आगरे के और पजाब मे लाहौर, स्यालकोट और झग के।

उस अहद मे ईरान और तूरान से जो अफाज़िल[3] ओ अशराफ आते वो हिन्दुस्तानी मुसीकी के फ़हम[4] ओ मुनासिबत की ज़रूरत फ़ौरन महसूस कर लेते थे और चद साल भी गुज़रने नही पाते कि उसके मुकाम शनास[5] बन जाते थे। मुहम्मद कासिम फ़रिश्ता साहबे-तारीख[6] का बाप माज़िदरान से आकर अहमदनगर मे मुकीम हुआ था और फरिश्ता की वलादत[7] माज़िदरान की थी। लेकिन उसे हिन्दुस्तानी मुसीकी से इस कदर शगफ़[8] हुआ कि इस मौज़ू पर एक पूरी किताब तसनीफ कर दी। यह किताब मेरे कुतुबखाने में मौजूद है। अलाउल्मुल्क तूसी जो जुलूसे-शाहजहानी[9] के सातवें साल हिन्दुस्तान आया और फाज़िलखाँ के खिताब से मुखातिब हुआ, और फिर औरंगज़ेब के अहद मे ओहदये-वज़ारत पर फायज़[10] हुआ, हिन्दुस्तानी मुसीकी का ऐसा माहिर समझा जाता था कि वक्त के असातज़ा[11] उससे इस्तफ़ाज़ा[12] करते थे।

उस अहद के कितने ही मुकद्दस[13] उलमा हैं जिनके हालात पढ़िये तो मालूम होता है कि गो मुसीकी के इश्तगाल से दामन बचाये रहे लेकिन फ़न के माहिर और नुक्ताशनास थे। मुल्ला मुबारक के हालात में खुसूसियत के साथ इसकी तसरीह[14] मिलती है कि हिन्दुस्तानी मुसीकी का आलिम ओ माहिर था। अकबर ने उसे तानसेन का गाना सुनाया तो सिर्फ़ इतनी दाद मिली कि "हाँ गा लेता है!"

मुल्ला अब्दुलकादिर बदायूनी जैसा मुतशर्रिअ[15] और मुतसल्लिब शख्स भी बीन बजाने मे पूरी महारत रखता था। और फ़ैज़ी ने ज़रूरी समझा था कि अकबर की खिदमत मे उसकी सिफारिश करते हुये इस मश्शाकी का ज़िक्र कर दे। अल्लामा सादुल्ला शाहजहानी जिनकी फ़ज़ीलते-इल्मी[16] और सबाहते-तबा[17] का तमाम मुआसिर[18] ऐतराफ़[19] करते हैं, मुसीकी और संगीत की हर

---

१. तालीम की मंडली में २. ज्ञान प्राप्ति के लिये आसन लगा कर बैठते थे ३ विद्वान ४. जानकारी ५. पारखी ६. इतिहास लेखक ७. जन्म, पैदाइश ८. लगाव ९. शाहजहाँ के तख्त पर बैठने के १०. नियुक्त ११. उस्ताद १२. लाभ लेते थे १३. ऊँचे १४. व्याख्या १५. कट्टर मजहबी १६. ज्ञान की महानता १७. स्वभाव की गंभीरता १८. उस ज़माने के लोग १९. स्वीकार।

शाख़ पर नजर रखते थे और माहिराना राय दे सकते थे। उनके उस्ताद मुल्ला अब्दुस्सलाम लाहोरी थे। उनके हल्कये-दर्स की आलमगीरियों ने समरक़ंद और बुखारा तक को मुसख़्ख़र[1] कर लिया था और जब शाहजहाँ ने शहज़ादों की तालीम के लिये तमाम उल्माये-ममलिकत[2] पर नज़र डाली थी तो नज़रें-इंतख़ाब[3] ने इन्ही की सिफारिश की थी। लेकिन उनके ज़ौके-मुसीकी का यह हाल था कि जिस तरह हिदाया और बज़दवी के मुकामात हल किया करते थे उसी तरह मुसीक़ी की मुश्किलात भी हल कर दिया करते थे। शैख़ मश्राली खाँ जो मुल्ला ताहिर पटनी मुहद्दिसे-गुजरात के ख़ानदान से ताल्लुक रखते थे और काजी-उल-कुज़्ज़ात शैख अब्दुलवहाब गुजराती के पोते थे उनके हालात में साहबे-मआसिरुल उमरा ने लिखा है कि मुसीकी के शेफ़्ता[5] और उसकी बारीकियों के दकीका संज थे। मुल्ला शफ़ीआये-यज़दी मुखातिब ब दानिशमंदखाँ कि सरआमदे उल्माये असर था और शाहजहाँ के दरबार में उसका मुबाहस मुल्ला अब्दुलहकीम सियालकोटी से मालूम ओ मशहूर है, हिन्दुस्तान आते ही हिन्दुस्तानी मुसीकी में ऐसा बाखबर हो गया कि वक़्त के बाकमालाने-फ़न को उसके फ़ज़्ल ओ कमाल का ऐतराफ करना पड़ा। हक़ीम बर्नियर फ़रंसावी साहबे-सफ़रनामा हिन्दासी दानिशमंदखां की सरकार में मुलाज़िम था और गालिबन उसीकी सोहबत का यह नतीजा था कि हुक्माये फ़िरंग[6] का उसे हममशरब[7] लिखा गया है।

शैख़ अलाउद्दीन जो अपने अहद के मशहूर सूफी गुज़रे हैं और जिनकी एक गज़ल सिमाअ[8] की मजलिस में बकसरत गाई जाती है :

न दानम आं गुले-राना च रंग ओ बू दारद
कि मुर्गे-हर चमने गुफ़्तगूये-ऊ दारद
निशाते-बादापरस्तां ब-मुंतहा बरसीद
हनूज़ साक़ियें-मा बादा दर सबू दारद![9]

उनके हालात में सब लिखते है कि हिन्दुस्तानी मुसीकी के माहिर और आलाते-मुसीकी[10] के गैरमामूली मश्शाक़[11] थे।

शैख़ जमाली साहबे-सियरुलऔलिया और उनके लड़के शैख गदाई, दोनों

१. वशीभूत २. राज्य के उस्ताद या विद्वान ३. चुनाव की दृष्टि ४. प्रधान न्यायाधीश ५. अनुरागी ६. फिरंगी हकीमों का ७. साथी ८. गाने की ९. मैं नही जानता कि उस सुदर फूल का क्या रंग और खुशबू है कि हर चमन का पंछी उसी की बाते करता है। शराबियो की मस्ती अपनी चरम सीमा को पहुँच गई है और साकी ने अभी तक सुराही से शराब ढाली भी नहीं है १०. सगीत के साज़ ११. अभ्यासी, जानकार।

का फने-मुसीकी में तवग्गुल[1] मालूम है। दौरे-आखिर में मिर्जा मजहर जानजाना और ख्वाजा मीरदर्द फ़ने-मुसीकी के ऐसे माहिर थे कि वक्त के बड़े बड़े कलावन्त अपनी चीजे बगरजे-इस्लाह[2] पेश करते और उनके सर की एक हल्की सी जुंबिश को भी अपने कमाले-फन की सनद तसव्वुर करते।

शैख अब्दुलवाहिद बिलग्रामी शेरशाही अहद के एक आली कदर बुजुर्ग थे। सुलूक ओ तसव्वुफ में उनकी किताब सनाबुल मशहूर हो चुकी है। बदायूनी उनके हालात मे लिखते है कि हिन्दी मुसीकी मे नक्श आराइयाँ करते थे और वज्द ओ हाल की मजलिसे उनसे गर्म होती थी।

बैरमखां मुसीकीये-हिंद का बड़ा कदरशनास था और उसके लडके अब्दुर्रहीम खानखानां की कदरशनासियां तो इस दर्जे तक पहुँच गई थी कि अकबर और जहाँगीर की शाहाना फय्याजियां भी उनका मुकाबला न कर सकी। अब्दुलबाकी निहावंदी ने मआसरे-रहीमी[3] के खात्मे मे जहाँ उन उल्मा ओ शोअरा का जिक्र किया है जो खानखाना की सरकार से वाबस्ता[4] थे, वहाँ मुसीकी के बाकमालो के नाम भी गिनवाये है। उनमे ईरानी और हिन्दुस्तानी, हिन्दू और मुसलमान दोनों थे। शाहनवाजखाँ सफवी के हालात मे साहबे-मआसिरुल उमरा ने लिखा है कि "शेफ्तये-मुसीकी बूद ओ ख्वानिंदहा ओ साजिदहा कि पेशे-खुद जमा कर्दा बूद नज़ीर न दाश्तंद।"[5] करीब करीब यही अल्फाज़ होंगे। हाफ़िजे से लिख रहा हूँ और किताब देखे हुये सोलह साल गुजर गये। जैनखा कोका का उलूमे-दर्सिया में शगफ मालूम है। पंजाब की सूबेदारी के जमाने मे भी उसने दर्स ओ तदरीस का मशगला बिलइल्तजाम जारी रखा था। लेकिन उसके हालात मे भी सब लिखते है कि "ब कबित ओ राग शगफे दाश्त ओ साजहा बकमाले-हुस्न ओ खूबी मीनवाख्त।[6] उसका लड़का मुगलखां भी इस बाब मे अपने बाप का जानशीन था। खाने-कलां मीर मुहम्मद जो शम्सुद्दीन अतगा का भाई था, मुसीकीये-हिंद के इल्म ओ महारत मे मुमताज समझा जाता था। मिर्जा गाजी खां बिन जानी बेग हाकिमे-सिंध ओ कधार की निस्बत सब लिखते है कि नग्मा परवाजी, तंबूरनवाज़ी और तमाम साजों के बजाने मे बेनजीर था। मुल्ला मुरशिद यज्दजरदी ने इसी की मदह मे यह रुबाई कही थी :

गर नग्मये-साजत ब सुकूं मीआयद
रन्जे स्त बगोयमत कि चुं मीआयद

---

१. अत्यंत लगाव २. संशोधन के लिये ३. रहीम के हाल मे ४. ताल्लुक रखते थे ५. संगीत का अनुरागी था और गाने और बजानेवाले जो कि उसने अपने यहाँ जमा किये थे उनकी कोई मिसाल नहीं है ६. कवित्त और राग से रुचि रखता था और साजो को कमाल की खूबी से बजाता था।

अज बस कि बगिर्दे-जख्माश्रत मीगरदद
पेचीदा ज तंबूर बरूं मी आयद ![१]

खाने-जमा मीर खलील ने जो यमीनुद्दौला आसफखा का दामाद था, इस फन मे ऐसी महारत बहम पहुँचाई थी कि लोग अपने इख्तलाफात[२] उसके आगे फ़ैसले के लिये पेश करते। सरसबाई जो शहजादा मुरादबख्श की महबूबा थी, खयाल गाने मे अपना जवाब नही रखती थी। मगर खुद शहजादे की फनदानी का मर्तबा इतना बुलद था कि वो उसकी शागिर्दी पर नाज करती। औरगजेब ने जब मुराद को कैद किया तो सरसबाई भी तैयार हो गई कि उसके साथ कैद ओ बद की सख्तियाँ गवारा करे। चुनाचे मुराद के साथ किलग्रे-ग्वालियार मे अर्से तक महबूस रही।

मिर्जा ईसाखाँ तरखान जिसने जानीबेग की वफात के बाद सिध मे बडी शोरिश बरपा की थी नग्मा सजी और साजनवाजी में अपना जवाब नही रखता था।

अब इस वक्त हाफिजे की गिरहे खुलने लगी है तो बेशुमार वाकयात सामने आ रहे है। शहजादा खुर्रम की मा मानमती जो राजा उदयसिह की बेटी थी जब जहाँगीर के महल मे आई तो उसके गाने का महल मे शोहरा हुआ। जहाँगीर चूकि खुद माहिरे-फन था इसलिये उसने इम्तिहान लिया और जब देखा कि इम्तिहान मे पूरी उतरी तो बहुत खुश हुआ और खुशआवाज खवासो का एक हल्का उसके सुपुर्द कर दिया कि अपनी तालीम ओ तरबियत से उन्हे तैयार करे। खुद खुर्रम याने शाहजहाँ के जौक ओ मुनासिबते-फन का यह हाल था कि तानसेन का जानशीन लालखा उसका नाम लेकर कान पकडता था। ध्रुपद मे शाहजहाँ के रुसूखे-जौक[३] का मुवर्रिखो ने खसूसियत के साथ जिक्र किया है।

निजामुलमुल्क आसफजाह के लडके नासिरजंग शहीद को मुसीकी के शौक ने सस्कृत जबान की तहसील का शौक दिलाया ताकि क्लासिकल मुसीकी की कदीम किताबो का बराहे-रास्त मुताला कर सके। उसके हालात मे साहबे-शहादतनामा लिखते है कि ज़बाने-सस्कृत से वाकिफ और मुसीकी और संगीत मे माहिर था।

उस अहद मे एक अमीर की फय्याजियाँ[४] तरक्कीये-फन के लिये शाहाना

---

१. अगर गीत तेरे साज से शांत हो जाय तो यह एक राज है कि मैं बताता हूँ कि क्यों ऐसा होता है। वह तेरी मिजराब के चारो ओर लिपट जाता है और फिर तेरे तबूरे से बाहर आता है। २. विरोध ३. रुचि की रुझान ४. उदारता।

फय्याजियो से कम नही होती थी। शेख सलीम चिश्ती का पोता इस्लामखां जहाँगीर के अहद मे बंगाल का सूबेदार हुआ तो उसकी सरकार में अस्सी हजार रुपया माहवार राग और रक्स[1] के तायफो[2] पर खर्च किया जाता था। साहबे-मआसिरुलउमरा लिखते है कि उसके दस्तरख्वान पर एक हजार लगरियाँ* कमाले-तकल्लुफ ओ एहतिमाम मे दोनो वक्त चुनी जाती थी मगर खुद उसका यह हाल था कि ज्वार की रोटी और साठी का खुश्का[3] साग के साथ खाता और किसी दूसरे खाने मे हाथ न डालता। यह भी लिखा है कि वो उम्र भर जामये-खासा के नीचे गाढे का कुर्ता पहनता रहा और पगडी के नीचे भी गाढे की ताकिया[4] ओढता।

औरगजेब के फकीहाना तकश्शुफ[5] से अगरचे फुनूने-लतीफा की गरम-बाजारी सर्द पड गई, मगर यह जो कुछ हुआ सब दरबारे-शाही तक महदूद था। पिछली आबपाशियो ने मुल्क के हर गोशे मे जो नहरे रवा कर दी थी वो इतनी तुनुक माया न थी कि शाही सरपरस्ती का रुख फिरते ही खुश्क होना शुरु हो जाती। बिला शुबहा आलमगीरी अहद मे शाही सरकार के कारखाने बद हो गये थे, लेकिन मुल्क के हजारो लाखो घरो के कारखाने कौन बद कर सकता था? मैने इस मकतूब की इब्तदा मे फारसी की किताब रागदर्पन का जिक्र किया है। यह किताब फकीरुल्ला सैफखा ने मुरत्तब की थी जो इसी आलमगीरी अहद का एक अमीर और नासिरअली सरहिंदी का ममदूह[6] था। शेरखा लोधी साहबे-मिरातुलखयाल भी इसी अहद मे था जिसने ईरानी मुसीकी और हिन्दुस्तान मुसीकी दोनो मे दस्तगाह पैदा की और फिर दोनो पर एक मबसूत[7] किताब लिखी। तजकिरा मिरातुल खयाल मे भी एक फसल मुसीकी पर लि[ख]ी है और अपने जौके फन का जिक्र किया है। मुसीकी पर उसकी किताब मेरी नजर से गुजर चुकी है। उसका एक खुशखत नुस्खा रायल एशियाटिक सोसाइटी बगाल के कुतुबखाने मे मौजूद है।

इस सिलसिले मे खुद औरंगजेब की जिदगी का एक वाक्या काबिले-जिक्र है।

बुरहानपुर के हवाली[8] मे एक बस्ती जैनाबाद के नाम से बस गई थी।

---

१. नाच और गाने के २. मडली ३. चावल ४. टोपी ५. फकीरी स्वभाव ६. स्वामी, सरपरस्त, जिसकी कवि तारीफ़ करे उसे उसका ममदूह कहते है ७. बडी ८. पास।

* लगरी लकड़ी की रोगन की हुई सीनी (तश्तरी) को कहते है जो लकडी के तश्त (थाल) की तरह बहुत बड़ी होती थी और एक मुसल्लम गोसफ़द बिरियान (पूरा भुना हुआ बकरा) उसमे रखा जा सकता था।

ाबाद की रहने वाली एक मुगन्निया थी जो जैनाबादी के नाम से मशहूर
उसके नग्मा ओ हुस्न की तीर अफगनियों[1] ने औरंगज़ेब को ज़मानये
ी में जख्मी किया। साहबे-मग्रासिरुल उमरा ने इस वाकये का ज़िक्र
ये क्या खूब शेर लिखा है :

अजब गीरंदा दामे बूद दर आशिक़ रुबाईहा
निगाहे-आश्नाये-यार पेश अज आश्नाईहा![2]

औरंगजेब के इस मग्राशिका[3] की दास्तान बड़ी ही दिलचस्प है। इससे
होता है कि अगरचे उलुलअज़्मियो[4] की तलब ने उसे लोहे और पत्थर
ा दिया था, लेकिन एक ज़माने मे गोश्त ओ पोस्त का आदमी भी रह
ा और वह सकता था कि :

गुज़र चुकी है यह फ़स्ले-बहार हम पर भी

अभी थोड़ी देर हुई हम यमीनुद्दौला के दामाद मीर खलील खाने-ज़मा का
ा कर रहे थे। उस खाने-ज़मा की बीवी औरंगजेब की खाला[5] होती थी।
न औरंगजेब बुरहानपुर के बाग आहूखाने मे चहलकदमी कर रहा था,
ाने-जमा की बीवी याने उसकी खाला भी अपनी खवासों के साथ सैर
के लिये आई हुई थी। खवासों में एक खवास जैनाबादी थी जो नग़मा-
मे सहरकार[6] और शेवये-दिलरुबाई[7] ओ रानाई[8] मे अपना जवाब नही
थी। सैर ओ तफरीह करते हुये यह पूरा मजमा एक दरख्त के साये मे
रा जिसकी शाखों मे आम लटक रहे थे। जूं ही मजमा दरख्त के नीचे
जैनाबादी ने न तो शहजादे की मौजूदगी का कुछ पास ओ लिहाज किया
की खाला का। बेबाकाना[10] उछली और एक शाखे-बुलद से एक फल तोड़
। खाने-जमा की बीवी पै यह शोखी गरां गुजरी और उसने मलामत की
नाबादी ने एक गलत अंदाज़ नज़र शहजादे पर डाली और पिशवाज
ते हुये आगे निकल गई। यह एक गलत अदाज नज़र कुछ ऐसी कयामत
ो कि उसने शहजादे का काम तमाम कर दिया और सब्र ओ क़रार ने
हाफिज़ कहा .

बाला बुलंद इश्वागरे-सर्वे-नाज़े-मन
कोताह कर्द क़िस्सये-ज़ुहदे-दराज़े-मन[11]

१. तीरदाजी २. आशिक को पकडने मे एक अजब जाल था, अनुराग
ले यार की आँखो से पहले ही अनुराग हो गया ३. प्रेमिका ४. ऊँचे
५. मौसी ६. गाने में ७. जादूगर ८. मन को मोहने मे ९. खूब-
ी १०. बेधड़क ११. लंबे क़द के नाज नखरोंवाले मेरे सर्व के पेड़ ने
मका ने) मेरी लबी तपस्या के किस्से को खत्म कर दिया।

साहबे-मआसिरुलउमरा ने लिखा है कि – "बकमाले-इबराम ओ समा- जैनाबादी रा अज खालये-मोहतरमा खुद गिरफ्ता, बा आं हमा जुहदे-खुश्क तफ़क्कुह बहत शेफ़्ता ओ दिलदादाये-ऊ शुद। कहदे-शराब बदस्ते खुद र्दा मीदाद। गोयंद रोजे जैनाबादी हम कदहे-बादा पुरकर्दा बदस्ते-शहजादा ओ तकलीफे-शुर्ब नमूद।" याने बड़ी मिन्नत ओ इलहाह करके अपनी ना से जैनाबादी को हासिल किया और बावजूद उस जुहदे-खुश्क और लेस तफ़क्कुह के जिसके लिये उस अहद में भी मशहूर हो चुका था, उसके क ओ शेफ्तगी मे इस दर्जे बेकाबू हो गया कि अपने हाथ से शराब का प्याला भर कर पेश करता और आलमे-नशये ओ सुरुर की रानाइयाँ देखता। ते हैं कि एक दिन जैनाबादी ने अपने हाथ से जाम लबरेज करके औरंगजेब दिया और इसरार किया कि लबों से लगा ले। देखिये उरफी का एक शेर मौके से याद आ गया है, और क्या चस्पां हुआ है :

साक़ी तुई, ओ सादादिली बीं कि शैख़े शहर
बावर न मी कुनद कि मलिक मयगुसार शुद ![1]

शहजादे ने हरचंद अिज्ज ओ नियाज[2] के साथ इल्तजायें की कि मेरे इश्क दिलबाख्तगी का इम्तहान इस जाम के पीने पर मौकूफ न रखो :

मय हाजत नेस्त मस्तीअम रा
दर चश्मे-तू ता ख़ुमार बाक़ी स्त[3]

लेकिन उस ऐयार को रहम न आया :

हनूज ईमान ओ दिल बिसियार ग़ारत करदनी दारद
मुसलमानी मयामोजां दर चश्मे-नामुसलमां रा ![4]

नाचार शहजादे ने इरादा किया कि प्याला मुँह से लगा ले। गोया लकद हम्मत बिही व हम्मा बिहा[5] की पूरी रुयदाद पेश आ गई।

इश्क़श ख़बर ज आलमे-मदहोशी आवुरद
अहले - सलाहरा बक़दहनोशी आवुरद ![6]

---

१. साकी तू है और यह सादादिली देख कि शहर का शैख इस बात पर विश्वास नहीं करता कि बादशाह शराब पीता है २. विनय ३. मेरी मस्ती के लिए शराब की जरूरत नही है जब तक कि तेरी आँखों मे नशा है ४. अभी बहुत ईमान और दिल गारत करने है। नामुसलमान की आँखों को मुसलमानी मत सिखा ५. वह उसकी तरफ बढ़ी और वह उसकी तरफ बढा ६. उसका प्रेम मदहोशी की दुनिया की खबर लाता है, नेक लोगों को शराब पीने की तरफ रजू करता है।

लेकिन जू ही उस फ़ुसूसाज़[१] ने देखा कि शहज़ादा बेबस होकर पीने के लिये आमादा हो गया है, फ़ौरन प्याला उसके लबों से खीच लिया और कहा— "गरज इम्तिहाने-इश्क बूद, न कि तल्खकामीये-शुमा।"[२]

ईं जौर दीगर स्त कि आज़ारे-आशिक़ां
चंदां न मीकुनद कि ब आज़ार खू कुनंद![३]

रफ़्ता रफ्ता मामला यहाँ तक पहुँचा कि शाहजहाँ तक खबरे पहुँचने लगी और वकायानवीसों के फ़र्दो मे भी इसकी तफसीलात आने लगी। दारा शिकोह ने इस हिकायत को अपनी सिआग्रत ओ गम्माजी[४] का दस्त-माया[५] बनाया। वो बाप को बराबर तवज्जो दिलाता "बबीनेद ई मुज़व्वरे रियाई च सलाह ओ तकवा साख्ता अस्त?"[६] हा, फ़ैजी ने क्या खूब कहा है:

च दस्त मी बुरी अय तेग़े-इश्क़ अगर दाद स्त
बबुर ज़बाने - मलामतगरे - ज़ुलेखारा![७]

नही मालूम इस कज़िये[८] का गुचा क्योकर गुल करता, लेकिन कज़ा ओ कदर[९] ने खुद ही फैसला कर दिया। यानी ऐन उरूजे-शबाब मे[१०] ज़ैनाबादी का इंतकाल हो गया। औरंगाबाद मे बडे तालाब के किनारे उसका मकबरा आज तक मौजूद है:

खुद रफ़्ता अेम ओ कुंज मज़ारे गिरफ़्ता अेम
ता बारे-दोश कस न शवद उस्तख्वाने-मा![११]

आपने आकिल खां राज़ी के हाल मे यह वाकया पढा होगा कि ज़मानये-शहज़ादगी मे औरंगजेब को एक परस्तारे-खास[१२] की मौत से सख्त सदमा पहुँचा था, लेकिन उसी दिन शिकार के एहतिमाम[१३] का हुक्म दिया गया। इस बात पर वाबिस्तगाने-दौलत[१४] को ताज्जुब हुआ कि सोगवारी की हालत में सैर ओ तफरीह और शिकार का क्या मौका था। जब औरंगज़ेब शिकार के लिये

१. जादूगरनी २. इससे तुम्हारे प्रेम की परीक्षा लेनी थी, न कि तुम्हारे मुँह को कड़वा करना था ३. यह एक दूसरा ज़ुल्म है कि वो आशिकों को इतना दुःख नही देता कि उस दुःख की आदत पड़ जाये ४. चुग़लखोरी ५. वसीला ६. देखिये इस धोखेबाज ने कैसी नेकी और परहेज़ का रास्ता लिया है ७. हाथ क्या काटती है ओ प्रेम की तलवार, अगर न्याय है तो ज़ुलेखा को मलामत करने वालो की ज़बान काट ८. झगडा ९. क़िस्मत १०. चढ़ती जवानी मे ११. मै खुद चल दी और मज़ार के कुज मे जा बैठी ताकि मेरी हड्डियाँ किसी के कंधों का बोझ न बने १२. खास गुलाम १३. बंदोबस्त १४. उसकी सरकार से ताल्लुक रखने वाले।

महल से निकला तो आकिलखां ने कि मीरे-अश्कर[1] था, तनहाई का मौक़ा निकाल कर अर्ज किया — इस गम ओ अदोह की हालात मे शिकार के लिये निकलना किसी ऐसी ही मसलहत[2] पर मबनी[3] होगा जिस तक हम ज़ाहिर-बीनो की निगाह नही पहुँच सकती। औरंगजेब ने जवाब मे यह शेर पढा।

नालाहाये-खानगी दिलरा तसल्लीबख़्श नेस्त
दर बयाबां मीतवां फ़रयाद ख़ातिरख़्वाह कर्द[4]

इस पर आकिलखा की जबान से बेसाख्ता यह शेर निकल गया :

इश्क़ च आसां नमूद, आह च दुश्वार बूद
हिज्र च दुश्वार बूद, यार च आसां गिरफ़्त![5]

औरगजेब पर रिक्क़त[6] का आलम तारी हो गया। दरयाफ्त किया कि यह शेर किसका है? आकिलखा ने कहा — उस शख्स का है जो नही चाहता कि अपने आपको जुमरये-शोअरा[7] मे महसूब[8] कराये। औरगजेब समझ गया कि खुद आकिलखा का है। बहुत तारीफ की और उस दिन से उसकी सरपरस्ती अपने ज़िम्मे ले ली। इस हिकायत मे जिस "परस्तारे-खास" का जिक्र आया है उससे मकसूद वही जैनाबादी है।

साहबे-मआसिरुलउमरा ने खाने-जमा के हाल मे लिखा है कि फने-मुसीकी मे पूरी महारत रखता था और कारोबारे-मनसब के इनहिमाक[9] के साथ राग ओ रंग की मशगूलियतें भी बराबर जारी रहती थी। परीचहरगाने-खुशआवाज[10] और मुगन्नियाते-इश्वातराज़[11] उसकी सरकार मे हमेशा जमा रहती थी। उन्ही मे जैनाबादी भी थी जिसकी निस्बत कहा जाता है कि उसकी मदखूला[12] थी।

खुद औरंजेब भी मुसीकी के फन से बेखबर न था क्योंकि तमाम शह-जादों की तरह उसने भी इसकी तहसील की होगी। अलबत्ता आगे चल कर उसकी तबीयत की उफ़्ताद ने दूसरी राह इख्तियार की। इसलिये उसके इश्त-गाल ओ ज़ौक से कनाराकश हो गया। और सल्तनत पर कब्जा पाने के बाद तो सिरे से यह कारखाना ही बंद कर दिया। गवैयों ने मुसीक़ी का जनाज़ा निकाला तो उसने कहा इस तरह दफन करना कि फिर क़ब्र से न उठ सके।

---

१. फ़ौज का मीर २. राय ३. अवलबित ४. एकात घर के कोने में बैठ कर रोने से दिल को तसल्ली नही होती, मन चाही फरियाद जंगल मे ही कर सकते है ५. प्रेम कितना आसान दिखाई दिया था, लेकिन अफ़सोस कितना दुश्वार था। वियोग कितना दुश्वार था लेकिन यार ने उसे कितना आसान समझा ६. रोना ७. कवियो के गिरोह मे ८. गिनाये ९. डूबा होने पर भी १०. गाने वाली सुंदरियाँ ११. नाज नखरे वाली गाने वाली १२. रखैल।

लेकिन औरंगजेब के सारे मंसूबों की तरह सल्तनत का यह परहेज़ी मिजाज भी ज्यादा दिनों तक न चल सका, और उसकी ज़िंदगी के साथ ही खत्म हो गया । जिस तरह इंगलिस्तान मे प्युरीटन (Puritan) अहद की खुशमिज़ाजियाँ इस्रादये हाल[1] के साथ ही खत्म हो गई थी, उसी तरह यहाँ भी औरंगज़ेब की आँख बंद होते ही सल्तनत का मिज़ाज फिर लौट आया । फ़र्रुखसियर और मुहम्मदशाह के अहद की तरदिमागियाँ दर असल इसी आलमगीरी खुश्कमिज़ाजियो का रद्दे-अमल[2] था । सैयद अब्दुलजलील मुहद्दिस बिलग्रामी ने फर्रुखसियर की तबरीक मे जो मसनवी लिखी है उससे उस अहद की इशरत मिजाजियों का अंदाजा किया जा सकता है ।

हिन्दुस्तान के कुदमाये-फ़न[3] ने मुसीकी और रक्स की एक खास किस्म ऐसी करार दी है जिसकी निस्बत उनका खयाल था कि सहराई[4] जानवरों को बेखुद करके राम करने में खुसूसियत के साथ मुअस्सिर[5] है । अकबर के ज़माने मे रक्स और गाने की यह किस्म शिकारे-क़मारगा के सरोसामान मे दाखिल हुई और उसके तायफे[6] बाकमालाने-फ़न की निगरानी में तैयार कराये गये । आनंदराम मुखलिस ने मिरातुल मुस्तलहात मे इस तरीके शिकार की बाज़ दिलचस्प तफसीलात लिखी है । वो लिखता है कि जब शिकारे-क़मारगा का एहतिमाम किया जाता था तो ये तायफ़े शिकारगाह में भेज दिये जाते थे और रक्स ओ सरूद[7] शुरु कर देते थे । थोड़ी देर के बाद आहिस्ता आहिस्ता चारों तरफ़ से हिरन सर निकालने लगते और फिर रक्स ओ सरूद की महवियत[8] उन्हें बिल्कुल तायफे के करीब पहुंचा देती । जहाँगीर ने एक मर्तबा शिकारे-कमरगा का कस्द[9] किया और इसी रक्स ओ सरूद का जाल बिछाया । जब हिरनों के ग़ोल हर तरफ़ से निकलकर सामने आ खड़े हुए तो नूरजहाँ की जबान पर बेइख्तियार अमीर खुसरो का यह शेर तारी हो गया :

हमा आहवाने-सहरा सरे-खुद निहादा बर कफ़
ब उम्मीदे-आं कि रोज़े ब शिकार ख्वाही आमद ![10]

यह शेर सुनकर जहाँगीर की गैरते-मर्दुमी[11] ने गवारा न किया कि शिकार के लिये हाथ उठाये । दिलगिरफ्ता वापस आ गया ।

यह ख़याल कि जानवर गाने से मुतास्सिर होते है, दुनिया की तमाम

---

१. वर्तमान काल के खत्म होते ही २. प्रतिक्रिया ३. पुराने जानकारों ने ४. जंगली ५. प्रभाव के ६. मंडलियाँ ७. नाच गाना ८. तल्लीनता ९. इरादा १०. जंगल के सारे हिरन अपने सिरों को हथेली पर रखे हुये है और इस उम्मीद मे हैं कि शायद किसी दिन शिकार के लिये तुम आओगे ११. पौरुष का स्वाभिमान ।

कौमो की कदीमी रवायतो मे पाया जाता है। तोरात मे है कि हज़रत दाऊद की नग्मा सराई परिंदों को बेखुद कर देती थी। यूनानी रवायत में भी एक से ज्यादा अशखास की निस्बत ऐसा ही अकीदा जाहिर किया गया है। हिन्दुस्तान के कुदमाये-फन ने तो इसे एक मुसल्लमा हकीकत[1] मान कर अपनी बेशुमार अमलियात की बुनियादें इसी अक़ीदे पर उस्तवार[2] की थी। साँप, घोड़े और ऊँट का तास्सुर आम तौर पर तस्लीम कर लिया गया है। हुदी की लय अगर रुक जाती है तो महमिल की तेज़ रफ्तारी भी रुक जाती है।

हुदीरा तेज़तर मीख्वां चु महमिल रा गरां बीनी![3]

अलबेरुनी ने किताबुलहिंद मे राग के जरिये शिकार करने के तरीको का जिक्र किया है। वो खुद अपना मशाहिदा नकल करता है कि शिकारी ने हिरन को हाथ से पकड लिया था और हिरन मे भागने की कुव्वत बाकी नहीं रही थी। वो हिन्दुओ का यह कौल भी नकल करता है कि अगर एक शख्स इस काम मे पूरी तरह माहिर हो तो उसे हाथ बढाकर पकड़ने की भी जरूरत पेश न आये। वो सैद को जिस तरफ ले जाना चाहे सिर्फ अपने राग के ज़ोर से लगाये ले जाये। फिर लिखता है, जानवरो की इस महवियत ओ तसखीर[4] को अवाम तावीज और गडे का असर समझते है, हालांकि यह महज़ गाने की तासीर है। फिर एक दूसरे मुकाम मे जहाँ जजीरये-सरनदीप का ज़िक्र किया है, लिखता है, यहाँ बदर बहुत है। हिन्दुओं मे मशहूर है कि अगर कोई मुसाफिर उनके गोल मे फँस जाये और रामायन के वो अशआर जो हनुमान की मदह[5] मे लिखे गये है पढ़ने लगे तो बदर उसके मुतीअ[6] हो जायेगे और उसे कुछ नुकसान नही पहुँचेगा। फिर कहता है कि अगर यह रवायत सही है तो इसकी तह मे भी वही गाने की तासीर काम करती होगी। पहली तसरीह गालिबन इस बाब मे है जो "फ़ीज़िक्रे उलूमेहिम कासिरतुल अजनिहा अलाउ फुकिल हियल"[7] के उनवान से है और दूसरी तसरीह इसके बाद के बाब मे मिलेगी जो "फी मआरिफेसक्का मिन बिलादहिम व अनहारिहिम"[8] के उनवान से लिखा है।

लेकिन यह अजीब बात है कि ज़मानये-हाल[9] का इल्मुलहैवान इस खयाल की वाकयीयत तस्लीम नही करता। और तास्सुरात के मुशाहिदात को दूसरी

---

१. पूर्ण सत्य २. मजबूत की है ३. हुदी एक प्रकार का गाना है जो ऊँटों के काफले के साथ गाया जाता है। यहाँ कहते हैं जब महफिल भारी हो तो हुदी को तेज आवाज़ में गाओ ४. सधाना ५. स्तुति ६. बस में ७. किसी बहाने से जानवरों के बाज़ू तोड़ देने का अध्याय ८. उनके शहरों और नदियों की भिन्न भिन्न जानकारी का अध्याय ९. वर्तमान का।

इल्लतों पर महमूल करता है । साँप के बारे मे तो कहा जाता है कि उसमे सिरे मे समाअत[1] का हास्सा[2] ही नही है ।

वाला दागस्तानी साहबे-रियाज-उश्शोअरा किजलबाशखाँ उम्मीद, मीर मग्ज फितरत मोसुवी, मौतमिनुद्दौला इसहाक खा शूस्तरी, ये सब ताजा विलायत ईरानी थे, लेकिन हिन्दुस्तान की सोहबतो से आश्ना होते ही उन्होने महसूस किया कि मुसीकीये-हिंद मे वाकफियत पैदा किये बगैर अपनी दानिश ओ साइस्तगी की मसनद नही सँभाल सकते । इसके लिये उसकी तहसील नागुजोर है । किजलबाशखा उम्मीद की मजालिसे-तरब का हाल काजी मुहम्मद खा अख्तर ने अपने मकातीब मे लिखा है । इससे अदाजा किया जा सकता है कि इस फन मे किस दर्जे दस्तगाह उसे हासिल हो गई थी । शेख अली हजी ईरानी मुसीकी से पूरी तरह बाखबर थे, लेकिन हिन्दुस्तान मे उन्होने हिन्दुस्तानी मुसीकी की भी तहसील की । पटना के कयाम के जमाने मे उनका यह दस्तूर था कि हफ्ते के दो दिन मुसीकी की सोहबत के लिये मखसूस कर दिये थे । शहर के बाकमाल हाजिर होते और फ़न की बारीकियो के नमूने पेश करते ।

अवध की नवाबी के दौर मे तफज्जुल हुसैन खा अल्लामा के इल्म ओ फजल की बडी शोहरत हुई । शूस्तरी साहिबे-तुहफतुलआलम कलकत्ते मे उनसे मिला था । जब वो अवध की सफारत के मनसब पर मामूर थे । वो लिखता है कि तमाम अलूमे-अकलिया के साथ मुसीकी मे भी दर्जये-इज्तिहाद[3] रखते है और शौक ओ जौक का यह हाल है कि जब तक साज पर राग छेडा नही जाता उनकी आँखे नीद से आश्ना नही होती । एक माहिरे-फन साजिदा सिर्फ इस काम के लिये मुलाजिम है कि शब को ख्वाबगाह मे ख्वाब आवर[4] गत छेड़ दिया करे ।

लखनऊ के उलमा फिरंगी महल मे से बहरुलउलूम की निस्बत उनके बाज मआसिरो ने लिखा है कि फने-मुसीकी मे उनका रसूख आम तौर पर मुसल्लम था ।

अलबत्ता यह जाहिर है कि कौमो के अरूज ओ तरक्की के ज़माने मे जो इश्तगाल[5] तहसीने-फिक्र[6] और तहजीबे-तबा[7] का बायस होता है वही दौरे तनज्जुल[8] मे फिक्र के लिये आफत और तबीयत के लिये महलका[9] बन जाता है । एक ही चीज हुस्ने इस्तेमाल और ऐतदाले-अमल[10] से फज्ल ओ कमाल का

---

१. सुनने का २. इंद्रिय ३. विशेष प्रवीणता ४. नीद लाने वाली ५. प्रवृत्ति ६. विचारो के सौंदर्य ७. स्वभाव के शिष्ट होने का ८. अवनति ९. हलाक करने वाली १०. योग्य प्रयोग ।

जेवर होती है, और मूये-इस्तेमाल[1] और इफरात ओ तफरीते-अमल से बद इखलाकी और सद ऐबी का धब्बा बन जाती है। मुसीकी का एक शौक तो अकबर को था कि अपनी यलगारो[2] के बाद जब कमर खोलता तो मजलिसे-सिमाअ[3] ओ निशात से उनकी थकन मिटाता, और फिर एक शौक मुहम्मद शाह रंगीले को था कि जब तक महल की औरते उसे धकेल धकेल कर पर्दे से बाहर न कर देती, दीवानखाने मे कदम नही रखता। सफदरजग जब दीवान की मुहम्मात से थक जाता तो मुसीकी के बाकमालो को बारयाब[4] करता। उसी की नस्ल मे वाजिदअली शाह का यह हाल था कि जब तबला बजाते बजाते थक जाता तो ताजा दम होने के लिये अपने वजीर अली नकी को बारयाबी का मौका देता। मुसीकी का शौक दोनो को था मगर दोनो की हालतो मे जो फर्क था, वो मोहताजे-बयान नही :

सारत व मुर्मरिक़तिन व सिर्तु मुर्गरिबिन
सत्तानु बैन मुर्शरिकिन व मुर्गरिबि[5]

इस बात की आम तौर पर शोहरत हो गई है कि इस्लाम का दीनी मिजाज फुनूने-लतीफा के खिलाफ है, और मुसीकी मुहर्रमाते-शरइया[6] मे दाखिल है। हालाकि इसकी असलियत इससे ज्यादा कुछ नही कि फुकहा ने सद्दे-वसायल[7] के ख्याल से इस बारे मे तशद्दुद[8] किया, और यह तशद्दुद भी बाबे-कजा[9] से था न कि बाबे-तशरीअ[10] से। कजा का मैदान निहायत वसीअ है हर चीज जो मूये-इस्तेमाल से किसी मुफसिदे[11] का वसीला बन जाये, कजाअन रोकी जा सकती है। लेकिन इससे तशरीअ का हुक्मे-असली अपनी जगह से नही हिल जा सकता। कुलमन हर्रमजीनतुल लाहिल्लती अखरजा लि इबादिही व तय्यिबाति व मिनअररिज्की।[12]

लेकिन यह मबहस मै यहाँ नही छेड़ना चाहता। यहाँ जिस जावियये-निगाह से मामले पर नजर डाली जा रही है, वो दूसरा है :

मोमिन आ कीशे-मुहब्बत[13] में कि सब कुछ है रवा
हसरते - हुरमते - सहबा ओ मजामीर न खींच ![14]

---

१. बुरे इस्तेमाल से २. चढाइयो के बाद ३. गाने की मजलिस ४. दरबार मे बुलाता ५. वह पूरब को चली गई और मै पच्छिम को चला गया, पूरब और पच्छिम मे बहुत बड़ा फासला है ६. शरीअत से हराम ७. वसीलो को रोकना ८. सख्ती ९. अदालत से १०. मजहब से ११. फसाद १२. ईश्वर ने जो अच्छी चीजे और अच्छे खाने अपने बदो के लिये बनाये है उनको कौन हराम कर सकता है १३. प्रेम की राह १४. शराब और गाने के हराम होने की हसरत मत रख।

देखिये बात क्या कहनी चाहता था और कहाँ से कहाँ जा पड़ा ? अब लिखने के बाद सफहों पर नंबर लगाये तो मालूम हुआ कि फ़ुलस्केप के छब्बीस सफ़हे स्याह हो चुके है। बहर हाल अब कलम रोकता हूँ।

हर्फ़े-नामंज़ूरे-दिल यक हर्फ़ हम बेश स्त ओ बस
मानिये-दिलख्वाह गर सद नुस्खा बाशद, हम कम स्त ![1]

---

१. जो दिल को पसंद न हो एक हर्फ भी बहुत है, लेकिन अगर मन-पसंद मानी की सौ किताबें हों तो भी कम हैं।